प्रकाशक—
साहित्य-संस्थान
राजस्थान विश्व विद्यापीठ
उदयपुर।

मुद्रक—
विद्यापीठ प्रिन्टिग प्रेस
उदयपुर

प्रकाशकीय निवेदन

राजस्थान मे प्राचीन साहित्य, लोक साहित्य, इतिहास एवं कला-विषयक प्रचुर सामग्री यत्र-तत्र बिखरी हुई है। आवश्यकता है, उसे खोज कर संग्रह और सम्पादित करने की। राजस्थान विश्व विद्यापीठ [तत्कालीन हिन्दी विद्यापीठ] उदयपुर ने इस आवश्यकता को अनिवार्य अनुभव कर विक्रम सं० १९९८ में "साहित्य-संस्थान" (उस समय प्राचीन साहित्य शोध संस्थान) की स्थापना की और एक योजना बनाकर राजस्थान की इस साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक निधि को एकत्रित करने का काम हाथ में लिया। योजना के अनुसार "साहित्य-संस्थान" के अन्तर्गत विभिन्न प्रवृत्तियाँ निम्न छः स्वतन्त्र विभागों में विकसित हो रही हैं : (१) प्राचीन साहित्य विभाग, (२) लोक साहित्य विभाग, (३) पुरातत्व विभाग, (४) नव साहित्य-सृजन विभाग, (५) अध्ययन गृह और संग्रहालय विभाग एवं, (६) सामान्य विभाग।

१ 'साहित्य-संस्थान' द्वारा सर्व प्रथम राजस्थान में यत्र तत्र बिखरे हुए हस्तलिखित हिन्दी के ग्रन्थों की खोज और संग्रह का काम प्रारम्भ किया गया। प्रारभ में विद्वानों को इस प्रकार के ग्रन्थालयों को देखने में बड़ी कठिनाइयाँ उठानी पडी। राजकीय पुस्तकालय, जागीरदारों के ऐसे संग्रहालय एवं जहाँ भी ऐसी पुस्तकें थीं, देखने नहीं दी जाती थी, धीरे २ इनके लिये वातावरण बना कर काम कराया जाने लगा। सबसे पहले साहित्य संस्थान द्वारा पं० मोतीलाल मेनारिया द्वारा सम्पादित "राजस्थान में हिन्दी के हस्त लिखित ग्रन्थों की खोज प्रथम भाग,

प्रकाशित कराया गया और उसके बाद बीकानेर के प्रसिद्ध विद्वान श्री अगरचन्द नाहटा द्वारा सम्पादित उक्त ग्रन्थ का दूसरा भाग छपाया एवं प्रस्तुत तीसरा भाग श्री उदयसिंह भटनागर की देख-रेख और सम्पादन में 'संस्थान' ने तय्यार करवाया है; जो आपके हाथों में है। इसी प्रकार चौथा, पाचवा और छठा भाग भी क्रमशः श्री अगरचन्द नाहटा, श्री नाथूलाल व्यास एव श्री भोलाशंकर-व्यास द्वारा सम्पादित किये जा चुके हैं। इनका प्रकाशन शीघ्र ही किया जाने वाला है।

प्राचीन साहित्य विभाग में हस्त लिखित ग्रन्थों की खोज के अतिरिक्त १२००० चारण गीत विभिन्न विषयों के एकत्रित किये जा चुके हैं।

२. लोक साहित्य विभाग द्वारा हजारों कहावतें, लोकगीत, मुहावरें, लोक-कहानियाँ, वात-ख्यात, ख्याल, पहेलियाँ, बैठकों के गीत आदि संग्रह किये जा चुके हैं। पं० लक्ष्मीलाल जोशी द्वारा सम्पादित-मेवाड़ी कहावतें और श्री रतनलाल मेहता द्वारा सम्पादित मालवी "कहावतें" पुस्तक रूप मे प्रकाशित की जा चुकी हैं। कहावतों के दो भाग और प्रकाशन के लिये तय्यार हैं। 'लोक वार्ताओं' के दो संग्रह, गीतो के दो संग्रह प्रेस कॉपी के रूप में तय्यार हैं। आर्थिक सुविधा होते ही इनको प्रकाशित करा दिया जायगा।

३. पुरातत्व विभाग के अन्तर्गत पट्टे, परवाने, ताम्र पत्र और ऐतिहासिक महत्व के अन्य कागज-पत्रों का संग्रह किया जाता है। प्राचीन मूर्तियाँ, सिक्के, शिला लेख, चित्र तथा अन्य कला कृतियाँ एकत्रित की जाती हैं। इसमें अच्छी सामग्री एकत्रित करली गई है।

४ नव साहित्य-सृजन विभाग मे अब तक तीन पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है। पं० जनार्दनराय नागर द्वारा लिखित "आचार्य चाणक्य" नाटक, पं० कन्हैयालाल ओझा द्वारा रचित "तुलसीदास" ब्रज भाषा काव्य, एवं श्री हुकमराज मेहता द्वारा लिखी गई "नया चीन" आदि पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकें विद्वानो से लिखवाई जा रही हैं।

४ अध्ययन गृह और संग्रहालय विभाग में अब तक १००० हस्तलिखित सम्पूर्ण पुस्तकें एवं [illegible] मुद्रित ग्रन्थ एकत्रित किये जा चुके हैं। यह धीरे २ एक विशाल संग्रहालय का रूप ले सकेगा ऐसी आशा है।

६ सामान्य विभाग के अन्तर्गत राजस्थानी के प्रसिद्ध महाकवि श्री सूर्यमल की स्मृति में "सूर्यमल आसन" और राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासज्ञ तथा

पुरातत्ववेत्ता स्व० डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा की पुण्य स्मृति मे "ओझा आसन" स्थापित किये गये हैं। इन आसनों से प्रति वर्ष संबंधित विषयो पर अधिकारी विद्वानों के तीन भाषण समायोजित कराये जाते हैं। और उन्हें पुस्तकाकार प्रकाशित किया जाता है। "सूर्यमल-आसन" से अब तक डॉ० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या, नरोत्तमदास स्वामी, अगरचन्द नाहटा तथा रा० ब० रामदेवजी चौखानी के भाषण कराये जा चुके है। और डॉ० चाटुर्ज्या के भाषणो की "राजस्थानी-भाषा" नामक पुस्तक 'संस्थान' से छप चुकी है।

'ओझा आसन" से प्रसिद्ध इतिहास वेत्ता सीतामऊ के महाराज कुमार डॉ० रघुवीरसिंह के तीन भाषण "पूर्व आधुनिक राजस्थान" विषय पर हो चुके हैं और यह पुस्तक प्रकाशित की जा चुकी है। दूसरे अभिभाषक डॉ० दशरथ शर्मा थे, जिनके भाषण शीघ्र ही प्रकाशित होने वाले हैं।

साहित्य-संस्थान से शोध-सम्बन्धी एक त्रैमासिक "शोध-पत्रिका" श्री डॉ० रघुवीरसिंह, श्रीअगरचन्द नाहटा, श्रीकन्हैयालाल सहल, श्रीदेवीलाल सांभर एवं श्री भगवतीलाल भट्ट के सम्पादन में प्रकाशित होती हैं। हिन्दी के समस्त शोध-विद्वानो का सहयोग इस पत्रिका को प्राप्त है, इसलिये यह शोध-जगत में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना चुकी है।

इस प्रकार साहित्य-संस्थान अपनी बहुमुखी कार्य योजना द्वारा राजस्थान के बिखरे हुए साहित्य को एकत्रित कर प्रकाश में लाने का नम्र प्रयत्न कर रहा है लेकिन यह काम इतना व्यय और परिश्रम साध्य है कि कोई एक सस्था इसे पूरा करना चाहे तो असम्भव है। हमारे देश की प्राचीन साहित्यिक, सास्कृतिक और सामाजिक परम्पराओ तथा चिन्तन-स्रोतो को सदैव गतिशील एव अमर बनाये रखना है तो इस काम को निरन्तर आगे बढ़ाना होगा। देश के धर्मात्मा सेठ-साहुकारों, राजा-महाराजाओं, जागीरदारों तथा जमींदारों को ऐसे शुभ सरस्वती के यज्ञ मे सहायता एव सहयोग देना ही चाहिये। राजस्थान और भारत के विद्वानो, विचारको और साहित्यकारों का इस प्रकार के शोध-पूर्ण कार्यों की ओर अधिकाधिक प्रवृत्त होना आवश्यक है।

साहित्य-संस्थान हिन्दी के आदि ग्रन्थ "पृथ्वीराज रासो" का प्रामाणिक सस्करण अर्थ और भूमिका सहित शीघ्र ही प्रकाशित करवा रहा है। "रासो"

का सम्पादन-कार्य इस विषय के मर्मज्ञ विद्वान श्री कविराव मोहनसिंह, उदयपुर कर रहे हैं। इसके प्रकाशन से हिन्दी साहित्य की एक ऐतिहासिक कमी की पूर्ति होगी।

आशा है विद्वानों, कलाकारो और धनी-मानियों द्वारा संस्थान को इसके कार्य में पूरा सहयोग प्राप्त होगा। इसी आशा के साथ—

विक्रम सं० २००६
सन् १६५२

गिरिधारीलाल शर्मा
मन्त्री
साहित्य-सस्थान

"दो शब्द"

राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर ने अपने १५ वर्षों के कार्यकाल में अनेक संघर्षों, संकटों और कठिनाइयों को झेलते हुए भी निस्सन्देह ऐसे कार्य किये हैं, जो उसके अस्तित्व तथा उपयोगिता के लिये प्रमाण रूप माने जा सकते हैं। राजस्थान विश्व विद्यापीठ के अन्तर्गत स्थानीय कवि-गोष्ठियों और साहित्य-चर्चाओं से लगाकर राजस्थान एवं अखिल भारतीय महत्व के सम्मेलन समायोजित किये जा चुके हैं। राजस्थान विश्व विद्यापीठ की स्थापना का मुख्य लक्ष्य ही राजस्थान की साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एव शिक्षणात्मक उन्नति करना था। इसी लक्ष्य को मूलाधार मानकर इसके अन्तर्गत वे सभी विविधि प्रवृत्तियाँ तथा काम प्रारंभ किये गये, जो देश के सर्वांगीण विकास तथा निर्माण के लिये आवश्यक एव अनिवार्य थे। लोक शिक्षण द्वारा उत्तरदायी लोक तन्त्रात्मक लोक-जीवन निर्माण का काम राजस्थान में सर्व प्रथम इसी संस्था द्वारा प्रारम्भ किया गया।

राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर (तत्कालीन हिन्दी विद्यापीठ) ने संवत् १९९८ में प्राचीन साहित्य की शोध-खोज, संग्रह-सम्पादन एवं प्रकाशन के लिये साहित्य-संस्थान (उस समय खोज विभाग) की स्थापना की और राजस्थान के प्राचीन साहित्य-विशेषकर डिंगल-के ग्रन्थों की शोध-खोज प्रारम्भ की। साहित्य-सस्थान ने इसकी महती आवश्यकता अनुभव की कि राजस्थान के प्राचीन ठिकानों, मन्दिरों, उपाश्रयों और रामद्वारों में पड़ी हुई अमूल्य साहित्यिक निधि को अन्धकार से प्रकाश में लाने का जब तक योजनाबद्ध कार्य नहीं किया जायगा तब तक अतीत का गौरवपूर्ण महिमामय राजस्थान आधुनिक जनतन्त्रात्मक प्रगतिशील भारत के साथ संयोग साधकर प्रगति कर सके, यह संभव नहीं है। इसीलिये समस्त राजस्थान के प्राचीन साहित्य और लोक साहित्य की गवेषणा का कार्य व्यापक आधार पर देश के विद्वानों की सहायता से करने का नम्र प्रयत्न किया जा रहा है। ऋषि-मुनियों की इस पुरातन तपोभूमि में अनेक

सरस्वती-पुत्रों ने वर्षों तक साधनारत रहकर सरस और सुन्दर साहित्यिक एवं सांस्कृतिक रचनायें मुखरित की हैं, उन्हे आज हम अपनी असावधानी और प्रमाद से नष्ट हो जाने दें तो इससे बढ़कर क्या लज्जा की बात हो सकती है?

साहित्य-संस्थान राजस्थान विश्व विद्यापीठ ने अब तक प्राचीन साहित्य की शोध-खोज कर विवरणियों (बिबलियोग्राफी) के तीन भाग प्रकाशित कर दिये हैं और तीन भाग अभी आर्थिक कठिनाई के कारण अप्रकाशित रखे हैं। ज्यों ही आर्थिक सुविधा प्राप्त होंगी, उन्हे भी प्रकाशित कर दिया जायगा।

दस वर्षों के निरंतर शोध-खोज के कार्य के बाद इस वर्ष राजस्थान-सरकार ने साहित्य-सस्थान को 'प्रकाशन-कार्य' के लिये १०,०००) न्यूनतम सहायता प्रदान की है, उसी सहायता से इस "राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज, भाग-३ का प्रकाशन किया जा सका है। सरकार द्वारा 'प्रकाशन कार्य' के लिये प्रदत्त सहायता को स्वीकार करते हुए मैं संस्था की ओर से सरकार के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी राजस्थान-सरकार, उसके मत्रीगण तथा शिक्षा विभाग के अधिकारी महाशय ऐसे गभीर और गवेषणापूर्ण साहित्यिक्-सामग्री को प्रकाश में लाने का प्रोत्साहनपूर्ण सहयोग देते रहने में किसी प्रकार के संकोच का अनुभव नहीं करेंगे।

साहित्य-संस्थान, राजस्थान विश्व विद्यापीठ के सभी सहायकों, हितैषियों और शोध-खोज के विद्वानों का मैं उनके सहयोग के लिये-अत्यन्त आभारी हूँ। यह तो उन्ही का काम है और उन्हीं के लिये इस संस्था द्वारा किया जा रहा है-अतः उनका सहयोग तो निस्सन्देह मिलेगा ही।

गुरु गोविन्दसिंह जयन्ति
दिसम्बर १९५२

जनार्दनराय नागर
एम० ए०, साहित्यरत्न
प्रोपकुलपति
राजस्थान विश्व विद्यापीठ

अपनी ओर से—

प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ किसी भी देश की संस्कृति–उसकी भावना और चिन्तन के विकास की परम्परागत निधि हैं। युद्धों की परम्पराओं के बीच जीते–जागते राजस्थान में हस्तलिखित ग्रन्थों की अमूल्य निधि का संग्रह उसकी सांस्कृतिक सजीवता का द्योतक है। अविश्वास और परम्परागत दकियानूसीपन इस निधि की रक्षा में विशेष सहायक हुआ है। फिर भी उत्तम कोटि के राजपूत शैली के चित्रों के समान अनेकों अमूल्य ग्रन्थ भी यूरोप और अमेरिका में चले गये हैं और वहाँ के संग्रहालयों की शोभा बढ़ा रहे हैं।

उदयपुर के विद्यापीठ में, अपने आरम्भिक जीवन से ही इन ग्रन्थों के संग्रह, संरक्षण, प्रकाशन आदि की ओर मेरी विशेष रुचि थी। अत इसका विभाग खोला गया और मेरे संयोजन में कार्य आरम्भ हुआ। मुझे आज यह व्यक्त करते हुए हर्ष है कि यह विभाग संस्था का एक प्रधान और सजीव अङ्ग बनकर कार्य कर रहा है। इसकी बहुमुखी प्रवृत्तियाँ उत्तरोत्तर विकसित होती जा रही हैं। हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज का कार्य बहुत बड़ा है, व्यापक और विस्तृत है। इसके लिये अनुभवी व्यक्तियों की आवश्यकता है। इस दृष्टि से मेरा यह कार्य एक प्रयोग मात्र था। फिर भी मैंने इससे बहुत बड़ा अनुभव लाभ किया। कई स्थानों से तो मुझे कई बार निराश लौटकर आना पड़ा। परन्तु मैंने उन लोगों को प्रसन्न करने और उनसे ग्रन्थ निकलवाने का विश्वास भी प्राप्त किया, और उसके परिणाम स्वरूप मैं लगभग १५०० ग्रन्थों के विस्तृत विवरण ले सका। प्रस्तुत रिपोर्ट में उन सब का विस्तार बहुत कठिन था। यद्यपि इस प्रकार की विवरणी के लिये मेरा एक भिन्न दृष्टिकोण है। विवरण व्यापक और विस्तृत होने चाहियें, जिससे ग्रन्थ पर एक आलोचनात्मक अध्ययन हो सके, उसमें सम्बन्धित भाषा, साहित्य,इतिहास, जीवन चरित्र, महत्वपूर्ण घटनाएँ, सामाजिक परिस्थितियों आदि की ओर भी आवश्यक संकेत हों, क्योंकि सभी ग्रन्थों का न तो प्रकाशन सम्भव है और न उनकी बार बार प्राप्ति ही। विवरण अधिकतर इसी दृष्टि से लिये गये थे। परन्तु, इतनी विस्तृत सामग्री के प्रकाशन की व्यवस्था भी तो एक समस्या है। अत मैंने लगभग ५०० रचनाओं का विवरण देना निश्चय किया।

प्रस्तुत रिपोर्ट का कार्य सन १९४२ के दिसम्बर में ही समाप्त हो गया था। १ सितम्बर १९४२ में मैंने इस कार्य को आरम्भ किया और पूरे चार महिने तक बराबर घूमने और विवरण लेने

का कार्य किया गया। इसका बहुत सा श्रेय मेरे उन सहयोगियों को है जिन्होंने मेरे साथ घूमकर विवरण उतारे और मेरे कार्य में सहायता प्रदान की। यद्यपि अपने क्रम में इस रिपोर्ट का प्रकाशन दूसरे भाग के रूप में होना चाहिये था, परन्तु इसका प्रकाशन आज पूरे दस वर्ष के पश्चात् हो रहा है। इसका बहुत कुछ श्रेय मेरे इस कार्य के सहयोगी भाई श्री गिरीधारीलाल शर्मा को है। एक प्रकार से उनका यह कर्तव्य ही था, क्योंकि इन विवरणों को लिखने के लिये उन्हें भी मेरे साथ घर-घर की खाक छानने के कटु अनुभव करने पड़े हैं। श्री पुरुषोत्तम मेनारिया को भी मैं भूल नहीं सकता। उन्होंने भी इसी प्रकार मुझे उतना ही सहयोग दिया और इसकी प्रेस प्रति बनाने में अथक परिश्रम किया। आज मुझे इस बात का गर्व है कि ये दोनों ही व्यक्ति अपने विषय में सलग्न और अपनी धुन के पक्के हो गये हैं। मेरे पश्चात् इस विभाग (शोध-सस्थान) का कार्य इन्होंने बारी बारी से सम्हाला और इसका विकास किया। अत ये दोनों ही बधाई के पात्र हैं। उन सज्जनों का मैं अत्यन्त आभारी हू जिन्होंने विश्वास के साथ अपने ग्रन्थों को मेरे सम्मुख लाकर रख दिया तथा मुझे उनसे विवरण उतारने दिये। श्री मोतीलाल मेनारिया के प्रति भी मैं अपना आभार प्रकट करना चाहता हूँ। समय-समय पर उनकी सम्मति ने मेरे कार्य में उत्साह-वर्द्धन किया। श्री अगरचद नाहटा ने इसके प्रकाशन में अपनी सम्मति से मुझे अनुग्रहित किया है। आचार्य जिनविजय का तो मुझ पर काफी ऋण है। एक शिष्य अपने गुरु को क्या धन्यवाद दे और क्या उनके प्रति आभार प्रदर्शन करे। अपने सतीर्थ भाई डा० भोगीलाल सांडेसरा से भी इसकी प्रस्तावना प्राप्त करने का सुअवसर बड़ौदा में रहने से मुझे प्राप्त होगया। उनका मैं आभारी हूँ।

दस वर्ष पश्चात् यह विवरणी पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत की जा रही है। जिस रूप में यह विद्वानों के सम्मुख प्रकाशित हो रही है, मुझे आशा है, उनके लिये यह उपयोगी सिद्ध होगी। मुझे सतोष है कि अनेकों छिपे हुए ग्रन्थों में से कुछ की सूचना विद्वानों के सामने आ रही है। प्रस्तुत विवरणी राजस्थानी भाषा और साहित्य के इतिहास की एक आधार भूमि बन सकती है। इसमें प्राचीनतम ग्रन्थ वि० स० १४१३ तक के मिलेंगे जो भाषा की दृष्टि से महत्वपूर्ण सिद्ध होंगे।

यों तो मेवाड़ में ही साहित्य की इतनी सामग्री बिखरी पड़ी है कि उसके आधार पर एक स्वतन्त्र ग्रन्थ तैयार किया जा सकता है, जिसके द्वारा मेवाड के सांस्कृतिक और साहित्यिक विकास का परिचय हमें मिल सकता है। महाराणा सांगा के जीवन काल तक (वि० स० १५८४) या यों कहिये कि वि० स० १६०० तक राजस्थान का इतिहास मेवाड़ का इतिहास ही है। पृथ्वीराज के साम्राज्य के ध्वस के पश्चात् मेवाड ही प्रधानत इतिहास में जीवित रहा है। उसके पूर्व भी मेवाड़ में साहित्य और कला का जो विकास हुआ है वह अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है। साहित्यिक अभिव्यक्ति

संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, देशभाषा सभी में हुई और इनके ग्रन्थों का कहीं तो उल्लेख मिलता है और कहीं कहीं ग्रन्थ भी प्राप्त होते हैं।

मेवाड़ में साहित्य, ज्ञान, विज्ञान और कला के विकास की सूचना हमें मेवाड़ और मेवाड़ के बाहर बिखरे हुए अनेकों शिलालेखों के द्वारा प्राप्त होती है। राजा नरवाहन के एकलिंगजी के शिलालेख (वि० सं० १०२८) से हमें ज्ञात होता है कि यहाँ स्याद्वाद (जैन), सौगात (बौद्ध) और वेदाङ्ग मुनि (आर्य) का महत्वपूर्ण शास्त्रार्थ हुआ था। यह शास्त्रार्थ मेवाड़ के बौद्धिक विकास की महानता का द्योतक है। राजा शालिवाहन के समय (वि० स० १०३०) का एक अन्य शिलालेख मेवाड़ की सांस्कृतिक, साहित्यिक और कला सम्बन्धी प्रगति की सूचना देता हुआ यह व्यक्त करता है कि राजा नरवाहन स्वयं संस्कृति, साहित्य और कला का महान पोषक और संरक्षक था[1]। एकलिंगजी की प्रशस्ति (वि० स० १०२८) का रचयिता अमर स्वयं एक महान् कवि था। यह इस प्रशस्ति से ही ज्ञात होता है। इसी युग में रामानुजाचार्य (वि० स० १०७३) का प्रभाव मेवाड़ पर पड़ा, जिससे आगे चलकर अनेकों नारायण (विष्णु) के उपासक साधु-महात्माओं ने इस भूमि को उपासना और भक्ति से आप्लावित किया। जैन और बौद्ध प्रभाव भी इस देश पर उस समय अवश्य रहे हैं यह केवल उक्त प्रशस्ति में दिये गये शास्त्रार्थ से ही नहीं विदित होता, अन्य प्रमाणों से भी होता है। प्रसिद्ध जैन साधु जोइन्दु (योगीन्द्) जो एक महान् विद्वान्, वैयाकरण और कवि था, संभवतः चित्तोड़ का ही निवासी था। इसका समय विक्रम की १० वीं शती था[2]। इसी समय रामसिंह नाम जैन कवि की भी रचना भाषा में मिलती है। रावल जैत्रसिंह के समय (वि० सं० १२७०-१३०६) में अहाड़ नगरी में दो प्रसिद्ध ग्रन्थों की रचना हुई। पहला 'ओघनिर्युक्ति' (वि० सं० १२८४ में लिखित) और दूसरा कमलचन्द्र द्वारा लिखित 'पाक्षिक वृत्ति' (वि० सं० १३०६)। अहाड़ नगरी में लिखित एक तीसरा ग्रन्थ (वि० सं० १३१७ तेजसिंह का समय) 'श्रावक प्रतिक्रमणसूत्र-चूर्णि' पाटण के भण्डार में सुरक्षित है। ये तीनों ग्रन्थ ताड़पत्र पर लिखित हैं। अहाड़ के समीप 'धूलकोट' में लिप्त 'तांबावती नगरी' २००० ई० पूर्व की सभ्यता की द्योतक है। रावल तेजसिंह के समय (वि० स० १३१७-१३२४) जैन-संस्कृति का मेवाड़ में प्रभाव जमने लगा। उस समय के प्रसिद्ध जैन मुनि रत्नप्रभसूरि का रावल तेजसिंह के मन्दिरों और उसकी माता पर काफी प्रभाव था[3]। रत्नप्रभसूरि स्वयं विद्वान् और कवि था।

---

१ जर्नल ऑफ द रॉयल एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल, जि० २२, पृ० १६६।

२ राहुल सांकृत्यायन-हिन्दी काव्यधारा पृ० २४०।

३ चित्तौड़ की गम्भीरी नदी के पुल के नीचे पाया गया शिलालेख (वि० स० १३२४)

वि० सं० १३३० में उसने जिस प्रशस्ति की रचना की[१] उसे उसके शिष्य पार्श्वचन्द्र ने शिला पर लिपिवद्ध किया, केल्हिसिंह ने उसे खोदा और सूत्रधार देल्हण ने उसे स्थापित किया। इससे प्रशस्तियों की रचना से लेकर स्थापन तक की कला का सकेत हमें मिलता है। बौद्धकालीन सभ्यता कल्याणपुर और चित्तौड़ के पास मझमिका नगरी के भूगर्भ में छिपी पड़ी है। शैव और वैष्णव सस्कृति का यह स्थान सदा से केन्द्र बना रहा। नागदा की मूर्ति और वास्तुकला इसका एक अच्छा उदाहरण है। चित्तौड़ के विजय-स्तम्भ और कीर्तिस्तम्भ जैन और वैष्णव स्थापत्य के कला स्तम्भ हैं।

लाखा और कुम्भा (वि० स० १४३९-१५२५) के युग में मेवाड़ सस्कृति, साहित्य, और कला की चरम सीमा पर था। यह युग मेवाड़ का स्वर्ण युग कहा जा सकता है। इसमें जिन सांस्कृतिक भावनाओं का सचार हुआ, साहित्य के विविध अङ्गों को उन्नति हुई और कलाओं-सगीत और चित्र, शिल्प, मूर्ति, स्थापत्य और युद्धकला भी का जो विकास हुआ उसने मेवाड़ को सामान्य भूमि से बहुत ऊपर उठा दिया, उसने ऐसी प्रबल और स्वतत्र सत्ता का रूप धारण किया कि पड़ोसी यवन आक्रमण कारी कभी सुख की नींद न सो सके। गोरखनाथ की गोरखपथी शाखा और उससे निकले हुए अघोर-पथ का मेवाड़ अखाड़ा था। उदयपुर के पास तीतरड़ी की प्रसिद्ध गुफा गोरखपथियों से सम्बन्धित मानी जाती है और उसके पास का गांव समीनाखेड़ा अब तक ओघड़ बाबा का अखाड़ा है। कदाचित गुरु भण्डार, चुणकरनाथ, चरपटनाथ, जालन्धीपाव धूँधलीमल, पृथ्वीनाथ, बालनाथ, ओघड़-पथ के प्रमुख प्रवर्तक मोतीनाथ, सती कपोरी, शभूनाथ, सिद्ध गवरी, सिद्ध घोड़ाचोली, सिद्ध हरवाली आदि में से कुछ यहाँ से अवश्य सम्बन्धित थे और कुछ ने अपनी रचनाओं का यहीं से प्रसार किया होगा। कुमा स्वय एक महान भक्त, कलाकार, सगीतकार संगीतज्ञ और संगीत शास्त्री, काव्यकार तो था ही, परन्तु साथ ही योग्य शासक, नीतिज्ञ और एक कुशल सेनानी तथा वीर योद्धा भी था। वह कलाकारों, विद्वानों, पडितों, सगीतज्ञों, कवियों, शिल्पियों, मूर्तिकारों, सैनिकों आदि का महान पोषक और नेता था। 'एकलिंग महाकाव्य' से ज्ञात होता है कि कुम्भा वेद, स्मृति, मीमांसा, उपनिषद, व्याकरण, राजनीति आदि का विद्वान था। संगीत पर उसके तीन ग्रन्थों–१ सगीत राज, २, सगीत मीमांसा ३ सूड़ प्रबन्ध का पता चलता है। उसके बनाये हुए कीर्त्तिस्तम्भ के एक टूटे शिलालेख से ज्ञात होता है कि वह शिल्प और वास्तू शास्त्र का भी विद्वान् था और कीर्त्तिस्तम्भों पर उसने स्वय एक ग्रन्थ रचा था-जिसको उसने जय और अपराजित के मतों को आधार माना है[२]। कुमा एक नाट्यकार भी

---

१ चीरवा में प्राप्त।

२ ओझा-उदयपुर राज्य का इतिहास भाग २, पृ० १११८। २९

था। उसने चार नाटक लिखे, जिनसे विविध भाषाओं–कर्णाटी, महाराष्ट्री, राजस्थानी, आदि पर उसके अधिकार का परिचय मिलता है। शासन व्यवस्था पर उसने 'सुप्रबन्ध' ग्रन्थ लिखा, 'चण्डी शतक' का अनुवाद किया और गीत गोविन्द पर 'रसिक प्रिया' टीका लिखी। अनेकों स्तुतिओं की रचना की जिन्हें वह स्वय विभिन्न रागों और तालों में गाता था। उसके समय में मण्डन सूत्रधार ने 'देवतामूर्ति प्रकरण', 'प्रासाद मण्डन,' वास्तु मण्डन, 'वास्तु शास्त्र', 'राजवल्लभ', 'रुपमडन', 'रुपावतार', 'वास्तुसार' की रचना की। उसके भाई नाथा ने 'वास्तुमजरी' तथा उसके पुत्र गोविन्द ने 'उद्धार धोरणी,' 'कलानिधि', और 'द्वारदीपिका' की रचना की। अत्रि और उसका पुत्र महेश उस समय के प्रसिद्ध प्रशस्तिकार थे। वैद्यक और ज्योतिष के ग्रन्थों की भी रचना हुई १। इस समय तक यहीं कहीं शार्ङ्गधर ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'शार्ङ्गधर-सहिता और 'सगीत रत्नाकर' समाप्त कर दिये थे (वि० स० १४२०)। 'हम्मीर रासौ' और हम्मीर काव्य' की भी इस समय तक रचना हो चुकी थी२। परन्तु,इनकी खोज करना एक बहुत बड़ा कार्य है। कुभा के पिता मोकल स्वय विद्यानुरागी थे। मोकल के राज्य (१४७८–१४६०) में कविश्वर महेश ने कवि के रूप में, प्रशस्तिकार के रूप में, दर्शन शास्त्र के विद्वान् के रूप में सम्मान प्राप्त किया। मोकल के समय के शिलालेखों से स्पष्ठ है कि कविराज वाणीविलास योगीश्वर और एकनाथ उसके प्रसिद्ध कवि, वीसल प्रसिद्ध शिल्पकार और फना और मन्ना प्रसिद्ध सूत्रधार थे। मोकल के पिता लाखा से लेकर कुभा तक भोटिङ्ग भट्ट अपने काव्य और प्रशस्तियों के लिये प्रसिद्ध रहे। रावल समरसिंह (वि० स०१३५८) का प्रसिद्ध कवि वेदशर्मा था।

विक्रमसवत् १३०० से १५०० तक का युग सामाजिक और धार्मिक क्रान्ति का युग था। धार्मिक अधिकार किसी वर्ग विशेष का नहीं, मनुष्य मात्र का है। कोई भी कर्म हेय नहीं है, वह भगवद्भक्ति के मार्ग में बाधक नहीं है। अपना कर्म करते रहकर ही भगवान् की प्राप्ति करना इस युग की प्रधान विशेषता थी। नामदेव ने छीपा-कर्म करते हुए, कबीर ने जुलाहा-कर्म करते हुए, सेना ने नाई का काम करते हुए, अपनी भक्ति और साधना का प्रभाव जनता पर डाला। इसी प्रभाव ने धन्ना जैसे एक जाट कृषक को राजस्थान का महान् भक्त बनाया (वि०स० १४७२), रैदास जैसे चमार को (वि०स०१४८५–१५८५) भक्तों के ऊँचे आसन पर आरुढ़ किया, पीपा को (वि०सं०१४८०–१५३०) राज महल से निकालकर द्वारिका में भिक्षुक का काम कराया। और तो और, मेवाड़ के राजमहल के अन्त पुर की मर्यादा तोड़कर राजराणी मीरॉं को

---

१ ओझा–उदयपुर राज्य का इतिहास भाग २ पृ० १११८–२६।

२ जैसा कि 'शार्ङ्गधर' से पता चलता है।

बाहर निकाला और साधुओं और सन्तों के बीच बैठाकर गान और नृत्य करवाया। धन्ना, पीपा, रैदास और मीराँ मेवाड़ के अमर भक्त हैं, मोतीनाथ अघोरियों का महान प्रवर्त्तक है, शार्ङ्गधर महान कवि और वैद्य है, कुंभा भक्त, कवि,कलाकार, विद्वान और योद्धा है, भोटिंग भट्ट इस युग का महान विद्वान्, कवि और प्रशस्तिकार है, सूत्रधार मण्डन शिल्पकला का सूत्रधार है। इस प्रकार धन्ना, पीपा, रैदास, मोतीनाथ, शार्ङ्गधर, कुम्भा, भोटिङ्ग भट्ट, मण्डन सूत्रधार और मीराँ, इस युग के 'मेवाड़ के नवरत्न' हैं, जिसकी संतति है सांगा और प्रताप जैसे युद्धवीर देश भक्त !

इस युग में संस्कृत का अधिक महत्व था, पर इन व्यक्तियों ने यह भी प्रमाणित कर दिया कि देश भाषा का भी उतना ही महत्व है। भक्तिकाल में भावनाओं के परिवर्तन के साथ साथ भाषा का भी परिवर्तन देख पड़ता है। राजस्थानी पर व्रजभाषा का प्रभाव आरम्भ होता है। मीराँ की भाषा में ये लक्षण स्पष्ट रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। पर चारण भाटों की भाषा और साहित्यिक परम्परा भी इसी युग में स्वतन्त्र अस्तित्व धारण करती हुई दिखाई पड़ती है। इसी युग मे 'डिंगल गजब डोकरो डाकी, पिंगल पूगल नाजुक नार' की ध्वनि (१५७५ के आसपास) सुनाई पड़ती है और राजस्थानी की दो शैलियाँ डिंगल-पिंगल हमारे सन्मुख आती हैं। आगे चलकर दादू-पंथ, निरंजनपथ, रामस्नेही पथ आदि अनेकों पथों ने मेवाड़ के सांस्कृतिक विकास में योग दिया। रामस्नेही का जन्म तो मेवाड़ ही में हुआ है। इसके आदि गुरु संतदास (सं०१८०६ में मृत्यु) मेवाड़ के दांतड़ा गांव के ही निवासी थे। साहित्य-कोटि के अनेकों कवि मेवाड़ में हो गये हैं। साँगा (सं०१५६६) से महाराणा सज्जनसिंह (सं०१९४१) तक मेवाड़ में अनेकों साहित्यकार, संत, साधु, भक्त, पण्डित आदि हो गये हैं जिन्होंने मेवाड़ के सांस्कृतिक विकास में अपनी ओर से कुछ दिया है। इनमें से कुछ की ही रचनाएँ अभी तक हमें उपलब्ध हुई हैं और कुछ की सूचना मात्र मिलती हैं। 'रायमल रासौ', 'हरिवंश महाकाव्य' (संस्कृत), सौदा बारहठ जमना (सं०१५६६–८४) और केसरिया चारण हरिदास (वि०सं०१५६६–८४) पीथा आशिया (सं०१६२८–५३) की रचनाएँ आज अप्राप्य हैं। प्रताप के पुत्र अमरसिंह ने बिखरे हुए रासौ को एकत्रित कराया (१६६०), [१] पर अमरसिंह की काव्य-रचनाएँ अप्राप्य हैं। चारण मल्ल (सं०-१६७६-८४) और बारहठ गोविन्द (सं० १६८४-१७०६) के कोई नाम तक नहीं जानता। किसी दयालदास ने राणा रासो (सं० १६८० के लगभग) काव्य की रचना की, पर उसका कहीं पता नहीं। भींडर के जैन उपाश्रय की परम्परा से सम्बन्धित पन्यास (प०=पन्यास) दौलत विजय (दलपत) ने प्रसिद्ध 'खुम्माण रासौ' की रचना (वि० सं० १७२५ के लग भग) की।

---

१ देखो विवरणी पृ० ६८, पंक्ति १६।

महाराणा राजसिंह के साथ विष द्वारा मारे जानेवाले[१] और महाराणा द्वारा 'भाई' माने जानेवाले दधिवाड़िया आशाकरण की वीरगाथाएँ अब तक अप्राप्य हैं। इसी युग में कम्मा नाई भी कोई कवि हो गया है, जिसने उक्त महाराणा को अपने पूर्वजों के गौरव का स्मरण दिलाकर उन्हें दिल्ली जाकर बादशाह के सन्मुख झुकने से रोका[२]। किशोरदास चारण ने 'राजप्रकाश' (स० १७१६) और मान कवि (जैन कवि) ने 'राजविलास' (सं० १७३५-३७) की रचना की। इसी समय लाल भट्ट ने भी महाराणा राजसिंह पर १०१ छंदों का एक काव्य रचा। रणछोड़दास का 'राज प्रशस्ति महाकाव्य' भारत का सब से बड़ा शिलालेख माना जाता है। यह रचना भी राजसिंह के समय की है। जोगीदास चारण कृत 'हरिपिंगलप्रबन्ध' (स० १७४४), मुरली कृत 'अश्वमेध' (स० १७५५) और 'त्रियाविनोद' ख्याति में आचुके हैं। कविराज करणीदान ने महाराणा सग्रामसिंह द्वितीय (स०१७६७-९० के राज्य में किसी काव्य की रचना की। कवि नन्दराम कृत 'शिकार भाव' (स०१७९०) और 'जगविलास' (सं०१८०२), महाराणा जगसिंह के मन्त्री देव करण कायस्थ कृत 'वाराणसी विलास' भी साहित्य की उत्तम कोटी की रचनाएँ हैं। रामकृष्ण और नाथूराम महाराणा जगतसिंह द्वितीय (वि०सं० १७९०–१८०८) के प्रसिद्ध प्रशस्तिकार थे और नेकराम प्रसिद्ध कवि, जिसने 'जगद्विलास' की रचना की। इसी समय दाँतड़ा में प्रसिद्ध सन्तदास हुए, जिनके शिष्य कृपाराम की प्रेरणा से रामचरणदास ने 'रामस्नेही पंथ' की स्थापना की। विक्रम सवत् १८१७ में सोमेश्वर कवि ने 'राज्याभिषेक काव्य' (संस्कृत) की रचना की और उसी परम्परा को वैकुण्ठ पल्लीवाल ने 'अमरसिंह राज्याभिषेक काव्य' (सं १८१७) की रचना में निभाया। पडित मङ्गल के 'अमर नृप काव्य' की रचना भी इसी समय हुई। महाराणा अमरसिंह ने (स १८१७–१८२९) 'रसिक चमन' लिखा इसी समय किसी अज्ञात कवि ने 'सुदामा चरित्र' की रचना की, जो नरोत्तमदास के 'सुदाम चरित' से सर्वथा भिन्न है।

महाराणा भीमसिंह के समय तक (स० १८३४–१८८५) मेवाड में कृष्ण भक्ति का पूर्णत: प्रचार हो चुका था। महाराणा भीमसिंह की कृष्ण भक्ति सम्बन्धी कुछ कविताएँ भी प्राप्त होती हैं। इस समय तक व्रज भाषा और राजस्थानी का समन्वय हो चुका था। इसी समय फतहकरण चारण, फतेराम वैरागी, कविआ करणीदान, किशना आढा, आशिआ मानसिंह, अपनी रचनाओं से प्रसिद्धि में आये। फतहकरण राजस्थानी का गद्य–पद्य लेखक था। पर उसकी केवल 'पचाख्यान' (टीका) की सूचना ही मिलती है। किशना आढा के तीन ग्रन्थ–भीमविलास, चण्डिशतक,

---

१ महाराणा यश प्रकाश–भूसिंह शेखावत

२ राजनगर के महल में इसका एक पद खुदा हुआ मिलता है।

घुवर जस प्रकाश उपलब्ध है। आशिआ मानसिंह ने डिंगल में किसी रूपक की रचना थी [१]। इसी मय संत परम्परा में दीन दरवेश का एकलिंगजी में प्रादुर्भाव हुआ, जिनके जीवन काल के विषय में न्त-साहित्य के विद्वानों में भिन्न-मत हैं। दीन दरवेश की रचना राजस्थानी में है परन्तु उस पर कुछ डिंगल का प्रभाव अवश्य है। इसी समय ब्रजभाषा के प्रसिद्ध कवि पद्माकर का उदयपुर में आगमन हुआ, जिसका प्रभाव यहाँ के साहित्य पर अच्छा पड़ा। उन्होंने यहीं पर 'गनगौर' पर रचना की। ब्रजभाषा ने राज दरबार में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया। इसका परिणाम महाराणा जवानसिंह हैं। इनकी रचनाओं से स्पष्ट ज्ञात होता है कि ये पूर्ण अधिकार के साथ ब्रजभाषा में रचना करते थे। वि० स० १८८७ में उत्पन्न कवि गुमानसिंह (बाठल्डा) की रचना ब्रजभाषा में आध्यामिक विषय की रचना का उत्कृष्ठ उदाहरण है।

महाराणा सज्जनसिंह के समय तक मेवाड़ में ब्रजभाषा का विकास अपनी चरम सीमा पर पहुँचता हुआ देख पड़ता है। इसके पश्चात् साहित्य की राजकीय परम्पराएँ भी टूटने लगती हैं और साहित्य एक स्वतन्त्र अस्तित्व प्राप्त कर लेता है। महाराणा सज्जनसिंह का समय प्राचीन संग्रह और वर्तमान विकास का युग था। इसका श्रेय महाराणा के गुरु ज्ञानी बिहारीलाल को है, जो संस्कृत, हिन्दी, फारसी और अँग्रेजी के विद्वान थे। इनके कारण महाराणा की प्रवृत्ति बदली और वे साहित्य, कला, इतिहास, विद्वानों के प्रेमी और प्रशंसक ही नहीं आश्रयदाता भी बने। वे स्वयं काव्य के मर्मज्ञ थे। उन्होंने हस्तलिखित ग्रन्थों, प्राचीन चित्रों और विविध ऐतिहासिक सामग्रियों के संग्रहालयों की स्थापना की। कवि सम्मेलनों का आयोजन किया। आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक भारतेन्दु का इन्होंने मेवाड़ में भव्य स्वागत किया। भारतेन्दु के प्रभाव से सरकारी कार्यालयों और अन्य विविध विभागों के नाम हिन्दी में दिये गये। प्रसिद्ध इतिहासकार कविराजा श्यामलदास, कवि ऊजल फतहकरण, बारहठ किशनसिंह, स्वामी गणेशपुरी उनके प्रसिद्ध कवि थे। वे स्वयं एक सिद्धहस्त कवि और गायक थे। स्वामी दयानंद का प्रभाव भी मेवाड़ पर पड़ा। महाराणा ने उन्हें अपना गुरु स्वीकार किया। महाराणा ने मेवाड़ में पार्लियामेन्ट के ढंग की शासन व्यवस्था की भी घोषणा की [२], परन्तु अँग्रेजी शासन नीति के कारण वह सफल न हो सकी।

मेवाड़ के साहित्यिक और सांस्कृतिक विकास का संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया गया है। जिन

---

१ श्रीओझाजी के संग्रह में इसकी प्रति थी।

२ महाराणा सज्जनसिंह की एक प्राचीन प्रकाशित घोषणा के आधार पर।

ग्रन्थकारों का और ग्रन्थों की सूचना इसमें दी है वे केवल नाम मात्र हैं। हमें उन सबकी खोज तथा अध्ययन कर, उनका जीवन के साथ मूल्याङ्कन करना होगा।

हिन्दी-विभाग
विश्व विद्यालय, बड़ौदा
१५-१२-५२

उदयसिंह भटनागर

लेखकानुक्रमणिका

ग्रन्थानुक्रमणिका

---

* वार्ताओं के अतिरिक्त इन ग्रन्थो के रचयिता अज्ञात हैं।

* वार्त्ताओं के अतिरिक्त इन ग्रन्थों के रचयिता अज्ञात हैं ।

* वार्त्ताओं के अतिरिक्त इन ग्रन्थों के रचयिता अज्ञात है।

---

* वार्त्ताओं के अतिरिक्त इन ग्रन्थों के रचयिता अज्ञात हैं।

---

* वार्त्ताओ के अतिरिक्त इन ग्रन्थों के रचयिता अज्ञात हैं।

* वार्त्ताओं के अतिरिक्त इन ग्रन्थों के रचयिता अज्ञात हैं।

* वार्त्ताओ के अतिरिक्त इन ग्रन्थों के रचयिता अज्ञात हैं।

---

* वार्त्ताओं के अतिरिक्त इन ग्रन्थों के रचयिता अज्ञात हैं।

---

* वार्ताओं के अतिरिक्त इन ग्रन्थों के रचयिता अज्ञात हैं ।

* वार्त्ताओं के अतिरिक्त इन ग्रन्थों के रचयिता अज्ञात हैं।

* वार्त्ताओ के अतिरिक्त इन ग्रन्थो के रचयिता अज्ञात है।

१	कुल ग्रन्थ संख्या	५०९
२	कुल ग्रन्थकार संख्या	३२६
३	अज्ञात लेखकों के ग्रन्थ	७६
४	अज्ञात लेखकों की वार्त्ताएँ	९२
५	ज्ञात लेखकों की वार्त्ताएँ	३
६	काव्यशास्त्र-ग्रन्थ	३९
७	महत्वपूर्ण साहित्यिक ग्रन्थ	६२

"प्रस्तावना"

साहित्य-संस्थान की ओर से श्री उदयसिंह, भटनागर द्वारा सम्पादित 'राजस्थान मे हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज भाग ३' का स्वागत करते हुए मुझे हर्ष होता है। इसके प्रथम दो भाग राजस्थान के प्रसिद्ध साहित्य सशोधक श्री मोतीलाल मेनारिया तथा श्री अगरचंद नाहटा ने तैयार किये हैं। साहित्य के इतिहास की महत्त्वपूर्ण सामग्री राजस्थान विश्व विद्यापीठ के अन्तर्गत 'शोधसंस्थान' द्वारा प्रकाशन की यह योजना प्रशसनीय है। राजस्थान के प्राचीन साहित्य भडारों में सचित कतिपय महत्त्वपूर्ण रचनाओं की सूचना प्रस्तुत विवरणों द्वारा विद्वानों को प्राप्त होगी। इसमें मेवाड़ के कतिपय प्राचीन ग्रन्थ सग्रहालयों का उपयोग कर सम्पादक ने यह ग्रन्थ तैयार किया है। इस संग्रह से पश्चिम भारत के मध्यकालीन साहित्य की प्रगति के अप्रकाशित ग्रन्थों से उद्धृत नमूनों का लाभ विद्वानों को प्राप्त होगा। परन्तु इस 'माला' का नाम 'राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज' किस उद्देश्य से रखा गया-यह मेरी समझ में नहीं आता? इसमे अधिकतर व्रजभाषा तथा जूनी राजस्थानी-गुजराती के ग्रन्थों का ही विवरण है। यदि इस 'माला' का नाम 'राजस्थान में प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज' रखा गया होता तो वह अधिक व्यापक अर्थ का द्योतक होता। राजस्थान और गुजरात में सग्रहीत हस्तलिखित ग्रन्थ हजारों नहीं लाखो की सख्या में मिलेंगे। अब प्रकाशित ग्रन्थों का प्रकाशन तथा इस प्रकार के शोधपूर्ण विवरण का प्रकाशन महत्वपूर्ण और प्रशसनीय है। सम्पादक तथा 'साहित्य सस्थान' इस महत्वपूर्ण प्रवृत्ति को चालू रखेंगे-ऐसी मैं आशा रखता हूं।

भोगीलाल ज. सांडेसरा एम. ए. पी. एच. डी.
युनिवर्सिटी प्रोफेसर तथा अध्यक्ष—
गुजराती-विभाग,
म० स० विश्व विद्यालय, वड़ौदा

अध्यापक निवास
बडौदा
६-२-१६५३.

राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज

(तीसरा भाग)

(१) अध्यात्म, धर्म, दर्शन, भक्ति, सम्प्रदाय, पंथ आदि··· ।

१ अजारी सरस्वती। रचयिता– शान्तिकुशल। आकार– ६.७"×४.२"। पत्र–संख्या २। इसमे जैन शैली का एक पँच रंगा सरस्वती का चित्र है। लिपिकार- अजबकुशल। विषय– अजारी सरस्वती की प्रार्थना। छंद–संख्या ३७।

हेमा चारिज ने पणि तू ठी । कालिदास ने तू हीज तू ठी

अनुभूति सन्यासी लाधी । मुनि लावण्य समें तूँ साधी ॥१०॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(२) अध्यात्म प्रकाश। रचयिता– सुखदेव मिश्र। आकार–८"× १०"। पत्र–संख्या– ३१। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तियाँ और प्रति पक्ति में १८ अक्षर हैं। छद–(दोहा, सोरठा, कवित्त कुण्डलियाँ, सवैया आदि) संख्या २५१। रचनाकाल–संवत् १७५५ आसोज शुक्ला ११ बुधवार।

आदि भाग–

कवित्त

स्थावर जगम जीव जिते जग भाँतिन भाँतिन वेष धरे हैं ।

नांमहि सचिदानद स्वरूप श्रातम एक प्रकाम करे हैं ॥

ता बिन जानत सिंधु सो लागत जानते गोपद तुल्य तरे हैं ।

वंदति ताहि कहै सुखदेव सो ब्रह्म सदा सब ही ते परे हैं ॥

अन्तिम भाग–

दोहा

आगम तत्र पुरान पुनि, पच रीति मति जान ।
सौंचि आपने पख्य को, जग में डारत श्रांन ॥२४१॥

[अन्ताणी सग्रह]

(३) **अनभै प्रबोध** । रचयिता– गरीबदास । इसकी दो प्रतियाँ है । पहली प्रति । आकार–६ ५″ × ४″ । पत्र-संख्या १३ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तियां और प्रत्येक पंक्ति में २५ अक्षर है । छन्द–सख्या–१४१ ।

आदि भाग–

चौपाई

ॐ प्रणम ॐ गुरु के पाई । मति बुद्धि ग्यांन देहु समझाई ॥
जासौं बरनो प्यंड ब्रह्मंडा । सातो सायर अर नव खंडा ॥१॥
आदि अनादि जोति अपार । तायें प्रगट्यौ ॐ कार ॥
ॐ कार तें पाँचों तत । राजस सातिग तामस मत ॥२॥
धरती पांणीं अगनि मिलाऊँ । पवन अकास ए पाँचों नाऊँ ॥
राजस ब्रह्मा विष्णु कै स्वांति । तामस महादेव की भाँति ॥३॥

अन्तिम भाग–

दोहा

गरीबदास घटि ऊचरी, बांणी निर्मल सार ।
जे यहु गावै सु णैं, तिनके कटैं बिकार ॥१४०॥

अनभै प्रमोध उचारता विचारत। पापेन लिपते पुर्नि न हरंते ब्रह्म समाधि गच्छन्ते ॥ ॐ नमो गुरु दादू पादूका प्रणाम ॥ १४१ ॥

[चुन्नीलाल दादूपंथी,उदयपुर]

दूसरी प्रति–यह ७२सन्तो के सग्रहवाले गुटके में है । देखो ग्रन्थ–सख्या ३०।

[केवलराम दादूपन्थी]

(४) **अनुभव प्रकाश** । रचयिता– महाराजा जसवन्तसिंह, जोधपुर। आकार–६″ × ५¾″ । पत्र-संख्या १५ । पद्य-सख्या २५ । लिपिकाल-सम्वत् १७३४

[अन्ताणी संग्रह, विद्यापीठ, उदयपुर]

(५) **अपरोक्ष सिद्धान्त** । रचयिता-महाराजा जसवन्तसिंह, जोधपुर, आकार-६" × ५¾" । पद्य-सख्या १०० । लिपिकाल स० १७२४ ।

[अन्ताणी सग्रह, विद्यापीठ, उदयपुर]

(६) **अवतार चरित्र** । रचयिता-नरहरिदास । पहली प्रति । आकार-१३" × ८¾" । पत्र-संख्या १६४ । प्रत्येक पृष्ठ पर २७ पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति मे २२ अक्षर हैं ।

[अन्ताणी सग्रह, विद्यापीठ, उदयपुर]

दूसरी प्रति-श्री नाथूसिंह राव, सलुम्बर

(७) **आनन्द विलास**– । महाराजा जसवन्तसिंह, जोधपुर । आकार ६" × ५¾" । पत्र-संख्या ३४ । पद्य-संख्या २०२ । लिपिकाल सं० १७२४—

दोहा

सवत् सत्रह सै बरष, ता ऊपर चौवीम ।
सुक्ल पख्य कातिक विदै, दसमी सुत रजनीस ॥२०२॥

[अन्ताणि संग्रह, विद्यापीठ, उदयपुर]

✓(८) **आणंदार्णवसार**– । रचयिता-रतनदास । आकार-११½" × ६" । पत्र-संख्या ७५ । प्रत्येक पृष्ठ मे १५ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति मे १२ अक्षर हैं ।

विषय-फुटकर रचनाएँ । लिपिकाल तथा रचनाकाल सं० १६३४
आदि भाग–

कवित्त

विद्या गुण मडित जे पडित वदत ऐसें
सुधा को निवास पाँच ठौर मे प्रमानियें ।
सागर में चन्द्रमा मे अधर में तियानिके मे
व्याल के बदन माहि देवलोक मानिये ॥

खारी छीन पति-मरै डसत गरल चढै
होत है निपात बात छिपी नाहिं जानिये ॥
कठ हरि भक्तिनि के बसत सदैव सुधा
भनत रतनदास ठीक चित्त मानिये ।

अन्तिम भाग-

मालिनी छन्द

अखिल मल निवास, पाणिनात सुपास ॥
कनिक गिरि निवास, सूर्य कोटि प्रकास ॥
भवतु भव निवास, मालति तीर वास ॥
गणपति ममि वदे मानसे राजहस ॥

विशेष-इस ग्रंथ के साथ 'गोविन्दाष्टक' और 'गंगाष्टक' दो रचनाएँ और हैं।

[ब्रजलाल साधु, श्रीधरजी का मन्दिर, भींडर]

(६) इग्यारह अंग स्वाध्याय। रचयिता-जसविजय उपाध्याय। आकार-१०″×४½″। पत्र-सख्या ६। पद्य-सख्या ७५। रचनाकाल स० १७२२। विषय-जैन धर्म वार्त्ता।

आदि भाग-

आचाराग वड कह्यु लो अग इग्यार मझारि रे।
चतुर नर अठार हजार पद जिहां रे लो दाख्यो मुनि आचार रे ॥

अन्तिम भाग-

विपाक सुत अग नास जाय अग इग्यारे साभल्यारे
पोहता मन ना कोडि।
टोडरमल जीत्यूं रे। गई आपदा सपदा मिली रे
आवी होडा होडि।
मात वकाई मगल पिता रूपचद भाई उदार।
माणिक आप कांइ सांभल्यारे विध सूं अग इग्यार ॥
युग युग मुनि विधु पछ्छरे श्री जसविजय उवझाय।
सूरति चोमांसू रही रे कीधो ए सुख साय ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, कसारागली, उदयपुर]

(१०) **ईश्वर विवाह** । रचयिता–देवीदास । आकार ७″ × ५′५″ । पत्र-संख्या ६ ।

आदि भाग–

सकर सारदा ने सीस नामु ।
गग्वा गणपति जो'जो मुज सामु ॥
सारदाये ते समरथ जाणी ।
आइ आपो अनुपम वाणी ॥
परमोही ने पूछी वात ।
काम करी परण्या ते सभुंनाथ ॥
वीवा वगते करी वपाणौं ।
ये भो देवीदासे नव जाणौं ॥
प्रभुजी ना नाम पुछावो ।
वीवा वगते करीन गावो ॥

इसके साथ 'पद्मावती की वार्त्ता' भी संग्रहीत है ।

[कविराव मोहनसिंहजी, भटियाणी चौहटा, उदयपुर]

(११) **उपदेश चिन्तामणि**– रचयिता-सुन्दरदास । यह रचना १३६ संतों के संग्रहवाले गुटके में है । पत्र-संख्या– ५ । पद्य-सख्या ७६ ।

आदि भाग–

दोहा

काल चिंतामणि ए कही, अब माखूँ उपदेस ।
लोक चतुर दस बरण ह, रहो विधि ज्ञान प्रदेस । १ ।

अन्तिम भाग–

काया छूटसी झरलाय । पंछी वोलता उड़ जाय ॥
मरणा मोत के आगै । मूरख काई नही जागै ॥ ७७ ॥
राम ही साजनो कर चेत । उमी वाहां हेला देत ॥
मजरे काईसा करतार । मुगती मालका मडार ॥ ७८ ॥
मजीयां उघरेगा प्रान । एह उपदेस मेरा मान ॥
भूला क्यूँ न हरी कूँ ध्याय । तेरा वापका क्या जाय ॥ ७६ ॥

[रामद्वारा धोली बावडी, उदयपुर]

(१२) **उपदेस छत्तीसी** । रचयिता–जिनहर्ष । आकार–२″×४'५″ पत्र–सख्या ४। पद्य–संख्या ३६। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति मे ३५ अक्षर हैं।

आदि भाग–

सकल सरुप यामें, प्रभुता अनूप भूप
भूप छाया छाया मांहैं, नए न जगदीस ज्यू ।
पुण्य हैं न पाप हैं न,सीत हैं न ताप हैं न
जाप के प्रताप कटे, करम अनीस ज्यूँ ॥
ज्ञानको अगज पुञ्ज, सुख वृम्य को निकुज
अती से चोतीस फुनि, बचन पेंतीस ज्यूँ ।
एसो जिन राज जिन हरष प्रणमि उपदेस की
छत्तीसी कहु सवैये, छत्तीस ज्यू ॥

अन्तिम भाग–

अधम न करी मान, मान किये होवे हाण
मान मेरी सीख मान, सुख ग्राही मांन रे ।
मानते रावण राज, लका सो गयो त्रिमाज
कियों है अकाज गई सब जांन रे ॥
दुर्जोधन मान करी, हारी सब धराहरी
मांनते गयो है मु ज चातुरी की खान रे ।
कहे जिनहर्ष मान, मन में न आण मान
आणे तो विसाणभद्र जिसो मान आण रे ॥

[माणिक्य ग्रथ भण्डार, भींडर]

(१३) **उपदेस बावनी** । रचयिता–किशन कवि। (यह १३७ सतों की रचनाओ के गुटके में सग्रहीत है) पत्र–सख्या केवल १८ है। ग्रन्थ अपूर्ण है। इस मे ६२ पद्य थे परन्तु प्रथम तीस पद्य अप्राप्य है। ऐसा मालूम होता है कि ये तीस पद्यवाले पत्र, कागज बहुत पुराना होने से तडक कर निकल गये हैं। इसी गुटके में इन गायब पत्रो के दूसरी ओर के कुछ पत्र वर्तमान हैं। और कुछ, जिन पर मीरा के भजन थे, गुम गए हैं। प्रत्येक पृष्ट पर सात–आठ पक्तिया और प्रति पक्ति में १५-१८, अक्षर है। अक्षर बारीक और नागरी लिपि मे अङ्कित हैं। ग्रथ का विषय

धार्मिक है, जिसमे ससार के माया-मोह से दूर रहने का उपदेश दिया गया हैं। ग्रंथ के अन्तिम भाग से ज्ञात होता है कि कवि ने अपनी बहन रतनबाई की मृत्यु पर सं० १७०८ विजया दशमी को उसकी पुण्य स्मृति मे इस ग्रंथ की रचना की।

अन्तिम भाग-

श्री पे मग राज लोग जस रस ताज गुरु
तिनकी क्रिया जू की विताई पाई पावनी।
समत् सतरै से अरु आठे बिजै दसमीं कू
ग्रथ की समापति भई है मन भावनीं॥
माधवी ग्यान मा की जाई श्री रतन बाई
तज्यौ देह तातैं एह रची पद चावनी।
मत की ममत लीन्हीं तत्व ही पैं रुचि दीन्हीं
वाचिक किसन कीन्हीं उपदेस बावनी॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(१४) **एकादस की ध्याई**। रचयिता-चतुरदास। आकार-३″ x २.४″ पत्र-संख्या १७। प्रत्येक पृष्ठ पर ११, १४ पक्तियाँ और प्रत्येक पक्ति मे २२, २५ अक्षर हैं। इसमे ७, ८, ९, और १० अध्याय है। सातवें अध्याय में ७७ चौपाइयाँ और २ दोहे हैं। आठवे अध्याय मे ५५ चौपाइयाँ, ९ वे अध्याय में ३९ चौपाइयाँ और १ दोहा और १० वें अध्याय मे ५० चौपाइयाँ और १ दोहा है।

आदि भाग-

अथ एकादस की ध्याई लिख्यते। श्रीभगवानउवाच -
उधव सं कही देऊँ ग्याना। सत्त कहत हू नाही आंना॥
या जग साध भए है जेते। आप ही आप उधरे तेते॥ १॥
आप ही भलो बुरो पहिचानै। छाडे बुरो भले कूँ ठाने॥
गरु आपनूं आपही होई। पसु पछी मानै ज्यौं कोई॥ २॥

अन्तिम भाग-

सो दसि जनपद एक ही, ध्यावे जग तर बंस।
तो (ता) सन मुख जगनाथ जन, मैं ध्याऊँ पंडस हस॥ १॥
सोस पग पाछो परे, सनमुख जग तर बंस।

तासूं में जगनाथ जन, पाछो पैडम हंस ॥५०॥

यह रचना २० सन्तों की रचनाओं के गुटके में है।

[रामद्वारा, धोली बावडी, उदयपुर]

(१५) **ओधवजीना संदेसा** । रचयिता–रघुनाथ । आकार–७" × ५.५" छन्द–संख्या २० । लिपिकाल–संवत् १९१८ ।

अन्तिम भाग–

अवगुणी आनल घरसो अवला री कना ।
वाक घणो पण वीने वीसारो राय जो ॥
आकाते तेडी ने के जो अेटलु रगुनाथ प्रभु पधारे घेरजो ।
ओधवजी अमे साथे रसीयो रूमणे ॥ पद २० ॥
ओधवजी अलबेली कोरे आवसे

(अपूर्ण)

[कविराव मोहनसिंहजी के संग्रह मे]

(१६) **करुणा बत्तीसी** । रचयिता–माधौराम । आकार–६" × ४.८" । पत्र-संख्या १७ । प्रत्येक पृष्ट पर ६ पक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति मे १३, १५ अक्षर है । छद–सख्या ३५ । लिपिकाल स० १६०० अश्विन शुक्ला ५ गुरुवार । लिपिकार-भट चयनराम । विषय–कृष्ण–भक्ति, इस के साथ 'नसीतनामा' (१) 'अनेकार्थ-मंजरी' (२) 'पाण्डव–यशेन्दु–चन्द्रिका' (३) सग्रहीत है। अनेकार्थ मजरी और पाण्डव–यशेन्दु–चन्द्रिका अपूर्ण हैं।

आदि भाग–

कवित्त

गिरि कौं उठाए व्रज गोप कौं वचाय लये
अचल तैं उवारे पुन वालक मजारी कौं ।
गजकी गरज सुनि ग्राहतैं छुडाय दयो
राख्यो व्रत नेम धर्म पडव की नारी कौं ॥
राखे गज घटा तल वालक विहगम कौं
गख्यो पन भागत मे भीषम ब्रह्मचारि कौं ।

त्रिविधि ताप हारी निज मंतन सुखकारी
मोहि तो भरोसो भारी ऐसे गिरिधारी कौं ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

करौं अपराध घोर सांझ भोर भोर नित
अति ही कठोर मति वोर को निकाम हूं ।
आतुर अधीर तातैं धीरज धरत नाहीं
ऊंच नीच बोली ठोली बकौं आठौं जामहूं ॥
अरचा न जानु कछु चरचा हू न बूझत हौं
कभू हेत प्रीत सौं न लेत हरि नाम हू ।
सबै तकसीर बलवीर मेरी छिमा करौं
कहे माधौराम प्रभु तिहारो गुलाम हू ॥ ३४ ॥
या करुना बत्तीस कौं, पढे सुने नर नारि
ताके सब दुख दु दु न्दौं काटे कृष्ण मुरारि ॥ ३५ ॥

[कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(१७) **कबीर की साखी** । रचयिता-कबीर । आकार-६″ × ६″ । पत्र-संख्या २ । पद्य-संख्या ३४ । प्रति अपूर्ण है । कबीर की अन्य कई रचनाएं मिली हैं जिनका यथा स्थान उल्लेख किया गया है । इस प्रति के केवल दो ही पत्र हैं । प्रथम दो पत्र जिन पर २१ साखिया थीं, अप्राप्य हैं । इन दो पत्रों पर २२ से लेकर ५६ तक साखियां हैं ।

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भीण्डर]

(१८) **कबीर की रमैणी** । रचयिता-कबीर । आकार-६.७″ × ५.८″ । यह प्रति एक दो-सौ ग्रन्थों के चोपडे में संग्रहीत है, जिसका उल्लेख आगे किया गया है । पत्र-सख्या ४ । छन्द-संख्या ३७ ।

ग्रंथ का आदि भाग-

राम रमे रम राम ही जीऊ । इम्रत राम सुधारस पीऊ ।
समरथ राम सजीवण मेरी । दरीगा छांडपड्‌ किन सेरी ॥ १ ॥
सेरी मेरा मेरी मेरा । करम उपाय राम नहीं नेरा ।
विद्या वेद पडे जग भूला । कथनी कथि सुमरण तें भूला ॥ २ ॥

आप ज भूला जग भरमाया । निरफ लगाया फल हाथि न आया ।
त्रिथा बेद जगतकी करीया । हरि बिनि भरम करम अनुसरीया ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग–

धन सत सोई राम उपासी । हरि सू प्रीत जग सू उदासी ।
दुबध्या छरे स राम न पावै । दिन दिन यू ही जनम गुमावै ॥ ३६ ॥
भगति निरतर या त्रिधि कीजे । अठ सिधि नौं निधि चित्त न दीजे ।
जि परमातम ब्रह्म बिचारी । कहे कबीर मैं ताकी बलिहारी ॥ ३७ ॥

[माणिक्य ग्रन्थ भडार, भींडर]

(१६) **कानडदास की बाणी** । रचयिता–कानडदास । आकार–८२" × ७२" पत्र–सख्या ४३ । पद्य–सख्या–साखी ७३५, सोरठा २, चन्द्रायणा ५४, सवैया १११, कवित्त १२६, कुण्डलियाँ ८५, रेखता ३१, पद ३० । लिपिकाल–१८४२ विपय–निर्गुण उपासना । लिपिकार–भूधरदास ।

आदि भाग–

नमो अरगी राम अभगी, आप अनामी ।
नमो परम गुरुदेव परम पद, दाइक स्वामी ॥
नमो सिरोमणि सत, अत मन को करि बैठै ।
दई जगत कू पूठि ऊठि हरि सुख मै पैठे ॥
राम गुरु जन एक तन, मन विचि मेरे ईस ।
जन कान्हड़ बदन करे,तुम चरणन मम सीस ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

धनि धनि मुलक मेवाड जू, धनि भीलैडो ग्राम ।
जाहां प्रगस्या सत जन, रामचरणजी राम ॥ १ ॥
जाका सिख ऐसा भया, मम गुरु कान्हड़दास ।
भूदर कहै बनाइ कौं, सरणै लह्यौ निवास ॥ २ ॥
भीलैड़ा मे मावसू, लिखी ज भूदरदास ।
कान्हड की क्रिपा भई, अग जोढ़ि परकास ॥ ३ ॥
लिखी ज वाणी होइ कुछि, घटती वधती वात ।
मिधु जवानी तोतली, नीका समभत मात ॥ ४ ॥

अट्ठारासे बियालीस का, दुति सुदि होई (?) ।
तिथि दोजी अर सोम दिन, बाणी भई संपूरण सोई ॥ ५ ॥

[बडा रामद्वारा, हनुमान घाट, उदयपुर]

(२०) **कृष्ण जीवन नी बारामासि** । रचयिता-अज्ञात । आकार-७″×५′५″ । पत्र-सख्या ५ । पद्य-सख्या १८ । लिपिकाल-सं० १६१८ । लिपिकार-त्रिभोवन । भाषा-वागडी ।

आदि भाग-

प्रथम पुजुं गणपति रे, समरू सारदा माय ।
बुधि अनोपम आपजो रे, जोवु मारा वाला नीं वाट ॥
वेले रा वलजो वीठला, सूनों जमना नो घाट ।
सूनीं मथुरानी वाट कृष्ण ॥ १ ॥
असाड आवो से सखी रे, मेऊला करे घम घोर ।
पपैया पेउप करे गरवा, बोले छे मोर ॥ कृष्ण ॥ २ ॥
लीला ते चरण पेरीया, मनसू आणी रे घार ।
वेवाधो मुने अती घणो, ना' या हलधर वीर । कृष्ण ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

जेठ मैंने जादव वींण्या रे झुरे गोकुल नी नार ।
जल वीन्या जल माछली, दाए जलती वार । कृष्ण ॥
जोर नथी मारा नाथ जी रे लीधो दुखड़ा नो अत ।
कुणेप्रस्ते कुणे आथमो मथुरा मारे जो नचीत कंत ॥कृष्ण
वनथी प्रभुजी पधारीयारे पुरां राधा रा कोड ।
गाय सीखे ने सामले रगमा रणछोड़ ॥कृष्ण ॥ १२ ॥

[कविराव-मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(२१) **ग्रह रूप बरणन** । रचयिता-अज्ञात । यह रचना १३७ सतो के संग्रहीत गुटके में है । पत्र-सख्या २ । पद्य-संख्या ३१ । इस ग्रंथ में महाभारत के शान्ति पर्व में भीष्म पितामह द्वारा पाण्डवों को दिए गए उपदेश का सार है ।

आदि भाग-

करत प्रीति हरि भक्त सू, करुणा सिन्धु कृपाल ।
धर्म सिरोमणि देव मुनि, नाहि धरै उर साल ॥ १ ॥

भीष्मोवाच

सावधान होय सुनियो बाता । अब हू तन छाडत हू ताता ॥
अति रहस भारथ उपगारा । सान्ति पर्व मध्य जो सारा ॥ २ ॥

अन्तिम भाग–

बिन हरि कथा सुने नी काना । ध्रग विद्या जहाँ बुद्धि न ग्याना ॥
ध्रग सो ग्यान जहाँ नही विरागा । अजहूँ मूढ़ जगाये जागा ॥ २० ॥
ऐसी सब साधन की रीति । राम नाम सू कीजे प्रीति ॥
स्थिर मति हरि सौं हित करे । सो ससार समुद्र ही तरे ॥ ३० ॥

[रामद्वारा, धोली बावडी, उदयपुर]

(२२) **गावा को ग्रंथ गोपीचन्द** । रचयिता-कान्ह कवि । यह भी १३७ सतों के संग्रहीत गुटके मे है । पत्र-सख्या ६१ । पद्य-सख्या १६८ ।

आदि भाग–

राजेश्वर अलख निरजन रे ॥ अलख ।
भजले नाथ नैं गोपीचन्द राजा
भजन किया सूँ मेरा लाल अमर होइ जाई ॥ २ ॥
गोपीचन्द तन धन जोबन रे ॥ तन ।
थिरता है वहीं गोपी० ॥
थिरता नही मेरा लाल भरतरी भाई ॥ ३ ॥
मैणावाती मेहलां बैठी है । मेहला०
सीस तपे गुर पीर दरस नित जाई ॥ ४ ॥

[रामद्वारा, धोली बावडी, उदयपुर]

(२३) **गीत संग्रह** । रचयिता-जसविजय । आकार-१०" × ४½" । पत्र-संख्या १७ । पद्य-सख्या २६४ । रचनाकाल–१७७१, श्रावण सुद २ ।

आदि भाग– राग-राम कलि

रिषभदेव हित कारी । जगत गुरु०
प्रथम तिथ्थकर प्रथम नरेसर प्रथम यती ब्रह्मचारी ॥
वरसी दान देई तुम जगमी, ईलति ईति निवारी ।
तपसी काहि करतु नही करना, माहित्र वेर हमारी ॥
मांगत नहीं हम हाथी घोरे, धन कचन नहीं नारी ।

दिउ मोहि चरन कमल की सेवा, याही लगत मोहि प्यारी ॥
भव लीला वासित सुरडोर, तू परि सब ही उमागी ।
मिं मेरे मन निश्चल कीनों, तू आना सिरधारी ॥
अयसो साहिब नहिं को जनमी, यासू होइ दिलयारी ।
दिल ही दलाल प्रेम के बीचि, तिहां हव खांचे गमारी ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

धन रा ढोला ए ढाल
साचो देव सुपास जी रे, साहिब तू सुलतान । गुणना गेहा ।
तुझ सूं प्रीत भक्ती बनी रे, चन्दन गंध समान ॥
ए तो कदिइं न कारमी रे, कदीइ न अलगी थाइ ।
दिन दिन अधिकी विस्तर' ई रे, महिमा इमांह काइ ॥
सरस कथा जे एहनी रे, तेह पवन मइ सग ।
वासित भवि जन तस हूइ रे, चन्दन रूप सुरग ॥
सार सामनो तेहगें रे, एह तो जनमना रोग ।
तेणां अधिक तुम्ह प्रीतडी रे, न लहई पामर लोग ॥
करम भुजग बंधन इसा रे, विरुयां ढीमें जेह ।
विरति मयूरी मोकलो रे, जिम सवी छूटे तेह ॥
मुझ पासें एक मत्र छे रे, गारुड प्रवचन सार ।
कहो तो तेने बन्धन हरूँ रे, देव करो जो सार ॥
प्रीति ते चदन वासना रे, वासित मोरू मच ।
तुम्ह तो मलयाचल समा रे, वाचक जस कहे धन ॥ ८ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(२४) **गोपीचन्दजी को वैराग** । रचयिता–दास (?) । आकार–३ ६" × ३" पत्र-संख्या २८ । पद्य-सख्या १५३ ।

आदि भाग–

नमो नमो निरजण देवा । अजन रहति निरजन सेवा ॥
काल करम न लागे कोई । ताहि सुमरि जीव सद्गति होई ॥ १ ॥
सुमरे जाको सेस महेसा । ब्रह्मा विसन रु जपै गणेसा ॥
सारद नारद सव सिर नावे । सिध्य रिधि मुकति ग्यांन पद पावैं ॥ २ ॥

करे बंदगि धरणी अकाश । पांणी पवन सिव के दास ॥
चन्द सूर न आपा अनुसरैं । सुर नर चरन पखालन करैं ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग–

गोपीचन्द कु मिलि गया, जोगी जलोंधरनाथ ।
'दास' कहैं धन्य गुरु मिल्यां, मरण्या अविलि ही साथ ॥ १५१ ॥
कोऊ सुणौं बैराग बोध, सोधै अपणौं जीव ।
राम भगति सरधा सकति, ज्यौं गति मिले इन पीव ॥ १५२ ॥
'दास' कह्यो बैराग बोध, करि आरोधन नाथ ।
खम्या करौ परि बधिअन्न, मैं लूध न समरूँ बात ॥ १५३ ॥

[स्वरूपलालजी जगदीश चौक, उदयपुर]

(२५) **गुटका** । आकार ६२"×४" । पत्र-सख्या ६८० । लिपिकार--करुणाराम । इसमें निम्नलिखित रचनाएँ हैं –

(१) श्री रामचरणजी महाराज की अणमैवाणी
(२) राजू कृत भक्तां का नाम
(३) सत पुरुषां का सबद
(४) अथ राम सतक । रचयिता चत्रभुज
(५) ध्रू चरित्र । रचयिता–जनगोपाल
(६) फुटकर पद–सूर, मीरां, तुलसी, रामचरन, नन्ददास आदि के
(७) मोहमरद राजा की कथा । रचयिता–जगन्नाथ । (रचनाकाल--स० १७७६)
(८) प्रहलाद चरित्र । रचयिता–जनगोपाल
(९) हरिचन्द ग्रथ । रचयिता– ध्यानदास
(१०) कान्ह कृत गाथा को गोपीचन्द । पद्य-सख्या १२४१
(११) राम रसायन बोध
(१२) दत्तात्रेय उपाख्यान
(१३) ग्रथ वेराग बोध
(१४) विविध सतों की कृतियों के फूटकर अग
(१५) श्रृवगसार
(१६) विविध सतों के अग
(१७) गुरु महिमा ग्रथ । रचयिता–रामचरण

(१८) ग्रंथ नांव प्रताप । रचयिता—रामचरण

(१९) ग्रंथ शब्द प्रकाश

(२०) ग्रंथ चिन्तामणि

(२१) ग्रंथ मन खण्डन

(२२) गुरु देव को अंग । रचयिता—रामचरण

(२३) चौरासी बोल

(२४) फूटकर पद

(२५) राजा मोरध्वज की लावणी

(२६) नामकेत की कथा

(२७) ग्रह कूप वर्णन

(२८) प्रसादी महात्मै भगवते प्रथम स्कन्दे

(२९) भरतहरि की लावणी

(३०) चिन्तामणि को अंग

(३१) भक्त वत्सल राग कौतूहल नरसिंह महता को माम्हेरो—शिवकरण कृत

(३२) सुन्दरदास कृत विवेक चिन्तामणि

(३३) तर्क चिन्तामणि

(३४) प्रसण सिणगार

(३५) उपदेस चिन्तामणि

(३६) ब्रह्म समाधि लीन जोग

(३७) पूरब चिन्तामणि

(३८) जम्बूमर को प्रसग

(३९) सुख समाध

(४०) भरतहरि चरित्र

(४१) टेक को अंग— मुरलीराम

(४२) ककका बत्तीसी

[रामद्वारा धोलीबावडी, उदयपुर]

(२६) गुटका विविध संग्रहः—

(१) रामचरण महाराज की वाणी । पद्य-सख्या १६१६

(२) रामजन महाराज की वाणी । पद्य-सख्या ६११ ।

(३) मुरलीरामजी की साखी। पद्य-सख्या ११५

(४) राम सतक—चत्रदाम

(५) दुल्हारामजी की वाणी। पद्य-सख्या ३१

(६) जगन्नाथजी ,, ,, । पद्य-सख्या २८३

(७) वाजींदजी , ,, । ,, ,, १४६

(८) सायुरामजी ,, ,, । ,, ,, १७

(९) ध्रू चरित्र—जनगोपाल । पद्य सख्या १७८

(१०) प्रहलाद चरित्र । ,, ,, २८५

(११) मोहमरद । ,, ,, २७२

(१२) रामसतक । ,, ,, १००

(१३) हरिचन्द चरित । ,, ,, ३४०

(१४) दत्तत्रै उपाख्यान । ,, ,, २१०

(१५) भक्ति द्रदावन । , ,, ३१

(१६) ग्रह कूप वर्णन । ,, ,, ३०

(१७) पचम स्कदे प्रसादी महात्म्य । पद्य-सख्या ३६

(१८) करूणाराम के भजन

(१९) भरतहरि की लावणी

(२०) तर्क चिंतामणि

(२१) विवेक चिंतामणि

(२२) उपदेश चिंतामणि

(२३) प्रसन श्रृंगार। १०२ पद

(२४) जम्बूसर। ३८ पद

(२५) गजेन्द मोक्ष। ४५ चौपाई

(२६) धन्नाजी की प्रची। ६० चौ० दो० ७

(२७) सेख उसमान की प्रची

(२८) वालन चरित्र । ४०० पद्य

(२९) प्रहलाद को छन्द

(३०) सुख ममाधि। २११ पद्य

(३१) भरतहरि चरित्र। १४२ दो० ४३४ चौ०

(३२) नासकेत। १०८ दो० १९५६ चौ०

(१२३) व्रजनंद के पद ४

(१२४) व्रजराज " " ३

(१२५) चद्रसखी " " ५

(१२६) बालसखी " " १

(१२७) रामसखी " " १

(१२८) बख्तावर " " १३

(१२९) किसोर " " २

(१३०) उम्मेदा " " २

(१३१) जमना " " २

(१३२) दयासखी " " १

(१३३) हुक्मेश " " १

(१३४) अमरपुरी " " १

(१३५) सवाईसिंघ " " १

(१३६) विजयसिंघ " " १

(१३७) देवीसिंघ " " १

(१३८) बांकीदास " " १

(१३९) बीठुदान " " १

(१४०) बारहठ कान्हाजी " " २

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(२७) **गुटका संतवाणी संग्रह** । आकार–५'८" × ३'३" । पत्र-सख्या-५८० । लिपिकाल–सं० १८७६ । लिपिकार–प्रीतमदास ।

इसमें निम्नलिखित रचनाएँ हैं—

(१) स्वामी सन्तदास की वाणी

(२) रामचरण की वाणी

(३) परमहंस सूरतराम की वाणी

(४) दुल्हराम की वाणी

(५) रतनदास का प्रसगी दुहा

(६) श्रवणसार का फुटकर सबद

(७) कबीर की साखी

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(२८) **गुटका विविध संग्रह** । आकार-७" × ३'६" । पत्र-संख्या ४२० ।

इसमे निम्नलिखित रचनाएँ हैं.—

(१) प्रहलाद चरित्र

(२) ध्रू चरित्र

(३) मोहमरद की कथा (अपूर्ण)

(४) रामचरणजी की अणमै वाणी, अथ नाव प्रताप, सबद प्रकाश, चिन्तामणि, मन खडन और गुरुदेव को अग

(५) नददास की अनेक नाममाला और अनेकार्थमाला

(६) जयतराम कृत मीराँ सम्बन्धी भजन– ये भजन मीराँ के जीवन से सम्बन्ध रखते हैं, उन्हे आगे दिया जायगा ।

प्रहलाद चरित्र का अन्तिम भाग–

अमृत रस प्रहलाद जस, कहै सुनै जे कोइ ।
अमै अमर पद पाइये, भगति मुकति फल होइ ॥ २४१ ॥
सुनै सुनावै प्रीत जुत, हरिजन हरि जस एह ।
कहै गोपाल उर धारिकै, राम भगति सूँ नेह ॥ २४२ ॥
मैं मुति सारू आपनी, कही जु घटि बधि बात ।
जन गोपाल सुत हेत को, नीकां समझै मात ॥ २४३ ॥

ध्रू चरित्र का अन्तिम भाग–

गुरु गोविन्द प्रताप तैं , कथ्यो भगति रस सार ।
जन गोपाल हरिजन कह्यो, बाणी करि विसतार ॥ २४२ ॥
ध्रू चरत जे कोई सुनै, मन वच क्रम चितलाइ ।
हरि पूरव सब कामना, भक्ति मुक्ति फल पाइ ॥ २४३ ॥
अब सूँधा सब कागद करूं, सारद लखै बनाइ ।
उदध घोर मस कीजिए, ध्रू म्हमां न ममाय ॥ २४४ ॥
मैं अग्यान मति आपनी, कलपि कही कछु बात ।
बकसत सुत अप्राध कू, जन गोपाल पित मात ॥ २४५ ॥

[रामद्वारा, धोली बावडी, उदयपुर]

(२९) **गुटका विविध संग्रह**–आकार-६" × ३'४" । पत्र-संख्या ५८० ।

लिपिकाल-सवत् १८७६ । लिपिकार-पीतमदास

इसमें निम्नलिखित रचनाएँ है --

(१) मतदास की श्रणमै वाणी

(२) रामचरण की श्रणमै वाणी

(३) सूरतराम की श्रणमै वाणी

(४) दुल्हराम का सबद

(५) रतनदास का प्रसगी दोहा

(६) अवगसार सत विचार का फुटकर सबद

(७) एकादस की ध्याई (दो अध्याय)

(८) कबीर की साखी ।

(९) मुख नाम

(१०) फुटकर पद

[रामद्वारा, धोली बावडी, उदयपुर]

(३०) **गुटका** । आकार-९'७" × ५'८" । पत्र-सख्या लगभग ९०० । इसमे लगभग २५० रचनाएँ संग्रहित है, परन्तु इन सब का यहाँ देना असम्भव होने के कारण केवल निम्नलिखित रचनाओ के नाम ही दिए जाते हैं—

(१) नाममाला

(२) नासकेत

(३) सुखसवाद

(४) जोगवासिष्ठ

(५) भागवत गीता

(६) निर्वाण गीता

(७) सार गीता

(८) वैष्णव गीता

(९) कर्म विपाक गीता

(१०) पाण्डवी गीता

(११) भुणाचारज

(१२) उमा महेश्वर सवाद

(१३) श्रुगा रोहिणी

(१४) हरिहर सवाद

(१५) वैष्णव महातमै

(१६) हस्तावल

(१७) अर्जुन गीता

(१८) चन्द्रोदय ग्रन्थ

(१९) मोह विवेक

(२०) ध्रू चरित्र

(२१) प्रहलाद चरित्र

(२२) जड भरत चरित्र

(२३) चोवीस घरा की लीला

(२४) दादू की जन्म लीला

(२५) दादू की साखी

(२६) कबीर की साखी

(२७) कबीर की रमैणी

(२८) नामदेव को कृत

(२९) रैदास को कृत

(३०) हरिदास को कृत

(३१) सोजाजी को कृत

(३२) सोजाजी की वलि

(३३) पीपाजी को कृत

(३४) परसाजी को पद

(३५) बैलियानद का पद

(३६) धन्नाजी का पद

(३७) कीता थोरी का पद

(३८) चतरभुज का पद

(३९) बीसाजी का पद

(४०) त्रिलोचनजी का पद

(४१) नरसियाजी रा पद

(४२) कानड्याजी का पद

(४३) विजियाजी के पद

(४४) भीमजी का पद

(४५) सोमजी का पद

(४६) अधारूजी का पद

(४७) सांवलियाजी का पद

(४८) भुवनजी की भाषणी

(४९) ग्यान त्रिलोकजी की बावनी

(५०) कृष्णानन्दजी को कृत

(५१) रामानन्दजी की रचना

(५२) अगदजी का पद

(५३) सुखानदजी का पद

(५४) नानकजी का पद, सब्दी और साखी।

(५५) काजी मोहम्मद का पद

(५६) सूरदास का पद

(५७) परमानन्द का पद

(५८) कान्हाजी का पद

(५९) गोरखनाथ का ग्रन्थ

(६०) बखनाजी का ग्रन्थ

(६१) गुरु मण्डार की प्राण सकुलि (गुरु मण्डार मत्स्येद्र के शिष्य)

(६२) चोरगीनाथ की प्राण सकुलि

(६३) सभुनाथ की प्राण सकुलि

(६४) ग्रभ गीता

(६५) शुक्ल ग्रन्थ—गोरख चरित्र ।

(६६) श्रीनाथजी को पथ अभिग्रन्थ

(६७) रामबोध ग्रथ

(६८) निरजन पुराण (दादू)

(६९) सिधिनाम श्रीपति बोध नाम टीको ग्रन्थ

(७०) मोगल पुराण

(७१) काजी कादन की साखी।

[माणिक्य ग्रंथ भण्डार, भींडर]

(३१) **गुटका**—आकार-३½" × २·४"। पत्र-संख्या ८९६।

इनमे निम्नलिखित रचनाएँ हैं—

(१) रामचरणजी की अणमै वाणी

(२) एकादस की ध्याई

(३) सतदासजी की छांटमा वाणी

(४) किशन कवि कृत उपदेश बावनी– रचना–काल सं० १७०८ के लगभग

(५) कबीर की रमैणी

(६) ग्रथ राममागर–कबीर

(७) ग्रथ राममतक–चत्रभुज

(८) रामचरणजी के फुटकर सवद

(९) हरिचन्द चरित–ध्यानदास, सं०१८०० के लगभग

(१०) मोहमरद की कथा–स०१७७६ काति विद १२ सोमवार

(११) सतदास की अणमै वाणी

(१२) ग्रथ वेराग बोध

(१३) रामचरणजी की अणमै वाणी में का छाँटवा सवद–साखी, ग्रथ रामप्रताप, मन-खण्डन, ग्रथ पिंडत समाध, गरभ चिन्तामणि, व्रिध-चिन्तावणी ।

(१४) रामजन की आणभै वाणी

(१५) प्रहलाद चरित्र-जनगोपाल

(१६) भरतरी चरित्र

(१७) धू चरित–जनगोपाल

(१८) ब्रह्म समाध–जगन्नाथ, सं०१८८५ वैशाख सुदी ४, रविवार

(१९) रामजनजी की अणमै वाणी छाँटवां

(२०) मुरलीरामजी की अणभै वाणी–ग्रन्थ ग्याल बोध, ग्यान प्रमोद, तरपत बोध, प्रतीत बोध ।

(२१) सतों के फुटकर शब्द

इस ग्रथ मे कोई लिपिकाल नहीं है । पत्र भी इसमे कई तरह के जोड़े हुए हैं और लिपि भी ग्रथो के साथ बदलती गई है जिससे ऐसा ज्ञात होता है कि अलग अलग लोगो द्वारा ये ग्रथ लिपिकृत हुए हैं । आरम्भ में कुछ छन्द दिए गए हैं, जिनकी लिपि अन्य ग्रथों की लिपियो से भिन्न है । ये छन्द कृष्ण की मुरली और रास से सम्बन्ध रखते हैं । सबसे प्राचीन लिपि मे एक छप्पय दिया हुआ है जो इस प्रकार है —

अथ घडी प्रमाण छप्पय

ग्रहे अगुष्टो पुरस ब्रह्म इन्द्री तिथि कहीऐ

तगजन्या रस[६] रुद्र[११]उभय[२] विचार मन लहीऐ

मधिमा रवि रुषि७ रांम बुधि बोध ना उर जानूं
अनामिका त्रयोदस१३ वेद४ वसु८ सुर जुगति निदानू
करै कनेष्टा सप्तम जो ग्रह९ रतन तत पेषिये
करिये विचार यह रेन दिन घटिका पडित लेषिये ॥ ७ ॥

नोट'– यह कबीर कृत 'राम सागर' के नीचे दिया गया है, रामसागर कबीर की नई रचना है।

[रामद्वारा, धोली बावडी, उदयपुर]

(३२) **गुरु बीनती जोग** । रचयिता-साधूराम । आकार-१६″ × ११·५″ । पत्र-संख्या ६ । पद्य-संख्या २४६ । रचना काल स० १८६८, चैत्र शुक्ला ८ सोमवार ।

आदि भाग–

प्रथम बद गुर देव को, दुतिए सत रु राम ।
तन मन इन पद अरपि कै, प्रणवत साधूरांम ॥ १ ॥
गुरु सत हरि जो क्रिपा, मो परि करो ज्रु पूरि ।
तो गुरु विनती जोगकी, उपजै मो रस करि ॥ २ ॥

अन्तिम भाग–

नग्र उदैपुर ताल पिछोला । ता तटि रांम हिं द्वारा अमोला ॥
जांहां ज्रु ग्रथ भयो हे च्यारी । न्रप सरदारसिंघ की बारी ॥ २४३ ॥
राणा भीम पिछे नृप ज्वांना । भए उजागर अति बलवांना ॥
भक्ति भीम सु करी सवाई । देस देस सन्तन जस गाई ॥ २४४ ॥
चहूँ खूंट में जस बिस्तरिया । दस बर साल गिराज ज्रु करिया ॥
देह त्यागि के स्वरग सिधारा । अमर रह्यो जस धरा मझारा ॥ २४५ ॥
ता गादी सरदार ही सिंघा । राजत भली ज्रु भाँति नरिन्दा ॥
ग्रथ भयो है ताकी बिरियां । समत अठार अड्याणु र' वरिया ॥ २४६ ॥
चेत सुक्ल अष्टम ससिवारा । पूरण ग्रथ भयो हरिद्वारा ॥
किंचित जस गायौ हरिजन कौ । रसिकां सब गुण भनैं ज्रु उनको ॥ २४७ ॥
गुरु स्तुति वरनन करी, मेरी बुधि उनमानि ।
पार लहै कोटिगनि कौ, मसक अहकृत मांनि ॥ २४८ ॥
सब ही जन मो ऊपरै, रखियो महर अपार ।
अरजी साधूराम की, यहै ज्रु बारबार ॥ २४९ ॥

[बडा रामद्वारा, उदयपुर]

(३३) **गुसाईंजी की बधाई** । रचयिता-माणिकचंद । आकार-७½″ × ६⅓″ ।

आदि भाग-

> बोहोरि कृष्ण श्री गोकुल प्रगटे श्री विट्ठलनाथ हमारे ।
> द्वापर वसुधा भार हर्यो हरि कलयुग जीव उधारे ॥

अन्तिम भाग-

> ऐसो कवि को है जुग महिमा बरनै गुण जु निहारे ।
> माणिकचद प्रभु कों सिव खोजत गावत वेद पुकारे ॥

(३४) **चोवीस एकादसी रो महात्तम** । रचयिता-नथमल । आकार-६″ × ५ १″ । पत्र-सख्या २० । विषय-चोवीस एकादशियो के महात्म्य की गद्य मे टीका । भाषा-राजस्थानी

आदि भाग-

नारदजी ब्रह्मा ने पूछे- तु पिता सब जाणें । श्रावण वदी एकादसी । उपवास कीयां कुण पुन्य । ब्रह्माजी बोल्या-श्रावण वदी एकादसी का नाम । व्रत कीयां सकल काम की सिध हुइ । गोविन्दजी री सेवा कीजे । सर्व तीर्थ स्नान कीयां पुन्य हुइ ।

अन्तिम भाग-

किसनजी कह्यो । चार मास उपोध्ये । ती वारे दान पुण्य तीरथ घणा कीजे । जीहरे नारायण पोढे छे । बालक रूप छे । सॉंप को रूप छे । वींग्र है । मोर छे । डर ही रूप छे । ससार ने रूप छे । ताथे चोमासो महिदान पुन्य घणा कीजे । आसाढ सुदि एकादसी । श्री नारायण पोढे । इण व्रत थी वैकुठ पावै ।

[श्री स्वरूपलालजी शर्मा, जगदीश चौक, उदयपुर]

(३५) **चोरासी बोध** (चोरासी बोल) रचयिता-जगन्नाथ । इसकी कई प्रतियाँ मिली है । जिनमें से एक का उल्लेख ऊपर गुटका सख्या २४ (२३) में किया गया है । दूसरी प्रति - पद्य-संख्या ६१ ।

आदि भाग-

> नरारो नर मो वचन, नटत ही उपजे दुख ।
> यूँ चोरासी जायगा, नटै ते वरते सुख ॥ १ ॥

मनख जनम पायकै, टाले इतना दोष ।
तो जगन्नाथ नरनारी को, सुधरे लोक परलोक ॥ २ ॥
राम सूमरतां थकीऐ नै ॥ १ ॥
गुर सेवा मैं लुकीऐ नै ॥ २ ॥
करणी कर गरवाजे नै ॥ ३ ॥
नित को नेम घटाजे नै ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग–

ऐ चोरासी सुभ असुभ, कया मांन का ठाम ॥
जगन्नाथ करीऐ सवै, जब लग ग्रह बिसराम ॥ ३ ॥
ईच लगत चालै सुघड़, तो भलां कहै सब लोय ॥
नहचै आवा लोक मैं, पलो न पकड़ै कोय ॥ ४ ॥
या चोरासी चित धरें, तो वा चोरासी बार ॥
अपनी अपने हाथ हैं, मन मांनै सो साध ॥ ५ ॥
बार बार नर-तन नहीं, कहै सासतर सत ॥
तातै सुक्रत कीजिये, के भजिऐ भगवत ॥ ६ ॥
जैन जवन सिव धरम कहै, करणी सुधरे काम ।
दया धरम इकतार सूँ, जगनाथ रोहो राम ॥ ७ ॥

[रामद्वारा, धोली बावडी, उदयपुर]

(३६) **जम्बूसर को प्रसंग** । रचयिता– अज्ञात । यह ग्रंथ १२६ सतों के संग्रहीत गुटको २५ (३८) और २६ (२४) मे मिला है । इसके अतिरिक्त भी इसकी कई प्रतियाँ मिलती है । पत्र-संख्या ३ । इसमे उपदेश की दृष्टि से एक कहानी दी है । एक धनपति साहुकार के पुत्र जम्बूसर का उसकी इच्छा के विरुद्ध विवाह होने के कारण उसमें वैराग्य उत्पन्न हो जाता है । इसमें १० दोहे, ४ कवित्त, १४ सोरठे और १० चौपाइयाँ हैं ।

आदि भाग–

दोहा

सेवल है मो यूँ कहै, जबूसार ज्यू जान ।
सिपता को प्रसग अब, कहूँ सो निश्चे मान ॥ १ ॥

क्रिवत

ऐक साह धनवंत तास के पुत्र वजोई ।
जंबूसर तस नाम सीध 'र जनमत होई ॥
पिता कियो हठ बहोत, परणवो ग्रारें कीनों ।
परण तजू कर नारि, ग्राप उत्तर यू दीनों ॥
ऐक बनिया के छी ग्राठ, तिनैं सुन मतो विचारै ।
करे पितासूं ग्ररज, पुरण जबूसर मारै ॥

ग्रन्तिम भाग-

जबूसर वड भाग, धन तेरी माता पिता ।
जनम नहीं जग राग, छाड रतो परब्रह्म सूँ ॥ १२ ॥
द्रव्य लेन कूँ चोर, वाधी पोट ज प्रीत कर ।
ज्ञान भयो तिंह ठोर, जंबूसर को ज्ञान सुन ॥ १३ ॥
ग्रष्ट नारि एह ज्ञान, सुनत ही सो सब गयो ।
चोर भये लगतान, सीलवान का वचन सुन ॥ १४ ॥

[रामद्वारा, धोली वावड़ी, उदयपुर]

(३६) **ग्यांन प्रबोध** । रचयिता-रामजन । पत्र-संख्या ३२ । पद्य-संख्या ३६७ ।

ग्रादि भाग-

सत गुर रांम दयाल जन, धन ग्रानंद सुखकार ।
तिन कूं वदत रांमजन, करिहु नित निरधार ॥ १ ॥
गरू सबद श्रवण करूं, धरूं रांम का घ्यांन ।
राम गरू जन प्रस्नता, जातें नास ग्रग्यान ॥ २ ॥

सिख उवाच-

कूंन ग्यांन कहा तैं ग्रायो, नांस भए तब कांहां समायो ।
ग्रर ग्रग्यान जावे कहीं साधन, सिख पूछे गुर करि ग्राराधन ॥ ३ ॥

ग्रन्तिम भाग-

महा भयानक काल एह, कलिजुग कम्म ग्रथाग ।
ता मति मत गुर प्रगटें, सो धन मेरो भाग ॥ ४ ॥

हलाबोला कलजुग ऐह, जाहां न धरम बबेक ।
तिन मधि प्रगटै आइ गुर, रामचरणजी एक ॥ ३६५ ॥
रांमचरणजी मेव वत, जिनकी बांणी छोल ।
मत करार सर मगति ज्यूँ, भगीए ग्यांन भकोल ॥ ३६६ ॥
ग्यांन उदधि गलतां नमत, उतम भजन रत आप ।
मीलौड़े प्रगटे भले, प्रगट हरे संताप ॥ ३६७ ॥

[रामद्वारा, धोली बावडी, उदयपुर]

(३८) **ज्ञान समुद्र** । रचयिता–सुन्दरदास । यह एक ४.५" × ३.१" आकार-वाले सग्रह मे है। जिसमें तीन रचनाए और हैं। (१) मोहमरद, (२) रहत भजन, (३) राजा चोर बकचूरजी की वात । पत्र-सख्या ८६ । पद्य-सख्या-२०६ रचना काल-१७१० ।

पुष्पिका

समत् सतरेसे गये, वरष दसोत्तर और ।
माद्रव सुद एकादसी, गुर वासर सिर मोर ॥
ता दिन सपूरन भयो ज्ञान समुन्दर ग्रथ ।

[वकील रोशनलालजी सामर, उदयपुर]

(३९) **टेक को अंग** । रचयिता-मुरलीराम । पत्र-सख्या २ । पद्य-सख्या ३८ । रचना राम सनेही पन्थ से सम्बन्धित है ।

आदि भाग–

टेक रख्या काइस मलो, हेतम को सिर देख ।
मुरलीराम निवाजिया, देख जनां की टेक ॥ १ ॥
टेक समाई सूरवा, रांम नाम की ऐन ।
जन मुरली छांडे नहीं, देख रमाया चैंन ॥ २ ॥

अन्तिम भाग–

टेक न छाडे लोवडी, होय जाय् तारोतार ।
द्रदता लीयां रग की, यू जन नाम करार ॥ ३६ ॥
ऐके रग एक तार मे, रहती रजन धीर ।
रग लगावें आपणों, रचै आन सगीर ॥ ३७ ॥
स्याम काज अर्पण करे, तन धन मान मुलक्क ।

टेक रखे निज नाम की, कोप्यां मुरली खलक ॥ ३८ ॥

[रामद्वारा, धोली वावड़ी, उदयपुर]

(४०) **तर्क चिन्तामणि** । रचयिता-सुन्दरदास । पत्र-सख्या २ । पद्य-सख्या ५३ । यह ग्रथ प्रकाशित हो चुका है। देखो सुन्दर ग्रथावली भाग १ । प्रकाशित ग्रथ से इसकी भाषा में काफी अन्तर है ।

[रामद्वारा, धोली वावडी, उदयपुर]

(४१) **दुल्हरामजी महाराज का सबद** । पत्र-सख्या ६ । पद्य--संख्या १३ ।

आदि भाग-

राग झझोटी-

बलिहारी गुर देव तुम्हारी–मो सागर सें त्यारी ॥ टेक ॥
रांमनांम की नाव ज सारी, बैठाया नरनारी ॥
पण मों विड़दवान इक मारी–धीरज जार ज डारी ।
जत मत समता रतन अपारी, किरपा पवन चलारी ॥
मत गुरु शाप करण के धारी, औघट घाटी टारी ।
दुल्हैराम चरण उपगारा, सरणें रह्यां उवारी ॥

अन्तिम भाग-

दरसाया दिल माही रे, तूं सांइया–दरसाया दिल माहि ॥ टेक ॥
दरस कीया दिल हरी निवारी, मारी ममता माहि ॥
नारी वारी वित पर हारी, जै हैरहीं जातिन जाहि ।
उनमन चित नचलताई, सरवगी राम दिखाहि ॥
सत्वक गुर कृपा सूं जांनै, मरम दूं दता दरसांहि ।
दुल्हेराम की अन्तरजांमीं, तुम सूं छानी नाहि ॥

[रामद्वारा, धोली वावडी, उदयपुर]

(४२) **देवदास की वाणी** । आकार–८ ५" × ७'२" । पत्र-संख्या ६५ । रचना काल सं० १८४४ (?) लिपिकार (या संग्रह कर्ता)–जगन्नाथ

आदि भाग-

नमो अखडत राम नमो सत गुरु सुखदाता ॥

नमो अनंत ही कोटि, रांम रस पाई पिलाता ॥
जिनकी गही ज वो रहो सिरी सदा हमारूँ (१) ॥
अठ पहरयौ मन मोलि सुरति धरि निरति न टारूँ ॥

दोहा

देवदास बन्दन करै, बारू बारज जोइ ।
रांम गुरु अर संत जन, हिरदै राखू ं पोइ ॥

अन्तिम भाग–

कवित्त

राम चरण गुर देवता, सकै सीख बौहौ मारी ।
देवदास इक नाम, जासकी बिरती करारी ॥
भजन करै भरपूरि, आन 'चा न सुहावै ।
गुर पद में गलतांन, और कछ दाइ न आवै ॥
सकल बासना नास, आसन की फुनि नाहीं ।
बिचरैं जग के मांहीं, केवल ज्यू ं जल के माहीं ॥
ऐसे सन्त दयाल, नगर इक स्यावै आए ।
रहै दिवस दस बैठि, तांहा तन कू ं छिटकाए ॥
साध तीन ता लारि, समै ता दिन की अैसी ।
अन्त समैं लगी रांम, और चर्चा नहीं कैसी ॥
परम धाम किए बाम, तासमैं ससै नाहीं ।
हम देख्या निरताइ, सब्रद अणभै का माहीं ॥
अ'टादस सो जांनि, बरष चमाली गिणिए ।
पोम माम के माहिं, तीन दिन बाकी मणिए ॥
प्रात समै आदीत दिन, गए देह छिटकाइ ।
जगन्नाथ देग्वी जिमी, माची कही बनाइ ॥

[वडा रामद्वारा, उदयपुर]

(४३) **नव तत्व नी चौपई ।** रचयिता–ऋषिवरसघ । आकार–६½" × ४½" । पत्र-सख्या ७ । पद्य-सख्या १३६ । लिपिकाल–स० १८२४ । लिपिकार–ऋषि मलूकचन्द्र । रचनाकाल सं० १७६६ ।

आदि भाग-

पास जिणेशर प्रणमि पाय । सह गुरु नाम तणें सुवसाय ॥
नव तत्व नो कहूँ विचार । मामलजो चित दे नर नारि ॥ १ ॥
जीव अजीव पुन्य पाप ज जोय । आश्रव सवर निरज्जरा होय ॥
बन्ध मोक्ष नवत्व ए सार । हवे कई एनो विस्तार ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

दश नपुमक सिधज जांण । बीस ने स्त्री मोक्ष वेखान ॥
एकसौ आठ पुरष ज कह्या । जिन वचने आगम थी लह्या ॥
इमि छहोत्तर बोलज सार । आगम थी कीधो विस्तार ।
नव तत्व नी चौपइ एह । भणे गुणे सुख पामे तेह ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(४४) **नव वाडिनी स्वाध्याय** । रचयिता–जिनहर्ष । आकार-१०'२"×४'८" । पत्र-संख्या ३ । रचना काल सं० १६१६ । इसका विवरण जैन गुर्जर कवियो में आ चुका है ।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(४५) **पंच कल्याणी स्तोत्र** । रचयिता-पुन्यसागर । आकार–१०"×४'३" पत्र-संख्या ५ । इसमें निम्नलिखित रचनाएं हैं —

(१) श्री मेघकुमार चउढालिया (स० १७२८) पद्य सख्या ४७ ।
(२) श्री महावीर पारणउ । पद्य-सख्या ३१ ।
(३) श्री आदिनाथ सेत्रु । पद्य-सख्या ३२ ।
(४) श्री जीरावल्लि पार्श्वनाथ स्तवन । पद्य-सख्या १५ ।
(५) श्री पंच कल्याण स्तोत्र । पद्य-सख्या २१ ।

[वर्द्धमान ज्ञान, मन्दिर उदयपुर]

(४६) **परसण सिंगार** । रचयिता-सेवादास । पत्र-संख्या ८ । पद्य-संख्या १०१ । इसकी दो प्रतियाँ हैं । दूसरी प्रति में पत्र-संख्या ६ । पद्य-सख्या १०२ ।

आदि भाग-

उनमनि नेजा फरहरे, अनहद धूर निमांण ।
सहीत मोम्यां ऊपरे, चढीयो मनद दिवाण ॥ १ ॥

नाँव न्रप की फोज का, केहा करूँ बखाण ।
एक एक सूँ आगला, वहु जोधा बलवान ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

बात हामरा जग की, कोई सुणै साचला सूर ।
सेवादास अलमत चढै, सुणत सुवा मुख नूर ॥ ९८ ॥
लख कोट्यां मध सूरवां, सूर्णे हमारा जग ।
सबद बिचारै सेवला, सो सुण सुण देवै रग ॥ ९९ ॥
मौ बपड़ा की क्या घणी, ए सत गुरु हन्दी रीझ ।
खोटे पहरे सेवला, पाई मोटी चीज ॥ १०० ॥
सत गुरु मेरे सिर तपौ, श्री गाजी गिरधरदास ।
जिनके वल जग जीत कर, किया पिसण सब नाश ॥ १०१ ॥
तहां काल तणां सारा नहीं, फरी रांम की आंण ।
सेवादास जग जीत कर, परस्या पद निर्वाण ॥ १०२ ॥

[रामद्वारा, धोली बावडी, उदयपुर]

(४७) **पूरब चिन्तामणि ।** रचयिता-रामजन । पत्र-सख्या ४ । पद्य-सख्या २३ । यह तीयालीस ग्रंथो के गुटके में संकलित है ।

आदि भाग-

जनम अनेक विधि पायो है जगत में,
सिधी इन काज भयो गयो ज्यु ही आयो है ।
जैसे नलि नाल साथ कछू हीन चल्यो हाथ,
मृग की सी नाई (मृग) बारबार भरमायो है ॥
ताते अब चेत भजो आगम के साथ सजो,
रांमजन रांम गाय गुरुजन चितायो है ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

चोरासी के सीरे तन पायो है रतन एह,
जतन जतन कर नीठ ठाम आयो है ।
भ्रम में न भूल माई वडाई जू जान लीजे,
दीजे छत सांच काच कूर कूं हनायों है ॥
तीयालीस लाख बीस सहस हूँ वरस बीते,

मानव जनम एह नीठ नीठ पायो है ।
ताते अब चैत सावधान होय रांमजन,
रांम राम कहो गुरुदेवजी चितायो है ॥ २३ ॥

[रामद्वारा, धोली बावडी, उदयपुर]

(४८) **ब्रह्मसमाधिलीन जोग** । रचयिता-जगन्नाथ । इसकी कई प्रतियां मिलती है । इसका उल्लेख ऊपर के गुटको मे भी आचुका है । पद्य-सख्या २७६ । रचना काल-स०१८५५, वैसाख सुदी १४ रविवार ।

आदि भाग-

विनऊ रांम दयाल गुर, जीग रो मत अतोल ।
तुम कृपा जापर करो, तव उपजे उर बोल ॥ १ ॥
मन हुलस्यों तुम महरस सू, अथ करन अभ्यास ।
जथा अरथ नीका कहूँ, जगन्नाथ है दास ॥ २ ॥
राम चरण जन प्रगट्या, अवनि लियो अवतार ।
आदि अत लग जो भई, जांको कहु विचार ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

याहां सदा आनन्द में मगल मूरति रांम ।
मगल कर वोहतेन कू पधारे परमधाम ॥ २२ ॥
परमधाम सवके परें, राम सवद अदभूत ।
लीन भए जन तासमें, अनमि जन अनभूत ॥ २३ ॥
अणभी अणभौ पद मिले, राम ही रांम उचारि ।
ता वगीया की जगन्नाथ, कछुयक कही विचारि ॥ २४ ॥
जनगति की मोही गम नहीं, ये तो अगम अपार ।
जगन्नाथ मोकु भूरयो, सो मै कह्यो विचार ॥ २५ ॥
रामचरण महाराज को, जस प्रगट्यो जग मांहि ।
ज्यू फूल के अतर ज्यू, आप सरुप सराहि ॥ २६ ॥
वाणीं सवद विचारीये, खित मेली सवकार ।
राम सवदमई जगन्नाथ, रामचरण माहाराज ॥ २७ ॥
मै हूँ अनुचर रावरो, जगन्नाथ मो नांव ।
रांम चरण महाराज कूं, वार वार परनाम ॥ २८ ॥

मेरी बुधि सारू कह्यो, एह समै को ग्यान ।
जगन्नाथ मो उर रहो, राम चरण को ध्यान ॥ २६ ॥
अठारामे पचपन बरष, रवि चोदस वैसाख ।
ग्रथ सपूरण जगन्नाथ, पुन जानो सुधि पाक ॥ ३० ॥

[रामद्वारा, धोली बावडी, उदयपुर]

(४६) बावनी—रचयिता-मुनि क्षमाहंस । पत्र-सख्या ८ । पद्य-सख्या ५४ । विषय-नीति, उपदेश आदि ।

आदि भाग—

छप्पय

ॐकार अपार पार बहु किण ही पायो ।
ब्रह्मा विष्णु शिव सगति ध्यान ग्यान ही धुरि ध्यायो ॥
मत्र तत्र जड जत्र जोग जुगति महिमागर ।
ऋद्धि वृद्धि नव निद्धि सिद्धि साधक सुख सागर ॥
जम्पन्ति जिहि नितु प्रति जके लहेत सुख लीला लहर ।
कवि कहे खेम सेवो सयन ॐकार आठों पहर ॥ १ ॥

अन्तिम भाग—

खिमा खग करि ग्रह्मा पिसुण दहवट पुलाई ।
झगड़ा झडड़ सन्ताप जाई ज्यूँ बादल वाई ॥
खिमा खड़ग करि गह्या गण धरि उछव मगल ।
मप कुटुम्बा साथ आथि उपजइ अनगल ॥
कवि हस खेत इहि खरि बावनी कवते करी ।
मन मयण सुणन्ता सीखन्ता वसुधा मगल विस्तरी ॥ ५४ ॥

[कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(५०) भक्तमाल टीका । टीकाकार-प्रियादास । आकार-६.६" × ६.५" । पत्र-सख्या ५५ । पद्य-सख्या ८२४ (मूल तथा टीका को मिलाकर) लिपिकाल स० १७८६ । कार्तिक शुक्ल ७ शनीवार । लिपिकार-नारायणदास ।

पुष्पिका

"श्री उदयपुर मध्ये राणा श्री सग्रामसिंहजी विजय राज्ये । स्वामी श्री हरिदास तत शिष्य

प्रियादासजी लिखावतम् आत्मार्थे वाचनार्थं ।"

नोट— भाग १ में उल्लखित भक्तमाल की टीका इसीकी प्रतिलिपि मालूम होती है।

[प्रयागदासजी का स्थल, उदयपुर]

(५१) भक्तामर भाषा । रचयिता-केसरकीर्ति। आकार-१०" × ४'४"। पत्र-सख्या ३। प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पक्तियाँ और प्रति पंक्ति मे ४६ अक्षर हैं। पद्य-सख्या ४४ सवैया। रचना सरस और सानुप्रास है। यह मानतुंगाचार्य कृत सस्कृत 'भक्तामर' का भाषानुवाद है। कहा जाता है कि मानतुंगाचार्य को एक वार ४० तालों में वद कर दिया गया था। उस पर उसने जिन भगवान की प्रार्थना में ४० पदों की रचना की। एक-एक छद पर एक-एक ताला टूटता गया। आदि भाग-

श्री जिन नायक वछित दायक पाइकै पाय प्रणाम करै है ।
भाव धरी सुर थाइन मैं प्रभु माणिक मौलि के मध्य जरै है ॥
तास प्रभा कु प्रकास करै क्रम पाप क्लाप कु दूरि हरै है ।
जुगादि भवोदधि मध्य परे नर तो पद पूज थी मोड धरै है ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

स्तोत्र रूप फूलमाल गुंथी गुणै विसाल
  अरीथाइ आलमाल जे सुणै सुणावतै ।
भावतै विरची येह विविध वरण जेह
  विचित्र कुसुम तेह सोह सुषडावतै ॥
ऐसी माल कठ धारै मानुभव आज आरै
  निरतर जै उचारै चित कै सुहावतै ।
मानतै उत्तग सोई धरे लच्छी पूर होइ
  केसर कीरति पोखैं प्रभू कैं प्रभाव तै ॥ ४४ ॥

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

(५२) भगवद् गीता-टीका । टीकाकार-महाराजा जसवन्तसिंह । आकार-६ ६" × ६ ५"। इसके साथ प्रियादास कृत 'भक्तमाल की टीका' नन्ददास कृत 'भागवत दशम स्कन्ध भाषा' आदि कई अन्य ग्रन्थ भी हैं। भगवद्-गीता-टीका २८ पत्रो में समाप्त हुई है। इस प्रति को सम्वत १७६८ में महाराणा

सग्रामसिंह के राज्यकाल में प्रियादास ने आत्म पठनार्थ लिपिबद्ध किया। टीका गद्य में है।

आदि भाग–

धर्मे क्षेत्रे कुरुक्षेत्रे, आदि ..।

टीका–सजय उवाच-दुरजोधन पांडवों की सैन्य देखि द्रोणचार्य पासि जाय अरू बोल्यो–'हे-आचार्य! पाडु पुत्रों की बडीइ सेना विषै समवेत एकत्र भये। ऐसे ये मेर अरु पाडु पुत्र कैसे है। जुध की इच्छा धरतु है। हे सजय! ते कहा करत भये।'

अन्तिम भाग–

सजयउवाच–हे राजा या भाँति श्री कृष्ण कों अर्जुन कों महाअद्भुत सवाद मैं सुन्यो। सो यह वेद की क्रीया तें। साक्षात श्रीकृष्ण के मुख तें। जोग परम गुह्य सुन्यौ। सो यह फिरि समरन करि करि बहुत हर्ष पावत हों। ओरु यह अद्भुत श्रीकृष्ण को रूप समरन करि करि म्होंकों विस्मय होतु है। ओरु महा हर्ष होतु है। हे राजन् यह म्होंकों निश्चै है। जहा जोगीश्वर श्रीकृष्ण है अरु जहा धनुर्धर अर्जुन है तहाँ सर्वथा लक्ष्मीजी है। विजय है। विभूति है। अरु नीति है। मेरी मति यू कहे है॥ ७१॥

[प्रयागदासजी का स्थल, उदयपुर]

(५३) **भ्रमरगीत**। रचयिता-नन्ददास। आकार–११" × ५"। पत्र-संख्या २१। पद्य-सख्या ७५। लिपिकाल-सवत् १९३१।

[व्रजलालजी साधु, भींडर]

(५४) **भागवत दशमस्कन्ध भाषा**। रचयिता-नन्ददास।

प्रति १ – यह एक ८८" × ६" आकार वाले चोपड़े मे है, जिसका लिपिकाल सवत् १७३५ से १७६१ है। इस चोपडे में चार ग्रन्थ है –

१ भागवत दशमस्कन्ध भाषा (सवत् १७३५) – नन्ददास
२ रास पचाध्यायी (सवत् १७६१) – नन्ददास
३ विरहमजरी (,, ,,) ,,
४ एकादश भागवत की कथा (संवत् १७६१) – सतदास

इनका वर्णन यथा स्थान किया गया है।

आदि भाग–

दोहा

नम लखि न करि लखिजी, दश मैं आश्रय रूप।

नंद वदि लै प्रथम तिहि, श्रीकृष्णाखि अनूप ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

दोहा

सुनै जु कोउ मन क्रम वचन, ऐह उनतीसवो अध्याय ।
घस न कलिमल वम क्छु, नद न अवर उपाय ॥

इसमे कुल २६ अध्याय है जो ७२ पत्रों में समाप्त हुए है ।

[केवलराम दादूपथी, उदयपुर]

प्रति २ – आकार-६ ६" × ६ ५" । लिपिकाल– सवत १७६२ ।

[प्रयागदासजी का स्थल, उदयपुर]

(५५) **भागवत एकादस स्कन्ध** । टीकाकार–चतुरदास । आकार–११'३" × ६" । पत्र-सख्या १८८ । पद्य-सख्या २४०६ । रचनाकाल–सवत् १६५२ । चतुरदास सतदास का शिष्य था ।

[केवलराम दादूपथी, उदयपुर]

(५६) **भागवत एकादश स्कन्ध** । टीकाकार–चतभु जदास आकार–१०" × ४'६" । पत्र-सख्या २०३ में से केवल १७५ शेप है ।

[केवलराम दादूपंथी, उदयपुर]

(५७) **मंगल कलश** । रचयिता–मेघविजय । आकार–१०" × ४'२" । पत्र-संख्या ३० । पद्य-संख्या ६०८ । लिपिकाल–संवत् १८१६ ।

आदि भाग–

विनिता नय निवोधणी, वृषभ लंछन जसु पाय ।
प्रणमु आदि जिणेसरू, नामे नव निध थाय ॥ १ ॥
शाति जिणेसर सोलना, अचिरा मात मलार ।
हु प्रणमु पय तेहना, अभय दान दातार ॥ २ ॥
सीलवत सिर सेहरो, मोजकु अरि भरतार ।
स्याम वर्ण सोहे सदा, उजल गिर सणगार ॥ ३ ॥
संखेस्वर सामि सधर, पुरिसा दाणी पास ।
वामा नदन सेवता, पहोचे मन नी आस ॥ ४ ॥

संग्रामसिंह के राज्यकाल में प्रियादास ने आत्म पठनार्थ लिपिबद्ध किया। टीका गद्य में है।

आदि भाग-

धर्मं क्षेत्रे कुरुक्षेत्रे, आदि ..।

टीका-संजय उवाच-दुरजोधन पांडवों की सैन्य देखि द्रोणचार्य पासि जाय अरु बोल्यो-'हे-आचार्य! पाडु पुत्रों की बडीइ सेना विषै समवेत एकत्र भये। अैमे ये मेर अरु पाडु पुत्र कैसे है। जुध की इच्छा धरतु है। हे सजय। ते कहा करत भये।'

अन्तिम भाग-

सजयउवाच-हे राजा या भाँति श्री कृष्ण कों अर्जुन कों महाअद्भुत सवाद मैं सुन्यो। सो यह वेद की क्रीया तें। साक्षात श्रीकृष्ण के मुख तें। जोग परम गुह्य सुन्यौ। सो यह फिरि समरन करि करि बहुत हर्ष पावत हों। श्रोरु यह अद्भुत श्रीकृष्ण को रूप समरन करि करि म्हौंकों विस्मय होतु है। श्रौरु महा हर्ष होतु है। हे राजन् यह म्होंकों निश्चै है। जहा जोगीश्वर श्रीकृष्ण है अरु जहां धनुर्धर अर्जुन है तहाँ सर्वथा लक्ष्मीजी है। विजय है। विभूति है। अरु नीति है। मेरी मति यूं कहे है॥ ७१॥

[प्रयागदासजी का स्थल, उदयपुर]

(५३) **भ्रमरगीत**। रचयिता-नन्ददास। आकार-११" × ५"। पत्र-सख्या २१। पद्य-सख्या ७५। लिपिकाल-सवत् १६३१।

[व्रजलालजी साधु, भींडर]

(५४) **भागवत दशमस्कन्ध भाषा**। रचयिता-नन्ददास।

प्रति १ - यह एक ८८" × ६" आकार वाले चोपडे मे है, जिसका लिपिकाल सवत् १७३५ से १७६१ है। इस चोपडे मे चार ग्रन्थ है -

१ भागवत दशमस्कन्ध भाषा (सवत् १७३५) – नन्ददास
२ रास पचाध्यायी (सवत् १७६१) – नन्ददास
३ विरहमजरी (,, ,,) ,,
४ एकादश भागवत की कथा (संवत् १७६१) – सतदास

इनका वर्णन यथा स्थान किया गया है।

आदि भाग-

दोहा

नव लछि न करि लछिजी, दश मैं आश्रय रूप।

* ये इनके दादूपंथी गुरु थे और रतलाम निवासी स्वरूपदास (पांडव यशेन्दु चन्द्रिका के लेखक) के शिष्य थे।

[सरस्वती भण्डार, भींडर]

(५६) **रतनदास दोहावली** । रचयिता-रतनदास । आकार-५'८" × ३'३" । पत्र-संख्या १७ । पद्य-संख्या १६६ । लिपिकाल-सवत् १८७६ ।

आदि भाग-

> करै गुरा की वदगी, सिख उरि अधिक हुलास ।
> हरि वरि ऐहि मांगियौ, जनम जनम रहु दास ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

> कपट भेप सिग साध कै, कौडी मिलै न ऐक ।
> साहा मजन भ्रम भूलीयौ, गुर न्याणा दीयौ ववेक ॥ १६७ ॥
> विप्र मौहीं यौ आतमा, वेटी वुधि जौ जानि ।
> सगति सगाई गम वर, घर गुर पूरा मानि ॥ १६८ ॥
> सुरायण रटि राम कू, काइर क्रमी दूरि ।
> लज्या सौंही कुसगति, वेल ज भगती पूरि ॥ १६६ ॥

[रामद्वारा, धोली वावड़ी, उदयपुर]

(६०) **रामचरण वाणी संग्रह** । रचयिता-रामचरण । रामस्नेही पंथी रामचरणजी की रचनाएँ कई सग्रहो में मिलती हैं। निम्नलिखित ग्रन्थो का विवरण यहाँ दिया जाता है:—

१. अणभै वाणी । इसमें निम्नलिखित अग-साखी हैं —

१. गुरदेव	कौ	अग-	साखी	७८
२ सुमरण	,,	,,	,,	१२२
३ वीनती	,,	,,	,,	१८
४ साधमगति	,,	,,	,,	३६
५ काल	,,	,,	,,	५०
६ चितावणी	,,	,,	,,	६६
७ सूरातण	,,	,,	,,	३३

सम सासन सोधणी, महावीर जिन राय ।
पय प्रणमता जेहना, अलिय विघन सविजाय ॥ ५ ॥

अन्तिम भाग-

चिंतामणी पास पसाउ ले ए मालतडी, ए रास रच्यो सुविचार ।
सघ सकल आग्रह किए मालतडी, मेघ कहे सुखकार ॥
ध्रु ताहरा जिंदा लगें ए मालतडी, मेरू अचल गिरनार ।
राम रहो ए तिहां लगें ए मालतडी, बलि जिहा रवि ससि सार ॥
ए रास भावे करी ए मालतडी, जेह भणे मंन सुद्ध ।
अने थलि आदरे सामले ए मालतडी, ते लहे, निर्मल बुद्धि ॥
मगल कलस मणि वरे ए मालतडी, जे करे पूएय अपार ।
मेघविजय कहे नेह नें ए मालतडी, नित नित जय जयकार ॥

(५८) **मदन विवेक प्रकाश ।** रचयिता—मदनेश । आकार-७" × ६" पत्र-सख्या ३५३ । पद्य-संख्या १६५० से अधिक । इसका रचना काल–सवत् १६४१ है । पूरा ग्रथ १८ विश्रामों मे विभाजित है । प्रथम विश्राम में कवि ने अपना वश वर्णन किया है । जिसमें शक्तिसिंह से लेकर अपने तक का पूर्ण वर्णन है । ग्रथ का विपय आध्यात्मिक ज्ञान है । प्रथम विश्राम में वश–वर्णन होने के कारण यहाँ द्वितीय विश्राम का आदि भाग दिया जाता है ।

आदि भाग-

दोहा

भेद सजाति विजाति औ, स्वगत कहे जो नाहिं ।
कृष्ण * शब्द को लद्दय यों, मदन धस्यो उर माहिं ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

दोहा

मगल कुल मगल प्रजा, मगल देस महान ।
मदन सु मगल रूप है, मगल रूप सुजांन ॥
चद निधि अरू वेद शसि, सवत् चेत सुदि मास ।
सपूरण ता दिन भयो, मदन विवेक प्रकाश ॥
जव लगि गिरि कैलाश में, गौरि गिरीश निवास ।
अटल रहो जव तक जगत, मदन विवेक प्रकाश ॥

* ये इनके दादूपंथी गुरु थे और रतलाम निवासी स्वरूपदास (पांडव यशेन्दु चन्द्रिका के लेखक) के शिष्य थे।

[सरस्वती भण्डार, भींडर]

(५६) **रतनदास दोहावली** । रचयिता-रतनदास । आकार-५'८" × ३'३" । पत्र-संख्या १७ । पद्य-संख्या १६६ । लिपिकाल-सवत् १८७६ ।

आदि भाग-

करै गुरा की वदगी, सिख उरि अधिक हुलास ।
हरि वरि ऐहि मागियौ, जनम जनम रहु दास ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

कपट मेप सिर साध कै, कौडी मिलै न ऐक ।
साहा भजन भ्रम भूलीयौ, गुर न्याणा दीयौ ववेक ॥ १६७ ॥
विप्र मोहीं यौ आतमा, वेटी वुधि जौ जानि ।
सगति सगाई राम वर, घर गुर पूरा मानि ॥ १६८ ॥
सूरायण रटि राम कू , काइर कमी दूरि ।
लज्या सोंही कुंसगति, वेल ज भगती पूरि ॥ १६६ ॥

[रामद्वारा, धोली वावडी, उदयपुर]

(६०) **रामचरण वाणी संग्रह** । रचयिता-रामचरण । रामस्नेही पथी रामचरणजी की रचनाएँ कई सग्रहों मे मिलती हैं। निम्नलिखित ग्रन्थो का विवरण यहाँ दिया जाता है.—

१ अणभै वाणी । इसमें निम्नलिखित अग-साखी हैं —

१	गुरदेव	कौ	अग-	साखी	७८
२	सुमरण	,,	,,	,,	१२२
३	वीनती	,,	,,	,,	१८
४	साधमगति	,,	,,	,,	३६
५	काल	,,	,,	,,	५०
६	चिंतावणी	,,	,,	,,	६६
७	सूरातण	,,	,,	,,	३६

सम सासन सोधणी, महावीर जिन राय ।
पय प्रणमता जेहना, अलिय विघन सविजाय ॥ ५ ॥

अन्तिम भाग–

चिंतामणी पास पसाउ ले ए मालतडी, ए रास रच्यो सुविचार ।
सघ सकल आग्रह किए मालतडी, मेघ कहे सुखकार ॥
ध्रु ताहरा जिंदा लगें ए मालतडी, मेरू अचल गिरनार ।
राम रहो ए तिहा लगें ए मालतडी, बलि जिहां रवि ससि सार ॥
ए रास मावे करी ए मालतडी, जेह भणे मन सुद्ध ।
अने थलि आदरे सामले ए मालतडी, ते लहे, निर्मल बुद्धि ॥
मगल कलस मणि वरे ए मालतडी, जे करे पूण्य अपार ।
मेघविजय कहे नेड नें ए मालतडी, नित नित जय जयकार ॥

(५८) **मदन विवेक प्रकाश** । रचयिता—मदनेश । आकार-७" × ६" पत्र-सख्या ३५३ । पद्य-सख्या १६५० से अधिक । इसका रचना काल–सवत् १६४१ है । पूरा ग्रथ १८ विश्रामों में विभाजित है । प्रथम विश्राम मे कवि ने अपना वश वर्णन किया है । जिसमें शक्तिसिंह से लेकर अपने तक का पूर्ण वर्णन है । ग्रथ का विषय आध्यात्मिक ज्ञान है । प्रथम विश्राम मे वश–वर्णन होने के कारण यहाँ द्वितीय विश्राम का आदि भाग दिया जाता है ।

आदि भाग–

दोहा

भेद सजाति विजाति अो, स्वगत रहे जो नाहिं ।
कृष्ण * शब्द को लक्ष्य यों, मदन धस्यो उर माहिं ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

दोहा

मगल कुल मगल प्रजा, मगल देस महान ।
मदन सु मगल रूप है, मगल रूप सुजान ॥
चद निधि अरू वेद शसि, सवत् चेत सुदि मास ।
सपूरण ता दिन भयो, मदन विवेक प्रकाश ॥
जब लगि गिरि कैलाश में, गौरि गिरीश निवास ।
अटल रहो जब तक जगत, मदन विवेक प्रकाश ॥

* ये इनके दादूपंथी गुरु थे और रतलाम निवासी स्वरूपदास (पांडव यशेन्दु चन्द्रिका के लेखक) के शिष्य थे।

[सरस्वती भण्डार, भींडर]

(५९) **रतनदास दोहावली** । रचयिता–रतनदास । आकार–५'८" × ३'३" । पत्र-संख्या १७ । पद्य-संख्या १६६ । लिपिकाल–संवत् १८७६ ।

आदि भाग–

करै गुरा की बंदगी, मिल उरि अधिक हुलास ।
हरि बरि ऐहि मांगियौ, जनम जनम रहु दास ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

कपट भेप सिर साध कै, कौडी मिलै न ऐक ।
साहा भजन भ्रम भूलीयौ, गुर न्याणा दीयौ बबेक ॥ १६७ ॥
विप्र मोहीं यौ आतमां, बेटी बुधि जौ जानि ।
सगति सगाई गम बर, घर गुर पूरा मानि ॥ १६८ ॥
सरायण रटि रांम कू, काइर क्रमी दूरि ।
लज्या सोंही कुसगति, बेल ज भगती पूरि ॥ १६६ ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(६०) **रामचरण वाणी संग्रह** । रचयिता–रामचरण । रामस्नेही पंथी रामचरणजी की रचनाएँ कई सग्रहों मे मिलती हैं। निम्नलिखित ग्रन्थों का विवरण यहाँ दिया जाता है —

१ अणभै वाणी । इसमें निम्नलिखित अंग–साखी हैं —

१ गुरदेव	कौ	अग–	साखी	७८
२ सुमरण	,,	,,	,,	१२२
३ वीनती	,,	,,	,,	१८
४ साधमगति	,,	,,	,,	३६
५ काल	,,	,,	,,	५०
६ चिंतामणी	,,	,,	,,	६६
७. सुरातण	,,	,,	,,	३६

८	टेक	,,	,,	,,	२७
९	कसतूरिया म्रग	,,	,,	,,	१२
१०	मन	,,	,,	,,	२८
११	हेतप्रीत	,,	,,	,,	१४

२. चंद्राइणा'—

१	गुरदेव	कौ	अंग	पद्य	४
२	सुमरण	,,	,,	,,	३
३.	बीनती	,,	,,	,,	१९
४	व्रह	,,	,,	,,	२४
५	साध भमी	,,	,,	,,	१
६	साध	,,	,,	,,	३६
७	साध सगति	,,	,,	,,	४९
८	त्रिकत	,,	,,	,,	२०

२. अनभौ बिलास को प्रथम प्रकरण।

आदि भाग-

नमौ राम रमतीत, नमौ गुर देव स्वामी।
नमौ नमौ सब सत, नांव रटि भए जू नांमी ॥
जिनके चरणू हेठि, रहौ नित सीस हमारा।
तन मन धन अर प्रान, करू नवछावर सारा ॥
रांम सत गुर देव विनि, नहीं और अधारा।
रांम चरण कर जोड़ि कै वदैं बारू वारा ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

और मिलाये मिलै न तिही न ति दुर्लभ मेल हरीजन कौ।
त्रिए ताप मिटै जन के दरस्या मल धोइ के दूरि करै मन कौ ॥
जीव नरमल होइ के राम रटै कोइ कमा कौ नाहि रहै कनकौ।
कहै रामचरण देख्या हम जोइ कै मत मथान म्हाधन कौ ॥ १ ॥

४ राम रसायन।

आदि भाग-

रम तीत राम गुरदेव जी, पुनि तिहू काल के संत ।
जिनकू रामचरण की, वदन वार अनत ॥ १ ॥
सत गुर परम निधान पद, हद सू वेहद जोय ।
रामचरण वदन करै, ब्रह्म रूप नित सोय ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

(ये) राम रसायण महारस, गुर सिख पारख कीन ।
सरणां की सोभा कहूँ, सो सुणयो परवीन ॥ ६२ ॥

५. शब्द प्रकाश ।

आदि भाग-

रांम नांम तारग मंत्र, सुमरे मकर मेम ।
रांम-चरण साचा गुरु, देवे यो उपदेस ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

राम भजन विन खाली करणी ।
ज्यूं विन बीज सुधारी धरणी ॥
राम बीज साधन हल हाकैं ।
तो राम-चरण खेती फल पाकैं ॥ २४ ॥

दोहा

वरण कयो मखेप सो, दरीया कैसो पार ।
जिन परसीया धांम कू, मो लीज्यो सत विचार ॥ १ ॥
'रामचरण' रट राम नांम, पाया ब्रह्म विलाम ।
ई साधन कोई लागसी, जाकै होसी सबद प्रकास ॥ २ ॥

६. चितावणी-

आदि भाग-

प्रथम वदन गुरदेव कू, पुनि अनत कोटि निज साध ।
कहू एक चितावणी, यो वाणी विमल अगाध ॥ १ ॥
बधे स्वाद रस भोग मैं, इन्द्रयां तणै अरय ।

अन्तिम भाग-

सोरठा

धरीया दिक कलि जाइ, सर्व ब्रह्म नांही कलै ।
रामचरण रति ताहि, चौरासी का मैट ल ॥ १ ॥
चौरासी का भार, भजन बिंना छुटै नही ।
तातै हौइ हूसीयार, एह सीख सत गुर कही ॥ २ ॥

७. मन खंडण-

आदि भाग-

अलख निरजण बीनऊं, लागूँ सत गुर पाय ।
मन खडण की जुगति होय, सो मोय दयौह बताय ॥ १ ॥
तन मन पर असवार है, गुण इ द्री सब साथ ।
फरे सवादा बस मयौ, क्यूँ कर आवै हाथ ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

सोरठा

आतम कू नही व्याधि, व्याधी रोग मन मांनीऐ ।
जिन ऐ तजी उपाधि, सुघ स्वरूप ते जाणीऐ ॥ २ ॥

८. सुख समाध—

आदि भाग—

दोहा

सीस नवाउ गुर चरण, पुनि विनऊ सिध-साध ।
निराकार की भगति दो, सो दो बुद्धि अगाध ॥ १ ॥

चौपाई

निराकार प्रणपात नित कीजे रसना । विमल गाइ गुण जीजें ॥
गुर रजब दादू परम देवा । नाम कबीर करें हरि सेवा ॥ २ ॥
गोरख भरथरी गोपीचदा । धू प्रहलाद सकल कू वदा ॥
पीपा धना सैन रैदामा । सोभा सोम सुनो हरिदामा ॥ ३ ॥
मब गुर कृपा देह जू ग्याना । कीजे सुख की कथा वखाना ॥
मेरी सक्ति नही कछु अैसी । कही जाय त्यू तैसी ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग—

जब गुरु कृपा करी पट मांगे । यहु गुण कथित चतुर दिन लागे ॥
कथा विपुल उनमान सु बरनी । जथा सगति खेम मो निरनी ॥ २०९ ॥
भूल चूक हू घट बध आई । सुख को हेत लिख्यो सब भाई ॥
यह अरदास सुनो सुखदेवा । तुम गुण वार पार नही छेवा ॥ २१० ॥

९. नाव प्रताप—

आदि भाग—

महमा नांव प्रताप की, सुणै श्रवण चितलाइ ।
रांम-चरण रसना (?) तो कम सकल झड़ि जाइ ॥ १ ॥
जिन जिन सुमरया नांम कूं, सो मत उतरया पार ।
रांम-चरण जो नीमरथा, सो ही जम के लारि ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

'रामचरण' भजि रांम कूं, ब्रह्म देम कूं जाट ।
जहां जग जौरां का भै नहीं, सुख मैं रहै समाइ ॥ २ ॥
'रामचरण' कहै रांम कौं, वडो प्रताप जग माहि ।
अनंत कोटि जन ऊ।रया, भजे समग मे नाहिं ॥ ३ ॥

१० सुख-विलास (चतुर्थ प्रकरण)-

आदि भाग-

बावन अखिर कौ विमनारा । मो सिखि सुखिम थूल अपारा ॥
वेंद पुरान सामतर कहीऐ । सुम्रति साखि छंद जो लहीऐ ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

टेक पतीव्रत बीनती, नांव तणू निरधार ।
कुबधी कान न खेटता, कहुँ कपूत निरसार ॥ १०८ ॥

११ रेखता ।

आदि भाग-

सदगुर मारसा और दीमें नहीं तीन ही लोक फरि देखि जोई ।
भ्रम कपाट उघाड़ि दीपग धरया मनकी मलता टरि खोई ॥
वेद न कतेब सुधि समभि आई नहीं सुभ अरु असुभ की भूलि मारी ।

मिलत गुरदेव जगाइ चेतन कीया भूलि परिज्ञान की थाप भारी ॥
रांम की धाम हम दूरि कह्या जाणता पिंड ब्रह्मंड का भेद पाया ।
राम ही चरण गुर देव दयाल के चरण कू परमता सांच आया ॥ १ । ३ । ३ ।

अन्तिम भाग–

× × ×

कुबधि की खानि जग सुबधि उपजै नहीं बिपति परपच नहीं सच पाई ।
काम अर क्रोध मद लोभ बौहौ खोमता भ्रम कु निकरम मैं अवधि जाई ॥
आन की धार नां फिरै तन कारना बौध नासौ घना हरि भुलाई ।
रांम ही चरण ए जगत असार हैं सार इक रांम तूं सुमरि भाई ॥ १६ ॥

१२. किवत–

आदि भाग–

पतनी पीव पछाणिऐ अपति कौ व्रत धारयौ ।
नाना भ्रम उपास हेति हरदा सू डारयौ ॥
रही सबद अगि लागि राम बिनि आन मावै ।
ज्यू कवला जल मधि अरणि की करणि सुहावै ॥
मगति रमैं यू जगत मै तजे न साची टेक ।
रामचरण गुर ग्यांन कौ जनकै अचल बमेक ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

रांम नाम जपि लेहु नेह जग छाडिउ परसारा ।
विक्रम क्रम सु मात्र विषै गुण त्यागि बिकारा ॥
सम दम सत सतोष दया उरि दिढ बिसवासा ।
निंदावै निसप्रेह आस तजि रहो निरासा ॥
वन बसती समि जाणि सक कांहु नहीं गिणिऐ ।
ऐसी सूज समाइ वेगि भौसागर तरीऐ ॥
काइर हुवा न छूटमी, हरि भजि हौइ हुसियार ।
रामचरण फिरि नां मिले, यौ औसर या वार ॥ ६ ॥

१३ राग चरचरी–

आदि भाग–

हारो रे कोई हारो रे, ससार क्रम सू हारो रे ॥

गुर को ग्यान हिरदै धरि राखो, रसना राम उचारो रे ॥ टेक ॥
मैं मेरी मैं मति कोई भूलो, याहां नही कोई थारो रे ॥ १ ॥
काल कठ जब आइ गहेगा, रहसी पड्यो पसारो रे ।
जम का दूत पकडि लेजासी, उनको मूं डो कालो रे ॥ २ ॥
पाप 'र पुनि सग दोइ चाले, और न चालै लारो रे ।
रामचरण भजि राम सनेसी, निरधारां आधारो रे ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

मार अमार समझै नहीं, असा मुति का हीण ।
राम नाम की निंदा गणैं, करमां सूं लिवलीन ॥ १ ॥
ब्रह्म सबद रकार है, माया रूप मकार ।
रामचरण ऐ जुग लहे, निराकार आकार ॥ २ ॥

१४. फुटकर पद-फुटकर पद कई सग्रहों मे मिलते है। अत यहाँ देना अनावश्यक हैं।

[उदयपुर के रामद्वारों मे सग्रहीत]

(६१) रामजन वाणी संग्रह-

अणभै वाणी। पद्य—सख्या - दोहा १०१, चौपाई २४४, सोरठा ३५, चंद्रायणा १, पद्धरी ४८, गीतक १६, अरेल १३, मनहर २८, सवईया ४५, किवत ४, निसाणी ४, चामर १, कुँडलिया ८, झपाल ४, त्रौटक १, रेखता २६।

आदि भाग-

कवित्त

काम क्रोध भाव तेते सोधिये स्वरूप तेते
पक्व है सेते चित चईटा ईगे ।
जेते पक्व है हरष हिय से तिनको होजे
अपक्व कोई जोग क मिटाईगे ॥
जैसे व्याल काल रूप नाजुर नोला स्वरूप
सोधिके सजीवनी सु मन्त्र सू धराईगे ।
व्याल सम जग जाल ज्ञान मत्त मन्त्र हाल
भगवान बुधि वाल अमी गो चराईगे ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

पद

आरती अचल पुरस अविनासी । घट घट व्यापक सकल प्रकासी ॥ टेर ॥
प्रथम आरती मदिर बूहारया । राम राम रट कर मनि कारया ॥
दूसरी आरती दीपग जोया । हिरदै प्रेम चादणां होया ॥
तीसरी आरती कूभ भराया । नाम कवल सूँ गगन चडाया ॥
चोथी आरती चोक बीराजै । जाहां अनहद का बाजा बाजै ॥
पाँचमी आरती पूरण कांमा । सुरति परसीया केवल रांमां ॥
सेवग स्वामी भया समांना । रांम ही राम और नही आनां ॥
राम-चरण ऐसी आरती कीजै । परस अम्बर जुग जुग जीजै ॥

२ प्रतीत बोध-पद्य-सख्या ५५ ।

आदि भाग-

दोहा

सत गुर राम दयाल जन, घन आंनद सुखकार ।
तिनकू बदन रांमजन, करिहुँ नित निरधार ॥ १ ॥

चौपाई

भज रमतीत रांम निरधारा । आनद घन सुखकार अपारा ॥
सब सरजे सब देह खपाई । सब सू अलपत रहे सदाई ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

जीता सोई जगत में, फिर न जनमै आइ ।
रामजंन प्रतीत सू, रहै रांम ल्यो लाइ ॥ ५५ ॥

३ तरपत बोध-पद्य सख्या १०० ।

आदि भाग-

दोहा

रांम नाम को ध्यान धर, कर प्रहार मत आंन ।
रांमजन मन बाचका, वै जन तरपति जांन ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

तरपत मन बच काइ, त्रिमो भोग मावट नही ।

रांम-चरन चित लाइ, रांमजन ऐसी कही ॥ १०० ॥

४ वैराग बोध । पद्य-संख्या १५६ ।

आदि भाग–

कर वंदन गुरु रामजन, मन वच काय निधान ।
जाकी कृपा मात्र हू, वैराग बोध परमान ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

ज्ञान विचारै रामजन, गुरु मुख तें सिध पाय ।
धरै सदा वैराग मन, राम राम लिवलाय ॥ १५८ ॥
रांम नांम सूं लिव लगी, तजी वासना आन ।
रांमजन यों भाषीयो, वैराग बोध प्रमान ॥ १५९ ॥

[रामद्वारा, उदयपुर]

(६२) राम सागर । रचियता–कबीर । आकार–३"×२.४" । लिपिकाल (या रचना काल) सं० १३४२ (?) यह उक्त आकारवाले, हरे रेशमी जिल्दवाले एक छोटे से गुटके में मिला है। कुल छोटे छोटे १० पत्रों में यह ग्रन्थ समाप्त होता है। इसके प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २२। २४ अक्षर हैं। ग्रंथ चौपाइयों तथा चौपइयों मे हैं जिनकी कुल संख्या ८३ है। कबीर की यह एक नवीन रचना खोज में मिली है। अत हम इसे यहाँ सारी उद्धृत कर देते हैं–

नैमषार तीर्थ (में) करि सनाना । रिषि त्रिंद सौनक परधाना ॥
करि सनान मिलि बैठे जाई । हरि पावन का करे उपाई ॥ १ ॥
रिषि सब पूछै आपस मांही । उत्तर किनहूं आवै नाही ॥
तहीं समै तहां नारद आऐ । कर जोड़ि रिष सो मान बधाऐ ॥ २ ॥
बंदन करै बीनती ल्यावै । क्यों मुनि हरि कूं कैसें पावै ॥
सकल पाप कैसी विधि जाई । ए रिषजी हम कूं समझाई ॥ ३ ॥
दान बिना तप सार्यो नाही । तीर्थ हम पट नहीं जाही ॥
जिग जोग साधन नहीं करै । अरु विधि किनि किऐ कूं उधरै ॥ ४ ॥
नान व्रत हम करै न कोई । इंद्री निग्रह हम पै नहीं होई ॥
करम न कोई देव अराधन । ग्यान मुनि का करम न साधन ॥ ५ ॥
सुनों न सास्त्र पढा न वेद । हरि पावन कहीऐ भेद ॥
भौ सागर नैं उतरै पारा । अरु सहजै पावै मोख दुवारा ॥ ६ ॥

करि हो क्रिपा नारद मुनि देवा । रिष सब करैं तुमारी सेवा ।

नारद उवाच—

नारद कहै सुनो रिषराई । सति मानौं मैं कहू सुनाई ॥ ७ ॥
सिव के पास अैसी हम सुनी । सोही बाणी तुम पूछी मुनी ॥
परवत मोरे है कबलास । ता ऊपर ईसुर को वास ॥ ८ ॥
पूछै तांहां पारवती सती । तुम मन की बात कहो हो जती ॥
तुम हो सकल देवन का देवा । सुर नर करै तुमारी सेवा ॥ ९ ॥
बार बार मैं लागू पाई । तुम ध्यावो सो मोहि बताई ॥
ब्रह्मादिक मुनि तुम कू ध्यावै । जो मांगे सोही सिधि पावै ॥ १० ॥
परजा सकल अराधन करै । जाका काज सहज मैं सरै ॥
देव बिस्व का तुम हो साषी । सो सेवग कू कहो तुम माषी ॥ ११ ॥
तुम कू भजै मागैं सोइ पावै । तीन लोक तुमरा जस गावै ॥
तुम जनम मरण सू रहित हो स्वामी । रूप डिगवर अर न्हकामी ॥ १२ ॥
वसती तुम कू सुहावै नांही । बास तुमारा ऊगल माही ॥
जटा रषावो भभूत चढावो । कबहूक नाना रूप दिषावो ॥ १३ ॥
कबहूक नाथ पुलदर जोगी । कबहू विलासी कबहू भोगी ॥
भाग धतूरा आक आहारी । माया अलपति बोहो बिध जारी ॥ १४ ॥
कबहु तुम बालक ब्रह्मचारी । कबहू मोहो सबकी नारी ॥
करो प्रति पालख सिष्टि सवाई । कबहूक वसन प्रलै कराई ॥ १५ ॥
भांजत घड़त बार नही होई । तुम उपरांत और नही कोई ॥
अकथ कथा तेरी कही न जाई । मैं जाणू तुम त्रिभुवन राइ ॥ १६ ॥
तुम ध्यावो सो मोहि देवा । निस दिन करो कू ण की सेवा ॥
ऐ हम कू इजरज अति भारी । कहो क्रिपाल मैं बंदी तुमारी ॥ १७ ॥
दया करी मोहि भेद बतावो । मेरा मन मे उपज्यौ भावौ ॥
म सेवा करि मांग्या दान । मोकू कहीऐ तुमरो ध्यान ॥ १८ ॥

श्री महादेव उवाच—

पारवती सू ईसुर बोल्या । अतर गति का पड़दा खोल्या ॥
वो गुपत कथा है अनत अपारा । जामे कोइक जानै सारा ॥ १९ ॥
मैं ए कथा न काहू कही । गुपत कथ मेरी मन मैं रही ॥
तुमकू ऐ अब कथा सुनाऊँ । तू निज सेवगता तैं सुच पाऊँ ॥ २० ॥

मनसा वाच्या प्यास तुमारै । तव कहवै का हेत हमारै ॥
अधिकारी विन कहीऐ नाही । विन पूछ्यां रहीऐ मन माहीं ॥ २१ ॥
तुम मनसा वाचा सेवग मेरी । महमा काहा कहू मैं तेरी ॥
अति आतुर करि माग्या दान । धन पारवती तेरा ग्यान ॥ २२ ॥
सुण पारवती सतजुग की वात । सव कोई होता तस विग्यात ॥
ब्रह्मा विसन अराधन करता । हरि विन कथा आंन नही धरता ॥ २३ ॥
सव लोकन कै हिरदे हरिनाम । और धरम हरि विना निहकाम ॥
तीरथ वरत सहज मैं करता । हरि धरम की तपस्या (?) ॥ २४ ॥
इन्द्री निग्रह हरप न सोग । जिग न करै न साधे जोग ॥
पाप न करता हरि हित दांना । तीरथ जाइ न करत सनांना ॥ २५ ॥
और देव की पूजा न होती । वरण अवरण नहीं कोई छोती ॥
भूत प्रेत नहीं सूगा असूगा । जव मन नहीं कामण द्रणा ॥ २६ ॥
रांम जनां री सेवा करता । गुर गोविंद स निस दिन डरता ।
काम क्रोध नही लोभ' र मोहा । ना काहू सू करता द्रोहा ॥ २७ ॥
आठू जाम विमल जस गाता । परम लोक में प्रम पद पाता ।
जुरा मरण का जाहां दुप नाही । सव कोइ जाता अव गति माही ॥ २८ ॥
सो गति देवन पावै कोई । जो गति आप भागवती जोई ।
सो दुल्लभ निज भगति सुनाई । ताहि धरो उर मैं नितलाई ॥ २९ ॥
तातै सतजुग का मत लीजे ॥ पारवती ऐह सती सुनीजे ॥
तू वल्लभ मेरै अती परीया ॥ सो तोहि कह्र मोहि हरि दीया ॥ ३० ॥
तुम हरिदैं धरो भगति विसवासा ॥ ज्यूँ पावो अमरा वासा ॥
माची वात कहू वारगा ॥ अति अभाव प्रछ्या परसगा ॥ ३१ ॥
साचा अखर दोइ सुण ऐही ॥ राम नाम तु सति करि लेही ॥
मनसा वाचा ल्यौ हरि नाम ॥ आन मता तजिऐ वेकाम ॥ ३२ ॥
ऐ उपदेस मैं साचा कह्या ॥ मरस्या जगत नाव विन वह्या ॥
कोई कहै तुला चढि दांन दुज दीजैं ॥ कोइ कहै जिग्य वदगी कीजे ॥ ३३ ॥
कोइ कहै कासी मैं जई वसीऐ ॥ कोइ कहै गया पिंडही भरीऐ ॥
कोइ कहै प्राग वेणी परसीऐ ॥ अपणा पित्र त्रपत सव करीऐ ॥ ३४ ॥
कोइ कहे नाना सासत्र सुनिऐ ॥ कोइ कहै वेद पुरांन ही मनीऐ ॥

कोइ कहै तप करीऐ काया ॥ कोइ कहै सब तजीऐ माया ॥ ३५ ॥
कोइ कहै कुल ब्राह्मन की पूजा ॥ ऐ बड देव और नहीं दूजा ॥
एक कहै न्यात ब्राह्मन की सेवा ॥ या बिन और नही कोई देवा ॥ ३६ ॥
ऐ करम करे जम लोक सिधावै ॥ मोष परम पद कोइ न पावै ॥
जे जे करै सोही पावै ॥ पाप'र पुन जनम भुगतावै ॥ ३७ ॥
दुष पावै सो पाप करमां ॥ सुष पावै सो उत्तम धरमा ॥
ऐ धरम करम का जाण बिछारा ॥ पार ब्रह्म पद इन सू न्यारा ॥ ३८ ॥
या मे परम पद नही पावै ॥ ऐ चोरासी मांहिमां हि फिरावै ॥
जब लग हरि हिरदै नही आवै ॥ तब लग मोष कहू नही पावै ॥ ३९ ॥
धानिनि होइ हरि सू आराधै ॥ दूजै अग सू मन नही बांधै ॥
राम बिना जीव मरम न जैहै ॥ राम बिना जीव दुष ही पैहै ॥ ४० ॥
रांम बिना साधन सब झूठा ॥ रांम बिना मन फिरै न अपूठा ॥
रांम बिना हिरदो सुध नांही ॥ इस बिधि कहत बेद के माही ॥ ४१ ॥
बिध निषेद का बेद पुराना ॥ हरि सुमरन हरि सेवन जाना ॥
ऐक नांव निज सति करि लीया ॥ सुकृत जिन सहज सब कीया ॥ ४२ ॥
जाके हिरदै है हरि नाम ॥ ताका सहज सरै सब काम ॥
तां कारण पारवती तुम सुनौं ॥ हरि को नांव रैणि दिन सनौं ॥ ४३ ॥
सुण देवी तत्त बबेका ॥ राम नांम सति साचा ऐका ॥
पारवती कहै सुनौ सिव देवा ॥ सब ही क्यू न करै हरि सेवा ॥ ४४ ॥
नाना धरम जग काहै ध्यावै ॥ सब तजि हरि सरणै किन आवै ॥
तत्त कह्या तुम एह बिचारा ॥ तौ काहै भरम्यो यो ससार ॥ ४५ ॥
अरु वोहो विधि सासतर क्यू हुवा ॥ अर क्यू बोल्या जूवा जूवा ॥
एह जग ऐसे क्यू भमाया ॥ सन सासतर क्यू एक न साया ॥ ४६ ॥
ऐ सांसा मेरे उपज्या भारी ॥ या कथा सुनावौ इसुर तपधारी ॥

सिव उवाच–

सुन पारवती कथा सुनाऊ ॥ सासा तेरा दूर गमाऊ ॥ ४७ ॥
रिपन देव हम मिलि कीया बिचारा ॥ हमहिं न मानै ऐ ससार ॥
करि हीं उपाव कोई ऐसा एक ॥ आपही पूजै लोक अनेक ॥ ४८ ॥
लोक भगत करै हरि केरा ॥ चोरासी में नेकन फेरा ॥

हमकूं कोइ जग मानै नाही । हम देव-रिष का का जग मांहिं ॥ ४६ ॥
रिष देव हम मिलि करी हरि सेवा । तव परसण भो नारांइण देवा ॥
मांगों देव थू तुम कू सही । यू नाराइण वाचा कही ॥ ५० ॥
मन की वात देवता कही । जग में हमारी पूजा नही ॥
सो पूजा अप करावो नाथा । दया करो देवो सिर हाथा ॥ ५१ ॥
तव हीं वोल्या देव मुरारी । तुम कू पूजू ह्वै अवतारी ॥
राम किसन ओतार ज होई । ताको भेद लहै जन कोई ॥ ५२ ॥
जव ले औतार जग वंदी करी । तव देव रिष कू पूजै हरि ॥
ता पीछे पूजे सव कोई । तातैं काहू मुकति नहीं होई ॥ ५३ ॥
देवन कू लागा ससारा । साचा हरि सू रटत नियारा ॥
सुन पारवती यू भरम उपाया । तुम पूछया मै कह सुनाया ॥ ५४ ॥
ऐक सूनौं दूजा परसगा । जातै उपजे भरम के भगा ॥
मोपै हरिजी माग्या दांन । सिव तुम करो अनत मत आंन ॥ ५५ ॥
मैं तव कही कहीयौ यू रांम । मो सेवग कू फुरमावो रांम ॥
तव हरि कहयौ सुनौं सिवराया । प्रथवी थेमै मोमू भरमाया ॥ ५६ ॥
मोहि कोइ न जांणै ऐसी करो । तुम जग माहि जाई तन धरो ॥
झूठा सासत्र करो अपारा । अर मोकू भूलै सव ससारा ॥ ५७ ॥
भेद करो वोहौ भरम दिखावो । नाना विध के धरम चलावो ॥
मो ताई कोइ मर्कै नही आई । ऐसी करो आप सिवराई ॥ ५८ ॥
ऐह दान माग्या हरि आप । तव मेरा मन मे भयौ सताप ॥
मे जव सव दुनीया भरमाई । आन देव सू दीया लगाई ॥ ५९ ॥
लोभ लाभ दुनीया सव फरी । देवत पूज जाचणा करी ॥
ऐसे सव दुनीया भरमाई । हरि पूरण पद दीऐ भूलाई ॥ ६० ॥
तव इक राजा मोसूं कही । जाके राम विराजै मही ॥
माहा भगत जगत सूँ न्यारो । रांम भजन ताके अधिकारो ॥ ६१ ॥
तव वै राजा ऐसी कही । ब्रह्महित्या सिव तोकू भई ॥
पग पग उपर जानू सही । या मैं झूठ तणक भी नही ॥ ६२ ॥
तेरो कह्यौ कू ण नही मानै । तै हरि धरम कीयौ क्यू छानै ॥
करता मेटि अरु आन वतावै । जम घर जाइ नरक गति पावै ॥ ६३ ॥
तव मेरे मन ऐसी आई । अव मैं जाइ लगू हरि पाई ॥

तुम हरिजी मोकू भरमायौ । धन राजा जिन ग्यांन बतायौ ॥ ६४ ॥
मैं जब करी हरि सू अरदासी । मोकू पड़ी जमां की पासी ॥
हत्या ब्रह्म ससार मोहि लागी । हरि धम्म हम मेट्यौ अभागी ॥ ६५ ॥
बिश्व सगली मैं भरमाई । सो ऐ क्रम क्यूँ छूटै हरिराई ॥
ऐसो जप तप धरम बतावो । इन करमां सू मोहि छुड़ावो ॥ ६६ ॥
माया ऊपर बल तुमरी स्वांमी । मैं नहीं जांणी अतरजामी ॥
मोहि वाचा छलीयौ देव मुरारी । मैं बूड़ो बोहो करम ऊपारी ॥ ६७ ॥
उधरब का कहो कोइ जाप । ज्यू कटि है मेरा सब पाप ॥
असैं ज्वाब मैं हरिसू कहीया । तब हरि मोसू परसण भईया ॥ ६८ ॥
मोकू मन्त्र दीयो तत ऐक । जि काटै मेरा पाप अनेक ॥
मन मैं सुमरण तब रह सोई । तातैं करम लगै नही कोई ॥ ६९ ॥
सहसर नांम दीयौ हरि नाम । याकू भजो तुम आठू जाम ॥
तब हम कह्यौ ऐह न्हिचै आई । कदाचि भेद होइ ता माही ॥ ७० ॥
तबै बिसन परमातम देवा । मोकू फेरि बतायौ भेवा ॥
सिव तुम राम मत्र कूं ध्यावौ । अतर गति मैं प्रीत बधावौ ॥ ७१ ॥
तब एह भेद कह्यौ हरि आप । मरै मिटै सकल सताप ॥
जब मैं बोहोत बीनती करी । तुम बिन कूण उधारै हरी ॥ ७२ ॥
राम मत्र किरपा करि दीन्हौ । मो मैं बोहोत प्रीत करि लीन्हौ ॥
ता मतर कू आतुर ध्यावै । जामण माहि कभू नही आवै ॥ ७३ ॥
हम ध्यावै सो ऐह निज भेव । तू भी कर पारवती सेव ॥
अतर जामी अतर ध्यावौ । सहजैं मोष परम पद पावौ ॥ ७४ ॥
सहसर नाव मैं भेद विचारा । राम नाम सब उपर सारा ॥
एक नांम तै भऐ अनेक । राम सुमर ऐ साचो ऐक ॥ ७५ ॥
रांम रमे रम रमी ऐ राम । सोही सारैगा तेरा कांम ॥
सिव ऐ पारवती स कही । नारद मुनि मन जाणी सही ॥ ७६ ॥
साची करणी नारद करी । सहज सहज आगैं बिस्तरी ॥
नारद रिष कू कही सुनाई । सोनक आदि दीए समझाई ॥ ७७ ॥
सत गुर रामांनद परताप । अतर हरिजी प्रगटै आप ॥
कहै कबीर ऐ भेद अपारा । जो सुमरै सो उतरै पारा ॥ ७८ ॥
सत गुर रामांनद परसाद । अमल भया मन मिट्या विवाद ॥

कहै कबीर ऐ भेद अघाध । इनमैं समझै विरला साधि ॥ ७६ ॥
पूरण ग्यान कह्यौ निज सार । हरि हरि की वाणी निरधार ॥
सुणैं 'रु समझै सीखैं सोई । ताकू अखै अमर गति होई ॥ ८० ॥
सूरज उदे ज्यू तमर नसाई । मरम करम यू जाई विलाई ॥
पारवती सू भाख्यौ ईस । मनसा वाचा विसवा बीस ॥ ८१ ॥
सोही नारद सोनक समझाई । सबै रिषन का भरम गुमाई ॥
निरमै भया राम ल्यौ लावै । आणद मगल प्रेम बधावै ॥ ८२ ॥
ऐहि ग्रथ सुनि भग्म निवारै । अपणा मन हरि चरणां धारै ॥
हरि तत प्रेम बध्यौ मन धीर । ग्यानी का गुर कहैं कबीर ॥ ८३ ॥

॥ इति श्री ग्रन्थ रामसागर सपूरण ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(७३) **रास पंचाध्यायी** । रचयिता-नन्ददास । इसकी कई प्रतियाँ देखने मे आई, जिनमें सबसे प्राचीन प्रति सवत् १७६१ की लिपिकृत है। उसी का विवरण यहाँ दिया जाता है।

आकार-८ ८" x ६" पत्र-सख्या ११ । पद्य-संख्या ११४ । इन छंदों का क्रम अध्यायो के अनुसार विभाजित नहीं है पर रचना के पाँचों अध्याय पूर्ण हैं।

प्रथम अध्याय— में कुल १०४ छद हैं। उदयनारायण तिवारी द्वारा सम्पादित (तरुण भारत ग्रथावली-स० ३६) रास पचाध्यायी (और भँवर गीत-नन्ददास कृत) के प्रथम अध्याय मे १३२ छद हैं। इस ग्रथ मे उक्त प्रकाशित रचना के निम्नाकित ३१ छद नहीं हैं—

१०, १४, १७, १८, २१, ३६, ३७, ४४, ४५, ५८, ५६, ७०, ७२, ७३, ७४, ८८, ८६, ६०, १०२, १०३, १०४, १०५, १०६, १०७, १०८, १०६, ११२, ११३, १२१, १२२, और १२३, । और इस ग्रथ के निम्नलिखित ३ छद उक्त प्रकाशित रचना में नहीं हैं—

नगरि को धरम न रह्यो पलकति तन चल्यौ ढौरते ।
खग मृग गोवछ पछ कछ ते रहे को रते ॥ ८४ ॥
सुनि गोपनि के प्रेम बचन आच सी लगी तब हि जिय ।

पघर चल्यो नव नेह मीत नव नीत सहस हिय ॥ ८५ ॥
उज्जल मृदुल बालुका सरस अति सुभग सुहायौ ॥
जमना जू निज करन रग करि अयन बनायो ॥ ६५ ॥

द्वितीय अध्याय– १०५ से आरभ होकर १४१ पर समाप्त होता हैं। इस प्रकार द्वितीय अध्याय में३७ छद हैं। उपरोक्त प्रकाशित रचना में ५० छद है। अत इसमें निम्नांकित १३ छद कम हैं –

१३, १४, १६, २३, २४, २५, २६, २७, ३२, ४०, ४६, ४८ और ४६।

तृतीय अध्याय– १४२ से आरभ होकर १५५ पर समाप्त होता है। इस प्रकार इस अध्याय मे कुल १४ छद है। उपरोक्त प्रकाशित रचना में २२ छंद हैं। निम्नांकित १२ छद इसमें (ग्रथ में) नहीं हैं –

२, ६, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, २०, २१ और २२।

इस ग्रन्थ के निम्नलिखित छद प्रकाशित रचना में नहीं हैं —

बुधि जन मन हरनी बानी बिन जरत सबै तिय ।
अधर सुधा सब सहित तन कप्या बहु ज्या बहु पिय ॥ १५२ ॥
अरू पिय तुम्हरी कथा अमृत सब ताप सिरावहि ।
अमरामृत कौं तुछ करै ब्रह्मादिक गावहि ॥ १५३ ॥
ऐपरि जिन कर तुम्हरौ मोहन मुख अवलो क्यौ पिय ॥
तन की ताप बुझावो रसिक सविद कोबिद हिय ॥ १५४ ॥
जौ कैसे हु सांज समै सुन्दर मुष देषौं ॥
तौ इह बिधना क्रूर करि नैन लौ मेषौं ॥ १५५ ॥

चतुर्थ अध्याय– १५६ से प्रारभ होकर १७३ पर समाप्त होता है। इस प्रकार इस अध्याय मे १८ छद है। उपरोक्त प्रकाशित रचना में २७ छद हैं, अत निम्नाङ्कित ६ छद अधिक हैं —

६, ६, १०, ११, १२, १३, १७, १८ और २७।

पंचम अध्याय– १७४ से आरभ होकर २१४ पर समाप्त होता है। इस प्रकार इस अध्याय में कुल ४१ छद हैं। उपरोक्त प्रकाशित रचना में ८२ छद हैं। इसमे निम्नाङ्कित ४१ छद नहीं हैं –

४, ६, ७, ८, ९, १७, २६, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ५१, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ७४, ७६ और ७९ ।

इस प्रकार इस सम्पूर्ण प्रति में –

१ अध्याय में १०४ छद हैं, प्रकाशित रचना में १३२ छद है–इसलिये ३१ छंद कम है और ३ अधिक
२ ,, ३७ ,, ,, ,, ,, ५० ,, ,, ,, १३ ,, ,, ×
३ ,, १४ ,, ,, ,, ,, २२ ,, ,, ,, १२ ,, ,, ४ ,,
४ ,, १८ ,, ,, ,, ,, २७ ,, ,, ,, ९ ,, ,, ×
५ ,, ४१ ,, ,, ,, ,, ८२ ,, ,, ,, ४१ ,, ,, ×

इस प्रति मे २१४ छद् है प्रकाशित रचना मे ३१३। इस प्रति मे १०६। कम है और ७ अधिक हैं ।

[केवलराम दादूपथी, उदयपुर]

(६४) राहत (रहत) भजन निर्वाह । रचयिता–जगन्नाथ ।
आकार–४ ५″ × ३ १″ । पत्र-संख्या ६ । पद्य-सख्या २९ ।

आदि भाग–

दोहा

जत राखै जगन्नाथ जन, नर–नारी को होइ ।
सो माया ससार मैं, स्वरग न ससय कोइ ॥ १ ॥
क्यू ह्व उपजैं कांम वसि, जत का करै जतन ।
जगन्नाथ जगदीस जग्य, रहत अमोल रतंन ॥ २ ॥

अन्तिम भाग–

सहिजादै सांई सुमरि, चेरी मजि हरि चरण ।
जगन्नाथ ते जुगल , मेटे जांमण मरण ॥ २८ ॥
उद्धरैं उद्धर सही सो, सुमिरि सने ही रांम ।
जगन्नाथ जगनाथ में, निहचल ते निहकांम ॥ २९ ॥

[वकील रोशनलालजी सामर, उदयपुर]

(६५) **वाणी संग्रह** । आकार-९'२" × ६" । लिपिकाल "संवत् १८२५ बृहस्पतिवार, शुक्ल पक्ष, पोष सुदी १२" । इसमें निम्नलिखित रचनाएँ हैं—

क्र०स०	रचयिता-	रचना	पृष्ठ
१	दादूवाणी		१–१२६
२.	कबीर-साखी, पद, रमैणी		१२६–१८१
३.	नामदेव	,,	१८१–१९४
४	रैदास	,,	१९४–२०४
५	हरदास	,,	२०४–२२०
६	गरीबदास, अनभै प्रबोध		२२०–२३५
७	रामानंद	पद	२३५
८	सुखानद	,,	२३५
९	आसानंद	,,	२३६
१०	कृष्णानंद	,,	२३६
११	धना	,,	२३७
१२	सेना	,,	२३७
१३	पीपा	,, साखी	२३७–२४०
१४	सोझा	,,	२४०–२४२
१५	परसा	,, साखी	२४२–२४३
१६	सधना	,,	२४३–२४४
१७	कमाल	,,	२४४
१८	राणी	पद	२४४
१९	छीतम	,,	२४४–२४५
२०.	वहवल	,,	२४५–२४६
२१	काजी महमूंद	,,	२४६–२४८
२२.	सेख वहावदी	,,	२४८–२४९
२३	तिलोचन	,,	२४९
२४	मवन	,,	२४९–२५०
२५	अगद	,,	२५०
२६.	मुकुंद भारथी	,,	२५०

[केवलराम दादुपंथी, उदयपुर]

(६६) **विचारमाला** । रचयिता- नरोत्तमपुरी । आकार-८" × १०" । पत्र-संख्या १६ । पद्य-संख्या ४२ । रचनाकाल-संवत् १७२६ ।

आदि भाग-

दोहा

नमो नमो श्री रामजू, सतचित आनद रूप ।
जिन जान्यो जग स्वप्नवत, नासे भ्रम तम कूप ॥

राम मया सत गुरु दया, साधु सग जब होइ ।
तब प्रानी जाँनै कछु, रह्यो विषे रस मोइ ॥

ग्रथकार परिचय–

पुरी नरोतम मित्र वर, रखो अतीत भगवान ।
वरनी मालविचार मैं, ताकै कहै प्रमान ॥

अन्तिम भाग–

सोरठा

स्वप्न राग भयो रक, मांन तजे तहां तु धाव से ।
जागे वह पर जक, कहां विस्मय कहा हर्ष पुनि ॥

दोहा

आस्तिक नास्तिक ना कुछ, नहि जहां एक र होय ।
लघु दीरघ नहि गुन अगुन, न चेतस्वरूप मय सोय ॥

[अन्ताणी सग्रह]

(६७) **विवेक चिन्तामणि** । गुटका विविध सग्रह (२६ । २१) में सग्रहीत । रचयिता-सुन्दरदास । पत्र-संख्या ३१ । पद्य-सख्या– ३६ ।

आदि भाग–

आप निरजण है अविनासी । जिन या बहू विध सिष्ट प्रकासी ॥
अब तूं पकड़ उसीका सरणा । समझ देख निश्चै कर मरणा ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

जूदा कोई रहण न पावै । होय अमर ज्यू ब्रह्म समावै ॥
सुदर ओर कहू न उपरणां । समझ देख निश्चै कर मरणां ॥ ३६ ॥

(६८) **वीस हरमाण जिनस्तवन** । रचयिता-नयविजय । आकार– ६ २″ × ४″ । पत्र-संख्या ८ । पद्य-सख्या १२१ । इसमें निम्नलिखित जिन-स्तवन हैं –

क्र० स०	स्तवन	पद्य
१.	श्री मधर जिन स्तवन	७
२	भुग मधर ,, ,,	६
३	बाहु ,, ,,	५

४	सुबाहु जिन स्तवन	५
५.	जात स्वामी जिन भास	६
६.	सुबाहु ,, ,,	७
७.	रिष भासन ,, ,,	७
८	अनंतवीर्य स्तवन	६
९	सुरप्रत जिन स्तवन	५
१०	विशाल स्वामी जिन भास	५
११.	अनतवीर्य जिन स्तवन	६
१२	चद्रानन ,, ,,	७
१३	चद्रबाहु ,, ,,	७
१४.	भुजग ,, ,,	६
१५	ईश्वर ,, ,,	५
१६	नेमिप्रत ,, ,,	५
१७	महाजैन ,, ,,	६
१८	देव जस स्वमी ,, ,,	७
१९	,, ,, , ,, ,,	७
२०	अजितवीर्य ,, भास	६

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(६६) **वैराग्य शतक** । रचयिता--मुनि गुणचद । आकार-९'४"×४८" । पत्र-संख्या ४ । पद्य-सख्या १३३ । रचना काल-सवत् १८७०, आपाढ सुदि २ बुधवार । इसमें वैराग्य शतक की भाषा में टीका की गई है । भाषा-राजस्थानी । इसमें कुल ५ अध्याय हैं । एक अध्याय में २६, २ अध्याय मे २५, ३ अध्याय में २१, ४ अध्याय में २२ और ५ अध्याय में १९ पद्य हैं ।

आदि भाग-

> श्री आदीश्वर नित नमु , वांछित सुख दातार ।
> मगल कारक इण युगें, धरम तणा करतार ॥ १ ॥
> श्री सद गुरु प्रणमीं करी, धर्म तणो करि राग ।
> भाषा करि पच ढालियौ, कहू शतक वैराग ॥ २ ॥

अन्तिम भाग–

इहां भाषी वैराग्य नी, पचमी ढाल उदार ।
वैराग्य शतक अनुसार थी, कहियो ए अधिकार ॥ १६ ॥
गुणचद मुनि कहै प्राणियां, धारो धर्म सनेह ।
प्रभूचद ने आग्रहे, रचनो कीधी एह ॥ १७ ॥
सवत नभ मुनी वसु मही (१८७०), सुदि आसाढ उदार ।
द्वितिया तिथि बुध वासरें, वाणारसी मझार ॥ १८ ॥
भणसी गुणसी एहने, जैन धर्म सू राग ।
दिन दिन अधिको तेहने, ऊपजसी वैराग ॥ १६ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(७०) संग्रह । आकार–८'८" × ६" । लिपिकाल–'सवत १७६२ वर्षे शाके १६५७ मिति भाद्रवा विद ७ बुधवारेण लिखितं ब्राह्मण पोहकरणा बिसालधा लालचद का आत्म पठनार्थम् ।' यह प्रति सवत् १७३५ की प्रतिलिपि है । इसमें निम्नलिखित रचनाएँ हैं:–

१. भागवत दशम स्कन्ध भाषा । रचयिता–नन्ददास ।

२. रास पचाध्यायी । रचयिता–नन्ददास ।

३ विरह मजरी । रचयिता–नन्ददास । पत्र-सख्या ७ । पद्य-संख्या १६० –

आदि भाग–

दोहरा

परम प्रेम उझलनइ कु, वढ्यौ जु तन मन मैंन ।
व्रजवाला विरहन भई, कहति चद सौं वैंन ॥ १ ॥
अहो चदा रस-कद तुम, जातु आहि उहिं देस ।
द्वारामति नद-नद सौं, कहियो वलि सदेम ॥ २ ॥

चौपई

चले चले तुम जइयो जहाँ । वैठै हौहिं सावरे तहाँ ॥
निधरक कहियो जिय जिनि डरौ । हो हरि ! अब व्रज-श्रवनि फरौ ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

दोहरा

अवर भाँति ब्रज कौं बिरह, बर्नै न काहू नद ॥
जिनकौ मित्र बिचित्र हरि, पूरन परमानद ॥ १६० ॥

४ एकादश भागवत की कथा। रचयिता-सतदास ।

[केवलराम दादूपंथी, उदयपुर]

(७१) सभाय । रचयिता-अज्ञात । आकार-६.५" × ४.३" । पत्र-संख्या ५ । विषय-जैन-धर्म सम्बन्धी ८ स्वाध्याय ।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(७२) सत पुरूषां का गावा का सबद । रचयिता (सग्रंह कर्त्ता)-तुरसीदास । पत्र-सख्या ४ । पद्य-संख्या ५४ ।

आदि भाग-

राग गौरी

मन रे ये तेरा उनमाना—

हरि रस छांड बिषैं रस मातौ, तो भी माया उलझाना ॥ टेर ॥
श्रवण दवारैं राग आहारी, नैनां रूप लुमानां ॥
सम रस इद्री बिषै बिचारै, क्यू प्रगटया क्यू छाना ॥ २ ॥
नाना गध नासा कर भावै, षटरस रस ना खानां ॥
राजस कै छक छक्यौ डोलै, जैसे फरत दिवाना ॥ ३ ॥
श्रवण तुचा नै नासक रसना, पच बिषै लपटाना ॥
मिनषा जनम पायके भूढू, हरि की भगति भुलाना ॥ ४ ॥
चित कपटी कुबधी अर लोभी, अपणा गयै न आनां ॥
चचल चपल चुगल वौहो रगी, आप माहि बधाना ॥ ५ ॥

अन्तिम भाग-

आज स्याम देखे दधि पीवत है, सररररर । आज स्यांम टेर
कर सू कर पकरी मोहन नै, अरी छुरी मोरी गई कररररर ॥ १ ॥
नंद महर के झक झेलन में, मोती बिखरे खरररर कदेह ।
जो मिख मनसा वाचा मिले, तन मन अर पर लेह ॥ २ ॥

× × ×

विष मन दीना व जरजरी, बहै उडी अति धार ।
ऐक मना तर नीसरया, दूजा डूबण हार ॥ ३ ॥
अगम देस अमरापुरी, जहाँ हरिजन का बास ।
तहाँ कबीर (?) घर कीया, मटी मरण की आस ॥ ४ ॥

[रामद्वारा, धोली बावडी, उदयपुर]

(७३) **सतसार** । रचयिता–मुरलीदास । पत्र-संख्या ४ । पद्य-सख्या–७४ ।

आदि भाग–

स्तुति

प्रथम स्तूति गुर रांम कू, जासू सब परकास ।
भूत भव कि व्रतमान सब, तन को म्रलीदास ॥ १ ॥

दुहा

कहू ग्रन्थ इक सार जू, सुवज्यौ हौइ प्रसत्त ।
मुरली मजीए रांम कू, परिहरि सब दुरमत्त ॥ २ ॥

चौपाई

प्रथम सत सोही रांम उचारै । दूजौ मत सांच उरि धारै ॥
तीजौ सत सौ ब्राटिर खाई । सौ प्रसती प्रम पद पाई ॥ २ ॥

अन्तिम भाग–

सोरठा

प्रसत घर ग्रह चार, तीजौ ग्रिहचाडी सही ।
एक प्रमत सार, पाखड प्रभु मांनै तहीं ॥ ३६ ॥
ग्रिहसत हौइ भव पार, ग्रिहचाड़ी अधबिचि रहै ।
ग्रिहचारी मौ पार, पैली सुख प्रापति नही ॥ ३७ ॥

[रामद्वारा, धोलीबावडी, उदयपुर]

(७४) **सनेह लीला** । रचयिता-मोहनदास । इसकी एक प्रति का विवरण भाग एक १ (१५३) में दिया गया है जिसमें रचयिता का नाम 'रसिकराय' निम्नलिखित दोहे के आधार पर दिया गया है.–

जो गावै मीखै सुणै, मन क्रम वचन महेत ।
रसिकराय पूरण कृपा, मन वांछित फल देत ॥ १२० ॥

उक्त दोहे मे कवि ने 'रसिकराय' से श्रीकृष्ण से अर्थ लिखा है, जो अर्थ करने से स्पष्ट हो जाता है। परन्तु, श्रीमेनारिया ने रचयिता से ही उसका अर्थ ले लिया है जो अशुद्ध है। मन वाछित फल देने वाला 'रसिकराय' है। अत 'रसिकराय' ग्रथ कर्त्ता नहीं हो सकता। हमे इसकी ये दो प्रतियां मिली हैं :—

१. आकार–७½" × ६½"। पत्र-सख्या १०। पद्य-सख्या १३०। इसमें भी उपर्युक्त दोहा है। परन्तु उसकी क्रम सख्या १२० न होकर १२७ है। प्रति बहुत जीर्ण है।

[अन्तार्णी सग्रह]

२ आकार-११" × ५½"। पत्र १३। पद्य-सख्या १२५। लिपिकाल सवत्-१६३१ जेष्ठ कृष्ण १५ भृगुवार। लिपिकार-रतनदास। इसमें रचयिता का नाम मोहनदास दिया हुआ है। इसमें भी प्रथम भागवाला दोहा है। इन दोनों प्रतियो का अन्तिम भाग इस प्रकार है –

नासत सकल क्लेस पुनि (कों १), सुनत बढत (अरु उपजत १) मन मोद।
युगल (जुगल १) चरन मकरद मन, पावत परम विनोद। (१) १२६। (२) १२४॥

प्रति (१) भ्रमर गीत कोंसो पढ़ै, सुनै सक्ल चितलाय।
इअथा मनि की पूरवै, श्री राम कृष्ण सहाय॥ १३०॥

प्रति (२) श्री मुकद मन मधुप जहँ, सकल सत अनुराग।
जसुधा प्रेम प्रवाह में, परे रहत वडभाग॥ १२५॥

[व्रजलाल वैरागी, भींडर]

(७५) **सन्तदास वाणी संग्रह।** इनकी रचनाएँ कई सग्रहों मे मिलती हैं, जिनमें से कुछ का उल्लेख इस प्रकार है —

प्रति– १ आकार–५·८" × ३ ३"। लिपिकाल–सवत् १८७६। इसमें सन्त-दास की अणभै वाणी के १० अग, ५६५ साखी, ४ रेखता और २ पद हैं। इसके अतिरिक्त इसमे निम्नलिखित रचनाएँ हैं —

१ रामचरणजी की अणभै वाणी, अनभौ-विलास, सुखविलास, ग्रन्थ नांव प्रताप, शब्द प्रकाश, चिंतावणी, प्रथम रेखता, क्वित और राग चरचरी।

२ परमहस सूरतरामजी की वाणी (साखी), कुण्डलियाँ, रेखता, सवैया झूलणा, क्वित (विभिन्न अगों में), कका बत्तीसी, चिंतावण बोध, पदराग चरचरी, चद्रइणा (विभिन्न अगों मे), सुबोध प्रकाश और नांव बत्तीसी।

३. साधां दूल्हरामजी का सवद ।

४ साधां रतनदासजी का प्रसगी दोहा १६६

५. सरवगसार का फुटकर सवद ७३६, इसीमें नवधा भक्ति, प्रेम लक्षण निरुपण, साखीदास की चौपाई, समय सार नाटिका का कित्त, अठारा नातां कौ न्यौरौ, मुरलीदास कृत ग्रथ सतसार, सूर, मीरां और कबीर के महत्त्वपूर्ण पद हैं ।

६. प्रहलाद चरित्र–जनगोपाल

७ मोहमरद की कथा–जगन्नाथ, तुलसीदास का शिष्य । सवत् १७७६ कार्तिक विद् १२ सोमवार ।

८. हरिचद सत– ध्यानदास । इसका लेखन काल इस प्रकार है.–

उदध दौत करि लीजिये, लेखन मार अठार ।
ध्यांनदास वसुधा लिखे, भगवत भगति अपार ॥
॥ संवत् १८२७ ॥

६ प्रसणसिणगार– सेवादास कृत, गाजी गिरधरदास के शिष्य ।

१०. एकादस की ध्याई

११ कबीर की साखी ।

प्रति–२ आकार–६ ५" × ४ ५" । पत्र-संख्या-२१८ । इसमें भी निम्नलिखित रचनाएँ सग्रहीत हैं —

१ सतदास की अणमै वाणी । पत्र-सख्या १४ । पद्य-सख्या १२ ।

२ रामचरण की अणमै वाणी, गुर म्हमा ग्रन्थ, नावप्रताप, सबद प्रकास, चिंतावणी, मनखडण आदि ।

३ मुरलीराम की वाणी

४ सग्रामदास की वाणी

प्रति– ३ । पत्र-सख्या ४४ ।

(१) अणमैवाणी के अगों की विस्तृत सूचि इस प्रकार है –

(१) १.	गुरुदेव कौ	अग पद्य	१	से	६६
२	गुरु समथाइ कौ	,, ,,	७०	,,	७१
३	सुमरण	,, ,, ,,	७२	,,	१३६
४	नांव निरणा	,, ,, ,,	१४०	,,	१६०
५	जीव	,, ,, ,, ,,	१६१	,,	१६५

	६. नाव महमा	,, ,, १९६ ,,	१९२
	७ जीव ,, ,,	,, ,, १९३ ,,	२०१
(२)	८ साध–	,, ,, १ ,,	५२
	९ ,, महमां ,,	,, ,, ५३ ,,	५५
	१०. ,, पारख ,,	,, ,, ५६ ,,	६०
	११ ,, परमार्थी ,,	,, ,, ६१ ,,	६७
(३)	१२ उपदेस-	,, ,, ,, १ ,	५४
(४)	१३ चिंतावणी	,, ,, , १ ,,	१२०
(५)	१४ टेक–	,, ,, १ ,,	१८
(६)	१५ साध सगति	,, ,, १ ,,	१६
(७)	१६ मगति द्रोही	,, ,, १ ,,	८
(८)	१७ जिग्यासी	, ,, १ ,,	९
(९)	१८ ?	,, ,, १ ,,	१०

(२) रेखता–४

(३) स्तुति के पद २

आदि भाग–

अथमै पद परकासिके, दाइक सत गुर राम ।
अनंत कौटि जन साहि की, ताहि करू परनाम ॥ १ ॥
अग ॥ सइ गुर का ऐको सबद, मन कोई लेवैं मानि ।
तो सहज होत है सतदास, मुसकलि सृ आसानि ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

सीस दीयां सब को कहै, भलां भलां जग मांहि ।
राम भजन विनि संतदास, सदगति पहूँचै नाहि ॥ ७ ॥
रांम नाम का मौरछा, सत गुर दिया बताइ ।
अब खेत न छोड़ै सतदास, जौ तगा तगा हौइ जाइ ॥८॥ अंग १० । साखी ५६३॥

ग्रन्थकार का विशेष परिचय—

छंद पद्धरी

नम्र दांतडै भये मंतदाम । राम नाम उर दृढ उपास ॥
निम दिन रहै गम तज आस । ररकार छाप सोमत जास ॥

तज भरम क्रम श्रान उपास । रह जल कँवल ज्यूँ राग उदास ।
श्रणमै मुख उचारत बानी । सुनत नर लहे सुख खानी ॥ १ ॥

छन्द शिखरण

सिष्य तास कृपाराम है, सो भये मुक्ति-धाम है ।
रटै रैन-दिन राम है, न और कोई काम है ॥ २ ॥

× × ×

छंद नराज

उन सिष्य भान ज्यूँ उद्योत जग मानिये ।
द्वितीय ब्रह्म रूप रामचरण जानिये ॥
प्रसिद्ध जन महु अनत जीव त्यार हैं ।
महिमा अनूप जाकी कैसे पावै पार है ॥
अद्वैत मत उधार के द्वैत कू उखारयो है ।
अह मम राग द्वेष देहि माना (?) डारयौ है ॥
तीन गुण जीत के ज मेटी सब मीत है ।
काटी मोह जाल सब विचरे नचींत है ॥

× × ×

छंद निसारणी

उन सिष्य जी राम सेवगजी राम नाम एक गाय दा ॥
काटी जग-जाला दीन-दयाला निर्द्वंद विचाराय दा ॥
सद्गु सुचरणा जामण-मरणा मेट 'र ध्यान धराय दा ॥
राम उपासी द्रढ विस्वासी तेजवान बड भाय दा ॥
इती करारी जगत न यारी कनक बाम हटाय दा ॥
भये प्रसिद्ध सब सिष्य मध्य श्रणमै मुख गाय दा ॥
सुन श्रणमें बानी नशै श्रघ खानी जग मन हुलमाय दा ॥
ज्ञान की झोल मुक्त अमोल दे भव दु ख (तुरत) मिटाय दा ॥
सिष्य अनता मत के मंता राम को ध्यान धराय दा ॥ ६ ॥

चौपाई

तास सिष्य भए पूरणदासा । राम नाम के द्रढ ऊपासा ।

ज्यू जल-कवल रहे जगमाही । वैर भाव जग राग न जाही ॥ ११ ॥

× × ×

मनहर छंद

तास सिष्य जानू ऐक साची उन गही टेक ।
बडे तेज बुद्धिवान, नाम श्री व्रत राय है ।
सील संतोष जलीयां राम-रस सुख पीयां
द्वंद उपाधि मेट सारी भजे नित्य रांम है ॥
काछ द्रढ मत द्रढ उर माही ज्ञान द्रढ
कोऊ आवे सरण ताही देत मुक्ति धाम है ।
सो है दीन के दयाल मोकूं कीयो है निहाल
ऐसा गुरुदेवजी कूं वंदे करुणारांम है ॥ १२ ॥

दोहा

ता सिष करुणारांम है, रचे जीन यह छंद ।
गुरु संत कृपा करो, काटो मम भव बंध ॥ १४ ॥

× × ×

चरण सरण मोय दीजिये, काट जगत की पास ।
व्रतरांम म्हाराज के, चरण कवल की आस ॥ १७ ॥

× × ×

वरष उकीसा में भयो, भये स्वेत सब केश ।
सो देख चिंता चित भई, जरा दियो सदेश ॥ २ ॥

× × ×

मनहर

शशि[१] ग्रह[९] वेद[४] शशि[१] संवत शशि[१] वेद[४] षट[६]
आसाढ शुक्ला सप्तमी[७] अम्रत वेला जानिये ।
संसार असार लख तज्यो जान स्वान मख
रविवार सत गुरु सरणो लीयो मानिये ॥
उदीयापुर सुनाम रामद्वारा म धाम
तपे श्री व्रतराम ऐसी ओपमा को मानिये ।

ओपमा स्वरुप आप मेटयो मोर भवताप
करुणाराम नाम दीयो सत गुरु जानियें ॥ १ ॥

चौपई

वरप शशि[1] ऋषि[7] उमर माही। जगत जस रगु लीयो आई ॥
श्री त्रपराम कपा कीनी। दियो राम भव भय हर लीनी ॥

मनहर

सवत् शशि[1] ग्रह[9] जानू साल नैत्र[2] वेद[4] मानू
माव मास ऋतु बसत सुम लग्न जानीयें।
जनम उत्सव भयो सावा पान (।) दिन गयो
हर्षित सब नारी नर परवार जानीयें ॥
जनम नाम कढायो कृष्णलाल सुम पायो
देश हाडोती नग्र कोटो रामपुरो मानियें ॥ ६ ॥

× × ×

सबत् ग्रक उलटीयें, वेद[4] वेद[4] शशि[1] ग्रह[9]।
माघ ज शुक्ला पंचमी, रवी पूर्ण भयो यह ॥ ८ ॥
सहर उदेपुर जानियें सर पीछोला तीर।
जहाँ राम को धाम है, संतन की अति भीर ॥ ९ ॥
नागा नगरी निकट है, श्रीवड रामद्वार।
तहाँ लिख्यो यो गोटको, करूणाराम विचार ॥ १० ॥

[बडा रामद्वारा, उदयपुर]

(७५) **सरबंग सार** । रचयिता-नवलराम । आकार-७'६" × ५'६" । पत्र-संख्या ४२६। रचना काल स० १८३४। लिपिकाल-स० १९०७, फागण सुद-३, बुधवार। लिपिकार-रामदास। इसमें विविध सतों के मत सिद्धान्त, विचार, भावना आदि को लेकर संत साधना सम्बन्धी ४० विपयों का प्रतिपादन किया गया है। यह विविध संतों की वाणियों का सार ग्रन्थ है। लेखक का उद्देश्य आदि भाग में इस प्रकार दिया गया है -

कुण्डलिया

सत गुर मुझि पे मेहरि करि, त्रगसौ बुद्धि विचार।
श्रवगसार ए ग्रथ जो, ताकौ करू उचार ॥

ताको करूं उचार, साखी संता की ल्याऊ ।
उकति जुकति परमांण, और अतिहास सुनाऊ ॥
नवलराम सरणै सदा, तुम पच्छ हिरदै धरि ।
सत गुर मुभि महरि करि, बगसौ बुद्धि विचार ॥

कवित

बगसौ बुद्धि विचार, सुरति धरि रहै जु मेरी ।
करू ग्रथ सरबग एक धरि साखि घनेरी ॥
सत पुरषा का सबद सोधिकैं देस मिलाऊ ।
सत गुर के परताप उकति सो अग बणाऊ ॥
जुगति जुगत निरणै करू भव तिरणै की रीति ।
नवल जगत कूं ना रुचै करै ममोषी प्रीति ॥ २ ॥

दुहा

अनंत कोटि जन सिर तपै, राम चरण उर मांहि ।
आंन भरोसो आन बल, नवलरांम के मांहि ॥ ३ ॥
रांम निरंजन सत जन, सत गुर दया सुसंग ।
जिनकै बाल बुधि सू करू, सुधा समद अबग ॥ ४ ॥
प्रथम स्तुति बरनन करू, आगे और विधांन ।
अघि-मोचन ए ग्रथ जू, ज्यों 'तिम-मोचन मांन ॥ ५ ॥

अन्तिम भाग-

भरमी करमी लछि बिना, वाचिक बिषी असाध ।
ताकू ए भावै नहीं, सुणि कै करै विवाद ॥ ११५ ॥
वाद विवाद निवारिऐ, साधू सब्द विचार ।
नवल दोस हम कू नही, सता माषै सार ॥ ११६ ॥
सार रूप ए ग्रथ है, अरथ जुगति ता माहि ।
ससक्रत का श्लोक है, वांणी माषा मांहि ॥ ११७ ॥
साध सब्द गति अगम है, मैं काहा जांनू भेव ।
नवल हिरदै जन प्रगटे, ग्रथ भयौ तव एव ॥ ११८ ॥
मेरी कुछि सरधा नहीं, सतगुर क्रपा कीन ।
साधू रामदयाल सिरि, नवल भऐ प्रवीन ॥ ११९ ॥
सत भगति सुभ स्वांति सुख, दुख मिटावन जोइ ।

नवल सरणि गुरदेव की, सब ही कारज होइ ॥ १२० ॥
वीतराग निति ब्रह्म जू, रांमचरण कू जोइ ।
नवल सरणि निज दास की, ग्रंथ बनायो जोइ ॥ १२१ ॥
घटि बधि कोई सकला, अर्थ भेद जो होइ ।
सब जन छिम्या कीजियौ, मैं सरनागति तोहि ॥ १२२ ॥
मेरी बुधि अति तुच्छि है, तुम्हारे सबद अपार ।
नवल कहै तुम महरि सू, उपज्यौ एह विचार ॥ १२३ ॥
साहिपुरा निज नग्र मधि, सतगत अति सुम धाम ।
नवल क्रिया गुरदेव की, श्रवगमार ग्रंथ नांम ॥ १२४ ॥

सोरठा

सबत सौ एहजानि, अठारासै चौतीस जू ।
पौस बुद्धि परमांन, चतुर्दसी रविवार कू ॥ १२५ ॥

ग्रन्थ की विषय सूचि —

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(७६) **सिद्धान्त बोध** । रचयिता–महाराजा जसवतसिंह । आकार–९″ × ५¾″ । पत्र–सख्या ४५ । पद्य–सख्या १२ ।

[अन्तारणी सग्रह]

(७७) **सिद्धान्त बोल** । रचयिता-अज्ञात । पत्र-संख्या ६ । पद्य-संख्या ६६ दोहे और २६३ ढाल ।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(७८) **सिद्धान्त सार** । रचयिता-महाराजा जसवन्तसिंह । आकार-६″ × ५३/४″ । पत्र-संख्या ७ । पद्य-संख्या १७६ ।

[अन्ताणी सग्रह]

(७६) **सुन्दरदासजी सवैया** । रचयिता-सुन्दरदास । प्रति १:-आकार-४·३″ × ३ ६″ । पत्र-संख्या ५६ । पद्य-सख्या ११४ ।

[वकील रोशनलालजी सामर, उदयपुर]

प्रति२-आकार६ ५″ × ४″ । पत्र-सख्या १८० । पद्य-सख्या ७६५ । इसीके साथ दादूदयाल की वाणी है जिसकी पत्र-सख्या ३४६, पद्य-संख्या ७५०० और लिपिकाल स० १८४६ है:-

नवसे नवमे कहते है, त्रीस बीस लै और ।
नव उपरि फागुन सही, एकादशी गुर मौर ॥

[चुन्नीलालजी दादूपंथी, वडी ब्रह्मपुरी, उदयपुर]

(८०) **सूरतरांम वाणी संग्रह** । रचयिता-जन सूरतरांम । इसकी कई प्रतियाँ मिलती हैं । सूरतरांम की रचनाएँ रामद्वारो के कई ग्रन्थों में विखरी पड़ी हैं । कहीं-कहीं सव एक साथ संग्रहीत भी मिलती है । रामस्नेही पथ की रचनाओं की एक विशेपता यह है कि उनकी रचनाओं के शीर्षक वहुधा छदों के नाम पर मिलते हैं । अत उन्हे एक ही रचना के अन्तर्गत नहीं मानना चाहिये । यह परम्परा कवीर की रचनाओं साखी, अलिफ नामा, राग फगुआ, विचार माला, शव्द, हिंडोरा, रेखता आदि के समान विकसित हुई है । जैसे-साखी, ककावत्तीसी, रागमाला, शव्द, रेखता, कुण्डलियाँ, कवित्त आदि । सूरतरांम की रचनाओं के एक संग्रह का विवरण यहाँ दिता जाता है, जिसका आकार ६·५″ × ४″ है ।

१ वांणी (साखी) । पत्र-सख्या २७ । अग ३५, साखी २६ ।

आदि भाग–

स्तुति का छंद

नमो अमाप नमो अथाप नमो नमस्ते परमदेव ।
नमो अजन्मा नमो सबनमां नमो नमस्ते ना छेव ॥
नमो अलेख्य नमो अमेख्य नमो नमस्ते मत्र पार ।
उ ति पति पर लऐ सथ तियाल नमो नमस्ते निराकार ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

राम भजै सोही सत है, मत सू बधै नाहि ।
जन सूरतराम हरि भजन बिनि, धकाधकी बौहो खाहि ॥ ६ ॥
धखा खाइ दरबारि मैं, रांम बिना सब कोइ ।
जन सूरतरांम सांची कहै, भ्रिही मेष किन होइ ॥ ७ ॥

॥ इति मेष कौ अग सपूरण ॥

२ कूडल्या । पत्र–सख्या ७६ । अग २५, कूडल्या ६६ ।

अन्तिम भाग–

सम्रथ ग्यांन बिचारिऐ, सम्रथ सरणू जोय ।
आन भम त्रिन्न चारणीं, निति हि परलै होय ॥
निति हि परलै होय, भजन बिनि जनम गुमायौ ।
राम नाम सुख छाडि, भरम सगि पाप कुमायौ ॥
जन सूरतरांम साची कहै, च्यारि जुगा दुख होइ ।
सम्रथ ज्ञान विचारीऐ, सम्रथ सरणू जोइ ॥ ७ ॥

३ रेखता । पत्र–सख्या ८ । अग ६, रेखता २१ ।

अन्तिम भाग–

खेत कू हाकि कै बोहोती दई खात भी नांखी पलाव कीन्हा ।
मेंजड़ा फेरि कै खूब भी करि रख्यां घास अर फूसि कू डारि कीन्हा ॥
बीज औरै नहीं कालजा कटि हैं खेत कू देखिकै खुसी होई ।
वसि ही बत करि कू ण सुख पाईया बींद बनि जान बेकाम जावै ॥
जन सूरत ही गंम अब समभः करि देखीऐ सीस बनि धड कसि काम आव ॥ ८ ॥

४ सवईया। पत्र-सख्या १०। अंग १६, सवईया ४०।

अन्तिम भाग-

ऐसे वेईमांन गुलाम हलांम है जासकी बुद्धि में सुधि नहीं कोई।
राम तजै अर दांम भजै सुनि साग काछयौं जैसे रावल मोई॥
सेवग जाट 'र माली कीया सट खेत खलै दुख ही दुख रोई॥
सूरतराम ऐ रांम सूं वै सुख आग लीया छली दोन्यूं ही खोई॥ २॥

५. झूलणा। पत्र-सख्या २। ५, झूलणा ७।

अन्तिम भाग-

अरे नर मूरिख चेति वेगी पल मांहि सो काल उडावता है।
तीन हीं लोक को कुण चलो ब्रह्मा बिसन कू खावता है॥
तू दिन रैनि भजै नहीं रांम कू रांम विना दुख पावता है।
जन सूरतराम अकाल भया निति ब्रह्म सूं ध्यान लगावता है॥

६ किवत। पत्र-संख्या ४। अङ्ग ६, किवत १४।

अन्तिम भाग-

दुनियां वड़ी कुरग, जासके एक न रंगा।
नांनां इसट उपाइ, तास कौ मन वो मगा॥
रांम नांव कू छाडि, आन कू सीस नवावै।
अपण फिरतब पूजि, राम कू पूठि दिखावै॥
म्हान्निमट ससार है, जामैं लच्छिन नांहि।
जन सूरतरांम सांची कहै, मग्या काल मुखि जांहि॥ ३॥

७ नांव वतीसी। पत्र-संख्या ७। छंद झंपाल, ३२।

आदि भाग-

सूरतराम करै असहज जू, रांम गरू सू वदनं।
नाव महातम करू वतीसी, जाति सवद की छदन॥
सुनत ही भ्रम क्रम सव भागै, उपजै नाव जिग्यासा।
नांव म्हातम परमपरा सू, धरि चित ल्यौ पदवासा॥ १॥

८. कका बत्तीसी । पत्र सख्या ३ । पद्य-संख्या ३३ दूहा ।

आदि भाग—

सतगुर कू निति बदनां, निमसकार निति राम ।
सब सत की म्हरि ग्रथ करू, ककाबतीसी नाम ॥ १ ॥
कका क्रिपा करि गुर देवजा, लयौ सरण गति मोहि ।
दीयौ भजन निज ब्रह्म कौ, सारथा कारिज सौइ ॥ २ ॥

अन्तिम भाग—

ससा सतगुर की दया, कीयौ जीव कू पार ।
अैसे गुर कू कीजीऐ, बदन बारु बार ॥ ३१ ॥
हहा हरि गुर महरिकरि, दई बुद्धि ऐह मोहि ।
एह ग्रन्थ सुणि हरि भजै, ताकौ कारिज सहजै होई ॥ ३२ ॥
कका बतीसी ग्रन्थ मधि, भाष्यौ सुमरण सार ।
बांचि बिचारै जो कोई, जन सूरतराम होइ पार ॥ ३३ ॥

९ पद राग चरचरी । पत्र-सख्या २० । पद्य-सख्या पद ४६, साखी २ ।

आदि भाग—

देखो रे सतगुरजी दाता, ऐसा राहा चलाया हैं ।
भरम करम सब दूरि निवारया राम नाम पिछणाया हैं ॥ टेक ॥
जाकू रटत मन सुद्ध 'ज हुँवा, प्रेम प्रीत उपजाया हैं ।
उनके चरण सरण सुख पावै, जनम-मरण मिटिजाया हैं ॥ १ ॥
भाग भला जब रासण होई, ऐसा सतगुर पाया हैं ।
जनकी म्हमा अगम अगोचर, ब्रह्मा वेद स गाया हैं ॥ २ ॥
सिव सनकादिक वै ही ध्यावै, सोही तत बताया हैं ।
ऐक नाव की न्हचै राखै, परमपद सुख पाया हैं ॥ ३ ॥
जन सूरतराम का सांसा भागा, रामचरण गुर पाया है ।
तन मन की सब आस निवारी, ध्यान अखडत ल्याया है ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग—

साखी

हरिजन अैसा चाहिऐ, द्रौपदि का सा रूप ।
दुख मेटे सुख उपजै, जन सूरतरांम अनूप ॥ १ ॥

साधू अैसा चाहिऐ, तन सू रहै उदास ।
रामभजन निसि दिन, जन सूरतराम गुर पास ॥ २ ॥

१०. चद्रइणा । पत्र-सख्या २३ । अग २१, चद्राइणा ३५ ।

अन्तिम भाग-

कौई मुख ह्वै रहै है वात कौ करत हैं ।
कौ कथियो था ग्यान का जन ही सरत हैं ॥
कौ देवी को घ्यान रूद्र कौ घ्यात हैं ।
परि हाँ सूरतराम भजि राम ब्रह्म पदपात हैं ॥ ३ ॥

११ सुख बौध कौ छटौ प्रकरण । पत्र-सख्या । इसमें किवत, अरेल, सरोठा, चौपई, कूंडल्या, झंपाल, निसाणी, साखी, त्रिभगी चद्राइणा, सवइया, मनहर, चामर, छपै, दुहा, रेखता-कुल ६५ पद्य हैं ।

आदि भाग-

किवत

वरकति विरति विचारी अरपि आपौ तुम गावौ ।
वरणि दस अवधूत रीति सूँ मौहि सुनायौ ॥
अवै साध कौ मग साध मइमां सौ गावौ ।
पारख साध असाध जिनूँ की रैसि वतावौ ॥
सत सगति अर साध सग भयौ भलै प्रकार ।
जन सूरतराम उरि सिस्व के सुन सै प्रीति अपार ॥ १ ॥

[रामद्वारा, धोली वावडी, उदयपुर]

(८१) ह्वाल वोध । रचयिता-रामजन । पत्र-सख्या ११ । पद्य-संख्या दोहा १०, चौपई ६१ ।

आदि भाग-

करो फकीरी रामजन, रे मन ह्वाल विचार ।
सुमर राम रमतीत कू, अपनौ आपौ तार ॥ १ ॥
आपौ तारौ रामजन, तौ निज ह्वाल समाय ।
निरदावैं निर वासनां, सत गुर सिख्या पाय ॥ २ ॥

अन्तिम भाग–

> कर जोडै करणां करै, सुणज्यो दीन दयाल ।
> माहा कठिन कलू काल मै, आप निभावौ ह्याल ॥ ६९ ॥
> आप निभावौ ह्याल ऐह, सतगुर राम निधान ।
> रांमजन मन बच करम, ऐ मागत करदान ॥ ७० ॥
> ऐही मागत हू सदा, राम गरू कै पास ।
> रामचरण पद रैण कौ, रामजन नित दास ॥ ७१ ॥

सूचना-इसीके साथ रामजन्न कृत 'ज्ञान-प्रमोद' । है जिसकी पद्य- सख्या ३६७ है।

[रामद्वारा, धोली बावडी, उदयपुर]

———

(२) काव्य, साहित्य-शास्त्र, इतिहास आदि....

(१) **कवित्त रामायण** । रचयिता-तुलसीदास । आकार-११'२"×५२" । पत्र-सख्या ४२ । पद्य-संख्या २८७ । लिपिकाल-स० १८५१ । इसी के साथ तुलसीकृत 'रामचरित मानस' की भी तीन प्रतियाँ मिली है । मेरे पास भी एक प्रति स० १६०१ की लिपिकृत है ।

[केवलराम दादूपथी, उदयपुर]

(२) **खुम्माण रासो** । रचयिता-प०दौलतविजय । आकार-१०"×४४" । प्रति अपूर्ण है । इसके केवल चार पत्र हैं । प्रति पत्र पर १६ पक्तियाँ और प्रति पक्ति मे ५५ अक्षर हैं । ६५ छदों में अजेसी, 'लपमसी अरसी अधिकार समय' समाप्त हुआ है । अत में रचयिता का नाम प० दौतलविजय गणि दिया गया है । अत यह प्रसिद्ध 'खुमाण रासो' का कोई भाग है । इसमें अजेसी, लपमसी, अरसी, हम्मीर आदि का चित्तौड के लिये अलाउद्दीन के साथ युद्ध का वर्णन है । इसमें यद्यपि कोई रचनाकाल या लिपिकाल नहीं दिया है परन्तु इसके अत में दिया हुवा यह दोहा बहुत महत्व पूर्ण है —

'सवत्सर सवत्त मे, तेरे से तेताल ।
आघडिया हिन्दू असुर, धरा करे धकमाल ॥'

आदि भाग-

गाहा

गौरी गुणे गहिरम् । गिरिं तनया माय देहि वर वित्तं ।
भय हरि भगति भीर । चामु डा होय इक चित्त ॥ १ ॥

दूहा

कमल वदन कमलासनी, कवि उर मुख कैलास ।
वसे सदा वागेश्वरी, विधि विधि करे विलास ॥ २ ॥
कवि दीजे कमला कला, जोडण कवित जुगत्ति ।
सुरिज वस तणो सुजस, वरणव करू त्रिगत्ति ॥ ३ ॥
गढां मुगट चित्तोडगढ, राजे राण हमीर ।
चित्तोडो दलते चमर, वडो अद्दबाहो वीर ॥ ४ ॥
कहु त.म गुणरी कथा, सुणज्यो सवण सुचित्त ।
एवे पालक वातां विहद, विधि विधि कथ विगत्त ॥ ५ ॥
पुहवि पति पहि उप्पडे, लोह लगायो रास ।
अनड पहीमो अरसि सुज, नृप तिहाँ कियो निवास ॥ ६ ॥
गढ दिल्लीपति गजियो, दीनो गड सर सल्ल ।
सभियो गढ सोनिग्गरां, अेके गढ अणहल्ल ॥ ७ ॥
सिसोदो सायर नयर, हे सु अरसी राण ।
एक दिवस आखेट के, चढिया श्री दीवाण ॥ ८ ॥

गाहा

चोसर धिरथा गिर घमसाण । जूडा एकल्ल सुमट जुम्माण ।
धार अणी अवसाण । गोली पखाल गणाण ॥ ६ ॥

अन्तिम भाग–

बावीमे बेटा हुती, घटि घटि आये काम ।
गढ कज्जे गढ लषमसी नवखड रख्यो नाम ॥ ५ ॥
वरस अठारे वीस दिन, रिवु अजेमी राण ।
पाट वेटि पडतालिया, मुरडिया मुगलाण ॥ ६ ॥
मुच्यो नहि मुगलाण पति, समसद्दी सुरताण ।
कटथो गढ किल्लो करे, पनरे वरस प्रमाण ॥ ७ ॥
दिसि दिल्ली दिट्ठी नहीं, विढियो वारण वेर ।
पितु वेरे आपही पडे, सुज्ज गहेस मरोर ॥ ८ ॥
सवतसर सवत्त में, तेरे से तेताल ।
आथडिया हिंदु असुर, धरा करे धकपाल ॥ ६ ॥

[माणिक्य ग्रन्थ भंडार, भींडर]

(३) गोरावादल पदमिणी चउपइ । रचयिता-हेमरतन ।

इस ग्रन्थ के कई सस्करण और प्रत्येक संस्करण की कई प्रतियाँ मिलती हैं, जिससे ज्ञात होता है कि यह रचना किसी समय बहुत प्रचलित थी। राजस्थान के बाहर भी इसकी प्रतियाँ पहुच चुकी हैं जिनमें से नागरी प्रचारिणी सभा काशी, गुजरात विद्या-सभा, अहमदाबाद, ऑरिएण्टल इन्स्टीच्यूट, वडौदा और भण्डार इन्स्टीच्यूट पूना के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त कई जैन भण्डारों में भी इसकी प्रतियाँ मिलती हैं। मैंने इस कृति का सम्पादन किया है जो अब 'राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर, जयपुर' द्वारा प्रकाशित हो रही है। अत. इसके विषय में यहाँ अधिक न लिख कर कुछ महत्त्वपूर्ण बातें ही लिखी जाती हैं।

इस कृति का मूल लेखक हेमरतन है। सवत् १६४५ मे हेमरतन ने सादडी (छोटी) मे महाराणा प्रताप के मत्री भामाशाह के छोटे भाई ताराचद के आग्रह से इसकी रचना की। इसकी सबसे प्राचीन प्रति श्री रविशकर देराश्री, बनेड़ा के पास है जिसकी सम्पूर्ण फोटो प्रति उन्हीं से मुझे प्राप्त हुई। इसकी प्रशस्ति इस प्रकार है -

बादल राउत नी ए कथा। सुणता नावइ निज घटि व्यथा॥
रोग सोग दुख दोहग टल'इ। मन ना सयल मनोरथ फल'इ॥ ६०८ ॥
पूनिम गछि गिरूआ गणधार। देव तिलक सूरिसार सार॥
न्यान तिलक सूरीसर तास। प्रतपइ पाटइ बुद्धि निवास॥ ६ ९ ॥
पदमराज वाचक परधान। पुहवी परगट बुद्धि निधान॥
ताछ सीस सेवक इम भणइ। हेमरतन मनि हरषइ घणइ॥ ६१० ॥
सवत सोलइ सइ पणयाल। श्रावण सुदि पंचमि सुविशाल॥
पुहवी पीठि घणु परगडी। सबल पुरी सोहइ सादडी॥ ६११ ॥
पृथवी परगट राण प्रताप। प्रतपइ दिन दिन अधिक प्रताप॥
तस मत्रीसर बुद्धि निधान। कावेड्या कुलि तिलक समान॥ ६१२ ॥
सांमि धरमि धुरि भामु साह। वयरी वस विधु सण राह॥
तस लघु भाई ताराचद। अवनि जाणि अव तरिउ इन्द्र॥ ६१३ ॥
भूय जिम अविचल पालइ धरा। शत्र सद्द कीधा पाधरा॥
तसु आदेश लही सुम माइ। सभा सहित पांमी सुपसाइ॥ ६१४ ॥
बात रची ए बादल तणी। सांमि धरमि ए सोहामणी॥

वीरा रस सिणगार विशेष। रस बेरस श्रछइ सविसेष ॥ ६१५ ॥
सुणता सवि सुख समद मिलइ। भणता भावटि दूरइ टलइ ॥
ऊजम अगि हुइ श्रति घणउ। मुहकम जाणइ करि मत्रणउ ॥ ६१६ ॥
षट सित षोडस गाथा बधि। सुणिउ तिसु भाष्यु सबधि ॥
श्रधिकऊ न जे उच्चरिउ। मयण सुणी ते करयो खरु ॥ ६१७ ॥
सामि धरम पालतां सदा। मगली श्रावइ घरि सपदा ॥
सुर नर सहू प्रससा कर'इ। वरमाला ले लखमी वर'इ' ॥ ६१८ ॥

इति श्री गोरा बादिल चरित्रे। बादिल जय लक्ष्मी वर्णनो नाम प्रथम खड। सवत् १६४६ वर्षे मगशिर सुदि १५।

इससे यह स्पष्ठ होता है कि हेमरतन ने एक से अधिक खंडों मे इस काव्य की रचना की हो। परन्तु इस प्रथम खड से आगे की कथा अब तक कहीं प्राप्त नहीं हुई। हमें अब तक जितनी प्रतियाँ प्राप्त हुई उसमें गोरा बादल की कथा ही मिलती है, जिससे हम इस निर्णय पर पहुचते हैं कि यदि हेमरतन ने पदमिनी के सती होने तक की रचना की होती तो वह अवश्य ही कहीं न कहीं प्राप्त होती, क्योंकि प्रथम खण्ड का प्रचार सर्वत्र दिखाई देता है और अन्य कई लेखको ने इसका भाषान्तर कर चेपको द्वारा विविध सस्करण भी तैयार कर दिये थे। यह हमें मानना पडेगा कि शीर्षक 'गोरा बादल पदमिणी चउपई' के अनुसार यह कथा बिलकुल पर्याप्त है। अत लिपिकार ने भूल से ही 'प्रथम खंड' लिखा है, अथवा इस कथा को आगे बढाने की लेखक की इच्छा रही हो—यह सम्भव है।

इस विपय का अध्ययन करने पर हमें यह विदित हुआ कि सवत् १६४५ में हेमरतन ने सम्भवत जायसी के पद्मावत से प्रेरित होकर इस काव्य की रचना की। रचना साहित्यक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इसमें काव्यगत डिंगल के प्रभाव से रहित राजस्थानी है और उस पर ब्रजभापा का प्रभाव स्पष्ट देख पडता है। इसी मे चेपक जोड कर सवत १७६० में भागविजय ने (अथवा सग्रामसूरि ने) एक नया सस्करण तैयार किया। परन्तु भागविजय की कोई कृति अब तक हमें नहीं मिली। सग्रामसूरि की कई प्रतियाँ मिलती है उसमे भागविजय शब्द अवश्य आया है परन्तु उसका अर्थ किसी व्यक्ति के अर्थ में लेना सदेहास्पद है, क्योकि सग्रामसूरि ने स्वय अपनी प्रशस्ति मे हेमरतन का उल्लेख कर उसमें चेपक रखना स्वीकार किया है। सवन १६८०–८५ के लगभग जटमल ने 'गोराबादल री कथा'

की रचना की जो हेमरतन का एक संक्षिप्त संस्करण मात्र है। जटमल ने भी हेमरतन की भाषा और छंदों में थोड़ा-सा हेर-फेर किया। इस पर हम अलग लेख लिख कर बतावेंगे कि कहाँ किस लेखक ने कितना अंश हेमरतन से लिया है। संवत् १६०७ (या १७१७) में लब्धोदय अथवा (लब्धोदय के लिये ज्ञानराज ने) इसी रचना को गीतों की ढाल में ढाल दिया। इन संस्कारणों की कई प्रतियाँ उपलब्ध हैं जिनमें से कुछ का विवरण यहाँ दिया जाता है—

१. हेमरतन-कृत गोरा-बादल पद्‌मिणी चउपई। रचनाकाल संवत् १६४५। सबसे प्राचीन लिपिकृत प्रति संवत् १६४६ की है, जो श्री रविशंकर देराश्री, बनेड़ा के पास है। इसमें पद्य-संख्या प्रशस्ति के अनुसार (६१६+२) ६१८ है।

आदि भाग—

सुख संपति-दायक सकल। सिधि बुधि सहित गणेस।
विघन विडारण विनय सु। पहिली तुम्झ प्रणमेस ॥ १ ॥
ब्रह्म विष्णु शिव सह मुखइं। नितु समरइं जसु नाम।
ते देवी सरसति तणइ। पद युगि करु, प्रणाम ॥ २ ॥
पदमराज वाचक प्रभृति। प्रणमी निज गुरु पाइ।
केलवस्यु सांची कथा। कांणि न आव' इ काइ ॥ ३ ॥
नव रस दाखइं नवनवा। सम्झ सभा सिणगार।
कवियण मुझ करियो कृपा। वदता वचन विचार ॥ ४ ॥
वीरा रस सिणगार रस। हासा रस हित हेज।
सामि--धरम- रस समलु। जिम हुइ तन अति तेज ॥ ५ ॥
सामि-धरम जिणि साचविउ। वीरा रस सविसेष।
सुभटां महि सीमा लही। राखी चित्रवट रेख ॥ ६ ॥
गोरा रावत अति गुणि। बादिल अति बलवंत।
बोलिसु वात बिहु तणी। सुणयो मगला संत ॥ ७ ॥
रतनसेन राजा तणइ। छलि हूआ अति छेक।
गोरा बादिल बे गुणी। सत्तवंत सविवेक ॥ ८ ॥
युद्ध करी जिम जसलीउ। वसुहा हूआ विख्यात।
चित्रकोट चावउ कीउ। ते निसुणउ सहू वात ॥ ९ ॥

इसमे राजस्थानी का वयणसगाई अलकार ध्यान देने योग्य है। अन्तिम भाग ऊपर दिया जा चुका है।

दूसरी प्रति। लिपिकाल-संवत १६६१। इसमे पद्य-सख्या ७०३ है। आकार-१०" × ४¾"। पत्र-सख्या २०।

[मुनि जिनविजयजी से प्राप्त]

तीसरी प्रति। लिपिकाल-सवत १७७६ आकार--३¾" × ४½"। पत्र-सख्या २६। पद्य-सख्या ७१२।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

चौथी प्रति। लिपिकाल--सवत् १७८५। आकार--६" × ५"। पत्र-सख्या १०२। पद्य-सख्या ७६५।

[भण्डारकर इन्स्टीच्यूट, पूना]

२ भागविजय [या सग्रामसूरि कृत] पद्मणी चौपई। रचनाकाल-सवत् १७६०। इसकी निम्नलिखित प्रतिया प्राप्त हुई।

पहली प्रति। आकार--१०" × ४"। पत्र-सख्या ३१। पद्य-सख्या ६१७। इसमे कोई लिपिकाल नहीं है। सभवत मूल प्रति हो।

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

दूसरी प्रति-वही है जिसका उल्लेख रिपोर्ट के प्रथम भाग के पृष्ठ ५३ पर विवरण (६६) में श्री मेनारिया ने हेमरतन समझ कर किया है। इसकी पूरी प्रतिलिपि मेरे पास है, उसकी प्रशस्ति का वह भाग यहाँ उद्धृत करते हैं जो प्रथम भाग में उद्धृत अन्तिम भाग के पद्य-सख्या ६११ से ऊपर का है, और जिसे श्री मेनारिया ने उद्धृत नहीं किया। सभी प्रतियो में यह अश मिलता है। इसीसे यह स्पष्ट हो जायगा कि हेमरतन का ही यह परिवर्द्धित सस्करण है –

पदमराज वाचक परधान। पुहवी प्रगट सकल गुणवान ॥
तास सीस मन रगै घणै। हेमरतन वाचक इम भणै ॥ ६०६ ॥
वात रची ए बादल तणी। मांम धरम अति सोहामणी ॥
वीरा रस सिणगार विसेष। सील धरम पदमिण सुविवेक ॥ ६०७ ॥
सुणतां सुख चतुराई वधै। नीत रीत सूरातन सधै ॥

ऊजम तेज हुइ अति घणो । विविध करी जांणै मंत्रणौ ॥ ६०८ ॥
सांम धरम पालतां सदा । पामै घरि नव निधि सपदा ॥
सुर नर सहु प्रससा करै । वरमाला ले लिखमी वरै ॥ ६०६ ॥

कलश कवित्त

हेमरतन की बुद्धि, छद चोपई प्रथम कीय ।
अब कछु वयण विसेष, सुकविराज सगुण थपीय ॥
सुद्दिढ वध 'समामसूरि', चित वेधक वाइक ।
कवित दुहा चोपइ, धरै नौतन जहां लाइक ॥
महिलात अथ उज्जल कली, त्रीय सरूप भूषण सभै ।
रग रेख मरे चित्रांम, सिर गुल क्यारी उपवन मभै ॥ १० ॥

तीसरी प्रति । लिपिकाल—सवत् १७८३ ।

[ओरियण्टल इन्स्टीच्यूट, बडौदा]

३. लब्धोदय (या ज्ञानराज) कृत पद्‌मिणी चरित्र (प्रबध) । रचना काल-सवत् १७०६-७ । इसमें हेमरतन की उसी कथा को गीत की ढालो में ढाल दिया गया है ।

पहली प्रति । लिपिकाल स० १७५३

[सरस्वती भवन, उदयपुर]

पहले भाग में श्री मेनारिया ने पृ० ५२ पर विवरण (६८) पर संवत् १८२३ की जिस प्रति का वर्णन किया है वह भी सरस्वती भवन [पूर्वनाम सरस्वती भण्डार] की है वह बहुत अशुद्ध है । इन दोनों की प्रतिलिपि मेरे पास है । इन दोनों प्रतियों में भी काफी अन्तर है, फिर भी इस प्रति का विवरण श्री मेनारिया ने नहीं दिया ।

दूसरी प्रति । आकार—१२३/४" × ८१/२" । पत्र-३३ । इसमें ५६ चित्र है । कुछ बहुरगी हैं तथा कुछ केवल मसि से चित्रित हैं । कला की दृष्टि से चित्र बहुत साधारण हैं । लिपि घसीट और बहुत अशुद्ध है । इसके आदि भाग के दोहे हेमरतन की रचना से मिलते हैं । अन्तिम भाग प्रथम भाग में उल्लिखित पद्य-सख्या ८०० तक बहुत पाठान्तर लिये हुए हैं जिसकी संख्या ८२६ है । लिपिकाल सं० १८६५ ।

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

तीसरी प्रति। आकार-९″×६'२″ । पत्र-सख्या ६१ । लिपि शुद्ध और सुन्दर है। अक्षर मोटे है। प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पक्तियाँ और प्रति पक्तिमे १७-१८ अक्षर हैं। प्रबन्ध तीन खण्डो मे विभाजित है —

प्रथम खंड—१४४ छंद

द्वितीय खड—१५६ छद

तृतीय छंड—५११ छद

योग ८११ छद

अन्तिम भाग-

श्री सुधरमी स्वामी पाट परपरा रे, सुविदित गछ सिणगार ।
श्री खरतर गछ श्रीजिनराज सूरीसरू रे, आगम आरथ भडार ॥ ४ ॥
तास पाट उदयाचल दीपें करूँ रे, श्री जिन रग वखांण ।
रिझियां जिण साहिजिहान दिल्लिसरू रे, करि दीधी फरमाण ॥ ५ ॥
तास हुकम सवत सतर ओडो तरे रे, श्री उदेपुर सुवखांण ।
हिंदूपति श्री जगतसिंह रांणो जिहा रे, राज करें जगमाण ॥ ६ ॥
तास तणी माता श्री जबूवती कही रे, निरमल गगा नीर ।
पुण्यवत षटदरसण सेवा करें सदा रे, धरम मूरति मन धीर ॥ ७ ॥
तेहतणां परधान जगत में जाणीइ रे, अभिनव अभय कुमार ।
केसर मत्री सर सुत अरि करि केसरी रे, हसराज हितकार ॥ ८ ॥
जिण वा पूजा हेतें पुरधरु रे, कामदेव अवतार ।
श्रेणिक राय तणी वरि गुरु भगवा पहिरे, महमुगर सिणगार ॥ ९ ॥
पाट सात पछे जिणदेव मेवाड में रे, थाप्यो गछ सिर थोभ ।
कटारिया कुलदीपक जसि जेहने रे, श्री खरतर गछ सोभ ॥ १० ॥
तस बधव डुगरासी तेवाये दीयतो रे, भागचद कुल मांण ।
विनयवत गुणवत सोभागी सेहरो रे, वडदाता गुण सुजाण ॥ ११ ॥
तस आग्रह करि सवत सतर सतोतरें, चैत्र पूनिम शनिवार ।
नवरस सहित सरस सबध वीरच्यउ रे, निज बुद्धि नें अनुहार ॥ १२ ॥
श्री जिन माणिक्सूरि प्रथम शिष्य परगडो रे, वाचक नयसमुद्र ।
तास सीस वड वषती जगमें जाणीये रे, श्री हर्ष विशाल अक्षुद्र ॥ १३ ॥

"संवत् १७६१ वर्षे मासोत्तम माघ कृष्ण दश्म्यां कुजौ लिखिता ॥ सकल पंडित श्री ५ श्री मतिविजयगणि तत शिष्य प०जसवतविजयेन लिपिकृता ॥

इसीके साथ संग्रह में निम्नलिखित रचनाएँ हैं :—

१. भगवती छद (स०१७६१)—जसवंतविजय कृत
२. शलिभद्रमुनि चरित्र (सं०१७६२)
३. कपड़ कुतोहल
४. क्षेत्रपाल छद
५ पनरेति रा दूहा
६. बारेंमासा रा दूहा
७. कृष्ण बारामास्यो

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

चौथी प्रति । ओरियण्टल इन्स्टीच्यूट, बड़ौदा ।

(४) **जगद्विनोद** । रचयिता—पद्माकर । इसकी तीन प्रतियाँ हैं ।

१ आकार-११" × ७" । पत्र-सख्या--१३६ । लिपिकाल सवत् १६०७ । इसके साथ 'प्रवीणसागर' भी जिल्दबध है ।

[सरस्वती भंडार, भींडर]

२. ठीक उपरोक्त ढग की 'प्रवीण सागर' सहित है ।

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

३ आकार-८" × ६" । पत्र-सख्या- १०६ । पद्य-सख्या-७२७ । लिपिकाल सवत् १६२७ ।

आदि भाग—

दोहा

सिद्ध सदन सुन्दर वदन, नँद नदन मृदु मूल ।
रसिक सिरोमनि सांवरे, सदा रहो अनुकूल ॥ १ ॥

पुष्पिका—

"इतिश्री कूर्मवसावतस श्री मन्महाराजाधिराज राजेन्द्र श्री सवाई महाराज जगतसिंघाज्ञस मधरा स्थानो मोहनलाल भटालज कवि पद्माकर विरचितं जगत विनोद नाम काव्य सम्पूर्णम् ॥"

[माणिक्य ग्रथ भडार, भींडर]

(५) **दीपंगकुल प्रकाश** । रचयिता–दधिवाडिया कमजी । आकार-१६" × १०" । पत्र-सख्या ४२ । प्रत्येक पृष्ठ पर २१ पक्तियाँ और प्रति पक्ति में १५ । १६ अक्षर हैं । पद्य-सख्या– ४६० । अन्त मे एक अपूर्ण छापय है । इसमें डोडिया राजपूतों का इतिहास है ।

आदि भाग–

दुहा

रस कपोल सुरभित (र) नरष, माचे सोर मलिंद ।
ईम पुत्र मोदक असन, गण नायक जग बद ॥ १ ॥

छप्पै

सुरसति गुणपति सकत, उकत दीजिये अपाराँ ॥
दाखु जस डोडीया, मनोहरसीह मयाराँ ॥
गढ लाहो अग जीत, कीत दस देस कहाई ॥
तण जोरावर तटै, दिये नाहर विरदाई ॥
पीढियाँ सु जल चाढण पथाँ, नेक बिरद थाटण नवाँ ॥
दरगाह राण भड डोडिया, एक एक बधता हुवा ॥ २ ॥

अन्तिम भाग–

सोरठा

जैसो आगर जोय, वले जोय बधव बलू ।
कू ता पूत ज होय, सूर सहो बड सारखा ॥ ४६ ॥

छप्पै

पुन्याचमा पुरस्स, हुवो नवलेस सिंघ हर ।
पंडित अत्रि पोपया, सदा पूजन परमेश्वर ॥
(ग्रन्थ आगे अपूर्ण है)

[अन्ताणी सग्रह]

(६) **पृथ्वीराज रासौ** । रचयिता–चदवरदाई ।

इसकी ६ प्रतियों का विवरण प्रथम भाग के ५५ से ७० पृष्ठों तक दिया गया है । अतः उसके पश्चात रासो की जो प्रतियां खोज में प्राप्त हुई हैं उनका विवरण हम नीचे देते हैं—

प्रति-१।

आकार-११″×६½″। इसके कुछ पत्र ही प्राप्त हुए है, जो 'माणिक्य ग्रंथ भंडार, भींडर' में सुरक्षित है। पत्र बहुत प्राचीन हैं, और दो स्थानों पर मुड़े हुए होने के कारण तीन भागों मे बँट गये हैं। बीच में दो सल हो गये हैं जहाँ के कुछ अक्षर भी घिस गये हैं। अक्षर जमे हुए और मोटे हैं पर इतने प्राचीन हैं कि सामान्य व्यक्ति से नहीं पढ़े जा सकते। इनमे मात्राएँ पीछे लगी हुई है और हिं, नि, ज्जि, जि, जो, च, छ, य, थ, रे, ले आदि अक्षरों मे बहुत प्राचीनता देख पड़ती है। इस प्रति में कागज, लिपि और भाषा तीनों में प्राचीनता देख पडती है, जिससे अनुमान होता है कि यह प्रति कम से कम स० १४०८ के लगभग की होनी चाहिये। परन्तु दुख की बात है कि इस प्रति के केवल थोडे से पत्र ही प्राप्त हुए हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर २७ पंक्तियाँ और प्रति पक्ति मे ५२ अक्षर हैं। पत्र १३ के नीचे का ⅓ भाग इसके साथ मिला है जिसमें दोनो ओर सात-सात (१४) पक्तियाँ है। शेष ⅔ भाग अप्राप्य है। इसी प्रकार आगे पत्र १४ का ऊपर का ⅓ भाग नहीं है, जो ७ पक्तियो का टुकडा है। आठवीं पक्ति के कुछ अक्षर भी उसी के साथ गये हैं। पत्र १३ के ⅓ भाग के एक ओर छंद ३६१ का अन्तिम भाग है और दूसरी ओर ऊपर छद ३८७ समाप्त होता है। और नीचे छद ३६१ आरंभ होता है। पत्र १४ के प्राप्त ⅔ भाग के आरंभ में छंद ३६५ समाप्त होता है। इस छंद का आदि भाग अप्राप्य टुकडे में रह गया है। यह ⅔ भाग वाला पत्र दूसरी ओर छंद४०२ पर समाप्त होता है। आगे ५०७ छदों तक एक ही विषय चलता है, जहां अत मे 'राश केसु चरित्र' समाप्त लिखा है। आगे 'राजा विलासन शुक चरित्र' आरम्भ होता है, जो ६८ छंदों में समाप्त होता है। इसके आगे आरम्भ होने वाले समय का नाम नहीं है। परन्तु, २८ पत्रो तक के हांशिये पर 'कनवज्ज' लिखा है। शेष पत्रों के हाँशिये फट गये हैं। इसके प्राप्त पत्र १४ से ३१ तक हैं।

पत्र १३ के ⅓ का प्रथम पृष्ठ

राजह।

एकति सूढि आषारि एकति मांडि गय गयारह ॥
षुरतानेर उरह कटार करि परिग षेत तुरन न जिय।
जिहिं जूध मूध चहुवांन सू प्रथम केलि कमधज्ज किय ॥ ३६१ ॥

परथु गूज गहिलोत नाम गोयंद राजवर ।
दाहिमु नरसिंघ परथु नगत्रर जाशधर ॥
परथौ चद पुडीर वदन पिथ्यौ मारंतु ।
सोरग सारग परथु असिवर भागतु ॥
कूरमोराय पालनदे बधव तीन निहट्टिया ।
कनवज्जराय पहिलि दिवस सुमिसत्त निघट्टिया ॥ ३६२ ॥

पजूनह उपरहि राज प्रथीराजरा पुतु ।
गरूओ राउ गोविंद भाय अघायस सतु ॥
नाय चित्त चहुवांन कींन कींतु कर उभु ।
रा १डा ढिल्लरी आज लडि मन दुभु ॥
धाराधिनाथ धारग धर कीनु रुदन ।
चामडराज मुक्यु सुमह रषन छित्ति छत्रीअ दहन ॥ ३६३ ॥
अरध रयन चदनी अरध अगि अगिया ।
मो

[आगे सब फट गया है]

पत्र १३ के ३ का द्वितीय पृष्ठ

गुन सुधारस ।
तुमहि क ति गज प्रथम कारण काम रस ॥
हम काज आज शिर उप्परि वाग धार रा ।
ज नू गय ढिल्लीय सुधी दु भर सजि दल ॥ ८७ ॥
मिं जान्यो पहिलूत एह कारण कत राजन ।
मरण पछिक कयमास मत जानि नही जाजन ।
म पकरिय सत्र लोकह सो जानिय ।
एह कथ पहलूणि शनशन मई वानिय ॥
मृत्यु शु एह कारण प्रथम प्रथीराज किय ।
पड सु अत्र अरी हरउ कशि लोक सुजीतु काजि जिय ॥ ८८ ॥

दोहा

सजोगिनि तनि निरषि, सुफल जम्म नृप मांनि ।
काम कसाए लोअने, हन्यो मदन सरतानि ॥ ८९ ॥

सुधि भूली सग्राम की, भूली अपनी देह ।
जो न मया वसि पगुदल , सुमयो वाम व्रसि नेह ॥ ६० ॥
तेम चरन कर मुप उर, विकसत कमल अका- ।
॥ ६१ ॥

पत्र १४ का १-आठवीं पक्ति से-

लान . . ॥
हराय जामाते . . . . ष पमारतथ ॥
शासनु पूर दिशि पुच्च पंच । रष नह राज सजि सुसंच ॥
नार नाह कत पामार जित्त । उदित उदोत्त रषि सुमित्त ॥
हाहुलीराज हंमीर तथ । जघील राउ मीमानीय पथ ॥
धनपति दिशि रषि सुधीर । अप अप परि गह जुत्तवीर ॥
बथन हरण तोमर पहोर । बघेला सुलप नत्र लषसार ॥
द्वि वघह डश म अल्ह सूर । महण शीपी परिहरि राहपूर ॥
पछिमि दिसा सजिधीर सार । मजनह जूह गय मत्त मार ॥
पामार शलष आजोन वाह । चहुवांन अत्तताई उधाह ॥
चालुक विभ्भ्म माहा अमग । वदरी देव खिची प्रसंग ॥
बार डह शीह अमग भार । दष्यिणी दिसा सजि सूरसार ॥
अनि २ दिशि शामत सूर । रषह सुरक्कु हय गय सपूर ॥
सहस एक २ शत एक सथ । शत्रभृत उच्च नीचेह उथ ॥
अप २ भृत शामत सव । पठए काज जल गग तव ॥
कमधज्ज भृत्त मध्ये वराहि । आनयुअपमे देवताहि ॥
मुष पाय पाणिअ दोलि वारि । अवये अप आतम अधारि ॥
करि सुनत गति शामतराज । चित्ति सु इप्ट मर स्वामि काज ॥
अउघ वधि सजि वाजि शत्र । अशेंन तांन अप्पह अथत्र ॥
उछग मृत के दिअ मीम । अस्तेमि पेट केविन परीश ॥
पारश वेढि पगुरह सेन । गज्जि निसान हय गय गुरेन ॥ ६५ ॥

दोहा

चित्त अति चिंता तपि सज्जि राय कमधज्ज ।
जिके सुमटवर अपनि फिरिता मंकृत रज्ज ॥ ६६ ॥

सजोगि शयन प्रथीराज भू, वजिहि लाग निसान
कायर त्रिभूति .., सुरति वञ्छहि मान ॥ ६७ ॥
मोत्रि निसक समरि नरिंद । परप्य सुपग सक्यो सुरिंद ।
प्रथीराज कामत सजोग . ... .. ॥
त हिंसहि के कान ।
चपे चग दिसी निरहि बुरि निसान ॥
सिंधूर मारु मलकोश सगीत (तान) ।
सूरिसूर श्रनद कायर कपान ॥
पचास क्रोस रूम्भिय धरनि ।
मिल्लान मग्नि चहुवान धनि ॥
कचिकिय चार वुल्यौ बिसदु ।
सिंघ जिम जग्य सुनि श्रवन सदु ॥ ६८ ॥

दोहा

त्रिरूदावलि वल्लत जग्यौ । त्रिश्र सजोइ कौ कत
ऊदल रस रत्ति नयन । क्रोध सहित त्रिहसत ॥ ६६ ॥

छद सारस

इशी रीत प्रगाशी । मडल सामत मासी ॥
कविन किलोल काशी । थुरस्त्र गानि वामी ॥
पारस रजि चद्र । तार सते न सद्र ॥
करतरा कति बधि । सूर छुटि वल बधि ॥४००॥

छद त्रोटक

छुटि वद निशा प्रगटी प्रगटी । मिलिदनीमल रह सुघटी ॥
निश मान निशानहुश्र । धूश्र धूरिन मूरिन पूरि पुश्र ॥
नव निभ्भरय वरय वनय । गजवजि तश जितय घनय ॥

पत्र १४/२

निजक छरिश्र छरिय तनयं । करि २ जनय जनय ॥
करि सारद नारदयनदय । शिर सजन ममयं सदय ॥
निज निर्भय रावहु थान मन । किरनी मिराजति सूर जन ॥ ४०१ ॥

गाथा

शत भट किरणिहि सूरो । पूर रा रेणि सुग थयेस ॥
जोगिन पूर पति सूरो । पारश मिसि पति पग रायेश ॥ ४०२ ॥

[यहाँ से वह मुरिन्ल आरभ होता है]

पत्र २०/२

छद भुजंग प्रयात

जिते सार साधा रिजु शारि टूट्यु । मनु आवन मेछ ससार उट्यु ॥
फटी फुञ्ज आवाज शार्पंग राई । मृगि जांनि मागध मिव पधाई ॥
वजी हक्क हकार मेरी । जुरी रोष सेना फिरी लाज वेरी ॥
धज वीर विरषशा वत्ररेशा । लगि सीस सामत शाश्रमरेशा ॥
उडि गिध आवध टूट्टि उतगा । किन्न कि श्रुता जीवि कि हस्ति चगा ॥
भटकि अधाय अुराय हवाई । मनु मारूत मत्त छाई ॥
फिरि चक्क चहुआंन की हाक वज्जी । मनौं प्रोढ मत्त निवोढा सुलज्जी ॥
इशी कत चहुआंन करि केलि रती । फिरि जोगिनी जोग उच्चार मत्ती ॥
दह कोह सीस्वामि आराम छुट्टी । पल्लि पगरा गेन आव्रत उट्टी ॥ ५४१ ॥

कवित्त

पत्र २२/२

परतषिभ्क चलुक्क गहकि ग पग सेन सव ॥
राज रात्र साग्ग देव आइयो तपि तत्र ॥
सहस तीन तीन असवार धार धारा समथ ॥
नृमल नेह स्वामिर्मिघ पावहि सुहथ ॥
नाइ यौ सीस नमि पग कह दईय सीख पहुउचक्र ॥
उपारि जग निज सेन सम भले प्रसपह अपमरा ॥ ८४ ॥

पत्र १८/१-२

कनवाज्ज समय का अतिम छद

दो० कु०

जोर शर शनन अलदिय अधर दुराय दुराय ।
एशा दुज्ज दुज कत निकरू सपिन सुनाय सुनाय ॥ ७०४ ॥

हीइ सुचि सुचि टालजि मनह सुघल विंथला कपितै ।
न नटिकीय नहनह जियत मरत मिलि मैंत कह्यौ ॥
अजब तुम मत भुरस । श्रुतिराज न हुकिति दमन कुचित हसन ॥
न तुट ताटक न (त १) । मगत कियन बिग्रुरह तम वत ॥ ७०५ ॥

श्रुति राजन हुक्ति हसन । कुंभित हशन नयन ॥
त्रुति ग्राटकन भग । किय नग विग्रूरह तमत्रन ॥ ७०६ ॥
इति रश तिथि दह पच त्रिशि निशि । सुष असम शरघात ।
कुल ग्रीषम श्रीषम मुषनि । पावश प्रसन प्रभात ॥ ७०७ ॥

इति श्री कवि चद विरचिते रास केसु चरित्रं समाप्त ।।छ।।श्री।।०।।श्रीरस्तु कल्याण-मस्तु ॥,॥

इसीसे आगे-

अथ राजा विलासन शुक चरित्र लिख्यते

आदि-

मुरिल्ल

उत्तर पथ्य असाढ पवित्र । आद्रा मङ्गल मडि नषित्र ॥
दांन भोग फल इहलछि गतिय । विलसन राज करैं नव नितिय ॥ १ ॥

क०

इक जोस धन मद्द । मद्दराज मद वारुनि ॥
अरू मद देह अरूज । सग नव त्रनिता तारूनि ॥
अरु बधन पतिसाह । पैंज कनवज्ञ सपूरिय ॥
एता मद राजान । दुखद दह कर दूरिय ॥
आनंद कद उमग्ग तनह । सजोगी सर हस सरि ॥
जानिन राज अस्तम । उदय महि जीवन मानै सपरि ॥ २ ॥

अन्तिम-

चौपाई

पत्र ३१/१

नृप पर दृप्य अलप्य जु कीनी । ज्यौं अरि गय तर फे रहि भीनौ ॥
दुप निंद्रा निमि घटिअ आई । तिंहि नृप सज सपन्नौ पाइ ॥ ६५ ॥
अति सुप सकुल त्रप तिय । रितु रितु ए आचार ॥
विलसित त्रिन ग्रीषम अधर । सुपन सुराज त्रिचार ॥ ६६ ॥

भावी गति आगम विगति । की मेटन सम नुरत्थ ॥
राम युधिष्टिर और नल । तितही परी अवत्थ ॥ ६७ ॥
मान करै मति हीन वर, जोवन धन तन रूप ।
कौंन कौंन ह्वै, नीवरें, बिनां ग्यान रस कूप ॥ ६८ ॥

इति श्री कवि चंद विरचिते प्रथीराज रास के भोग विलासे शुक चरित्र वर्णन सजोगिता चेष्टा इच्छनि आग्र अथिम प्रस्ताव समय ४१ मः संपूर्ण ।

इसीसे आगे का समय जिसका नाम नहीं दिया—

दूहा

साप लाष षटलाप दर, सजिति रजतपुर इद ।
मनुहुँ सूर सामंत सुष, दिप्पिय चद कविंद ॥ १ ॥

पत्र ३१/२ इसी पत्र का अतिम–

गा०

जदे ही तोदुषई, दुषह सुष सरीर, दुषच्छन अन सुव्रत, वीय असोक निद्धिय ॥ ८१ ॥

दो०

सत्तम बरष सञ्जित्र, बरष दीह अनसै सब्बड ।
वृद्ध तीय अरू थिर अरथ, देह विधि न लपि दिव्व ॥ ८२ ॥
राजन सुक मुच्छन विगति माया

प्रति–२ । आकार– १२" × ८" । पत्र-४० । प्रत्येक पत्र पर ३६ पंक्तियाँ और प्रति पक्ति मे ३१ । ३२ अक्षर है । इसमें केवल निम्नलिखित समय हैं.–

१	इच्छनि रुप वर्णन	चौथा समय २२ छद
२	बालुकराय	पाँचवाँ समय १४४ ,,
३		छठा समय १८२ ,, (अपूर्ण)

इसको भट्टारक श्री यशोदेवसूरि ने उदयपुर में सवत् १७६१ पौष वदि १४ को लिपिकृत किया ।

इसीके साथ निम्नलिखित रचनाएँ भी हैं :–

१ शाहजहाँ जीवन चरित्र

२ सुन्दर शृंगार

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

प्रति–३। इसमें ६८ समय है आकार-- १४" × ६½"।
प्रत्येक पत्र पर २८ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति पर लगभग ३२ अक्षर है।
लिपिकाल–सवत्१८०६ साके १६७४ प्रवर्त्तमाने। आसोज शुक्ला ६ सोम-
वार। लिपिकार–हठीराम त्रा पुत्र शभुराम। •

इसके अत मे यह विज्ञप्ति दी हुई है—

मिलि पक जगत उदधि ॥ करद काल रनी ।
कोटि कवी काज लह ॥ कम कटि कर्तें करनी ॥
हि तिथि सप्या गुनित ॥ कहें कक्काव वियानै ।
इह श्रम लेषन हाथ ॥ भेद भेद सोइ जानै ।
इम कष्ट ग्रथ पूरन करय ॥ जन ब्रमत्रा दुष ना लहय ।
पालियें जतन पुस्तक पवित्र॥ लिषि लेषक बिनती करय ॥ १ ॥
गुन मनियन रस योइ ॥ चद्र कवियन कर दिद्धिय ॥
छद गुनीतें तुदि ॥ मद कवि भिन भिन किद्धिय ।
दे सदेस विष्यरिय ॥ मेलगुन पार न पावय ॥
उद्दिम करि मेलवत ॥ आस बिन आलय आवय ॥
चित्रकोट गंन अमरेस न्रप ॥ हित श्री मुष आयस दियौ ॥
गुन वान करुन, उदधि ॥ लिषि गसौ उद्दिम कियौ ॥ २ ॥

दोहा

लघु दीरघ ओछो अधिक, जो कछु अतर होइ ॥
सो कवियन मुष्य सुद्ध तों, कहौ आप वुधि सोइ ॥ ३ ॥

इति विज्ञप्ति ॥ ॥ इति श्री कविचद विरचिते राजा श्री प्रथिराज रासके गजकुवर श्री रचयनसी पट्टाभिषेक दिल्ली नगर त्रास गोरी साहाब गोरि धरन बिनें साह पातसाह तषत करन परस्पर जुद्ध जुरन ॥ दिल्ली जौंहर जरनं ॥ राजा श्रीरयनसी मरन ॥ राजा जैयचद गगासरन प्रस्तात्र सपूरन समापत ॥ ॥ श्रीरस्तु ॥ कल्यानमस्तु, श्री उदैपुर नगरे महाराजाधिराज महाराणा श्री प्रतापसिंघजी विजेराज्ये लिपावित राज श्री भाट पूरब्या गोते रावजी श्री रामचदजी ॥ ततपुत्र सकल कवि सिर छत्र सकल चडि सिरोमनि ॥ रावजी श्री श्री श्री श्री श्री सुषरामजी ॥ चिरजीवि कुवरजी श्री षेमचदजी ॥ चिरजीवि कुवर श्री मुरलीधरजी पठनारथ ॥ श्रीरस्तु ॥ कल्यानमस्तु ॥ सुभभूयात् ॥ श्री ॥ सवत् १८०६ वर्षे ॥ साके १६७४ प्रवत्तमाने ॥ आसोज मासे सुक्ल पष्ये ६ तीथौ सोमवासरे ॥ लिष्यत दसपुर जाति पडित हठीराम ततपुत्र पडित सभूरामेण लिख्यतमिद पुस्तक ॥ लेषक पाठक चिरजीवि ॥ श्री श्री श्री श्री श्री श्री ॥

|| श्लोक || यादृश पुस्तक दृष्ट्वा । तादृशं लिखित मया ।
यदि शुद्धममशुद्ध । मम दोषो न दीयते ||

समयो की सूची–

५३ पज्जून महोबा सम्यो	५४ पज्जून विजय सम्यो
५५ सामत पग सम्यो	५६ समर पग सम्यो
५७ कैमास वद्द सम्यो	५८ दुर्गा-केदार सम्यो
५९ दिल्ली वरनन सम्यो	६० जगम कथा सम्यो
६१ षट ऋतु वर्णन सम्यो	६२ कनवज्झ सम्यो
६३ सुक चरित्र सम्यो	६४ धीर पु डीर सम्यो
६५. आषेटक चभ्फ सम्यो	६६ वडो जुद्ध सम्यो
६७ बान वेध सम्यो	६८ राजा रैनसी सम्यो

प्रति-४। अन्तिम भाग- [सरस्वती भण्डार, भींडर]

पुष्पिका

चिरजीवो श्रोतान। हाम मन वछित पूरय ॥
चिरजीवो श्रोतान। दुष्ष आप दल चूरय ॥
चिरजीवो श्रोतान। पुत्र परवार सहेतो ॥
चिरजीवो श्रोतान। दान कवियन जन देतो ॥
हय पाट ठाट भडार मरि। आस मास सफल फलय ॥
धरि ध्यान जोग साधन जुगति। जराम्रत्फलन नां फलय ॥

इसके नीचे वही विज्ञप्ति दी हुई है जो ऊपर तीसरी प्रति में आ चुकी है। परन्तु इसमें केवल ३२ समय दिये गए हैं। जिनकी सूची इस विज्ञप्ति के नीचे ही उसमें दे दी गई है। सूची इस प्रकार है-

क्र० स०	समय (प्रस्ताव)	छद स०	क्र० स०	समय (प्रस्ताव)	छद स०
१	तोंअर पाहा रूपक	८१	२	करुण कथा रूपक	३३
३	सोम वध रूपक	८६	४	पजून मोहव रूपक	१९
५	पूजून विजै रूपक	२८	६	चद द्वारिका रूपक	८९
७	कैमास युद्ध रूपक	७१	८	भीम वध रूपक	१४२
९	सजोगिता पूर्व जन्म रूपक	१४२	१०	सुक वर्णन रूपक	१८
१२.	वालुकाराय रूपक	१९	१३	जग्य विध्वसन रूपक	१७
१४	सयोगिता नेम रूपक	५५	१५	हांसी प्रथम जुद्ध रूपक	८९
१६	हांसी २ जुद्ध रूपक	११३	१७	पजून महुवा रूपक	२६
१८	पजून छोगा रूपक	३५	१९	सामत पग रूपक	१२५ / १३५ ?
२०.	समर पग रूपक	६०	२१	कैमास वध रूपक	१८७

२२	द्रुगा केदार रूपक	१६८	२३	ढिल्ली वर्णन रूपक	५७
२४	जगम कथा रूपक	५४	२५	पटग्तिु वर्णन रूपक	५७
२६.	कनवज्ज रूपक	१३८४	२७	सुक चरित्र	१०१
२८	धीर पुडीर	३१२	२९	आपेटक १	१६
३०	ममरमी ढिल्ली महाय	४९	३१	वडी लड़ाई रूपक	८६०
३२	बान वेध रूपक	३४८	३३	रयनमी रूपक	११२

प्रति–५

[सरस्वती भण्डार, भींडर]

यह उपरोक्त चौथी प्रति का आधार ज्ञात होती है। यह जीर्ण होने से चौथी प्रति में इसकी प्रतिलिपि की गई हो ऐसा सभव है। क्योंकि दोनों में कोई अतर नहीं दीख पडा। इसके आरंभ और अत के पत्र फटे है।

आकार–१०३/४" × ६१/२"। प्रति पत्र की पक्ति सख्या–२५। प्रति पक्ति की अक्षर सख्या–५।

[सरस्वती भण्डार, भींडर]

(७) **भीम विलास**। रचयिता–किशना आढा। आकार–१०" × ८", पत्र–२०२। पद्य–७१७। रचना काल–स० १८७६।

[अन्तार्णी सग्रह]

(८) **मधुमालती**। रचयिता–चतुर्भुजदास निगम।

प्रति–१ आकार–६.७" × ४.२"। पत्र–संख्या २६। पद्य–सख्या ८८३। लिपिकाल–स० १७६२।

[माणिक्य ग्रथ भण्डार, भींडर]

प्रति–२ आकार–११" × १०"। पत्र–सख्या ६६। इसकी लिपि बहुत सुन्दर है तथा इनमें राजस्थानी कलम के ७६ बहुरगी चित्र हैं। लिपिकाल–स० १८२०।

[सरस्वती भण्डार भींडर]

प्रति–३ आकार–११" × ६"। पत्र–सख्या ११४। पद्य–सख्या १२५। बीच बीच मे गद्य वार्ता भी है। इसीसे इसका शीर्षक 'मधुमालती री वार्ता' है।

[अन्तार्णी सग्रह]

(९) **माधवानल** । रचयिता-कुशललाभ ।

प्रति-१ आकार-१०.२"×४.१" । पत्र-सख्या २२ । पद्य-संख्या ५५० गाथाएँ । लिपिकाल स० १७१६ ।

प्रति-२ लिपिकाल-स० १६५७ ।

प्रति-३ लिपिकाल-स० १७८६ ।

आदि भाग-

देवि सरसतिइ सुमति दातार ।
कासमीर कमलासिनी, ब्रह्मपुत्र करि वीणा सोहइ ।
मोहण तरवर मजरी, मुख मयक त्रिहुँ भवण मोहइ ॥
पय-पकज प्रणमी करी, आणी मणि आणद ।
सरस चरित्र श्रृंगार रस, पमणिसु परमाणद ॥

अन्तिम भाग-

सवत १६ सोतरे, जैसलमेरि मझारि ।
फागुण सुदि तेरसि, विरची आदितवार ॥
गाहा गूढा चौपइ, कवित कथा सबध ।
॥ ३६ ॥
कुसललाभ वाचक कही, सरस चरित सुप्रसिद्ध ।
जे वांचे जे सभलि, तिही मिले नव निद्धि ॥ ३७ ॥
× × ×
राउल माल सुपाट घर, कुवर श्री हरिराज ।
विरची एह श्रृंगार रस, तास कुतूहल काज ॥ ३८ ॥

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

(१०) **राम चरितमानस** । रचयिता-तुलसीदास ।

प्रति-१ आकार-११.२"×५.२" । पत्र-बालकाण्ड १११, अयोध्याकाण्ड ६१, आरण्य कण्ड २३, किष्किन्धा काण्ड २०, सुन्दर काण्ड १६, लका काण्ड ४४, उत्तर काण्ड ४४ । लिपिकाल-स० १८५१ ।

प्रति-२ लिपिकाल-स० १८५८, वैसाख सुद ८ । बालकाण्ड का लिपिकाल स० १८०५ ।

[केवलराम दादूपथी, उदयपुर]

(११) **रामरासो** । रचयिता-माधवदास दधिवाडिया । आकार-६'६" × ६" । पत्र-संख्या ६०५ । लिपिकाल-स० १७७५ ।

[सरस्वती भण्डार, भींडर]

(१२) **वल्लया सटीक** । पृथ्वीराज राठौड कृत 'वेलि' की टीका । टीकाकार-अज्ञात । यह भी ८" × ५" आकारवाले ६ रचनाओं के संग्रह में सग्रहीत है। ३७ पत्रों मे इस ग्रन्थ के १४६ पद्य सटीक लिपिवद्ध हैं । टीका मेवाडी में है ।

आदि भाग-(आरम्भ के पाँच पद्यों में सस्कृत में प्रार्थना है)

टीका-प्रथम ही परमेसरजी ने नमस्कार करे छे । श्री सरस्वतीजी ने नमस्कार ने । श्री गुरु नमस्कार ने । ए त्रिणि तत्व सार छे । इण उपरांत मगलाचार कीन छे ।

दुवालो

आरम्भ मैं कीयो जेणि उपायो
गावण गुण निधि ऊँ निगुण ।
फिरि कठ चीत्र पूतला निज करि
चीत्रा रो लागी चित्रण ॥ २ ॥

टीका-कवि कहे छे जिण मो ना उपायो । जे परमेस्वर सुगुण को निधि छे जिणरो गुणरो पार को न पावे । मैं निर्गुण थका तिणका गुण गाइवा को आरम्भ कीयो ।

[स्वरुपलाल, जगदीश चौक, उदयपुर]

(१३) **व्रज नी दानलीला** । रचियता-अज्ञातद । आकार-७" × ५'५" । (यह पद्मावती नी वार्ता के साथ है) । पत्र-सख्या ८ । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पक्तियाँ और प्रत्येक पक्ति मे १२/१३ अक्षर हैं । इसमे वागडी वोली में गाने के १२ पद हैं । लिपिकाल-सवत् १६१८ जेठ सुदी ४ ।

आदि भाग-

गोरस लई ने गोपीका चाली वेचवा काजे ।
ओडो बांधो आवी ने वचमां व्रजराजे ॥
मटुकी लीधी माथडे चाली मईवाली ।

ओचीतानां आत्रीया वनमा वनमाली ।।
माग्ग रोको मावजी श्राडा ऊभा छे श्रावी ।
श्राव श्रोरी में आरडी ईम कैने वालावी ।।
मेड़ तारू श्रमे लूट सु उभी रे रे में श्रारी ।
साचु जाठो तु सुन्दरी लेसु रीत हमारी ।।
जावा दोने जादवा वाटे रोको मा वेतां ।
श्रमे मला जो राषीये तम सासु रे केता ।।
समझौ वीना नव भालये पर नारी ने षेडो ।
ब्रह्मानद फेरो नवे गली में लीनौ केडो ।।

[कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(१४) **महाराज रतनसिंहजी री वचनिका (रतन रासो)** । रचयिता-षिडियो जगो । आकार-१०″×४.२″ । रचनाकाल-सवत् १५१५, वैशाख विद ६ ।

लिपिकार-मुनि गोतम रुचि (भींडर निवासी)

लिपिकाल-"सवत् १७६३ वर्षे माघ मासे शुल्क पक्षे १३ तिथौ सोमवासरे ।।श्री।। सकल पडित श्री ७ श्री विमल रुचि गणि शिष्य मुनि गोतम रुचि ना लेपक ।। डगला नगरे ।।

आदि भाग-

गुणपति गुणे गहिर गुण ग्राह दान गुण देयन ।
सिद्धि ऋद्धि सुबुद्धि सधीर सुडाहल देव सुप्रसन्न ।। १ ।।

कवित्त

गमरि विसन सिव सगति सिद्धिदाता सरसत्ति ।
वषाणु रमधज्य पुहुवी राजा छत्रपत्ति ।।
जेहा चक्कवै हुआ जिण वस नरेसरु ।
त्याग त्याग निकलक वस छत्रीस तणा गुरु ।।
गजराज दियण सजण गजा उभै विरूद उद्धरें ।
कुल भाण धरै प्रगटयौ रमव रतनमल्ल रिणमल्ल रे ।। २ ।।
दलपति उदयसिंघ माल गगेव महाबल ।
वाघा सुजा जोध रूमव रणमाल अणकल ।।

चुडा वीरम सलष साप तेरह ग्रज ग्राला ।
चाग तीडा ग्रांत्र हुग्रा कमधज्ज हाथाला ॥
हिंदुग्राण तिलक हिंदु विहर्द धु'हड ग्रासासीह धन ।
तीण पाट हूग्रो महिराण तन रूप भूप एता रतन ॥ ३ ॥

ग्रन्तिम भाग-

गाहा

कत मृत वात सुणे कुलवती करि हरि २ जम हरि कुलवती ।
कु दण तन होमे कुलवती कीधा चदन मो कुलवती ॥ ८० ॥
इम ग्रंग होमि विमार्णे ग्राईग्रा सुरती सम्ही ग्राइ करि ।
वऊ कोड पुहप वरषा करि लिण सामि चाला सभि सु'दरि ॥ ८१ ॥

वचनिका

"तिण वे लार्गे वरी ग्राकास वांणी कहायो माहाराजा रेणसा वधाइ वधोइ ग्रगनि सनान करि सति पणि ग्राइ ब्रह्म विष्णु महेसर इन्द्र सुरसथि सुर विमार्ने कही महा सतीयां सम्ही जाउं घवल मंगल पुहप वरपा करि वधावो ॥"

दूहा

सावत्री उमग्या ग्रीया ग्रागी सामी ग्राई ।
सुदर मिंदिर सोव्रन में इ'दिर लई वधाइ ॥ ८२ ॥
धवल मगल हरष वधीया नेह नवल ।
सूर रतन सखीयां सरिस मिलिया जणि महल ॥ ८३ ॥
कुग्रा सुर नर पुर उद्धरे वैकंठ की घो वास ।
राजा रायणा मर तणो जुग ग्रविचल जग वास ॥ ८४ ॥

पुष्पिका-

"वदि वैमाषह तिथि नवमी १५ पनरोतरे वरस ।
वार शुक्र लडीग्रा विहद हिन्दू तुरक वहसि ॥ ८५ ॥
जोडि मर्णे पडीयो जगो रासो रतन रसाल ।
सूरां पूरां सामलो म डमोटा भूपाल ॥ ८६ ॥
दिल्ली राजा का उजेणी रासा च्यारिजुग
कथा रहसी कविपात रहसी ॥ ८७ ॥

इति श्री महाराजा रतनजी री वचनिका संपूर्णम् ॥ सवत् १७६३ वर्षे माघ मासै शुक्ल पक्षे १३ तिथो सोमवासरे ॥ श्री ॥ सकल पडित श्री ७ श्री विमलरुचि-गणि शिष्य मुनि गोतमरुचि रा लेषक ॥ डुगला नगरे ॥

इसमें राणा रत्नसिंह का वीरता पूर्वक युद्ध में काम आना और पद्मिनी का अन्य स्त्रियों के साथ सती होने का वर्णन गद्य तथा पद्य दोनों में है। यह वीररस का सुन्दर काव्य है।

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

(१५) वृन्द सतसई। रचियता–वृन्द कवि। प्रति १–आकार ७″ × ८″। इसमें ७१४ पद्य हैं। इसका रचनाकाल इसमें 'ससि रस वार ससि, कातिक सुदि ससिवार' दिया है, जिसके अनुसार सवत् १७६१ या १७६१ ठहरता है। परन्तु वृन्द कवि का देहावसान सवत् १७८० भादों वदि ३ निश्चित है। अत इसका रचनाकाल संवत् १७६१ ही मानना होगा।

आदि भाग–

श्री गुरु नाथ प्रभाव तें, होत मनोरथसिद्धि।
घन तैं ज्यु तरु वेल दल, फूल फलन की व्रद्धि ॥ १ ॥
किये वृन्द प्रस्ताव कें, दोहा सुगम बनाय।
उक्ति अर्थ दृष्टान्त करि, दृढ करि दिये बताय ॥ २ ॥
भाव सरल समझुत सर्वे, भले लगे इह भाय।
जैसे औसर की कही, वाणी सुनत सुहाय ॥ ३ ॥

अतिम भाग–

जिय सतोष विचारियै, होइ जु लिष्यो नसीब।
षल गुल काच कथीर सौं, मांनत रली गरीब ॥ ७११ ॥
जथा जोग सब मिलत है, जो विध लिष्यो अक्रूर।
षल गुल मागे गवारनी, रांणी पान कपूर ॥ ७१२ ॥
सभै सारदो दीन को, सुनत होत मन मोद।
प्रगट भयो यह सतसया, भाषा वृंद विनोद ॥ ७१३ ॥
सवत ससि रस वार ससि, कातिक सुदि ससिवार।
सातै ढाका सहर में, उपज्यो पुहमि प्रचार ॥ ७१४ ॥

[स्वरुपलाल शर्मा, जगदीश चौक, उदयपुर]

प्रति २ आकार ५ ५"×४.२" । इसमें ५४ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २३ अक्षर हैं । इसमें पद्यों की कुल संख्या ७१५ है । इसका लिपिकाल संवत् १७६८ भाद्रवा वदि ८ शनि है

[रोशनलाल सामर वकील, उदयपुर]

प्रति ३ आकार- ११.५"×८.७" । पत्र-संख्या ३७ । पद्य-संख्या-७०६ । लिपिकाल स० १६०४ ।

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(१६) **सगत रासो** । रचियता-गिरिधर आस्या । आकार-११"×१०" । इसमें कुल ४३ पत्र हैं । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर २५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति मे ३० अक्षर है । अक्षर बहुत अधिक जमे हुए न होने पर भी पढे जा सकते हैं । इसमें कुल ६४३ पद्य हैं । इसमे महाराणा प्रताप के भाई शक्तिसिंह तथा उसके वंशजों की वीरता का वर्णन है । इसमे रचनाकाल न होने पर भी ऐसा ज्ञात होता है कि यह रचना १७७५ के बाद की है क्योंकि भींडर मे इसका रचनाकाल शक्तिसिंह के दसवे वंशधर मोहकमसिंह (दूसरे) के समय में माना जाता है । रचना वीर रस प्रधान है । ग्रन्थ डिंगल भाषा मे है ।

आदि भाग-

प्रथम प्रणमि सुरराइ प्रमन ? प्रणमि वले गणपति ॥
मत गुर पुण में मेत्र गुर । मोढ दिये सुभ मति ॥ १ ॥
वूरिज वंश सराहियै, भुजा धरजै पित्र भार ।
गुर धग गहिलोतां तणौ, महिये लो मसार ॥ २ ॥

उदाहरण-

टोल सत्रम टरडो, भींडर ई कुल मांण ।
अमरो सुप गयै असप, पित्र जोस पुम्माण ॥ ४१ ॥
धर धुसै धन लुप्पटै, सोनिगगे छल गार ।
सारा देस दसोर रा, प्रजा आपिआ पुकार ॥ ४२ ॥
धुंब सुणै मी आंवले, मांजण खलां मटक्क ।
सन्नातह हि साजन करे, क्लिवे त्रेखटक्क ॥ ४३ ॥

अमरौ रौंदा उप्परै, चाले कलि चुऊवांण ।
दल आविया दसोर रा, भींडर ऊगे भांण ॥ ४४ ॥
मोरे भींडर मालजे, घर धपट्ट दे धवक ।
आथवलै अमरा तजां, किलवे वे ऋटक्क ॥ ४५ ॥

अन्तिम भाग-

परि पलि अपछरा, नरो वैकुठ पधरावै ।
साम्हे ले सुर मेलि, वडौ नर पाल बधावै ॥
सति सकल सहि सूरां, अवर काइ सुमति न आवै ।
जिता साथि नरपाल, सहिसा जोति समप्पे ॥
तर वहि धरु तोर की, तैं हुआ वागम टलै ।
ससार सिरै करि सगत हर, महा जोति नरहर मिलै ॥ ८ ॥

[सरस्वती भंडार, भींडर]

(१७) **समयसार नाटक** । रचयिता-बनारसीदास । आकार-१०" × ४.४" । पत्र-६१ । पद्य-७२७ । लिपिकाल-सं० १७६८ । रचनाकाल-सं० १६९३ आसोज शुक्ल १३ रविवार ।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(१८) **सोनी गरां री वंशावली** । यह ८" × ५" आकार वाले ६ रचनाओ के सग्रह मे दी हुई १०१ नामों की एक वशावली है ।
नाम इस क्रम से है —

(१) आसापुरी । (२) काशिव । (३) चाहमान । (४) मरू । (५) श्रीवछ । (६) हसदेव । (७) मलयदेव । (८) राजपाल । (९) मस्तकराव । (१०) पुत्रमामार । (११) माल । (१२) सत्रेसाल । (१३) मार्गनाथ । (१४) भवानीदास । (१५) भागीरथ । (१६) सामदत्त । (१७) जिनदत्त । (१८) रामदत्त । (१९) मानदेव । (२०) सूरजदेव । (२१) कामदेव । (२२) मुगधनाथ । (२३) विश्वनाथ । (२४) हरिदत्त । (२५) भरवदत्त । (२६) महीपकर । (२७) नागयनदास । (२८) सोमदास । (२९) नरवद । (३०) विश्वेश्वर । (३१) पुरूपदेव । (३२) विजयचद । (३३) अजित्तसेन । (३४) वेरसेन । (३५) रूद्रसेन । (३६) नरसिंघदास । (३७) ईसरदास । (३८) गुणनाथ । (३९) अरवदपति (४०) सोमेश्वर (४१) जांगलू । (४२) महीपाल । (४३) समरसींघ । (४४) रातुल । (४५) अनय-सिंघ । (४६) उदयसिंघ । (४७) विजयसिंह । (४८) गुल्ल । (४९) वसिलदेव ।

(५०) अमर गगेय । (५१) अनयर्मिव । (५२) वाहमदे । (५३) चाहमदे । (५४) सोमेश्वर प्रीथीराज । (५५) वासुदेव । (५६) सामतगज । (५८) नरदेव । (५६) विक्रम । (६०) अजैराज । (६१) यानों । (६२) वल्लभराज । (६३) दुर्लभगज । (६४) चदनराव । (६५) गोवलराव । (६६) विधराज राव । (६७) सिंधराव । (६८) लाषण । (६६) चीतो । (७०) वालण । (७१) सोही । (७२) मरेदराउ । (७३) अन्हल्ल राव (७४) जींदराज । (७५) आमराज । (७६) मणिराव ! (७७) आल्हण राव । (७८) कान्ह । (७६) समरसी । (८०) जागदेव । (८१) अरसी । (८२) उदैसींघ । (८३) जसोवीर । (८४) कर्मसी । (८५) चाविगेद । (८६ सामतसी । (८७) कांनूमदे । (८८) मालदे । (८६) रिणविर । (६०) वणवीर । (६१) लोलो । (६२) मतो । (६३) पीमो । (६४) रणधीर । (६५) अखयराज । (६६) माणजी । (६७) नारायण दासजी । (६८) महाराज श्री चतुर्भुजजी । (६६) महाराज श्री गरीबदासजी । (१००) महाराज कुमार श्री जगतसिंहजी । (१०१) कुमार श्री कीर्तिसिंघजी ।

[श्री स्वरूपलाल, जगदीश चौक, उदयपुर]

(१६) **अलंकार आशय** । रचयिता-रामकरण कविराय । रचना काल-सं० १८५७ विजय दशमी रविवार । आकार-१०¾″ × ७″ । पत्र-सख्या १६ । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर २१ पक्तियाँ और प्रति प्रक्ति मे २३ अक्षर हैं । छंद-सख्या ६७ ।

आदि भाग-

दुहा

वरन वसन वाहन विमल, विध निध विमल विचार ।
वदौ वर वानी वने, विमल वरन विस्तार ॥

अन्तिम भाग-

अतिसयोक्ति रुपक जहाँ, केवल ही उपमान ।
कनक लता पर चन्द्रमा, धरे धनुप द्धे वान ॥
सवत् अठार सतावनो विजय दशम रविवार ।
अलकार आसय जु यह भयो गन्थ अवतार ॥

[अन्ताणी सग्रह]

(२०) **अलंकार रत्नाकर।** रचयिता–दलपतराय और वशीधर। लिपिकाल–स० १६२८। आकार–११'५'' ८'७''। पत्र-सख्या ६६। प्रथम ६ पत्रों पर अलंकारों की सूची दी गई है और शेप पर ग्रन्थ का विस्तार है। प्रत्येक पृष्ठ पर १८ पक्तियाँ और प्रति पक्ति में २५/२६ अक्षर हैं। छद–सख्या २१६। इसकी पुष्पिका से ज्ञात होता है कि यह सवत् १६२८ में दशोरा पुरुषोत्तम द्वारा महाराणा शम्भूसिंह के लिये लिपिबद्ध की गई। लिपिकार ने जिस ग्रन्थ से इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि की है उसकी सूचना ग्रन्थ के अन्त में लाल अक्षरों से इस प्रकार दी है–"या पुस्तक लिखाणी पारसोली रावजी श्री लछमणसिंहजी की पुस्तक सों। सौधाँणी मोगडै हरदानजी सडायचरी पुस्तक सों।"

ग्रन्थ के आदि भाग से ज्ञात होता है कि उक्त दोनों लेखकों ने इस ग्रन्थ का निर्माण महाराणा जगतसिंह के लिये किया था। ग्रथ अलकारों को समझने की दृष्टि से बहुत उपयोगी है। क्योंकि प्रत्येक छद की उसके साथ ही गद्य में विशद व्याख्या की है इसके अतिरिक्त इसकी एक और विशेषता यह है कि व्याख्या में अन्य कवियों के उदाहरण भी उद्धृत किये गये हैं।

आदि भाग–

दोहा

नवत सुरा सुर मुकुट महि, प्रतिबिंबित अलि माल।
तिये रत सम नील मनि, सो गनेस रछपाल॥ १॥

अथ देशाधिप वर्णन

उदयापुर सुर पुर मनौं, सुर वर श्री जगतेस।
जिनकी छाया छत्र लसि, कीनौ ग्रथ असेस॥ २॥

अन्तिम भाग–

सवैया

करि खेलत फाग सुनारिन सग, अनग तरग महा सरसैं।
तिहें टूटति मोतिय माल विसाल, उरोजन तें करकें परसैं॥
गिरि भूमि गुलाल तें लाल भये, सु तो दारिम जानि सुवा करसैं।
लखि मों यह साहजहाँ जगनाह के, दान ही की महिमा दरसैं॥ २१६॥

"एहां कवि की समृद्धि कहि याते उदात अलकार" उदात के आश्रयसों मोती गुलाल करी लाल भये येह तद्गुण अलकार । और इही लाल इनू याके भ्रम की समर्थकता याते काव्यलिंग अलकार । सो इहा एक ही लाल शब्द करिकें तद्गुण अरु काव्य लिंगन को सूचन हे । याते दुहुन कों एक वाचकानुप्रवेस सकर अरु भ्रांति अलकार । एक वाचकानुप्रवेस सकर अरु भ्रांतिमान अलकार । इन दुहुन मिलिके उदातालकार की सुन्दरता कीनी । याते अगागी भाव सकर ॥ एसी कवि की सपत्ति सोई कार्य अरु साहजहाँ को दान महिमा सों कारन ए दोइ धरे है याते हेतु अलकार । अथवा प्रश्नोत्तर छते कवि की सपति करि साहजहा की सपति प्रस्तुत होइ तो कारन निवधना अप्रस्तुत प्रससा ॥ अथवा दुहुनी संपति प्रस्तुत होय तो प्रस्तुतांकुर । ऐसे तीन हु अलकारन को सदेह सकर ॥ कवि की सपति वर्नन तहां देत अजोग ही जोग या लछन ते सम्बन्धातिसयोक्ति के अरू उदात्तालकार के एक वाचकानु प्रवेश संकर अरू कवि सपति ओर राजा को दान ताको वरनन सोइ अन्युक्ति अलकार सो एक'वाचकानु प्रवेस सकर वाके आश्रय सों कवि की सपति रूप कार्य की द्वारा राज सपति रूप कारन प्रस्तुत होइ तो कारन निवधना अप्रस्तुत प्रससा कवि सपति ओर राज सपति दोऊ प्रस्तुत होई तो प्रस्तुतांकुर सों इहाँ अप्रस्तुत प्रसंसा अरू प्रस्तुतांकुर मे सदेह सकर सों राजा की सपति वर्णन उदात्तालकर व्यंग है ताको एक वाचकानु प्रवेस सकर ॥ ऐसे इन तीनहु एक वाचकानु प्रवेस सकरनु को सम प्राधान्य संकर है ॥ जो पे इन तीनहु सकर माझने कोऊ काहुको अग नाहीं या प्रकार इन ग्यारहु सकरन को सकर है ॥ उदात (१) अतिशयोक्ति (२) तद्गुण (३) काव्यलिंग (४) भ्रान्ति (५) हेतु (६) अप्रस्तुत प्रससा (७) प्रस्तुतांकुर (८) अत्युक्ति (९) ऐसे नो हुँ अलकार या सवैया में धरे हैं ऐसे और हू उदाहरन विचार लीज्यौ ॥

[कविराव मोहनसिंह, भटियानी चोहट्टा, उदयपुर]

(२१) अलंकार चन्द्रिका— रचयिता—हरिचरणदास ।

इस ग्रन्थ की दो प्रतियाँ एक स्थान पर प्राप्त हुई । यह जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह के 'भाषा-भूषण' के अलकार खड की टीका है। प्रथम प्रति का आकार १२" × ७ ६" है। लिखित पत्रो की सख्या ८३ है। इसमे प्रथम तीन पत्रो पर 'भाषा-भूषण' का 'नायका-भेद' प्रकरण समाप्त हुआ है। चौथे पत्र से 'अलकार चन्द्रिका' आरम्भ होती है। ग्रन्थ ४९८ छंदों में समाप्त होता है। प्रत्येक पृष्ठ पर १८ पंक्तियाँ और प्रति पक्ति में १८ अक्षर हैं। शैली की दृष्टि से कवि ने पहले पद्य में लक्षण प्रस्तुत किया है, फिर गद्य में उसकी टीका की है और अन्त में बिहारी और मतिराम के उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। ग्रन्थ के मुख पृष्ठ पर 'भाषा-भूषण' में दी गई गणपति की प्रार्थना को व्यक्त करने वाला एक सप्तरगी चित्र भी है, जिसका चित्रणकाल सवत् १९१० दिया गया है। चित्र शुद्ध राजपूत शैली का है।

इस ग्रन्थ की रचना सवत् १८३४ में हुई और सवत् १६१० में राव बख्तावर-सिंह ने अमरचन्द ब्राह्मण द्वारा लिपिबद्ध कराया।

द्वितीय प्रति का आकार ६" × ६" है। इसमे ३६ पत्र हैं। अन्त के अन्य ८ पत्रो पर अलकारों की सूची दी गई है। इसमें गद्य में टीका नहीं है। केवल दोहो में लक्षण और उदाहरण है। इसके पश्चात् कुछ महत्त्वपूर्ण अलकारो, ध्वनियों, रीति आदि पर ६४ पद्यों से प्रकाश डाला गया है। विभिन्न भेदों सहित ११८ अलंकारों के लक्षण सोदाहरण २१४ पद्यों में दे दिये गये हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पक्तियाँ और प्रति पक्ति मे १६ अक्षर हैं। परन्तु यह प्रति प्रथम प्रति की भाँति न तो लिखावट में सुन्दर है और पूर्ण ही। पाठ भी कहीं कही अशुद्ध है।

ग्रन्थ के आदि भाग में टीकाकार ने इस प्रकार अपनी भिन्नता प्रकट की है :—

भाषा भूषन ग्र थ कों, किय जसवन्त नरेस ।

टीका हरि कवि करत है, उदाहरन देवेस ॥

जहाँ सु चन्द्रालोक में, भाषा भूषन विरुद्ध ।

उदाहरण सूत्र— लच्छ सुलच्छन केरि तहि, करत सुहरि कवि सुद्ध ॥

(२२) **कवि दर्पन**—रचयिता–ग्वाल कवि। रचनाकाल–१८६१। आकार–१०" × ४"। पत्र-सख्या ८० प्रत्येक पृष्ठ पर २८ पक्तियाँ और प्रति पक्ति में २८ अक्षर हैं। अक्षरो का लेखन सुन्दर, मोटा, जमा हुआ और नागरी है। रीतिकाल की शैली पर लिखित यह एक आलोचनात्मक ग्रन्थ है जिसमे काव्य-दोष का वडे सुन्दर ढग से विवेचन हुआ है। कवि ने यहाँ गद्य और पद्य दोनो का प्रयोग किया है। सारे ग्रन्थ को सात 'क्रान्तियो' में विभाजित किया है। ग्रन्थ के विभाग और छन्द इस प्रकार हैं:—

प्रथम क्रान्ति	पद पदा दोष निर्णय	६० छन्द
द्वितीय "	वाक्य दोष निर्णय	८४ छद
तृतीय "	अर्थ दोष निर्णय	६३ छद
चतुर्थ "	रस दोष निर्णय	२६ छद
पचम "	दोषेंत्ता करन	३३ छद
षष्ट "	दूषोद्धारक वर्णन	५७ छद

सप्तम " प्रश्नावलीगुण वर्णन १०३ छंद

ग्रन्थ के आदि भाग के पहले कवित्त में शंकर की प्रार्थना है और दूसरे दोहे में सरस्वती की। तीसरे दोहे में कवि ने अपना और ग्रन्थ का परिचय दिया है—'

वंदी विप्र सुग्वाल कवि, श्री मथुरा सुख धाम।
प्रगट कियो या ग्रंथ को, कवि दरपन यह नाम ॥ ३ ॥

चौथे दोहे में कवि ने रचनाकाल दिया है–

"सम्वत ससि[१] निधि[९] सिधि[८] ससि[१], आस्विन उत्तम मास।
विजै दसमि रवि प्रगट हुअ, कवि दरपन परकास ॥ ४ ॥

पाँचवे दोहे में कवि ने खलों के मुँह पर 'कुलफ' (ताला) लगाकर सज्जनो की प्रार्थना करते हुए सातवे दोहे में अपनी शैली प्रकट की है–

"उदाहरन दुषनन पै, इक इक अपनो राषि।
फिर पुराने कविन के, रखिहौ कवित सुसाषि ॥ ७ ॥

इस ग्रंथ से यह सिद्ध होता है कि कवि ने यहा एक आलोचक के रूप मे रीति काल की शैली में एक क्रांति उपस्थित की है। आलोचना के इतिहास में यह ग्रथ एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। जो इसकी शैली से स्पष्ठ प्रकट होता हैं। अपने समय तक प्रचलित लगभग ४० रीति ग्रथों, नाटकों तथा अन्य ग्रथों का अध्ययन कर कवि ने यह ग्रन्थ तैयार किया है, जिनकी सूचि हम नीचे देंगे। एक ओर तो कवि ने प्राचीन लक्षण ग्रथों की शैली को स्थान दिया है और दूसरी ओर अपनी नवीन शैली को। सबसे पहले पद्य में लक्षण की स्थापना की गई है, फिर उसकी गद्य (वार्ता) में व्याख्या की है। इसके बाद कवि ने स्वरचित उदाहरणों से पुष्ठि करते हुवे उनको भी गद्य में व्याख्या करदी है। इसके पश्चात अन्य ग्रन्थो से उदाहरण देकर उनकी भी व्याख्या कर, अनेक प्रश्नोत्तरों द्वारा शंका समाधान की है। अन्य ग्रन्थों से दोष पूर्ण उदाहरण लेकर उनकी भी विशद व्याख्या करदी है। कहीं कहीं कवि ने गद्य में भी वाक्य बनाकर अपने मत की पुष्टि की है। इससे हमें कवि के व्यापक अध्ययन के साथ ही साथ विषय को समझने की क्षमता और उसे व्यक्त करने की योग्यता का परिचय मिलता है। एक उदाहरण यहाँ दिया जाता है।

अथ पद-दोष

कवित्त

श्रुति-कटु-गत-सस्कृत अप्रयुक्त और
असमर्थ फर निहतारथ न आनियै ।
अनुचितार्थ लीजै ना निरर्थक अवाचक ॥
तीनों असलील को बचावहु'र मानियै ॥
राषौ ना सदिग्ध अप्रतीत ग्राम्य ने पारथ
दोष कहे त्रीदस ये पद के प्रमानियै ।
गत मसकृत असमर्थ औ निरर्थक
त्रै मागि दस दोष वाक्य हूँ मै पहिचानियै ॥ १ ॥ २७

वार्ता

"गत सस्कृत आदि ये तीन दोष छोडिकैं और श्रुति कटु इत्यादि जे कवित्त मैं है ते दस दोष वाक्य हू मैं होत हैं। अथ नाम युत लछन-लछ्य लिखियत है—

कवित्त

कर्न कुट अट दुत वर्न तिय कीनो कुष
गत सस्कृत सव्दा सुद्र तीनि हारा है ।
होय सव्द सुद्ध पै अवर्न्यौं अप्रयुक्त कहै
जिश्नु पति नीको तो यै वारि डारा है ॥
द्दर्थ ख्याती थोगे वहु थोरो है असमर्थ
वूमि घन परसत अम्रत की धारा है ।
गयै अप्रसिद्ध द्दर्थ मैं तो सोई निहतार्थ
पीवै मकरद अलि चन्द को अपारा है ॥ १ ॥ २८

वार्ता

कर्न कटु इति 'अट' कहियै नहीं, है टवर्ग जामै और जे वरन है तेहुत होंय कान कों फडये लगे। प्रमान -काव्य प्रकास की टीका-काव्य प्रकाशादर्श ना नदी पुरूषास्ती ।

याको अर्थ

"कठोर और मज तन करि कैं जो उच्चार करियै ओज गुण व्यजकम् सजोगी वर्ण औ दुपद होय कानन कौं जो पद श्रुति कटु कहियै ।"

इहाँ प्रश्न

"स्याम कन्हाई जुन्हाई प्यारे इत्यादि पद सजोगी है ये भी कर्न कटु भये चाहियो।"

"असेई पढन के जुदे करिये को कहा है। सजोगी मी होंय श्रौ तीव्र प्रयत्न करि उच्चारन करियै होय ताको उदाहरन 'तिय कीनो कुप' कुप को कोप, कुप की ठौर रिस कहै तो दोष नहीं। अन्यत्र –काव्य रसाइन।

आगे 'काव्य रसायन', 'विहारी', 'रसिक–प्रिया' कृष्ण को समर' आदि कई ग्रन्थों से उद्धरण लेकर गद्य में सत्र की विशद व्याख्या करके स्पष्ट किया गया है।

ग्रन्थ में कवि ने इसी प्रकार निम्न कवियो और ग्रन्थों से उद्धरण लिये हैं –

१ काव्य रसायन
२ विहारी सतसई
३ कवि प्रिया
४ रसिक प्रिया
५ श्री कृष्ण को समर
६. लेख काव्य प्रकाश (भाषानुनाद)
७ काव्य–प्रकाश (मूल सस्कृत)
८ कांव्य प्रकाश (टीका सस्कृत)
९ सभा प्रकाश
१०. ठाकुर कवि
११ प्रेम तरंग
१२. कविवल्लभ
१३ फुटकर
१४ रस चन्द्रोदय
१५ रस राज
१६ लेख रसरहस्य (भाषानुवाद)
१७ लेख कवि वल्लभ (भाषा–टीका)
१८ नषसिष
१९. आलम कवि
२०. मोहन लीला
२१ गीत गोविन्द (सस्कृत)
२१ दयानिधि
२३ श्री पति सुकवि
२४ रस सिरोमनि ग्रथ (नरवर पति राम सिंघ कृत)
२५ दास कवि
२६ राम चन्द्रिका
२७ रसिकानद
२८ कुमार सम्भव (सस्कृत)
२९ दुलह कवि
३० वीर चरित्र नाटक (सस्कृत)
३१ रत्नावली (सस्कृत)
३२ कर्पूरमजरी (सस्कृत)
३३ रस मजरी (सस्कृत)
३४. लालकवि
३५ प्रवीनराय
३६. काव्य–प्रदीप (सस्कृत)
३७ भ्रांति मजनी
३८. भास नाटयकार (सस्कृत)
३९ भाषा भूषण

[कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(२३) **कविता कल्पतरू ।** रचयिता–नान्हूराम 'कवि सागर' । आकार–८″×६ ५″ । पत्र–संख्या ८२ । प्रत्येक पत्र ११–१२ पक्तियां और प्रति पक्ति मे २२ से २७ तक अक्षर हैं । ग्रन्थ मे ५७३ छद हैं । यह ग्रन्थ सवत् १६४० में रावल नवलसिंह के पुत्र राव मोडसिंह ने सादरपुर में लिपि बद्ध किया । इसकी पुष्पिका इस प्रकार है "इति श्री सहृदय रूप जोरावरसिंघ आग्या प्रमान ग्रन्थ कविता कल्पतरू कृत अर्थालकार संकर समृष्टि वर्णनम् नाम पचमी सापा ॥ सपूर्ण ॥ समत् १६४० वर्षे श्रावण मासे कृष्ण पक्षे २ द्वितिया से सपूर्ण लिपितम् ॥

सादरपुर में शुम लषित, कवित कलपतर जान ।
न्हान्हू पुत्र नवल के, श्राम् पुस्प सम नांम ॥ १ ॥

ग्रथ के अतिम भाग से ज्ञात होता है कि जोरावरसिंह ने नान्हूँराम को 'कविसागर' की उपाधि दी थी और उसने उनके आदेश से सवत् १७८८ में इस ग्रन्थ का निर्माण किया था । आदि भाग में ३८ छद तक कवि ने जोरावर-सिंह का और अपना वश परिचय दिया है जो ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है । सम्पूर्ण ग्रथ पाँच शाखाओ में विभाजित किया गया है–

१–राजवश वर्णन तथा शब्द अर्थ निरूपण
२–विभाव, अनुभाव, सचारीभाव आदि निरुपण
४–शब्दालकार निरुपण
५–अर्थालकार निरुपण

कवि ने मम्मट के मत का प्रतिपादन करते हुए लक्षणो को सोदाहरण समझाने का सफल प्रयत्न किया है । विपय के अनुसार छद और भापा के प्रयोग हुए हैं । वीर रस के छप्पयों मे रासो की शैली का प्रयोग पाया जाता है ।

आदि भाग–

छप्पय

मगल मगल करन रुप मगल छवि छाजत ।
वुधि विसाल गुन जाल वाल ससि भाल विराजत ॥
करम पांनि वरदानि दुपद दानव दल पंडन ।
एक दत निति मत मत्त दति मप मडन ॥

जिह जोग काज जगपत ही लहत-सिद्धि सिव सिद्धि तुव ।
वीर रस भूषन करन देहु उक्ति गन ईस तुव ॥ १ ॥

(५ छंद तक ब्रह्मा, शिव, कृष्ण, सरस्वती आदि की प्रार्थना है)

कवित्त

कुल पति मिश्र सब कविन के चक्रवर्ति,
चक्रवर्ति गावैं गाथ सुनैं गुन मारे की ।
नागदेव लोक तें निपुन कीनौ लौक,
नान्हूराम जैसी मति गज मुषवारे की ॥
सुर गुर भूलि कैं असुर–गुर भूलि गयें,
उदै निसिराज कै गनति कौन तारे की ।
एक मुष वारेन की कविता समान कैसें,
समता न कविता हजार मुषवारे की ॥ ६ ॥

दोहा

जोति रूप प्रगटै सुबुधि, मिटत तिम (र) अग्यांन ।
दिनकर जिम कवि षैम को, धरैं जबैं कवि– ध्यान ॥ ७ ॥

अथ राजवस वरनन

दोहा

देव अस राजा भए, रघुकुल कै अवतस ।
लषि मत पूरव कवि- ने, वरनत हौं तिन वस ॥ ८ ॥

छंद पद्धरि

नृप ईस धर्म ग्वालेर दीन । तिन पुत्र सोढ भए अति प्रवीन ॥
सुत दुलहराय जमवाइ माइ । दिय वड गूजर मींनां उडाइ ॥ ९ ॥
कुल तास कलस का किल नरेस । सुत हनू राय हनमत भेस ॥
जग जान उदे तिनकैं सपूत । जिन मारि लई धर्नी अभूत ॥ १० ॥
जिनकै पजौन सावत भेस । जीते कमद्ध कनवज्ज देस ॥
ता पुत्र मलैसी वड ववेक । गिरनारि आदि जीते अनेक ॥ ११ ॥
वीजल नरेस तिनकैं गुरूर । नृप राजदेव तिन वस सूर ॥
कहि कीलूणदे सय तास नद । सुत कुंतिल लीने अति अनन्द ॥ १२ ॥
सुनि जौनसीह ता पुत्र मांनि । वर उदैकरण ता पुत्र जानि ॥
तिनकै नरेस नरसिंघ गात्र । भुज वधु दुतिय स्वौवृ मरात्र ॥ १३ ॥

स्यौ वृ भ प्रगट स्यौवृ म भूप, तिन जुद्ध जोरि जीते अनूप ॥
जिन वस भोज षग दांन सग, रणमल्ल तास कैं रण अभग ॥ १४ ॥

दोहा

रणमल्ल के नाथू भयो, दुतिय पचाइण वीर ।
आसल जी सुत तीसरो, जुटै जग तत्र वीर ॥ १५ ॥
पुत्र पचाइण कै भयौ, दिन मनि देईदास ।
सुत गुपाल तिनकैं भयौ, जिम गुपाल वृजवास ॥ १६ ॥

कवित्त

वारह वरस कैं सधारी वड़ गूजरांनि,
तीन बेर खेत परयौ चावले लराई कौ ।
पूरव मैं मारथौ वलषटा कौ फवजदार,
दलि डारथौ दल जो वरार पति साई कौ ॥
ठौर २ खगाग्ल जीति के गुपालदास,
पायौ मांन भूपतै किताव रवताई कौ ॥ १७ ॥

दोहा

सुत गुपाल के द्वै भये, इक गनि भोपतिराव ।
कदौखतसी दूसरौ, रिण से तिनको चाव ॥ १८ ॥
भीम रूप भोपति तनय, रावत राघोदास ।
फतेसिंघ डू गर प्रवल, अरि कुल करनै त्रास ॥ १९ ॥

कवित्त

भिच्छुक के कर दान कौ देखत लच्छि छिपावत लोग भए हैं ।
जैंवत एते रसोई मैं आयकै वात मैं टाक कैं पात गए हैं ॥
पग्ग गहैं कहि कौंन वचै जस के सुत तैं सव आइ नए हैं ।
रावत राघवदास के त्रास तैं दुज्जन वास धरान रए हैं ॥ २० ॥

दोहा

वड़ गूजर वल पडि कैं, भूर्गे लयो छिनाइ ।
मींना मारयौ वारि कौं, फते फतेसिंघ पाइ ॥ २१ ॥
फतेसिंघ कै केसरी, सिंघ सिंघ के भाइ ।

चतुरसिंघ बल करि प्रबल, पुनि सुजानसिंघ गाइ ॥ २२ ॥
अचलसिंघ अरू देवसिंघ, फतेसिंघ मन मांनि ।
महुकमसिंघ पुनि अजबसिंघ, हिंदू सिंघ जग जानि ॥ २३ ॥

छप्पय

फतेसिंघ के राव देवसिंघ देव प्रगट्टिव ।
बीदरपति बल भीम खगाबल दुज्जन बल घट्टिव ॥
राम कांम आमांम धाइ धौंकल धर किन्नव ।
कवर किसन के वैर वेगि दुज्जन सिर लिन्नव ॥
बहु वर जट्ट मारे अघट, सोधि बृज सब सुद्ध किय ।
या वैरी नाथ बिसनेस कौं, जीति जग तिन जोति दिय ॥ २५ ॥

दोहा

देवसिंघ कैं कँवर प्रिय, बषतसिंघ जुभ्झार ।
जोरावरसिंघ जोरवर, अरि मारे गहि सार ॥ २६ ॥
कवर उदै बषतौ कवर, कोकि लियो करतार ।
मेव मारि रेणागढी, भूवयौ राव भुझ्भार ॥ २७ ॥
जुद्ध काव्य विद्या सकल, इत्यादिक पढि धीर ।
इमि प्रवीन पुहुमि भयौ, जोरावरसिंघ वीर ॥ २८ ॥
विदर बड़ाई ग्रन्थ रचि, कहैं कवीसर गाइ ।
सो प्रसाद जयसिंघ कौं, लीन्यौ सव जग पाइ ॥ २९ ॥

छप्पय

दए धवल पुरधाव वीर जोरावर रूद्धिव ।
सामरि सैद सघारि षेत परि घाइल उद्धिव ॥
जट्ट पट्ट दहपट्ट जट्टमडल असि किन्नव ।
आवै गढ गजाइ धाइ हाडा हठ छिन्नव ॥
अरि आड तोडि आडावला-मेर घेर सब जेर किय ।
वन गिरहि भेदि जयसाहि वलिए कहा कहिं गु लाज लिय ॥ ३० ॥

कवित्त

लीनै तीन लोक भार करतार राज लहैं
कहैं वेद गाथा मैं प्रमान मत वाहि कौ ।

दीनों करतार नरलोक भुज भार सब
दिली पातसाह कौ जनम धनि ताहि कौ ॥
दिली पातिसाह पातिसाही धम जानि करि
सौंप्यौ जयसिंघ भुजभार पातिसाहि कौ ।
दीनों जयसिंघ महाराजि राज-भार सब
जोरावरसिंघ मौर जानि कै सिपाही कौ ॥ ३१ ॥

दोहा

जोरावरसिंघ जोरवर, लखि जयसिंघ नरेस ।
राज-भार सौंप्यौ सरस, थप्यौ मालवा देस ॥ ३२ ॥
क़िला रामगढ निकल इक, गांव भानपुर चार ।
तहा कविन को करि सभा, कीनौं कवित विचार ॥ ३३ ॥
तहां वाघोरा भाट इक चद नद सुषधाम ।
वासी गढ आमीर कौ निज कवि न्हांन्हूरांम ॥ ३४ ॥
तिन कवि कौं कीनौं हुक्म, सब सुष दै सुष पाइ ।
रस कविता भूषन वलिन, वरनौ ग्रन्थ वनाइ ॥ ३५ ॥
हुकम सकति सम पाइ कै, ममट मत को पाइ ।
वरनौ कविता कलप तर, ग्रथ वाम ठहराइ ॥ ३६ ॥
मन चिंतत फल कलपतरु, सेवत देत बताइ ।
जिन रस भूषन वहुलहैं, कवित कलपतर गाइ ॥ ३७ ॥
सवत सतरह सत सुनौं, वरष अठथासी जांन ।
नवमी आदि असाढ पख, रचना ग्रन्थ प्रमांन ॥ ३८ ॥

अन्तिम भाग-

कवित्त

हुक्म समान कीनौं कविता कलपतर
पाइ इत तामें भेद करि रस मीनौं है ।
चौप करि चाह सों सुनत भए भिंन भिंन
ताही वे रचित कौं उमग और कीनौं है ॥
जोई जोई चाह्यो सोई दीनौ मनचिंत फल
बहुरि जगत माभ ऐसी जस लीनौं ह ।

नान्हूराम कवि कौ किताब कवि कौ
जोरावरसिंघ धीर रीझि करि दीनौं हैं ॥ २८९ ॥

दोहा

पुषि अष्टमी भूमि सुत, कातिक आदिक पाष ।
सबै ग्रन्थ पूरन भयौ, पूरन कवि अभिलाष ॥ १९० ॥

[कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(२४) **कविप्रिया**—रचयिता—केशवदास। प्रति १। देखो भाग १, (२२)

प्रति २। आकार—७″ × १४″। पत्र-सख्या—२१। पद्य-सख्या—६८। दशा—जीर्ण।

[अन्तागी सग्रह]

प्रति ३। आकार—११½″ × ८″। प्रति अपूर्ण है। अत. पत्र-संख्या १ से ८ तक अप्राप्य है, और फिर ९ से १४ तक वर्तमान है, १५ से १९ तक अप्राप्य है, और फिर २० से ३५ तक वर्त्तमान है। रचना ३५ पृष्ठ पर समाप्त होती है जहाँ उसका लिपिकाल "संवत् १७४० वर्षे शाके १६०५ प्रवर्त्तमाने महा मांग्यल्य प्रद पोष मासे कृष्ण पक्षे एकादश्यां तिथौ भौमवारे श्रीमेडता गढ्ये लिखावत पंचौली श्री अचलदासजी अत्मार्थे चीरजीव शुभं भवतु ॥ लिखतम शेन सांवल. ॥"

[उदयसिंह भटनागर, उदयपुर]

(२५) **कविप्रिया टीका**। टीकाकार—हरिचरणदास। रचनाकाल—सवत् १८३५ मघ शुक्ल ५। आकार—१२″ × ९″। पत्र-सख्या ११२। श्लोक-सख्या—७१२५।

अथ कवि की स्थिति

राजत सुबे विहार में, हेमारनि सरकार ।
सालग्रामी सुर सरित, सरजू सोम अपार ॥ १ ॥
सालग्रामी मरजु तहँ, मिली गंग मो जाय ।
अतराल में देस है, हरि कवि को सरमाय ॥ २ ॥
परगना 'गोआ' तहाँ, गाँव चैनपुर नाम ।

गगा सों उत्तर तरफ, तहाँ हरि कवि को धाम ॥ ३ ॥
सरजूपारी द्विज सरस, वासुदेव श्रीमान ।
ताकों सुत श्रीरामधन, ताको सुत हरि जान ॥ ४ ॥
नवा पार में गाम है, बख्या अमीजन तास ।
विस्व सेन कुल भूपकर, करत राज कवि मास ॥ ५ ॥
मारवाड में कृष्णगढ, तह नित सुकवि निवास ।
भूप बहादूर राज हैं, विरदसिह जुवराज ॥ ६ ॥
राधा तुलसी हरि चरन, हरि कवि चित्त लगाय ।
तहाँ कवि प्रियामरन यह, टीका करी वनाय ॥ ७ ॥
सत्रसो छयासठि महीं, कवि जो जन्म विचारि ।
कठिन ग्रथ सूधौ कियो, लै है सुकवि निहारि ॥ ८ ॥
सवत् अठारह सो विते, पैतिस अधिके लेषि ।
साक अठारह सौ जपै, कियो ग्रथ हरि देषि ॥ १४ ॥
माघ मास तिथि पचमी, शुक्ला कवि को वार ।
हरि कवि कृति सौं प्रीत हो, राधा नन्द कुमार ॥ १५ ॥

[कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(२६)कविवल्लभ । रचयिता--हरिचरणदास । आकार--१२″ × ६·२″ । पत्र-संख्या ६१ । पद्य-सख्या ४३० । विशेप देखो भाग १ (२४) । इसमें कवि ने गद्य में व्याख्या भी दी है । कवि ने विहारी-सतसई, कविप्रिया, श्रुति भूषण साहित्य दर्पण आदि के उदाहरणों के साथ जो उदाहरण दिये हैं उसमें अपने एक स्वरचित ग्रन्थ "मोहन-लीला" से भी उदाहरण दिये हैं जो अब तक अप्राप्य है ।

सूचना–इसीके साथ 'काव्य चद्रिका' भी है ।

[कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(२७) काव्य कुतुहल । रचयिता–चित्रसाल । लिपिकाल सवत् १६२५ पोप कृष्णा ११ गुरुवार । आकार–६″ × ६·५″ पत्र–सख्या २७ । प्रत्येक पत्र पर ६ पक्तियाँ और प्रति पक्ति में २२ अक्षर हैं । अक्षर जमे हुए हैं और लिपि नागरी है । छद–सख्या २१४ । यह पिंगल तथा रस का एक लक्षण ग्रंथ है । ग्रन्थ व्रज भापा मे है ।

आदि भाग–

दोहा

जय बांनी दांनी सुमति, कविता कर वर पंथ ॥
चतुर रसन रचना रचै, काव्य कुतूहल ग्रंथ ॥ १ ॥
गोकुल सुतैलंग कुल, गुर मुरलीधर पाय ॥
वदन कै चातुर रचत, भाषा सहज सुभाय ॥ २ ॥
कवि कविता लछन सहित, बहुरि प्रयोजन जान ॥
काव्य अंग पुनि भेद कौं, बरनौ प्रथम प्रमान ॥ ३ ॥

उदाहरण–

(अथ–वियोग)

अब वियोग के भेद बखानौं । पूर्वानुराग रूचिर हम प्रमांनो ।
ईरषा स्राप विदेस विभागे । उदाहरो पूर्वानुरागे ॥६५॥

(पूर्वानुराग–यथा बरवै)

गगरी लग लग वगरी चित हीं चाही
सगरी पग गुन अगरी हित ही हाही ॥ ६६ ॥

(हास्य)

हास्यालंबन जांनि विदूषक तिह अगत उद्दीपौ ।
दृग संकोच अनुभाव सुनी मुदत अलस संचारि समीपो ॥ ६७ ॥
हासी इनके व्यंग ह्वै नृप कवित्त ।
हास्य सुरगनि चातुरनि के चित्त ॥ ६८ ॥

उदाहरण

जल थल भ्रम पर उचक रत, लषि रहे सबै मुसकाय ।
जानि फटक थल परय (जु) जब, मेंह सबै नृपराय ॥ ६६ ॥

(ओज)

कटि सुर्वन सुख सरेफ संग । गुन ओज चोज जिहि रूधिर अंग ।
पुनि और वीर रस को भुवन्न, लखिव गाम गोड संगो सुवन्न ॥ ३ ॥

प्रसाद

आमा से सुनत हि अर्थ ताम । कहिये प्रसाद गुनको प्रकास ॥
चित चहै भलो जन गूढ जांनि । सांँचो सु एक हरि ध्यान ग्यांनि ॥

[कविराव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(२८) **काव्य सिद्धान्त** । रचयिता -सूरति मिश्र । रचना काल-सवत १७६८ काति सुद ७ बुधवार । आकार-६" × ७ ५" । पत्र-सख्या १४ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तियाँ और प्रति पक्ति में २५ अक्षर हैं । अक्षर नागरी हैं । छन्द-सख्या १५० । यह प्रति जोधपुर राव बागजी के भतीजे जीवराजजी की प्रति से संवत् १६३२ वैसाख बुद ५ गुरूवार को महत्तापसिंह द्वारा सलूम्बर में लिपि-वद्ध की गई ।

आदि भाग-

दोहा

श्री वृन्दावन मधि लसै, नित वय नवल किसौर ।
गौर स्याम अभिराम तन, दपत सपत मौर ॥ १ ॥
कवि ताहि को कहत है, समझै कविता अग ॥
वृज सविता गुण जो चहैं, तो छवि ता प्रत अग ॥ २ ॥

काव्य लक्षण

वरनन मन रजन जहाँ, रीत अलौकिक होय ॥
निपुन कर्म कवि को जुतह, काव्य कहत कवि कोय ॥ ३ ॥

उदाहरण-माधुर्य-

दोहा

रौद्र रस-

आलवन मधि रौद्र अरि, चिरत उदीपन धार ॥
भ्रू भगादि अनुभाव हैं, उग्रतादि सचारि ॥ ११३ ॥
जग के विषई नरन कौ, सदगत वरनी नाह्य ॥
वृज वालन कै गुन रटैं, तेऊ सदगत माह्य ॥ ११४ ॥

अन्तिम भाग-

'शब्द अर्थ तितु धात मय, जीव सुरस आनन्द
अलकार सौं कान्त है, अग अग मत छन्द ॥ १४७ ॥
गुन जु सुरता आदि गुन, रीति मलन सुनुधीर ॥
दौष अध पगादि विन, जानो काव्य सरीर ॥ १४८ ॥

[कविराव मोहनसिहजी, उदयपुर]

(२६) **छंद पगो निधि** । रचयिता-महाराज कुमार मदनसिंह 'मदनेश', भींडर । रचनाकाल- १६२६ । आकार-फुल्सकेप । पत्र सख्या ४५ ..। छंद संख्या १३६ ..। यह ग्रंथ रचयिता के जीवन काल में समाप्त न हो सकने के कारण अपूर्ण ही रह गया है । इसमें एक जैं मगल अश्व का चित्र तथा अन्य पताका तालिकादि के चित्र और कोष्ठक भी अकित है ।

आदि भाग-

दोहा

विघन हरन मंगल करन, लम्बोधर उर ध्याय ॥
तवै काज कछु कीजिये, तुरत सिद्ध दरसाय ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

दोहा

धारा वर्णे जु च्यारिकौ, रगन चद गुरु जानि ॥
छद निर्गला जगत गुरु, पिंगल सीखि प्रमानि ॥ ५ ॥

धारा छद उदाहरण

दूत आयो । पत्र लायो ॥
मोग डारौ । जोग धारौ ॥ ६ ॥

[सरस्वती भण्डार, भींडर]

(३०) **छंद प्रकास** । रचयिता- दानदास दयाल । आकार-९" × ६" । पत्र-सख्या ५६, जिनमें प्रथम १६ पत्र अप्राप्य हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तियाँ और प्रति पक्ति में २८ अक्षर हैं । ३२ से ५६ पत्र मे कमल बध, वृत्त बध, चश्मा बन्ध, जहाज बन्ध आदि ३७ चित्र हैं । इसमे रचयिता ने एक ही छद में लक्षण और उदाहरण दे दिये है और साथ ही दादू पथ की भावनाओं को भी व्यक्त किया है ।

उदाहरण

छप्पय

करिये यक दस प्रथम, त्रयोदस फेरि लगावत ।
इहि विधि कल चोवीस, च्यार पद काव्य बनावत ॥
रवि द्वे पद वत्तमान, पच दस तेरह आनय ।

उल्लाले की रीतिमत, बसु बीस बखानय ॥
यह कह्यौ नाग खग नाह सों, छप्पय छद अनद सो ।
जब ह्वै अनन्य भगवत भजै तब छूट हिं मव फदसों ॥ ५३ ॥

इन्होंने कुल ७८ छदों का उल्लेख किया है। शेष ३७ बाह्य अलकारों के विभिन्न छद हैं

[कविराव मोहनसिहजी, उदयपुर]

(३१) **छंद प्रबन्ध पिंगल भाषा** । रचयिता- भडारी उदेचद। रचना-काल सवत् १६३६ आषाढ़ विद ३ । आकार-१०३/४" × ७" । पत्र-सख्या १७, प्रत्येक पृष्ट पर २२ पक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति मे २६ अक्षर है। पद्य-सख्या १५० ।

आदि भाग-

दुहा

विघन हरन वाछित करन, श्री मदिष्ट गुन गाय ।
रचना छद प्रबन्ध की, रची सबन सुषदाय ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

दुहा

सब देसन में लसत है, मरधर देस विसाल ।
तहां तखतगढ जोधपुर, तपै मान महिपाल ॥ २८ ॥
ग्रथ बन्यो ता देस में, नगर नागपुर मांहि ।
बुधजन समुभि सराय है, यामे ससय नाहि ॥ २६ ॥
कठ कर लहि ग्रन्थ यह, अर्थ मर्म निरधार ।
सो सब छदन ग्रथ को, हुवै है वारा पार ॥ ३० ॥
परम देव नरवान मे, श्रोरन श्रेसो वोध ।
चाहे सो विधि सकल छो, तैमे फिर कछु सोध ॥ ३१ ॥

[अन्ताणी सग्रह]

(३२) **छंद रतावली**—रचयिता हरिराम दास निरजनी। रचना काल-सवन १७६७ मे डीड़वाना मे लिपि सवत् १६३० में रामरतनदास द्वारा भाडर मे। आकार १२" × ७१/२"। पत्र संख्या-२६। प्रत्येक पृष्ट पर १७ पक्तियाँ और प्रत्येक पक्ति मे १६ अक्षर है। छद-संख्या ११०।

आदि भाग—

दोहा

गुरु जन पति गोविन्द को, नाय सीस हरि राम ॥
पिंगल मत भाषा विषे, रचत रुचिर परकाम ॥ १ ॥
मात्रा बरन विभेद करि, द्वै विधि लौकिक छंद ॥
पिंगल आदि आचार जन, कहे बांधि पर बंद ॥ २ ॥

अंतिम भाग—

दोहा

जिहि अर्थ करि कवित को, चिमतकार मन होय ॥
अलकार तिहि नाम को, कवि धारो सब कोय ॥ १०७ ॥
छंद नाम कृत भेद लसि, कविजग मौंनहु वेद ॥
के देशान्तर रीति है, के आचारज भेदि ॥ १०८ ॥
ग्रंथ छंद रत्नावली, सारथ याको नाम ॥
भूषन भारती ते भख्यौं, कहे दास हरीराम ॥ १०९ ॥
सवत सर ७ नव ९ मुनि ७ शशी, १ नव नवमी गुरु भांति ॥
डीडवान दृढ कूप तट, ग्रंथ जन्म थल जानि ॥ ११० ॥

[सरस्वती भडार, भींडर]

नोट —इसी ग्रथ के साथ जयपुर महाराज प्रतापसिंह 'व्रज निधि' कृत भर्तृहरि शतक की टीका भी दी गई है ।

(३३) छंद विवेक—रचयिता—कवि जयनारायण । रचना काल—सवत्-१८६२ वैसाख शुक्ल ३ गुरुवार और सवत् १९३४ फाल्गुण शुक्ल ६ बुधवार को गोरजी मोतीराम द्वारा बाँसवाडा में । आकार १२″×७ ६″ पत्र सख्या–२२ । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पक्तियाँ हैं और प्रति पक्ति मे ३२ अक्षर हैं । छंद-सख्या १२१ ।

ग्रन्थ की वर्तमान दशा उत्तम है । ग्रन्थ की पुष्पिका से ज्ञात होता है कि लिपिकार ने महाराजा रावत मोतीसिंह राजगढ़ वाले की आज्ञा से इस ग्रन्थ की प्रति लिपि की और प्राप्त प्रति इसकी प्रतिलिपि है । बीच बीच मे कवि ने अपने आश्रयदाता उमर नरेश का नाम दिया है ।

आदि भाग–

दोहो

याहि पढ़े तें जानि है, छंदनु रचन विवेक ॥
नाम धर्यो या ग्रन्थ को, याते छन्द विवेक ॥ १ ॥
लघु–गुरु–जुत गन आठ हैं, सब बानी में लीन ॥
याते इनको प्रथम ही, करत विचार प्रवीन ॥ २ ॥

'अथ लघु विचार'

जा अछिर के बिन्दु नहीं, परे न होहि सजोग ॥
एके मत सों लघु लिषे, सरल रेष कवि लोग ॥ ३ ॥

उदाहरण–

निसानी छंद

तेरह पुनि दस पांच हैं, गुर अंत बनावै ।
छंद निसानी में कला, तेईस गनावै ॥
चिंतामनि कल वृच्छ कौं, काहे मन लावै ।
श्री ऊमर नर नाह को, जस जो कवि गावै ॥ ९ ॥

अन्तिम भाग–

द्वात्रिंसाक्षर रूपक–धनाक्षरी छंद

चारयौ वेर आठ आनै, मध्य विसराम ठाने,
वरन वत्तीस मांने, अन्त लघु कौ हे धाम ।
नागयण कहैं ऐसे, लछन वतायें जैसे,
च्यारी तुक रचे तेंम, सोहत गुनन ग्राम ॥
ऊमर नरेस जहाँ, रावरो भनत इमि,
सु कवि लहत मोज, पूरन सकल काम ।
जाति गुन आगरी है, अति सुख साधरी है ।
रूपक धनाक्षरी है, सेस मत याको नाम ॥ १६ ॥

दोहा

पिंगल मत वहु छंद है, कहे कोंस पे जात ॥
वरने कछुक जथा सुमति, जे मैं सुन्यो विप्यात ॥ १ ॥

पच्छि २ अक[९] वसु[८] ससि[१]यहै, संवत् माधव मास ॥
भयो पच्छ स्वत तीज गुरु, छंद विवेक प्रकास ॥ २ ॥
प्रगट लच्छ लच्छन सहित, कहे दुहू विधि छंद ॥
नाम भेद कैते कहे, लेहु विचार कविंद ॥ ३ ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(३४) **छंदो निधि पिंगल**—रचयिता—मनराघन श्रीवास्तव । रचना काल—सवत् १८६१ माघ शुक्ला १३ । आकार—१२'६"×७६" पत्र-संख्या २४। प्रत्येक पृष्ट पर ३३ पक्तियाँ और प्रति पक्ति पर २८, ३० अक्षर हैं।

इस ग्रथ की पुष्पिका से ज्ञात होता है कि अथो नगर निवासी कवि शिवदत्त कान्य कुब्ज ने संवत् १६३६ असाढ़ सुद २ शुक्र को वांसवाडा में कविराव वख्तावरसिंह के पठनार्थ लिपि वद्ध किया। ग्रथ व्रज भाषा में है।

आदि भाग—

दोहा

सीता राम सरोज पद, तीनि लोक को ईस ॥
मन रापन को दास करि, देहु भक्ति वकसीस ॥ १ ॥

सोरठ

सुमिरत ही सिधि होइ, श्री गनेस कुजर वदन ॥
करहु किपा मम सोइ, देहु वुद्धि सपति सदन ॥ २ ॥

दोह

सम्वत दस[१०]वसु[८]वर वसत, इकसठि[६१]के अनुसार ॥
भयो माघ सुदि त्रयोदसी, छदोनिधि औतार ॥ ३ ॥
सीतल पावन सुभग है, सोमवार है वार ॥
करत काज सो सिद्ध है, सकल मनोरथ चार ॥ ४ ॥
कायस्थ हैं भांडेर को, श्रीवास्तव कुल जान ॥
हरिनारायणदास सुत, मनसुक राम प्रमान ॥ ५ ॥
ता सुत मनराघन प्रथम, अमरसिंघ लघु भाइ ॥

ता में नित प्रति देषिये, पढित सुकवि प्रकास ॥ ७ ॥
बदन गुरु के चरन हूँ, सीस नाई सुष पाइ ॥
तिन्ह यह छदो ग्रथ को, दीनो ग्यान बताइ ॥ ८ ॥
पिंगल माम अगस्त मत, गहि कवीस की राहि ॥
कीन्हों छदो वृति यह, मनराषन चित चाहि ॥ ९ ॥
चतुर वेद को अग है, छद सफल सुममान ॥
याते पढियत प्रात नित, माषत नाग सुजान ॥ १० ॥
वेद पढे बिन विप्र ज्यों, अंत्यज त्यों अति दीन ॥
तैसे पिंगल बिन पढै, कवि है कहत गुनी न ॥ ११ ॥
श्रीमुनिलाल कृपा करी, आग्या दई सु बेस ॥
छदन की रचना करहुँ, जिहि विधि माषहु सेस ॥ १२ ॥

अन्तिम भाग–

दीपमाल छंद–दोहा

बारह दस दस बस बिरति, चरन चरन में जान ॥
दस चौकल इक चरन करि, दीपमाल सुष वान ॥ ६७३ ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(३५) **तखत विलास** । रचयिता–विप्र शिवराम दधीचि । आकार–६″×७½″। विषय–नायिका भेद लक्षण ग्रन्थ। रचना काल स० १८९९। राव महतापसिंह ने संवत् १९३२ अपाढ बुध ३ शनि को (सलूम्बर मेवाड़) सेलाना राव हमीर से प्राप्त प्रति से इस प्रति को लिपि बद्ध किया । ग्रन्थ व्रजभापा में हैं । पद्य–सख्या १९९ ।

आदि भाग–

कवित्त

गुरु देव स्तुति

माया सी निमा की जहाँ नाहिन उदोत होत,
 कलित तारू की न जोत लव लेस है ।
तिमिर अहमद सोउ डिगो न जानू कितै,

सिष्य अरविंद सिवराम से प्रफुल्ल मये,
चित चचरीक गुन गावत विसेस हैं।
हेरे मैं गनेरे दूर नेरे ना सुनेरे ऐसे,
मेरे गुरुदेव भूप अपर दिनेस हैं ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

दोहा

वालवधू के पठन हित, लच्छन किये विचार।
उदाहरन नाहीं कहें, ग्रन्थ वदन हिय धार ॥ १६४ ॥
मम कविता सव गुन रहित, वाल वचन सी जोय।
श्री गुरु भूप प्रतापते, कान मानि है कोय ॥ २६५ ॥
समत निधि[९] ग्रह[९] वसु[८] महि[१], दसइ चैत्र सुक्लान।
तखत विलास मो , रसिकन को सुखदान ॥ १६६ ॥
तखतसिंह नृप हुकमते, लहि छिवराम हुलास।
श्रीगुरु भूप प्रतापते, कीनो ग्रन्थ प्रकास ॥ १६७ ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(३६) **नखसिख** । रचयिता–वलभद्र ।

प्रति १· आकार–११″×७·२″ । पत्र-संख्या १६ । पद्य-संख्या ६५ । लिपिकाल–स० १६४२ ।

आदि भाग–

मरकत को सूत, कीधौं पन्नग को पूत,
कीधौं राजत अभूत तमराज कैसे तार हैं।
मखतूल गुन ग्राँम सोमित सर स्यांम,
काम मृग कानन कि कुहू के कुमार हैं ॥
कोप की किरनि जाल नील कजरी के ततु,
उपमा अनत चारु चामर सिंगार हैं।
कारे सटकारे भीजें सोंधे तैं सुगन्ध वास,
ऐसे वलिभद्र नव वाला तेरे वार हैं ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

प्रति २. आकार-१०¾″ × ७″। पत्र-संख्या ६७। लिपिकाल-सं० १९३७। रचना काल सं० १७६६ पौष सुदी १३, मगलवार ।

[अन्ताणी संग्रह]

(३७) **नैत्र वर्णन** । रचयिता-आलम । आकार-११″ × ७.२″ । पत्र-संख्या ४। पद्य संख्या २७।

आदि भाग-

जोत भरे जेति भरे जोबन जेब भरे,
मीर भरे होत जैसे वारज विहान के।
दया भरे मया भरे हांसी भरे हसा भरे,
सोमा के सुभाय भरे जीवन जिहान के ॥
रस भरे रूप भरे रग भरे ससि के-से,
सील भरे तेज भरे 'आलम' सुमान के।
विस भरे सुधा भरे लाज भरे नेह भरे,
मैंने भरे मान तेरे नैन रहिमान के ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

सेत सपामणी जोति अजन धनुष साज विक्र निष अरून सुमन सग लाये हैं ।
प्रेम नेम सुधा धेनु सुन्दरता रमा-रमा 'आलम' चपल बाजी काम के सधाये हैं ।
प्रीतम मद पुथरी कल्पतर पूरनता धनत्री सुद्रष्टी गज-गतिन सुहाये हैं ।
ताहि को समद मथ देवता समर कीनो चवुदे रतन त्रिय-नैनन में पाये हैं ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(३८) **नेहतरंग** । रचयिता-रावराजा बुद्धिसिंह । आकार-८″ × ६.५″ । पत्र-८५। पद्य-४६१। रचनाकाल-स० १७८४, भाद्रपद शुक्ल ६, चन्द्रवार। लिपिकाल-स० १९२३ चेत्र वदि ६, मगलवार।

[राव मोहनसिह, उदयपुर]

(३९) **पान्डव यशेन्दु चन्द्रिका** । रचयिता-स्वरुपदास आकार-८.५″ × १०.६″। इसमे १६३ पत्र हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पक्तियाँ और प्रति पक्ति में २१ अक्षर हैं। अक्षर मोटे और जमे हुए हैं। अत के ११ पत्रों पर एक शुद्धि पत्र दिया गया है जिसमें काव्य में प्रयुक्त लगभग १००० तद्भव शब्दों के

तत्सम रूप दिये गये हैं। ग्रन्थ में कवि ने डिंगल, पिंगल और संस्कृत तीनों भाषाओं का प्रयोग किया है। कविता अलंकृत और रसपूर्ण है। ग्रन्थ १६ मयूखों में विभाजित किया गया है। सम्पूर्ण ग्रन्थ में ११६७ छंद है। कवि ने श्लोक, दोहा, सोरठा, चौपाई के अतिरिक्त पद्धरी, छप्पय, त्रिभगी, कवित्त आदि छदों का भी प्रयोग किया है। ग्रंथ प्रकाशित हो चुका है। अतः हम कवि के उन दोहो को उद्धृत करते हैं जिसमें उसके तीनों भाषाओं का अलग अलग प्रयोग करना स्वीकार किया है।

दूहा

पिंगल डिंगल ससक्रत, सब समझन के काज।
मिश्रित सी भाषा धरि, छिमा करिहुँ कविराज॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(४०) **पिंगल** । रचियता-चिंतामनि । प्रति १-आकार-१२'६" × ७'६" इसके प्रत्येक पृष्ठ पर २३ पक्ति में और प्रति पंक्ति २०। २१ अक्षर हैं। प्रति अपूर्ण है। केवल आदि भाग दिया जाता है—

॥ अथ प्रस्थान विपरीत प्रकारांतर को प्रस्तार ॥
अतकला सिर गुरु मौ आंन। पाछैं रेख समांन प्रमांन।
लगु आवैं आगैं यह जांन। प्रस्थानिक दूजो पहिचांन ॥ १ ॥

संष्या विपरील भामह मत प्रस्तार
आदि कला सधि गुरु देसही, अगैं पांति बरोबर रही॥
पाछैं सौं लगुसौं भर देहू, यह सष्या विपरीत करेहू ॥ २ ॥

उभै विपरीत दोहा
अत कला गुरु दीजिये, आगैं करिये तूल।
पाछैं लघु सौं ले भरो, उभै नाम अनुकूल ॥ ३ ॥

[कविराव मोहनसिंह]

प्रति २-आकार-१२'६" × ७'६" । पत्र-संख्या ३३ । पद्य-संख्या १५६ । लिपिकाल सं० १६२७

[सरस्वती भण्डार, भींडर]

(४१) **पिताका लच्छन तथा षोड़सक्रम** । रचयिता-राव बखतावर-सिंह ।आकार-१२'६"×७'६"। यह चिंतामनि पिंगल के साथ ही लिखा है। संवत् १६३७ इसका लिपिकाल है। इसमे १० पत्र हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर २२। २३ पंक्तियाँ हैं, परन्तु स्थान स्थान पर मेरु, पताका (पिताका) गण आदि के कोष्ठक आ जाने से पंक्तियों और अक्षरो की संख्या कम भी हो गई है। प्रत्येक पंक्ति में २०। २१ अक्षर हैं। केवल आदि भाग यहाँ दिया जाता है—

आदि भाग-

चौपाई

आडे दंड पिताका करिये, सूची एक मत्त लौं भरिये ।
अंत एक तैं निकट जु अंका, घटाउ बरे लौं निरसंका ॥ १ ॥
लैके यक गुरु के रखथाना, निकट अंक लुपि कै तर लान्हा ।
यो एक लौं घट उबरे लीजै, यक गुरु की यक पकति कीजै ॥ २ ॥

[राव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(४२) **बिहारी सतसई** । रचियता-बिहारीलाल

इसकी कई प्रतियाँ देखने में आई है जिनका विवरण नीचे दिया जाता है। अब तक की प्राप्त प्रतियों में सबसे प्राचीन प्रति संवत् १७४३ चैत्र शुक्ला पंचमी की लिपिकृत है (देखो भाग १, ७३ । (७७)। किन्तु यहाँ जिन प्रतियों का उल्लेख किया जा रहा है उनमें सबसे प्रथम प्रति किसी नथ्थमल नामक व्यक्ति द्वारा संवत् १७८८, फागुण कृष्णा प्रथम एकादशी, सोमवार की लिपिकृत है।

आकार-८"×५१"। पत्र-संख्या २६। पद्य-संख्या ७१३।

आदि भाग-

दोहा

मेरी भव बाधा हरा, राधा नागरि सोइ ।
जा तन की झाँई परै, स्याम हरित दुति होइ ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

सामा सेन समान को, सबै सही के साथ ।
बाहु बलि जयसिंह जु, फतू तिहारें हाथ ॥ ७११ ॥

यो दल काढे वलकर्ते, ते जयसींघ भुवाल ।
उदर अघासुर के परे, ज्यों हरि गाय गोपाल ॥ ७१२ ॥
घर घर हिंदुनि तुरकिनी, कहें असीस सराहि ।
पतनि राषि चादरि चुरी, तें राषी जय साहि ॥ ७१३ ॥

बिहारी रत्नाकर में सवत् १७३६ की एक प्रति का वर्णन अवश्य है, परन्तु उसकी प्राप्त प्रतिलिपि स० १८०० की है अत अब तक प्राप्त प्रतियों में वह सब से प्राचीन प्रति है ।

[श्री स्वरूपलालजी, जगदीश का चौक, उदयपुर]

प्रति २ । आकार-१३″ × ५.६″ । पत्र सख्या-१० । पद्य-सख्या-७२० । लिपिकाल-सं० १८६५ आपाढ़ सुद ५ भौमे ।

[स्वामी केवलराम दादू पथी, उदयपुर]

प्रति ३ । आकार-६.५″ × ५.८,″ सजिल्द । पत्र-संख्या ६६ । अक्षर बहुत सुन्दर और प्रति सचित्र है । चित्र दोहों की भावनाओं को प्रकट करने वाले हैं और राजपूत शैली में चित्रित हैं । ये बहुरंगी चित्र छोटे और बडे सब मिलाकर ४३ हैं । इसकी लिपि तथा चित्रो का लेखक रामपुरा निवासी कडुजी दशोरा था । यह प्रति संवत् १८१६ अगण वदि ६ मंगलवार को लिपिवद्ध की गई ।

[जगन्नाथ वैरागी, भींडर]

प्रति ४ । आकार-६″ × ६.५″ । पत्र-संख्या ३३ । छंद-सख्या ६७२ । लिपिकाल-सं० १८४४ ।

विशेष-इसमें सभी दोहों को विषयवार छांट कर अलग-अलग शीर्षक के नीचे रीतिकाल की शैली में लिपिवद्ध किया गया है ।

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(४३) बिहारी सतसई की टीका । (हरिप्रकाश) । टीकाकार हरिचरणदास ।

आकार-१२″ × ८.५″ । इसमे ११२ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर २६ पक्तियाँ और प्रति पक्ति मे २७ अक्षर हैं । अक्षर साफ और सुन्दर हैं । पत्रों को दीमक काट लेने पर भ अक्षर वच गये है । इसका रचना काल सवत १८३४ है और

लिपिकाल सं० १८६५ भाद्रपद कृष्णा ११ भोमवार । रचना काल सं०१८५० ।

आदि भाग-

सवैया

तुलसीदल माल तमाल सो स्याम अनग तें सुन्दर रूप मोहाहीं
श्रुति कुडल के मनि की झलकें मुष मडल पै वरनी नहि जाहीं ॥
सषि दोषि पियूष मयूष हुतें सुषमा अति आनन की सरसाही
विहरै हरि गोप सुता सग कान्ह निसीपिनि मैं वनवीथिनि मांही ॥ १ ॥

उदाहरण-

दोहा

देष्यौ अन देष्यौ कियो, अँग अँग सवें दिषाय ।
पैठत सी तन में सकुचि, पैठी चित हिल जाय ॥ १६ ॥

टीका-देष्यौ इति । सषी सों सषो वचन हे सवय हे सषि नायक कों अग अग दिषाय कें । नायक कों देष्यौ सो कियो । मानो नाही देष्यौ हैं । चित ही लजाय आपने चित में लजाय कें ऐसे वेठी आपना नन में सकुचिके पेठे हे पैठत सी । पैठत क्रिया हें ताके आगे सी वाचक हें यातें अनुक्तास्पदा वस्तुत्प्रेच्छा ।

अन्तिम भाग-

दोहा

सालग्रामी सरजू जहाँ, मिली गग सों आय ।
अतराल में देस सों, हरि कवि को सरसाय ॥ १ ॥
सेवी जुगल किसोर के, प्राननाथजी नांव ।
सस सती तिनसो पढी, वसि सिंगार वट ठांव ॥ २ ॥
जमुनांचर श्रृगार वट, तुलसी विपन सुदेस ।
सेवत सत महत जहि, देषत हरत कलेस ॥ ३ ॥
पूरोहित श्रीनद के, मुनि सांडिल्य महान ।
हम हें ताकें गोत में, मोहन मो जजमान ॥ ४ ॥
मोहन महा उदार तजि, और जाचिए काहि ।
सपति सुदामा को दई, इद्र लही नहि जाहि ॥ ५ ॥
गही अक्म मनु ताततें, विधि को वस लपाय ।
रावा नाम कहें सुने, आनन कान वटाय ॥ ६ ॥

संवत अठारह सौं विते, तापर-तीस रु चार ।
जन्माठे पूरो कियौं, कृष्ण चरन मन धार ॥ ७ ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(४३) रघुनाथ रूपक । रचयिता-कवि मंछ । रचना काल-संवत् १८६२ भादवा सुद ५ शुक्रवार । आकार-८" × ६'५" । पत्र-संख्या ७३ । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २३, २४ अक्षर हैं । छन्द-संख्या १५०० । पिंगल के रीति ग्रथ के समान यह भी डिंगल का एक रीति ग्रथ है । इसमें राम कथा को उदाहरण स्वरूप लेकर डिंगल के रीति-शास्त्र का प्रतिपादन किया गया है । इसकी भाषा भी डिंगल है ।

आदि भाग-

गाहा

श्री निघ आगम सारँ । वास्पनयन च ज्यान की
अखिल जगत् आधार । सारंग धरण जयो अवधेस्वर ॥ १ ॥

दूहो

चरस करत लिखमण चमर, सरस अगर सामीर ।
ईस सिय जुत जन मछ उर, वसो सदा रघुवीर ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

दूहो

जम को आज सरवरी, सरवरी सत्र छिर चद ।
काम अधमरे अधमरे, मातर मतिर मति वृ द ॥
मछ सुकवि कीधौ मुदैं, निरमल भाषा नेत ।
मन रूप जति लिखियो महा, हरग मनां कर हेत ॥

पुष्पिका

राज श्री १०८ श्री अर्जुनसिंहजी का राज में लषित ब्राह्मण डुगारामेण ॥ पठनार्थ मोडजी पोथी सुखजी की छै ।

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(४४) रसचन्द्रोदय । रचयिता-कवीन्द्र उदयनाथ । रचना काल-संवत् १८०४ । यह प्रति अपूर्ण है । इसके ४ पत्र लिखित है, शेप सब पत्र खाली हैं ।

प्रथम २॥ पत्रों पर ४५ छंदों में 'काव्य कुलवधु' वर्णन समाप्त हुआ है। दूसरे प्रकाश के केवल ३१ छंद ही लिखे गये हैं।

एक उदाहरण-

मध्याऽधीरा-सवैया

कुज निकुजनि कौतुक हेतु, फिरौ तुम श्रीफल लेत-सुठारे।
वानन बेधत कांम हमैं मरि, कोप कसीस कि कानि-किनारे॥
पीवत हो तुमतो मदिरा, हम पै मद मोहन जात सम्हारे।
लाल जगे कितहूँ तुम रैनि, मये दग आलस लाल हमारे॥

सूचना विशेष-देखो आचार्य शुक्लजी कृत हि० सा० इ० पृ० ३२६ तथा ना० प्र० स० द्वारा प्रकाशित आचार्य श्यामसुन्दरदासजी द्वारा संपादित हस्त-लिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण पृ० १५ और १३०।

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(४५) रस पीयूष। रचयिता-सोमनाथ। आकार-९″×७″। पत्र सख्या १ से १२ तक, आगे के पन्ने अप्राप्य हैं।

आदि भाग-

छप्पै

सिंदुर वदन अमद चद सिंदु भाल घर।
एक दत दुति वत बुद्धि निध अष्ट सिद्धिवर॥
मद जल श्रवत कपोल गु जरत चचरीगन।
चचल श्रवन अनूप थोदि थिर करत मोहित मन॥
सुर नर मुनिवर नटजोरि कर गुन अनत इमध्याय चित्त।
ससि नाथ नद आनन्द करि जय जय श्री गणनाथ नित॥

[उदयसिंह भटनागर, उदयपुर]

(४६) रस मंजरी। रचयिता-भानु कवि। आकार-६ ३″×५ २″। पत्र-सख्या ६। प्रति अपूर्ण है-

अत. इस विपय में अधिक कुछ नहीं कहा जा सकता है। पाठ भी वहुत अशुद्ध है। केवल आदि भाग यहाँ दिया जाता है—

दोहा

गुरु गणेस पद वदि के, सारद चरन नमाय ।

वरनत हीं रस मजरी, रसकन के सुखदाय ॥ १ ॥

सवैया

गोन विपैनत कन्नेत भूमै तिही पहोलै डग्रु आप मरी है ।

फूलन भ्रम के डरते द्रम हूँ की भुजा सिव की प्रचरी है ॥

सैन समै अग छालि कि वुपरै आपुन अग करीट करी है ।

प्रेम के मारते आ रस वत प्रिया हरने अरधग यरी है ॥

[राव मोहनसिंहजी, उदयपुर]

(४७) **रस रंग** । रचयिता-ग्वाल कवि । आकार-१४'' × १३'' । पत्र-सख्या ४० । रचना अपूर्ण है । प्रथम ५ पत्र अप्राप्य हैं । इन ५ पत्रों में ७६ पद्य थे । प्रत्येक पृष्ठ पर २० पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २६-३० अक्षर हैं । विपय का विभाजन इस प्रकार है—

प्रथम उमंग—विभाव, स्थायी भाव, अनुभव संचारी भाव, सात्विक भाव-वर्णन-१६२ छंद ।

द्वितीय उमंग—पद्मिन्यादि, उत्तमादि, द्विव्यादि स्वकीया भेद मान वर्णन-११२ छंद ।

तृतीय उमग—परकीया, गणिकादि वर्णन-७४ छंद ।

चतुर्थ उमंग—अवस्था भेद ते ८च-दस नामका वर्णन-१०७ छंद ।

पंचम उमग—सखी लक्षण (अपूर्ण)-६ छंद । एक उदाहरण यहाँ दिया जाता है—

गन्छत पतिका मुग्धा को लक्षण

कवित्त

आयो काहू देस तै नरेस को वुलावो वेगि,

सुनत सिधायों सीत्रा भोज के मिलन को ।

नाथ के चलत वटवाल नै नवायो माथ,

हाथ में रखोन हीय हूक नही लल की ॥
ग्वाल कवि कहै चांमी करसी चमक हीसो,
रेखह रही न कहूँ तन में चिलक की ।
सीत जर सोरी खैंचि मुख पे झुके सवारी,
सासु के पीछारी खरी थारी ले तिलक की ॥ २५ ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(४८) **रस रत्न टीका ।** रचयिता–सुरति मिश्र । रचनाकाल संवत् सातअष्टादसै (१८०० या १८०७) सावन छवि भृगुवार । लिपिकाल सं० १६२७ । आकार–८.६"×७.२" । पत्र-संख्या ४२ । पद्य-संख्या ७५ ।

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(४६) **रस रहस्य ।** रचयिता–कुलपति मिश्र । आकार–फुल्सकेप । पत्र संख्या–४४ । प्रत्येक पृष्ठ पर २७ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३० अक्षर हैं । ग्रन्थ का विषय ८ भागों में बटा हुआ है, जिनका क्रम तथा छंद-संख्या इस प्रकार है—

१ अध्याय — अप्राप्य है
२ ,, — शब्दार्थ निर्णय ३७ छंद
३ ,, — ध्वनि निरुपण ६० छंद
४ ,, —गुणीभूत व्यंग निरुपण २२ छंद
५ ,, — काव्य दोष १३७ छंद
६ ,, — गुण निरुपण २४ छंद
७ ,, — शब्दालंकार ४३ छंद
८ ,,—अवसर ते प्राप्त अर्थालंकार १८३ छंद

एक उदाहरण यहाँ दिया जाता है—

न्यून पद लक्षण–

दोहा

जा विनु अर्थ बने नहीं, सो पद जहाँ न होइ ।
पदम समूह व्यापार युत, कहे न्यून पद सोइ ॥ ४३ ॥

कवित्त

राजयत मोर वदी मोरन को भोर जहु,
गावैं ठोर ठोर हरषित जीव जन्तु है ।
फूलत सुमन वरैं अधिक अनल आगैं,
कोकिल मधुर सुर पढैं वेद मत्र है ॥
वन घर अम्बर बने है बहु भातिन सो,
नर नारी पर सुत लगन को ततु है ।
पयो राज नयो सब जग बस भयो सोई,
मेन अरु पहुमी को व्याह को वसत है ॥ ४५ ॥

इहाँ विरही अनल कह्यो चाहिये ॥ अरु द्विज कोकिल कहिये तो वेद मत्र पढिवो समवै जाके कहे कछु विगरै नाही सो अधिक पद कहावै ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(५०) रसराज । रचयिता-मतिराम । रचनाकाल-संवत् १८८० । आकार-५'७" × ४" । पत्र-सख्या ६० । प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पक्तियाँ और प्रति पंक्ति मे २० अक्षर हैं । छद-सख्या-४२४ ।

आदि भाग-

सोरठा

श्री नृप गुरु पद कज, वानिप जुग पद उर धरो ।
जाते मन आनन्द विविध केलि रसराज नृप ॥ १ ॥

दोहा

होत नायका नायकहि, आलवित सिंगार ।
तातें वरनों नायका, नायक मति अनुसार ॥ २ ॥
उपजत जाहि विलोकि के, चित्त बीच रस भाव ।
ताहि बषानत नायका, जो प्रवीन कवि राव ॥ ३ ॥

सवैया

कुदन रग फीको लगैं, भलकैं अगन चारु गुराई ।
आंषिन में अलसानि चितौन में मंजु विलासन की सरसाई ॥
को विन मोल विकात नहीं, मतिराम लपैं मुसक्यानं मिठाई ।
ज्यों ज्यों निहारिये नैरे व्हे जानति त्यों त्यों परी निपरैंषि निकाई ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग–

दोहा

अनयिष लोचन लाल के याते नद कुमार।
मचि गई जु रषि चहि, विरहानल की जार ॥ ४२३ ॥
समुझि समुझि सब रीझि है, वचन सुकवि समाज।
रसिकन के रस को कियो, इहें ग्रन्थ रसराज ॥ ४२४ ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

नोटः— नाथूलाल हजूरी द्वारा चित्तरोड़ में यह ग्रन्थ लिपि बद्ध हुआ।

(५१) **रस रूप।** रचयिता–ग्वाल कवि। रचना काल– ? आकार– ११″ × ७ ३″। पत्र-संख्या १। पद्य-संख्या ८।

आदि भाग–

च्यार भुज धारी थोद थूल की थरक्त भारी
विघन प्रहारी देत दासन सुमति हैं।
माल चद चदन हें सब जग बदन हें
पारवती–नदन हें ईस-पद रति हैं ॥
ग्वाल कवि कहैं भक्ति भाव की भरन घन
असरन सरन करन सीस अति है।
सिद्ध निद्ध ऋद्धि के करैया परसिद्ध पूर,
सकल समृद्धि दैन सिद्ध गनपति है ॥

अन्तिम भाग–

वीरता लखैंगे रघुवीर जू तिहारी अब
भारी परी वहस समारी परी फद हौं।
तोर डारी मैंने तो मृजादा जादा वादा विन
तुम तो मृजादा पुरसोत्तम सुछद हो ॥
ग्वाल कवि परम प्रतीत पन पारों में तो
पावत प्रतीत तुव नांव सुख कद हो।
मैं तो दीनराज तुम दीनानाथ रघुनाथ
मैं तो दुति-मद तुम रामचद चद हो ॥ ८ ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(५२) रस विलास । रचयिता–माधवसिंह । आकार–१४″×१२″ ।
इस ग्रंथ की यह प्रति अपूर्ण है । आरंभ के तीन पत्र गायब हैं । आगे २६ से ३४ तक के पत्र गायब हैं, अंत में ४२ से पत्र नहीं हैं । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १८ से २२ तक पंक्तियाँ हैं और प्रति पंक्ति मे १८ से २८ तक अक्षर हैं । ग्रन्थ के विषय को रीति काल की शैली के ही अनुसार कई उल्लासो में विभक्त किया गया है, यहाँ केवल ये उल्लास इसमें मिले हैं ।

प्रथम उल्लास–शृंगार रसालंबन रूप नायक–नायिका वर्णन–२४८ छंद (आरंभ के ५२ छंद गायब हैं)

द्वितीय उल्लास–सखि दूति जात्यादि वर्णन–१ से ४४ तक और फिर १८ छंद हैं–पृष्ठ २६ से ३४ गायब हैं ।

तृतीय उल्लास–रस प्रसंग–१ से ३० तक छंद हैं । ३० से ६० तक गायब हैं । ६० से ६२ छंद वर्तमान हैं । उसके बाद लगभग ३० छंद और हैं, पर उनके ऊपर कोई संख्या नहीं है और लिखावट साफ न होने से गिना नहीं जा सका । यह ग्रन्थ कवि ने रीति काल की शैली पर ही रचा है । पहले एक छंद मे लक्षण देकर फिर उसके स्वरचित तथा अन्य कवियो के उदाहरण दिये गये है । आवश्यकतानुसार गद्य मे व्याख्या भी की गई है । एक उदाहरण उचित होगा.—

अथ प्रोषित पति का निरूपण

दोहा

गयो जु पति परदेस कों, होत विरहते छीन ।
प्रोषितपतिका जानिये, कविता मांझ प्रवीन ॥ १८ ॥

उदाहरण

कवित्त

फूल फूल पुंज लोंनी लतिका लारज गई
कमले कमल मौंर सोर विर रायो है ।
चलि चलि सुन्दर समीर तजि सीतलता
ललित रसाल फल नालन तें छायो है ॥
होन लगे सघन जवामन के भार मधु,
दश विदिशान तेज तरुन दिखायो है ।
लेख लेख पथ चित्त होत न निर्चित तहू,
कतहू न आयो पै बसत अन्त आयो है ॥ १६ ॥

चर्चा

इहां चिंतमनि प्रोषित शब्द को त्रिकाल वाचि लिखे है। प्रोषितपतिका प्रवत्स्यतपतिका प्रवसित पतिका। तिनके ये लछन कीने सो जाको पति परदेस सो तो प्रोषित पतिका। अर प्रवत्स्यत पतिका को लछन ये-प्रिय विदेस के गोन को उद्यम लखि दुख पाये। अर प्रवसित पतिकाये लछन कीनों सो–'कढन पिऊ परदेस को अपने अगवन देख। या प्रकार तो लछ लिखे अर उत्तमादि भेद हूवि ऐसे लिखे सो प्रवास के कथन मात्र व्याकुल होय सो उत्तमा। पति को परदेस चलवो देखि दुखित होय सो मध्यमा। पति को परदेस गये पीछे दुखित होय सो अधमा। तब इहा प्रवसित पतिका उनमें तीसरो भेद भिन्न कैसे लियो। मध्यमा प्रोषित पतिका को लछन अरू प्रवसित पतिका को लछन एक है। ताते हम दोनों ही भेद लिखे हैं—एक प्रोषित पतिका, दूसरी प्रवत्स्यत्पतिका।

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(५३) **रसिक प्रिया** । रचयिता-केशवदास । रचनाकाल-१८८३ । आकार-६" × ६" पत्र-सख्या ६६ ।

[सरस्वती भडार, भींडर]

प्रति २ –रचनाकाल-१८४४ द्वितीय श्रावण सुदि ५ शनिवार । आकार-६" × ६ ५" । पत्र-सख्या ५८ । छद-सख्या ५४० ।

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(५४) **रसिक प्रिया की टीका–जोरावर प्रकाश** । रचयिता–सुरति कवि । लिपिकाल–स० १६२६ । रचनाकाल–स०१८१० आकार–१२" × १०" । पत्र-सख्या १३२ । छद-सख्या ५६२ ।

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

• (५५) **रसिकानंद** । रचयिता–ग्वाल कवि । रचनाकाल–स० १८७६ आकार–११" × ७'२" । पत्र-सख्या ४८ । प्रत्येक पृष्ठ पर १४ । १६ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३२ । ३६ अक्षर हैं । छंद-सख्या ३०६ । यह ११" × ७ २" आकारवाले चोंपडे का तीसरा ग्रंथ है । इन पत्रो में इस ग्रंथ के तीन प्रकरण समाप्त हुए हैं । शेष ६ प्रकरण भी एक दूसरे चोपडे में स्वतन्त्र रूप से लिखे हुऐ हैं । लिपिकाल स० १६२७ । इस ग्रथ की रचना (काव्य के आदि भाग के कुछ दों से ज्ञात होता है) कवि ने नाभा महाराजा जसवन्तसिंह के आदेश से उन्हीं के लिये की ।

सवत निधि९ रिपि७ सिद्धि ससि१, स्याम पक्ष मधुमास ।
अदितवार सु द्वादसी, रसिका नद प्रकास ॥ ३७ ॥

कवि ने दो छंदों मे मंगलाचरण किया है फिर गुरू की प्रार्थना की है—

श्री गुरू श्री जगदीश सुरी, श्री पति जू महाराज ।
तिन पद उज्वल विमल कों, करत प्रनाम समाज ॥ ३ ॥

चौथे कवित्त में नाभा नगर का वर्णन किया गया है। पद्य ५ से २५ तक राजवंश, तुरग और सभा का वर्णन है।

राजवश का संक्षिप्त वर्णन—

लियो विक्रमाजीत तें, जिन साको जग माहि ।
वीर सालवाहन प्रगट, तिन (सम) दूजो नाहि ॥

उनके वंश में बली प्रचण्ड फूलसिंह–उनके तिलोकसिंह जो गुरू गोविन्दसिंह का भक्त हुआ–जिसको उन्होंने सिरोपाव, वस्त्र, जयपत्र प्रदान किया, जिसके सिर पर छत्र तना–उसके राजा गुरुदत्तसिंह हुआ, जो वीर था। उसके सूरतसिंह, जो दानी और तेजस्वी था–उसके हमीरसिंह, उसके महाराजा यशवंतसिंह हुऐ, जिनका यश काश्मीर से दक्खिन, बंबई से मुलतान, काशी, कलकत्ता आदि देश-देश में व्याप्त हुआ और–

माँगै जो मँगैय्या येक वार आय जाके पास,
ताको सुख सपति सौं सदन, छयो करैं ।
वादी वनि पडित सुनावै वाद सौं हि वैठि
तोपै दोऊ वादिन को मानन दयो करैं ॥
ग्वाल कवि प्रेमी प्रेम पूछिवो करै तो ताहि,
प्रेम के पयोध में पकरि डूवियो करैं ।
नाभा के नरिंद आगे कवित्त कह्यो करैं तो
कवि ताकी कविता की सिक्ल भयो करैं ॥

अमृत धुनि—

फर कर पिट्ठ कमट्ठ की ट्रक्क ट्रक्क भये जत्व ।
पन्नगेस फन फुट्टि हैं अविखमत्त दधि तत्व ।
अविरखसत्त दधि चभ्भ वलम्भल सधर थिरन्चर ।
मग्ग गय अरि नग्ग गय दरि धग्गगयथ्थिर ॥

जगगगमग्ग जलमय भये सज्ज छद कवि ग्वाल बर।
अबहि कुप्पि जसवत हरि जतउ मग्ग गहि खग्ग कर॥ १८॥

ग्रंथ की वर्णन शैली कवि दर्पन के ढंग की है। एक पद्य में लक्षण देकर उसकी साथ ही साथ गद्य में टीका तथा व्याख्या भी करदी गई है।

एक उदाहरण–पुनरुक्त लच्छन

दोहा

मुख्य अर्थ द्विबार जहँ, बिना कार्ज बीजुक्त।
ताहि बचावहु बुद्ध जन दूपन है पुनरुक्त॥ ३५॥

पुनरुक्त उदाहरन

चलि चितवो चेटक भरयो, बदन चद सुखदान।
विधि विधितें विरच्यो विसद, चद लखन गुनखान॥ ३६॥

कवित्त

आनद को कद वृषभानुजा को मुख चद,
लीला ही ते मोहन के मानस को चोरे है।
दूजो तेसो रचिवे को चाहत विरच नित,
ससि को बनावे अजों मन को न भोरे हैं॥
फेरत है सान आसमान पें चढाय फेर,
पानप चढायबे को वारिध में बोरे हैं।
राधिका के आनन की जोटन विलोके विधि,
टूक टूक तोरे पुनि टूक टूक जोरें हैं॥

टीका

इहाँ वृषभानजा याही पद के कहिवे ते श्रीराधाजू को बोध भयो। फेर राधिका पद न कह्यो चाहिये अर्थ पुनरुक्त होत है। फेर मुख चन्द कहिके फेर आनन कह्यो इहाँ अर्थ में पुनरुक्त भयो। फेर एक बार विधि कहि के फेर विरचि कह्यो अह अर्थ पुनरुक्त भयो।

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(५६) रसोत्पति–रचयिता–कविराव बख्तावरसिंह। आकार १२″ × ७ ६″ पत्र संख्या–६। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तिया और प्रति पंक्ति में २६ अक्षर है। इसमें

कुल–पद्य ही है और जिनमे रसों का ही विवेचन है। रचना काल–

सवत् अयन' रु हर-नयन, खड रदन गननाह।
करी रसोत्पति वखत कवि, चैत्र शुक्ल त्रतियाह ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

अयन (भुवन) = ३, हरनयन = ३, खंड = ६ और रदन गननाह = १। इस क्रम से इसका रचनाकाल वि०सं० १६३१ होता है।

व्रज-वन कुजन विहारी, प्यारी राधा आलवन भूता।
शृ गारा रसचारी, प्रागटय हारी त्व वंदेह ॥ १ ॥
मिलि विभाव अनुभावा, सात्विक 'स्थाई' रु सचारिय जू।
अगहि रस उपजावा, सो वर्नत लच्छन सयुक्ता ॥ २ ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(५७) **व्यंग्यार्थ कौमुदी**। रचयिता--प्रतापसाहि। आकार–६'३" × ५'२"। पत्र संख्या ८३। इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियाँ और प्रति पक्ति में १२ अक्षर हैं। कुल १०६ छंदों में यह ग्रन्थ समाप्त हुआ है। इसका रचनाकाल संवत् १८८२ है ग्रन्थ सटीक है। कवि ने ग्रन्थ के आदि भाग में अपना विषय और शैली इस प्रकार प्रकट की है—

दोहा

गनपति गिरा मनाय के, सुमरि गुरन के पाइ।
कवित रीत कछु करत हों, व्यंग अर्थ चित लाइ ॥ १ ॥
वाचक लछक व्यंग को, सब्द तीन विधिमान।
वाचक लक्ष्य रु व्यंग है, अर्थ त्रिविधि पहिचानि ॥ २ ॥
इनके लछन लच्छ बहु, रस ग्रन्थन ठहराइ।
तातै याबरने नही, बढ़े ग्रन्थ समुदाइ ॥ ३ ॥
जहाँ सब्द में अर्थ की, होइ जु अधिक प्रवृत्ति।

चमत्कार इति से जहाँ, जानि विंजना वृति ॥ ४ ॥
व्यग जीव है कवित्त मैं, शब्द अर्थ गति अग ।
सोही उत्तम काव्य है, वरनै व्यग प्रमग ॥ ५ ॥
करि कवि जन सो वीनती, सुकवि प्रताप सहेत ।
कथि व्यगारथ कौमुदी, व्यग जानि पे हेत ॥ ६ ॥

सुचनिका

कही व्यग तें नाइका, पुनि लछना विचारि ।
ता पीछे वरनन करौं, अलकार निरधारि ॥ ७ ॥

अन्तिम भाग–

व्यग अर्थ सब तै कठिन, को कवि पावे पार ।
ममट मत कछु समझि चित, कीजो मति अनुसार ॥ १०७ ॥
यह व्यगारथ कौमुदी, पढे गुने चितलाइ ।
ताको मत साहित्य को, कछुक पथ दरसाइ ॥ १०८ ॥
सवत कर[२] वसु[८] वसु[८] मही[१], गति असाढ को मास ।
किय विंग्यारथ कौमुदी, सुकवि प्रताप प्रकास ॥ १०९ ॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(५८) षट्ऋतु वर्णन : रचयिता-ग्वाल कवि । यह एक ११" × ७.५" आकार की चोपड़ी मे मिला है । यह कवि के यमुनालहरी ग्रन्थ का एक अंग मालूम होता है । इस चोपड़े में 'अलंकार रत्नाकर' 'रसिका-नन्द', वलभद्र कृत 'नख सिख', 'नैत्रवर्णन', ग्रन्थ हैं जिनका यथा स्थान वर्णन किया गया है । इनके अतिरिक्त इसमे आलम, दयानिधि, ग्वाल, पजनेस, पद्माकर, राव अमानजी आदि कई कवियो की फुटकर रचनाएँ हैं ।

इस ग्रन्थ में कुल २७ कवित्त हैं । एक कवित्त यहाँ दिया जाता है ।

चम चम चाँदनी की चमकि चमक रही,
राखी हैं उतार मांनो चन्द्रमा चरखतें ।
अचर अवनि अवु वाले सु विटप गिर,
एक ही तें पेखे परें परेन वरखतें ॥

ग्वाल कवि दिसा दिसा ह्वै गई सपेद चारु,
खेद को रह्यो न भेद फूला है हरखतें ।
लीपी अवरखतें कि टीपी पुंज परदेंत,
कैधों हुनि दीपी हैं के चांदी के वरखतें ॥ २६ ॥

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(५६) **सभा प्रकाश** । रचयिता– हरिचरणदास । आकार-१०´५´´ × ७´४´´ । पत्र-संख्या ७६ । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३२ अक्षर हैं। ग्रन्थ के आदिभाग से ज्ञात होता है कि ग्रथकार ने भरत और वामन का आधार लेकर खडन-मंडन की दृष्टि से इस ग्रन्थ की रचना की । रचना काल–सं० १८१४ श्रावण शुक्ल त्रयोदशी, शुक्रवार । ग्रन्थ १० उल्लासो में समाप्त है। लिपिकाल–सवंत् १६१७, वैशाख सुद १२, भौम ।

आदि–

गौर स्याम जो वपु धरै, वस्तु विचारे एक ।
ज्यौं विसर्ग सो राखि है, निज जन मन की टेक ॥ १ ॥
मोहि ग्यांन गौरव न को, कहै जोरि 'हरि' ग्यांन ।
तुम ही ग्रथ वनाय हो, राधा राधा जान ॥ २ ॥
प्यारी पिय नारी ललन, आदि नाम निरधार ।
उचित ठौर में लक्ष्य है, राधा नद कुमार ॥ ३ ॥
जो जै चाहत कविन सौं, खडन मडन आम ।
सो चित दै नित देखि है, 'हरि' कृत सभा प्रकास ॥ ४ ॥
लिख्यौ निरख मत भरत कौ, वामन हू को सूत्र ।
दोष वुद्धि करि है नहीं, जो कवि माहिं सुपुत्र ॥ ५ ॥

अन्तिम–

दोहा

वह निरखनि मुसुक्यानि वह, वैसो कृपानिधांन ।
राधा अचल विहारि के, वसौ हिये वह ध्यांनि ॥२४॥
दूर करत जुवि कर्म गति, मनु दयाल सुभ गीत ।
राधा-हरि यह ग्रन्थ सौं, होउ सदा शुभ प्रीत ॥२५॥

वेद ४ इंदु १ गज ८ भू १ गनित, संवत्सर रविवार ।
सावन शुक्ल त्रयोदसी, रच्यौ ग्रथ सविचार ॥२६॥

[राव मोहनसिंह, उदयपुर]

(६०) सुन्दर शृंगार । रचयिता-सुन्दर कवि ।

प्रति-१. आकार-११" × ८" । पत्र-संख्या १६ । पद्य-३६७ । लिपिकाल १७६१ ।

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

प्रति-२ आकार-९" × ६ ५" । पत्र ३७ । पद्य-३६७ । लिपिकाल-सं० ४४ । रचनाकाल-सं० १६८० ।

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(६१) अनेक नाम माला । रचयिता-नन्ददास । विषय-शब्द-कोष ।

प्रति-१. आकार-६.३" × ५.२" । पत्र-सख्या ११ । छंद-सख्या ६६ ।

[कवि राव मोहनसिंह, उदयपुर]

प्रति-२ आकार-७" × ३.६" । पत्र-सख्या ३७ । छंद-संख्या २९१ ।

दाहरण-

चन्द्रमा के नाम

इदु सुधानिधि कलानिधि, अब्ज जीव हिम रोम ।
ससिधर हिमकर निसाकर, ओषधीस ससि सोम ॥ १०३ ॥

कुमुंद बधु श्री बधु हरि, रोहिणेय सुर-पेय ।
उडिराजा द्विजराज पुनि, लो मृगांक आत्रेय ॥ १०४ ॥

[केवलराम दादूपथी, उदयपुर]

अनेकारथी । रचयिता-नन्ददास ।

प्रति-१ आकार-७" × ३.६" । यह अनेक माला के साथ ही है । पत्र-सख्या १५ । पद्य-सख्या ११९ ।

प्रति-२ -आकार-५" × ५ ३" । पद्य-सख्या ११९ । लिपिकाल सं० १८६१ ।

[केवलराम दादूपथी; उदयपुर]

(३) ख्यात-वात, कथा-काव्य, जैन-रास, जीवन-चरित्र, आदि

(१) अजना सुन्दरी रास । रचयिता-अज्ञात । रचनाकाल-सं० १६११ आश्विन कृष्णा ६ । आकार-६'५" × ५" । पत्र-संख्या ३६ । पद्य-संख्या ८१ दोहे और १६१ ढाल । विषय-जैन-रास-रचना, सती शिरोमणि अजना के शीलव्रत की कथा ।

आदि भाग-

दोहा

मुनि सुव्रत सांमजी, त्रिभवन तारण देव ।
तिर्थंकर प्रभु वीसमौ, सुर नर सारे सेव ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

तौ जी आप स्वारथ सहू सजौ, ए मलीया माया की जाल ।
हणुमत सजम लेई तप करे, पाँच माहाव्रत खांडीनी धार ॥
तौ बावीस परीसीम है सहे, सील सतोप जे छै गुणवत ।
तौ पट आवशक नीम, साच धो हणमत ॥
वीर गयो निरवांण तौ ॥ १६ ॥

तौ अंधकी ओछी मैं कह्यो ते मी छामीछ कड होज्यो
जिन मुभ तौ मील तणा गुण वरणव्यां सती ने सीरोमणी
अजणां माय तो एतले संबध पूरौ हूवौ आगल चालसी

सीता नी वात तौ विरहणी बली रे वेरागणी माय जिगतनी
माय तौ १६१ सती सीरोमणी अजणा ॥ १ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(२) **अचलदासजी री वार्त्ता** । रचयिता-अज्ञात । आकार-१०" × ४'३" पत्र-संख्या ७ । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ४२ अक्षर है ।

[वर्द्धमान ज्ञान मंदिर, उदयपुर]

(३) **अमरदत्त मित्राणंद रास** । रचयिता-तत्व विजय । रचना-काल सं० १७२४ । लिपिकाल-सवत्-१७३३, प्रथम श्रावण सुदी ६ । भरोचबन्दर-मध्ये आकार-१०" × ४'३" । पत्र-संख्या २८ । प्रत्येक पृष्ठ पर २८ पंक्तिया । प्रति में पक्ति ५२ अक्षर । लिपि जैन पाटो की । विपय-जैन जीवन-चरित्र । रचना काल-स० १७२४ ।

आदि-

(आरम्भ मे ११ दोहो तक प्रार्थना है)

दान तणा पर भावथी, अमरदत्त मित्राणद
सुख विलसी ससारना पाम्या परमानद ॥ १२ ॥
अमरदत्त मित्राणद नो, सरस एह सबध
शांतिनाथ चरित्र थी, करस्यु एह प्रवध ॥ १३ ॥

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

(४) **आनन्दमंदिर नास्ति रास**—रचयिता—ज्ञानविमल सूरि । रचना-काल-संवत् १७७० महासुदि १३ । आकार १०'४" × ५" । पत्र-संख्या २०० । छंद-संख्या-४५८५ दोहा और ढाल । इसमे श्री चद केवली का वर्णन है । एक स्थान (प्रशस्ति में) पर अकबर और सलीम का भी वर्णन है—

'साहि अकबर निं० निज वयणें, निज मत स्यू मति जोरी जी ॥
साहित्र सलेम आगलिं जय वरीओ, श्री विजय सेन सूरी गुण दरिओ जी ।
विरूद सवाई जगत गुरु धरीओ, मति सुर गुरु अधी करी ओ जी ॥

आदि भाग—

सुपकर साहिब सेविये, श्री संखेसर पास ।

जास सुजस जग विस्तर्यो, महिमा निधि आवास ॥ १ ॥
इन्द्र वासव पूजिन चरण कज, रज पावित भू पीठ ।
परता पूरण परगडो, एहवो अपर-न दीठ ॥ २ ॥
मपति काले तिरथ छे, जे महिमा भंडार ।
पिण ए अतीत चोवीसीइं, कहि उत्पति विस्तार ॥ ३ ॥

[वर्द्धमान ज्ञानमंदिर, उदयपुर]

(५) उषा भागवत । -रचयिता- रामदास । आकार- ११" × ६" । पत्र-संख्या २१८ । इसका लिपिकाल सवत १६०१ है । कथा का १८ अध्यायों मे भागवत से दोहा चौपाइयों में भाषानुवाद किया गया है ।

आदि भाग-

दोहा

मग विना समरये विना, राजद्वार विदेस ।
फल दायक मेने सुने, गवरी पुत्र गनेस ॥ १ ॥

चौपाई

सुमिरि सरसुती सुमिरो तोही ।
वेठि कठ अक्किल दे मोही ॥
दास दयाल चरन चित ल्याऊ ।
कीन कृपा हरि के गुन गाऊ ॥

[उदयसिंह भटनागर, उदयपुर]

(६) कल्याण मन्दिर-भाषा । रचयिता-बनारसीदास । आकार- ६'३" × ४'१" । पत्र-सख्या ३ । छन्द-संख्या ४५ । विषय-भक्ति । विशेष-रचना गद्य और पद्य में है ।

अन्तिम भाग-

चौपाई

मइ तुम चरण कमल गुन गाई । बहु विध भगति करी मन लाई ॥
जन्म २ प्रभु पाउं तोही । यह सेवा फल दीजे मोही ॥ ४३ ॥
इह विध श्री भगवंत सु जस जे भवि जन भासे ते निज पुन भण्डार

सचि चिर पाव पणा सहि रोम रोम उदन्न सित ग्रंग प्रभु
के गुण गावै सुरग सपदा भजे वे–पचम गति पावे ॥ ४४ ॥

दोहा

एह कल्याण मन्दिर कियौ, कुमुद चन्द की बुद्धि ।
भाषा कहत बनारसी, कारन समकित सुद्ध ॥ ४५ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(७) क्वाटसरवेहीयारी वात। रचयिता–हरि ? आकार–११″ × १५″ पत्र-सख्या १००। इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियाँ और प्रत्येक पक्ति में १३, १४ अक्षर है। रचना गद्य-पद्य में है, जिसमें पद्यों की संख्या २३३ है। यह प्रति संवत् १६०८ जेठ विद १४ गुरुवार को खाराडी रा खडिया नरसींगदास भेरूदासोत द्वारा लिपिबद्ध हुई। इसके आरम्भ में एक सवत् '१८५४' कात्तीक मास कृष्ण पक्ष भी दिया गया है। यह इसका रचना काल है। इसका विषय तो वही है जो प्रथम भाग के पृष्ठ २ पर अनंतराय साखलारी वात का है। परन्तु रचना शैली और भाषा में अन्तर है। प्रथम भाग वाली रचना मे रचियता का नाम अज्ञात है। परन्तु इसमे २३२ वें दोहे में लेखक ने अपना परिचय इस प्रकार दिया है—

दुहा

दानवा अरी हरी नाम दष, जात रखी वर जांण ।
हर जेठी के सुत कही, वात क्वाट वषाण ॥ २३२ ॥

आदि भाग–

दुहा

सुरसत मात सुमत हो, गवरी पुत्र गुणेस ।
करणानिध कर जोड़ कर, मांगू बुद्धि महेस ॥ १ ॥

वारता

कोयलापुर पाटण नगर जठे अनतराय सांपलो राज करै जी को पुरसाण हिंदवाण दोनु ही राह रैसी है। जीको कोयलापुर कीसोयेक दरसावे। जीण ने देषीया थका दुजो सहर दायनी आवे।

अन्तिम भाग–

दूहा

केइ घोड़ा गाँव की, केइ गयद कहाय ।
करां चढे क्वाट रे, लका दीये लुटाय ॥ २२८ ।
ना राञ्या सारी जगत, पल के जोत प्रकास ।
सुरज ज्याही क्वाट सी, ईधक जोत उजास ॥ २२६ ॥
पांघहे माऊ क्वाट न्रप, सॉंचो श्रेह समात्र ।
ज्या सामो देपै जरु, राका करे जराव ॥ २३० ॥
तेराग्ने सेताली समो, सुकल पष माहा माम ।
नीज गरु की वात तद, प्रतमो राज प्रकास ॥ २३१ ॥

[स्व० पं० रतीलाल अन्ताणी के संग्रह से]

(८) **कोकशास्त्र वार्ता प्रबन्ध प्रथम भाग** । रचयिता–अज्ञात । यह ग्रन्थ ८″×५″ आकार वाले ६ रचनाओं के संग्रह में संग्रहीत है। ६ पत्रों में इसके ६६ छन्द समाप्त हुए हैं।

आदि भाग–

कवित्त

अति कोमल सब अग, रूप राजिति अति निर्मल ।
॥
जाहि सदा है प्रसंन्, ताहि आणद अमारी ।
राग रंग रति रूप, सब्रै लागत अति भारी ॥
विस्तार कोक भूषण करन, इह इच्छा कविज न धरतु ।
शृ गार आदि रतिराज को, जोरि सुकर अस्तुति करतु ॥ १ ॥

दोहा

जहाँ रनथभर (गढ) सुगढ, तहाँ भैरव राजान् ॥
त्यागी लोभी मानधर, गारन दुसह गुमान ॥ २ ॥
षटभाषा विद्या चवद, कला वहुत्तर चार ।
गुण प्रमाण श्रैसू भयो, ज्यूँ भोजराज मतिधार ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग–

कोक सु व्याही पद्मिनी, जोरी बनी अपार ।
मांनो अवा ततार फिरि मकरध्वज रति नारि ॥ ८५ ॥

कोक महल क्रीसत सदा, पद्मिनी कु लिये सग ।
हास विनोद विलास सुष, सदा रहिति रति रग ॥ ८६ ॥
तब सु कोक अरु पद्मिनी, कीन्हों एक विचार ।
केलि ग्रन्थ इक कीजिये, होइ सुजस ससारि ॥ ८७ ॥
ओषद अरू रति भेद सब, तिय वर्णन सिंगार ।
कियो दुऊँ मिली बुद्धि सौं, कोक नाम विस्तार ॥ ८८ ॥
ता पाछे कवि अति मयै, रचै ग्र भाषा रूप ।
कोक ग्रन्थ अति सरस है, सुनि सुनि रीझत भूप ॥ ८९ ॥

[स्वरूपलाल जगदीश चौक, उदयपुर]

(९) **चंदन मलयागिरि की चोपइ–दूहा** । रचयिता–भद्रसेन ।
आकार–९ ६″ × ५″ । पत्र-सख्या ९ । छन्द-सख्या २०३ चउपइ, दूहा, गाहा ।
लिपिकाल–स० १८२४, माह विद १४ सोमवार । लिपिकार–ऋषि हेमराज ।

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

(१०) **चंदराज चरित्र** । रचयिता–मोहनविजय ।

प्रति–१ आकार–९'७″ × ४ २″ । पद्य–ढाल १८०० । रचनाकाल–स० १७८३ । लिपिकाल–१८७८ ।

आदि भाग–

दोहा

प्रथम धरा धवनी म, प्रथम तीर्थंकर आदेय ।
प्रथम जिणद दिणद सम, नमो नमो ना भेय ॥ १ ॥
अमित कात अद्भुत सिपा, सिर भूपित सो छाह ।
प्रगट्यो पद्म ऊह थकी, सिंधू सलिल प्रवाह ॥ २ ॥

अन्तिम भाग–

तमगछ नायक गुण गण लायक विजय सेन सुरिंदरजी ।
प्रति बोध्यो जिणें दिल्ली नो पति अकबर साह मुणिंदरजी ॥१६॥
तास चरण शतपत्र सु मधुकर कीर्तिविजय उवझावाजी ।

तास सीस कवि मुख मडन मान विजय कवि राया जी ॥ १७ ॥
ताम पद सेवक मति-सुत सागर लब्ध प्रतिष्ट कहायाजी ।
पडित रूप विजय गुण गिरूया, दिन दिन सुजस सवायाजी ॥ १८ ॥
तेहने बालक मोहन विजये अठोतर सौ दालें जी ।
गायो चंद चरित्र सुरंगो चरित्र बचन परिनालें जी ॥ १९ ॥
कीधो चोथो उल्लास संपूरण, गुण वसु संजय वर्षेजी ।
पोस मास सित पंचमी दिवसें, तरणिज वारें हर्षेजी ॥ २० ॥

× × ×

विजय हेम सुरिंद राज्ये करि परम गुरु वदना ।
कवि रूप सेवक मोहन विजयें वर्णव्यांगुण चदना ॥ २ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

प्रतिः-२ लिपिकाल-१८४९

[अन्ताणी संग्रह]

(११) **चंदराजाचोपी** । रचयिता-विद्यारुचि-आकार-१०.४" × ४.४"। पत्र-संख्या १३५ । छंद-संख्या-२६८४ लिपिकाल-संवत्-१७९१, फाल्गुनमास ।

आदि भाग-

दोहा

श्री जिननायक समरिइ , ऋषभदेव अरिहंत ।
वछित पूरण सुरतरु, भय भजन भगवंत ॥ १ ॥
शिव सुख दायक सविइ, शांति नाथ जिनचन्द ।
यादव वमन लोमणी, नमइनेमि जिणद ॥ २ ॥
पुरुषा दाणी परगडो, श्री वर काणो पास ।
नाम जपता जेहनो, सफल फले सवि आस ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

तप गच्छ पंडित पट वयरागी, सवेगी गुण मन्दिरे ।
श्री गुरु महज कुमल सुखदायक, उप समरसनो दरियो रे ॥ ८ ॥
ताम सीस सुध ममयम धारी, श्री लक्ष्मी रुचि बुध ऐम रे ।

क्रिया वत पंडित कुलदीपक, श्री विजय कुसल तस सीस रे ॥ ६ ॥
तस पद पकज भ्रमर विराजें, श्री उदयरुचि कविराय रे ।
कुमत मतगज कुंम विदारण कठी रव कहवाय रे ॥ १० ॥
तास सीस सेवग महोदधि, श्री हर्ष रुचि बुध कहीइ रे ।
उपकारी मुझ श्री गुरु मिलिया, दरसण ती सुष लहीई रे ॥ ११ ॥
विन्न सरोमणि मुगट नगिनो, विद्या रुचि तस सीस रे ।
गुण भणिते पुरो पंडितरे सुषदायक सुजगीस रे १२ ॥ १२ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर,]

(१२) **चन्द्रलेहा चतुष्पदी** । रचयिता–मतिकुशल । प्रति-१ । आकार-६-३" × ४" । पत्र-संख्या-२० । पद्य-संख्या ६२४ गाथा और २६ ढाल । रचनाकाल-सं० १७२८ । लिपिकाल-सं० १७४६ । विषय-जैन जीवन चरित्र ।

[माणिक्य ग्रंथ भण्डार, भींडर]

प्रति २ । आकार–६-८" × ४-८" । पत्र-संख्या २३ । पद्य. संख्या–१०८५ । लिपिकाल–सं० १८८१ ।

आदि भाग–

दूहा

सरसति भगति नमी करीं, प्रणमू सदगुरु पाय ।
विघन विडारण सुषकरण, परमिध एह उपाय ॥ १ ॥

अन्तिम भाग–

दूहा

सवत सिद्धि कर मुनि जिसै, (वदि) आसु दशमि रविवार ।
श्री पवीय पभै प्रेमस्यु, एह रच्यो अधिकार ॥ १२ ॥

× × ×

सुगुण श्री सुगुण कीरति गणि, वाचक पदवी धरत ।
अतेय वासीय चिरजयो, मति वल्लमह महत ॥ १४ ॥
प्रथम सुशिष्य अति प्रेमस्य, मति कुशल कहे एम ।
सामायक मन सुध कहो, जय वरी चद्र लेहा जेम ॥ १५ ॥

× × ×

गुणय गुण जे सुणे भावे स्युं, गुरूँया तणा गुण जेह ।
मन सुध जिन भ्रम जे करै, त्रिभुवन पति हुवै जेह ॥ १७ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(१३) चन्द्रशेपर छरित्र । रचयिता-वीरविजय गणि । आकार-८"×४'४" । इस ग्रन्थ में २३७ पत्र हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २८ अत्तर हैं। अत्तरों की लिखावट जैनपाटी की है। कुल २६६१ छंदों में यह ग्रन्थ समाप्त हुआ है। संवत १६३६ में माणिकचद विजय गछ द्वारा लिपिवद्ध हुआ। .

यह प्राकृत प्रबंध 'चन्द्रशेपर' का भापानुवाद है जिसको उक्त रचयिता ने राजनगर (मेवाड़) मे चतुर्मास मे भापान्तर किया। इसमें जम्बूद्वीप के चन्द्रशेपर नृप की कथा का वर्णन है, जो इस प्रकार विभाजित किया गया है। नरति-सुन्दरी प्रीति सुन्दरी का पाणि ग्रहण, त्तेत्रपाल वशी-करण, श्र'गदत्त कथा श्रवण, द्विज पत्नि कुलटा प्रवन्ध कथन, सुदर्शन कुमरोपनय प्रकाशन, तापस पुंत्रि कनकावती, विमला पाणिग्रहण शत्रु जययात्राकरण, चतुपष्टिखेट सुताकर ग्रहण, त्रिलोचना के वचनामृत, पितृ-मिलन, स्वर्गगमन। रचना तथा इसकी भापा जैन शैली की है और जैन उद्देश्यों को लिये हुए है। केवल आदि भाग यहाँ दिया जाता है—

आदि भाग-

दूहा

श्री सपे सुग्पालजी, तामधि विचन पलाय ।
प्रिय मेलक परमेश्वरूँ, नमि पद्मावति माय ॥ ५ ॥
इष्ट देव समरण करी, व्रत फलनो अधिकार ।
जिम श्रुति सागर वरणव्यो, तिम कहुं पर उपगार ॥ ६ ॥
तास सिस विजयवुध ताम, सिम गुण वताजी ।
श्री शुभ विजय उम नामेंजे, महिमा हिमहताजी ।
पडित वीर विजय ताम मिमे चितनो वृति उल्लामेंजी ।
चन्द्रशेयर नृप गु ण मणिमाला गुण भी छे आरामेंजी ॥ ७ ॥

सवत उगणीसयदोयवरसे विजया दशमी प्रसिद्धिजी ।
राजनगर मां रहि चत्रमासु रासनी रचना कीधीजी ॥
विजय देवेन्द्र सूरी साम्राज्यें भाष्यो व्रतआचारोजी ।
दक्ष परीक्षक नर जो सुणस्यें तो श्रम सफल ऊमारोजी ॥ ८ ॥
जिम सोहम पति इन्द्र ने नन्दन नामें राय जयन्ताजी ।
तिम राजेशरी सेठ हेमामाई तस नदन गुणवन्ता जी ॥
छे युवराज पदें पद लायक प्रेमामाई विराजेजी ।
रासतणी में रचना कीधी ते सहु ने सुणना काजेजी ॥ ६ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(१४) **चन्द्र कंवर की वार्ता**— रचयिता-हंसकुमार आकार-११-५″ × ८-७″ । यह ग्रन्थ चमडे की जिल्ददार पुस्तक में है, जिसमें इसके अतिरिक्त 'पनरह तथियां रा दोहा', 'ढोला मारवणीरी वात', 'व्र द सतसई', 'फुटकर दोहा', 'अमरकोश' (संस्कृत), और 'अलकार रत्नाकर' है । १८ पत्रों पर यह ग्रंथ समाप्त हुआ है । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १८ पक्तिया और प्रति पंक्ति में १७ अक्षर हैं । अक्षर बहुत वडे २ हैं । यह वार्ता है, इससे अधिकतर कथा गद्य में है । कही कही दोहा, चौपाई सोरठा, चन्द्रायणा आदि आ जाते हैं, जिनकी सख्या ८६ है ।

विवरणी के प्रथम भाग मे इस ग्रथ के विपय में कुछ अशुद्धिया रह गई, उन्हे यहाँ सुधार देना चाहते हैं—

प्रथम भाग के पृष्ठ ७८ पर इसी ग्रन्थ 'चन्द कुवर री वात' का उल्लेख किया गया है । उसमें रचयिता प्रतापसिंह दिया गया है वह अशुद्ध है । ग्रन्थ का रचयिता है "हस कवि" है । प्रतापसिंह तो पुमाण को हुकुम देता है कि 'हंस कवि' को कुछ अपूर्व वात सुनाने को कहो (यह उसी विवरणी में दिये गये पाठ का अर्थ किया गया हैं) । इसी प्रकार अमरावती नगर के सेठ की पुत्री चन्द्रकुँवरि लिखा गया है, यह भी अशुद्ध है । यह नाम 'चद कुवरि' नहीं है 'चन्द कँवर' है जो पुल्लिग है । ह 'चंद कवर' अमरावती के राजा अमरसेन का पुत्र है । इसी प्रकार राजकुमार के स्थान पर 'राज कुँवर' पाठ लिखा होने से यह राजा के पुत्र का नाम समझ लिया गया है । इस राजकुमार का प्रेम सेठ की पुत्री से न होकर उस सेठ की स्त्री से ही था । 'सेठ तणी जे असतरी, तिण सू घणों सनेह' का अर्थ

भी यही होता है। अतः इस भूल सुधार के लिये हम संक्षेप मे सारी कहानी यहाँ देते है—

अमरावती (सोरठ) का राजा अमरसेन। उसका पुत्र चन्द्रकुँवर शिकार को जाता है। सूअर के पीछे दौड़ता हुआ साथियों से छूट जाता है। ३२ कोस पर सूअर मारता है। सूर्यास्त। किसी ऋषि के आश्रम मे जल पीकर मार्ग पूछता है। ऋषि कहते हैं आगे कुछ दूर तक बस्ती नहीं है फिर कंधार शहर है, उससे ५ कोस की दूरी पर तांबापुरी है। कुमार का प्रस्थान। मार्ग में नदी) बरसात से बाढ़—नदी के उस पार ताँबापुरी! काजली तीज का त्योहार कुछ सुन्दरियाँ वहाँ खेल रही है। वह वहाँ जाता है। एक कामिनी उसे पूछती है- तुमने ऐसे समय स्त्री को क्यों छोड़ा? कहाँ से आ रहे हो? राजकुमार का उत्तर-"सोरठ हंदा राजवी, राजकवँ अमरेस पंथ सीकारां नीसरयां, भुला आया इण देस।" इसके बाद उसके साथ नगर में जाना- फिर अन्य स्थान पर डेरा डालना। नगर के सेठ सामजी बारह वर्ष से परदेस में- स्त्री विरह मे कामान्ध-उसकी एक दूती का 'भमर' की खोज में फिरते हुए चदकुवर के पास आना-उसको विवश करना-वह पहले पर-स्त्री के पास जाने से इन्कार-फिर दूती की पटुता से वशीभूत होकर सेठानी को संतुष्ट करता है और प्रेमान्ध हो वहीं रहने लगता है। इधर राजकुमार की माता दुखी होती है। अमरसेन अपने गुप्तचरो द्वारा पता लगाकर मन्त्री को लेने भेजता है। मत्री बजाज का वेश धारण कर इसके पास जाता है और उसकी माता को दुख वर्णन करता है। चन्द्रकुवर सेठानी से विवाह कर उसे घर ले आता है।'

इसमें कुछ पाठान्तर भी हैं—

प्रथम भाग में ग्रन्थ की प्रथम चौपाई इस प्रकार है।

> समक सरसत मात मनाय। गणपति गरु के लागु पाय॥
> प्रतापसींघ रम कीनो काज। वरनू न कथ्यो रसिक कविराज॥

इससे भी यह सिद्ध नहीं होता कि इसका रचयिता प्रतापसिंह है। मुझे जो ग्रन्थ प्राप्त हुआ है उसमे यह पाठ है

दोहा

> समरु सरसत मात कु, गणपति लागु पाय।
> परतापसिंह नृप अरज रीय, यथा मिरु कविराय॥ १॥

—आगे जो पाठान्तर है वह इससे मिला लिया जावे—

हंस कवीसर सूं कह्यो, कछु इक बात सुणाय ॥ २ ॥
सबकूं लगैं सहामणा, रस संजोग सिणगार ।
मुरष हु को मन हरे, सब रसीयन को सार ॥ ३ ॥
सतरे से चालीस मैं, तेरस पोसज मास ।
गुण कियो कर चाव के, होगी पूरण आस ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

घर घर हुवा वधामणा, तोरण बांध्या द्वार ।
परणे आयो पदमणी, आयो चंद कवार ॥ ८२ ॥

चन्द्राइणा

बाप तणे पग लाग मील्यो है माय कुं ।
वेण उतारे लूण भयो सुख धाय कुं ॥
दुलहण को मुख देख, ठमक ठमक पाय परत है ।
मोहरां भर-भर मूठ, निछावर करत है ॥ ८३ ॥

दोहा

मो मन प्यारी सु वसे, प्यारी के मन पीव ।
मे प्यारी का जीवडा, प्यारी मेरा जीव ॥ ८४ ॥
परतापसिंघ सेवक कहै, वाचत सदा सहाय ।
चदवात पूरी भई, यह करि रस कविराय ॥ ८५ ॥
जोध वश युग युग जियो, घणो होत हरखार ।
नाम धारयो परताप नृप, गुण ही को गुणसार ॥ ८६ ॥

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(१५) चतुः प्रत्येक बुद्ध प्रबन्ध । रचयिता-समयसुन्दर । आकार-१०" × ४ ५" । पत्र-संख्या-३६ । लिपिकाल-सं० १८४२, पोष सुदि १४, शुक्र । रचनाकाल-१६६५ ज्येष्ट शुक्ल १५ । पत्र संख्या-प्रथमखंड ढाल १०, गाथा १८७, ग्र० श्लोक २२५; द्वितीय खंड ढाल १०,गाथा २५०, ग्रं० श्लोक ३६४,तृतीय खंड ढाल १७, गाथा ३६६, ग्रं०; चतुर्थ खड ढाल १०, गाथा २५०, ग्रं० ३६४ ।

विषय:-इसमें कलिंग देश में चंपावती नगरी के राजा दधिवाहनराय के युद्ध तथा चार प्रत्येक बुद्धराजाओ का वर्णन है ।

आदि भाग-

श्री सिद्धारथ कुल तिलो, महावीर भगवंत ।
वर्तमान तीरथ धणी, प्रणमु श्री अरिहंत ॥ १ ॥
तसु गणधर गोतम नमुं, लबधि तणो भंडार ।
काम धेनु सुरतरुमणी, वारूँ नाम विचार ॥ २ ॥
वीणा पुस्तक धारिणी, समरुं सुरसति मात ।
मूरिख नें पंडित करें, कालीदास कहिवाय ॥ ३ ॥

× × × ×

कर कहू राजा दुमुख, नमिनइ विगइ सुद्ध ।
इणि नामें उत्तम हूआ, च्यारे प्रत्येक बुद्ध ॥ ८ ॥
चार तिया च्यारे चतुर, मोटा साधु महत ।
चिहुं खडे कहुं चरितहु, जिम पामू भव अत ॥ ९ ॥
चार खड ए चउपई, चिउ खडे परसिद्ध ।
प्रथम खड कर कइनो, मामलि ज्यो मन सुद्ध ॥ १० ॥

पुष्पिका-"इति श्री आगरा वास्तव्य नागड गोत्रिये श्री संघ भार धुरंधर नाना विध शास्त्र बिनोद महा रसिक सा० भारू (?) समभ्यर्थ नया वाचक श्री समय सुन्दर गणि विरचिते श्री चतुः प्रत्येक बुद्ध प्रबन्धे.... .सम्पूर्ण . ... इति श्री चतु' प्रत्येक बुद्ध चतुष्पदी समाप्ता। 'सकल पंडित शिरोमणि पंडितजी श्री १०८ श्री रत्न रुचिगणि तत् शिष्य पं० श्री अनोपरुचि गणि शिष्य पं० अभय रुचिगणि लिपि कृते भींडर नगरे . .... . संवत् १८४७ वर्षे पोष सुदि १४-शुक्रे।"

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर,]

(१६) चमत्कार चिन्तामणि । रचयिता-अज्ञात । आकार-८" × ४'१" पत्र-संख्या ३ पद्य-संख्या ११३ । विषय ज्योतिष ।

आदि भाग-

यु विचार ज्योतिष को, कहत न आवै पार ।
अब फल बारह भवन को, वर्णन है कविसार ॥ १ ॥
तन भवनै सूर्य करै, नरक रूप बहु केम ।
विनय रहित क्रोधी समझ, मार चित लवलेस ॥ २ ॥

वित्त हरे रवि धन रह्यो, गृह्यो सदा सरोग ।
सजन अधिक दुर्जन अधिक, भाग विसर्ग लोक ॥ २ ॥

अन्तिम भाग–

राह करै अमल वन, वरष तीन को आप ।
जो कदाचि जीवै अधिक तो अति दुखित माप ॥ ८ ॥
धर्म मार तम कर करै करै बिन्द से वास ।
कामी लोभी कठिन मन, धरै सकल की आस ॥ ६ ॥
राह कर्म कर बुद्धि वल, मरै पिता तव रोग ।
सूरवीर पर नारि सूं (रता), सार सुमति को जोग ॥ १० ॥
राह लाभ को सुमस सुख, आय बहुत धनवन्त ।
महा वलि सिर बन्त वहु, सारद सदा मति वन्द ॥ ११ ॥
राह बार में आपदा, होत द्रव्य को नास ।
अल्प बुद्धि मानैं तिके, माया वन्त उदास ॥ १२ ॥
इति राह फलं
ऐसे बारह भवन परि, जोतिष शास्त्र विचार ।
फल नव मह को वर्ण व्यो, सार बुद्धि अनुसार ॥

[सरुपलाल शर्मा जगदीश चौक, उदयपुर]

(१७) **चंपकमाला** । रचयिता–अज्ञात । आकार–६.४″ × ४.२″ । पत्र-सख्या८ । पद्य-संख्या ६५ । विषय-चम्पकमाला के सतीत्व और जैनधर्म पालन की कथा ।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(१८) **चित्रसेन पद्मावती रास** । रचयिता–अज्ञात । आकार–१०.४″ × ४″ । पत्र-संख्या–३३ । छद-संख्या ४६५ । रचना-काल- । १८१४
विषय–इसमें किसी पूर्व देश के राजा चित्रसेन और उसकी रानी पद्मावती की कथा है ।

अन्तिम भाग–

भवियण साचो इक भम भाई ।
मत्रक ममता जीवन एहिज होय सहाय ॥ १ ॥

धरम पदारथ जगत में जिहाँ तिहाँ ग्यानी ए गायौ ।
तिण उप चित्रसेन नरिंद ने ए दृष्टान्त सुणायो ॥ २ ॥
दान सील तप फल सुमदायक जो होया तावस मेला ।
श्रुत परणाम विनासह निरफल तीने ही एह अकेला ॥ ३ ॥
करम तणौ बध करम नि जरा एस र आतम सारे ।
ए चित सेवे चरित्र श्रवणे शुणीए परमारथ धारे ॥ ४ ॥
अठारह ऊपर बरसै चवदो तरे बहेते ।
पोसमास शुदि दसम तणै, दिन रास रच्यौ मनपते ॥ ५ ॥
श्री जिन लाभ सूरि सिर राजै परतरगछ वड़भागी ।
पेम साष श्री शांति हरष शिष्य, श्री निज हरष वैरागी ॥ ६ ॥
तासु चरण रज कण सुप साठौ, सरमतिशु निज रणाई ।
राम छिलै उठ जाय ए चौपई बीकानेर वणाई ॥ ७ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मंदिर, उदयपुर]

(१६) **जाम राउल री बारामास्यो** । रचयिता-अज्ञात । यह एक प्राचीन गीत है । जो एक प्राचीन चोपडे में प्राप्त हुआ । इस चोपड़े पर संवत ११४२ लिखा है, परन्तु रचना इतनी प्राचीन नहीं है । जाम राउल जामनगर का संस्थापक था और उस समय में जामनगर गुजरात में व्रजभाषा साहित्य का केन्द्र था ।

साल ले वारह मेघ सायण घन धारा ऊबले ।
बाबीहा दादुर मोर बोलै साल दह दिशी पल हलै ।
झहमचे सिहरे बीज भबके मिले अन्नल फर हरै ।
राजेंद्र पाधां जाम राउल सांमितिणि रीति ममरै ॥ १ ॥
माद्रवे नीर निवाण भरिया, गिर पहाड़ पपालियै ।
मिलि छपन कोडि मेघ माला नदी नीर मालियै ।
घेनूप लू बा मांमली छटा कांठली जल हर करै ।
राजेन्द्र पाधां जाम राउल सांमितिणि रीति ममरै ॥ २ ॥
उनमै यति घण मालव पाणु नदी नीर निरमला ।
घन अधिक छाइ ये लू ब बेलि चंद्र हूं चढो कला ।

नैवेद्य करि वापि-तट विहसै वेक वदन विस्सरै ।
राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांमितिगि रीति संभरै ॥ ३ ॥
कातिग्ग मास आकास निरमल मेघ चालै घर सुणै ।
सर कमल विकसै सरद रेणि नीर छाया पोमणै ।
अनल ठंभै गरज उतर अरक दषिक मनि धरै ।
राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांमितिणि रीति समरै ॥ ४ ॥
मगसिरे मारग माग मडै मेघ मडै दामिणी ।
करि कोट माला रत्न चमकै उष्ण अस्तन कामिणी ।
षड छाय कूप पयाल अस्तर जीवह दिसै ऊमरै ।
राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांमितिणि रीति समरै ॥ ५ ॥
मिति हिमोतर पौष मासे पान तर वर हाखै ।
साक पै प्रेम कमल विकयल भवर पंख न साखै ।
धूजत वानर गो निरधन नाग रायण निस्सरै ।
राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांमितिणि रीति समरै ॥ ६ ॥
उतरा दल हरि लक नाषै प्रलैवन षड परजलै ।
अब होय विषमा अगनि अम्रत सीत बादल सालले ।
दीरघ रयणि लोछ दिनकर माह मास समाचरै ।
राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांमितिणि रीति समरै ॥ ७ ॥
निसि सित फागुण दिन ग्रीसम अनल पत्र ममारै ।
फिर चलै उतर चाहि रवि रथ दषिण पथ निवारै ।
विति लोक रामति फाग षेलै होलिका अथ विस्तरै ।
राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सामितिणि रीति समरै ॥ ८ ॥
माजरि अदभुत चैत्र मासै पागुरै पत कोमला ।
सीजाई घर दिसि धूम पलटै हुए अभर निरमला ।
बनराई भार अढरि फूटै दहण माथा उत्तरै ।
राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांमितिणि रीति समरै ॥ ९ ॥
वैसाख मासै मोरिया बन वसत अमृत आण ए ।
केतकी जाइक हसै कुसमै मवर लीला माण ए ।
महक्त चपो बेलोदमणो अधिक प्रेमल उघरै ।
राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांमितिणि रीति ममरै ॥ १० ॥

वरतिये जैठक लूऊ वाजे हुवै दिमी हला हलै ।
दिन वधै घटै निमी दिवाधर जणि हुवे ।
ग्रितिम जल फल आइ दाडिम दाख पाचै मालिणी क्रायामरै ।
गजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांमितिणि रीति समरै ॥ ११ ॥
श्रापाड ऊवा करै टवर गहली निद्रा श्रति घण ।
ग्रू जाई निसरी गरमिये जल, कुश्ररि ढीला श्रफण ।
विजली चमकै वले वादल उन्हगालै प्रसेवो उतरै ।
राजेन्द्र पात्रां जाम राउल सांमितिणी रीति समरै ॥ १२ ॥

[माणिक्य ग्रथ भंडार, भींडर]

(२०) **जिनपाल जिनरक्षक री चउढालियो** । रचयिता-शान्तिकुशल । आकार-१०″×४.५″ । पत्र संख्या ३ । पद्य-संख्या ६१ । विपय-जैन-जीवन चरित्र । भापा-बोल चाल की राजस्थानी ।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(२१) **ढोला मारवणी री वात** । रचयिता-अज्ञात ।

आकार-५″×४.६″ । पत्र-संख्या-७० । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियाँ और प्रत्येक पक्ति मे २० अत्तर हैं । अक्षर सुन्दर और छोटे हैं । प्रति कुछ जीर्ण हो गई है । इसमे कुल २१८ पद्य हैं और बीच बीच में वारता दी गई है । रचना काल इसका इस प्रकार दिया गया है—

पनरेसे तीसे वरस, कथा कही गुण जांण ।
वदि वैसाखे वार गुरु, जन्ति जाण दस श्राण ॥

इसका आदि भाग विवरणी के प्रथम भाग मे पृष्ठ ३७ पर दी हुई कुशल लाभ रचित ढोला मारू री चोपई प्रति १ के आदि भाग से कुछ पाठान्तर लिये हुए है ।

सकल सुरासुर स्वांमिनी, सुणि माता सरस्वति ।
विनोद करी ने विनवूं, मुझने दो श्रविरल मति ॥ १ ॥
जोतानवरस गुण दूगे, सवहि करी सणगार ।
गर्यो गुनर गंजिये, श्रवला तण श्राधार ॥ २ ॥

उदाहरण–

दुहा

नदियां नाला नी भरण, पांणी चढियो पूर ।
करहो कादम किम चले, पंथी पूंगल दूर ॥

वारता

सूणो महाराज आबु परबत अठारे गिरां रो राजा
छे तिण कने शोवन गीर परबत नेडो छे
तवे जालोरगढ थापीयो छै सो गढ विषम जायगा छे

दूहा

अन्तिम भाग–

अति आणद उछव हुवा, नरवर वरज्यो ढोल ।
ससने ही सयणा तणा, कल में रहिस्यैं बोल ॥ २१७ ॥
दुहा गाहा सोरठा, मन विकसण वर्षांण ।
अब जाण्या मूरख हसै, समझे चतुर सुजाण ॥ २१८ ॥

[अन्ताणी संग्रह, उदयपुर]

(२२) ढोला मारवण री वार्ता । लेखक–अज्ञात

यह भी उसी जिल्ददार सग्रह मे जिसमें है जिसमे चंन्द्र कँवरी री वार्ता, वृंद सतसई और अमर कोप (सस्कृत) है ।

इसमे कुल ४७ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर १८ पक्तिया और प्रति पंक्ति में १७ से १६ तक अक्षर हैं । यह सवत् १६०४ शाके १७६६ आसोज कृष्णा ४ बुधवार को उदयपुर में लक्ष्मी विजय द्वारा लिपि वद्ध हुआ । यह विवरणी के प्रथम भाग के पृ० ३८–३६ पर दिये हुए ग्रन्थ ४६ से भाषा और शैली में बहुत भिन्न है । कथा वही ढोला मारवणी की है, परन्तु इसका रचयिता कोई है । भाषा यद्यपि राजस्थानी ही है पर लेखक की भिन्नता स्पष्ट प्रकट होती है । वर्णन पद्धति भी वही गद्य तथा दोहा सोरठा वाली है, परन्तु दोहे का विपय तथा क्रम एक दूसरे से भिन्न हैं । एक ही कहानी की विभिन्न रचनाएं उसकी लोक प्रियता का प्रमाण है ।

आदि भाग–

पु गल राजा जातरा चत्राण (भाटी ?) । पु गल राज करै छे । सो देस में काल पडीयो । सो लोग परदेस जावा लागा । तरे पु गल राजा रो प्रधान । पचायण नाम हुतो । तिण ने हजूर

जोवन हसती मद हुवौ, आंकुस घोनी आय ॥
डाढी एक संदेसडो, ढोला लग पोहचाय ।
डेर पड़ी छे आंगणे, सीलो करो नी आय ॥
डाढी एक सदेसडो, ढोला लग पोहचाय ।
जोवन काला नाग ज्यू, झुक झुक झोला खाय ॥
चीतारली चुगतीयां, कुरझां रोवहियांह ।
रूर थको दा हीयला, मिले नही मन्नाह ॥
ढोला मीलसी नवीसरसी, नहीं आवसी लेस ।
मारू तणा कर कडे, वायस उंडा हेस ॥
ढोला जो तु न आवियो, सावण पैहली तीज ।
झख करेसी मारवणी, देष पीवती बीज ॥
ढोला जो तु न आवीयो, सावण पेहला मेह ।
आडा वसीया वालहा, झुर झुर हुइ हम देह ॥
निरमोही घर आव पिव, कासू घणो कहेर ।
सपत (तो) दिन दिन आवसी, (पीख) जोवण कद्दलहेस ॥
पांष हुवे तो किम हुवो, दई अरुठा त्यांह ।
रात विछोहो दिन मिलण, पखछती चकवाह ॥
आथमण ऊपरा दीठ, पूरब सांमी बांह ।
एक सदेसड़ो कुर झड़ी, ढोला ने कहियाह ॥
अे दुहा केह ने कुरझा, सो मारू जोवनलागी
ताल चुगती कुरझड़ी, सर सधियो गी मार ।
हु ऊडी आकास ने, हाली जोवनहार ॥

वारता

इतरी वातां करतां मारवणी घरे आई ढोलाजी आगम चिंता करे छे काग वैठी उडावे छै और काग सुं कहे छे—

कागा पीव न आवीयो, कियो न डेरो चीत ।
लकड़ी हुवे तो दघ वलु, रहु र अकेली नीत ॥
कागा देउ वधाइयां, पीव मिलावो मुझ्झ ।

काढ माह थी जीवडो, भोजन देस्यु तुम्भ ॥
कागा जठे पीव वसे, उड जो त्यांह चल जाय ।
ढोला वेहलो आवने, (फेर) घणा ही हुता भाय ॥

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(२३) **दत्तात्रेय उपाख्यान** । रचयिता–अज्ञात । आकार–६'२" × ४" । ा-सख्या १४ । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ४० या ४२ अक्षर । पद्य-संख्या २२० । इसमें भागवत पुराण के अन्तर्गत एकादस स्कन्ध के ७, ८, और १० अध्यायों की कथा है ।

[रामद्वारा धोलीबावड़ी, उदयपुर]

(२४) **दवदंती नी कथा** । (लेखक-देववर्द्धन (?) । आकार–१०" × ४½" । ; कथा गद्य में है । पत्र-संख्या १२ । प्रति पृष्ठ पर १५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में . अक्षर हैं । जैनपाटी की सुन्दर और व्यवस्थित लिपि है । रचनाकाल-संवत ५०० से पूर्व अनुमानित । भाषा–जूनी राजस्थानी ।

ादि भाग–

दवदती नी कथा कहियइं छइ । ईयाइ जंबू द्वीपि । भरत क्षेत्रि ।
अष्टापद समीपि । सगमपुर नगरु । तिहा मम्मण राजा ।
वीरमती मायसिहि सुखिइ राज करइ । अन्यदा प्रिया सहितु ।
राजा आहेडा भणी नगर बाहर निकलिउ । तिसइ संघात साथि ।
महात्मा एक मल मलिन गात्र आवतउ देखी । मनमाहि अपशकुन-
मानतउ म राजायइ महात्मा ऊभउ राखिउ । संघात हूतउ ।
चूकविउ । वार घड़ी ताई सतापी पछइ दया परिणमि ऊपनइ -
राजायइ महात्मा पूछिउ । किहा हुता आव्या । किहां जासि ।
तिवारइ मुनि कहइ । हउ रोहीतक नगर हूतउ आविउ ।
इम वात करतां राजा राणी ए दुस्वप्न परिइं कोप मूंकिउं ।
तै वार इम महात्मायइ जीव दया मूल धर्म्म उपदेसिउ ।
अनइ राजा राणी ए भावना सहित सद्दहियु । पछइ ते महात्मा तइ
भात पाणी यइ करी सम्पूर्ण भक्ति कीधी । पच्छइ महात्मायइ यज्ञ-ज्ञान
रूप धर्म्म उषध कर्म रोगनी चकिशा भणी आपिउ ।

पछइ महात्मा अष्टापदि पहूतउ । हिवर्ते बिन्हइ यतीना ससर्ग्य लगइ - श्रावकउ धर्म्म पालिवा लागा जिमराक । द्रव्यनइ पालइ । अन्यदा वीरमतीनइ जिन धर्मनी गाढी स्थिरता करिवा भणी शासनना देवताइं अष्टापद तीर्थ देखाडिउं । तिसइ तिहां अष्टापद ऊपरि वीरमतीयइं शाश्वती प्रतिमायइ जे देवतां पूजइ छइं । ते देखी परमानद धरती चउवीसइ-जिननी प्रतिमा नमस्करी ।

उदाहरण-

नलदवदती बाहरि नीकली कहइं । तिम केही दिशि जाईस्यइं । तिवारइ दवदती कहइ । स्वामिन कुडिनपुरि जाइयइ । जिहां माहारउ पिता छइ । तिवारइ नल कुडनपुर भणी रथ खेडिउ । पछइ मार्ग्य उल्लघता महा अटवी माहि रथ पडिउ । तिसइ गाम भील आव्या । एहइ नल रथ हूतउ उतरी खड्ग लेई । सामुहइ धावा लागउ । ते नलइ दवदती कहइ । हे नाथ पाली भणी ताहरउ सिउ आक्षेप । इम कहइ दवदती हूकारा मूकइ । जे जे हूकारा सुणी ते ते आवत थाइ भुइ पडइ । पछइ भीले पलायन कीधा । हिव जे रथ अलगउ मूकउ हूतउ । तिणि करि बीजे लीधउ । पछइ नल दवदती पालो पालिवा लागा । इम चालतां मार्गि जाता थका किहांइ एक वृक्ष तलइ जई बइठा । तिहां नल केलिनइ पत्रिइ करी दवदती नइ वाय घातिवा लागउ । दवदती पणि नलना पग चापइ छइ । एक वई दवदती त्रिषाक्रांत हुई । तिसइ तले कमलनइ पत्रेकरी जल आणी पायउ । सुस्ती कीधी तिवाइ दवदती पूछई । अजी अटवी के एक थाकइ । नल कहइ । सउ जोयण माहि । अजी पाचइ जि जोयण आव्या छां । इम वात करतां सूर आथमिउ । पछइ अशोक वृक्षना पल्लव लेइ साथरउ कीधउ । तिहां दवदती सूती । एहनउ गाइनइ शब्द सामली । वसतउ जाणी । नलि कहिउ हउ पाहर छउ । तू सुखि निद्रा करि । पाछइ दवदती नइ निद्रा आवी । एहवइ नल चीतवइ ।

अन्तिम भाग-

। ऐ असार ससार माहि चरित्र इति सार । तेह भणी हिवरू दीक्षा लइ ।

पछइ नल राजा पुष्कल पुत्रनइ आपणपउ राज देई दवदती सही दीक्षा लीधी। तिहाँ सतर भेदे सयमे पालतउ पृथ्वी माहि विहार करवा लागउ। पणि नल मुनि कोमलपणा लगइ चारित्रु पालतउं दीलउ हूअउ। एहवइ निषेध देवि आवी द्रढि कीधउ। तउ ही नल मुनि दवदती नइं विषइं कामातुर हूअउं। चली पिता पइ आवी प्रति बोधउ। पछइ अणसण सहित नल मरी कुवेर थाहिइ नमिइ उत्तर दिसिकउ अधिपति हूअउ अनइ दवदती तेहनी देवी हुई। इम दवदती नइ परिइ ओर नर लोके सील पालिवउ॥ ६॥

पुष्पिका

"इति श्री दवदती कथा समाप्त" गच्छहडा गच्छे भट्टा० श्री ४ दयालसुंदर सूरि पटे श्री ४ भावसुंदर सूरि। पटे श्री आचार्य श्री ४ श्री कर्मसागर सूरि। वा० श्री वीरसुंदर। ग० देववर्द्धन लिखापित। आत्मवाचनार्थं॥"

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

(२५) **द्रौपदी चौपई** । रचयिता -सावतराम। आकार-६.४" × ४.२"। इस ग्रन्थ में १० पत्र हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियें और प्रति पंक्ति पर ३२ से ३७ अक्षर हैं। कुल ग्रन्थ में ५१ दोहे, १४ ढाल और १६२ पद हैं। संवत् १८६३ कार्तिक कृष्ण सप्तमी को सांवतराम ने सवाईजयनगर (जयपुर) में रचना की। इसकी भाषा राजस्थानी है। विषयः द्रौपदी के जीवन की घटनाओं को जैन दृष्टिकोण से देखने का प्रयत्न किया गया है।

आदि भाग-

दोहा

शील बड़ो ससार में, मत्रा में नवकार॥
दानां माहि वडो अनै करदे पैवो पार॥ १॥
ग्यान में केवल बड़ो, रिष में गौतम जेम॥
सतीया माहि शिरोमणी जोंउ पचाली जेम॥ २॥
परवश पडिया द्रोपदी, पद्मोतर के पाश॥
शील साध तो राखीयो, सफल फली तशु आश॥ ३॥

ढाल

भर्त खेत्र माहे भलो, किंपिल्लपुर नयर रसालो ऐ॥
राज करे रलीयामणो, द्रुपद नाम भूपालो ऐ॥ १॥

किते नैन के रोग हैं, बरनो तिन्हे बनाय ।
ज्यों निदान लछिन सहित ॥ ११ ॥
विनती करि कृपाल तब, जब प्रभु आग्या कीन ।
आचारिज मिलि देषि कें, करियो ग्रथ नवीन ॥ १२ ॥
प्रिथीराज चहुवान पें, रिषीकेश दुज नांम ।
लाए रावल समरसी, दीनो मोही गांव ॥ १३ ॥
वैद्य भले तिहि कुल भए, उदयसिंह महारान ।
उदक गांव धो पीपरी, षेम द्विजन कू दान ॥ १४ ॥
उही वश प्रगटे सुमति, रूपदत्त परवीन ।
महानद दूजे कहू, तिनि मिली समत कीन ॥ १५ ॥
प्रभु आयस ते ग्रन्थ जिन, विविध सुनाऐ आनि ।
नेम तस कृपालां कवि, भाषा करी वषांनि ॥ १६ ॥
सुश्रुत चरक , ।
. रच्यो कवि, कृपाराम निरधार ॥ १७ ॥
सव तसे, वरस पन्चासी जानि * ।
माह मास सित पॅचमी च गुर मांनि ॥ १८ ॥

अतिम भाग–

छप्पय

कवित करे अरु चित्र, वैद्य अक्षर लिपि जानै ।
जाकी सूरति कहो, काट में ताकी आनैं ॥
बिना प्रान की सेन, बनायर वहे लहरावै ।
बात अपूरब कहै, सुनत भूपन मन भावै ॥
मो कृपाराम दुज नाम है, जामे केउ गुन लसै ।
सग्रामसिंघ महारान ढिग, नगर उदैपुर में बसै ॥

[श्री स्वरूपलाल, जगदीश चौक, उदयपुर]

(७८) **नरसी महता को माहेरो** । रचयिता-रतनोपाती । यह ग्रन्थ भी १३७ संतो के सग्रह मे है । इसमें कुल ६५ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ में ११

---

* १७८५, क्योंकि म०रा० सग्रामसिंह (दूसरे) का समय स० १७६७–९० है ।

क्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में ३१ अक्षर हैं। इसके अंतिम भाग से ज्ञात होता है कि
वेक्रम संवत् १६१६, और शालिवाहन संवत १४८१ में इसकी रचना
ई और बाद में रामरतन-शिवकरण ने शोधकर शुद्ध किया। सारा ग्रंथ दस
काशों में विभाजित किया गया है जिनमें ४० प्रकार के छंद रागादि हैं। कुल
ंख्या लगभग ६०० है। ग्रन्थ का पूरा नाम 'भक्त वत्सल त्रिरदराग कोतूहल नरसी
हता को माहेरो है।

प्रादि भाग–

श्री श्री सद गुरु प्रणम्य, द्वितीय बदु सब साध।
तृतीय बदु परि ब्रह्म को, धो वांणी विमल अगाध ॥ १ ॥
भक्त गत भगवत गत, यो पे लखी न जाय।
श्री गुरु देव दया करो, दीजे भेद बताय ॥ २ ॥

सोरठा

विघन हरण गन राज, देह सदा सारद सुमति।
कीजिये मंगल राज, कंठ कमल वांणी विमल ॥ ३ ॥

चौपाई

श्री गुरु चरण क्वल चित राखू। भक्ति प्रभाव विडद जस माखू।
बद मक्त भक्त बुधि पाऊं। नरसी को इतिहास सुनाऊँ ॥ ४ ॥
गूजरात जूनैगढ माहीं। जक्त छाड कर भक्त के मांहीं।
नागर कुल बडनगरा केंही। पूर्व जनम की भक्ति लेही ॥ ५ ॥
तृतीय जनम की कथा सुनाऊँ। थोडे में बहुती समझाऊ।
पूरब जनम हू तो नृप भारी। सुभद्र नाम सतवती नारी ॥ ६ ॥
सदा वरत पचिन कों दीन्हौ। पग मिल घात रिषी को कीन्हौं।
पुन्य करत लागो तिन पापू। त्रिप्र दुषित हुय दयो सरापू ॥ ७ ॥
सो वह कथा यहाँ नहीं आनी। मीरा मिथुला बहुत बखानी।
कछु एक तात पिरज चुन लेहू। लघु सक्षेप यहाँ लिख देहू ॥ ८ ॥
यहाँ शिवकरण कहत कछु छांई। ग्रंथ बदे बांचे कोउ नाहीं।
यह सुन गैस करो मति कोई। इतनो ही पढें सुनें धन सोई ॥ ९ ॥

दोहा

नृप सुभद्र कों श्राप अति, दियो विप्र कोउ काल।
गयो महारण के विषे, भयो सिंघ विकाल ॥ १० ॥

चौपाई

नारी सहित सिंह तन धारे। बन के जतु सकल चुन मारे।
रये न षग मृग सकल सघारे। धावा वढ़त दूरलौं पारे ॥ ११ ॥
हनें पथिक गौ ग्वाल समेता। चलत न पथ होत भयभेता।
द्वारावती जात मग माँही। सुनते श्राक सब लोग परांही ॥ १२ ॥

अन्तिम भाग–

सौला से सोलोतड़ो, विक्रम सवत जान।
चवदासैं इकियासियो, शाके शालीवहान ॥ ६ ॥
भक्तां के हित कारणैं, जद हरि बांध्यो मोड़।
माहेरामें रूपीया, लागा नहि करोड़ ॥ १० ॥
जो गावे सीखे सुणें, वैकुंठा को बास।
हरि नामे रतनो बसैं, हरी भक्तन को दास ॥ ११ ॥
लिखे पढे गावे सुणैं, कहे करावे कोय।
खाती रतनो यू भणे, गऊ सहस फल होय ॥ १२ ॥
माहेरो नरसी तणो, करे ज्ञान अरु मान।
ज्ञान बढै गुण उपजे, गगा तणा सनान ॥ १३ ॥
महिमां माहेरा तणी, षाती कही बणाय।
महज मुक्ति फल पावे सही, जन जमपुर नहिं जाय ॥ १४ ॥
भक्ति उपजै भय मिटै, श्रस स्वास ससी काज (?)।
नुपता सकल निरजसी, सांवल सा महाराज ॥ १५ ॥
सुखसारण कपा करी, सत गुरु दई सुबुद्ध।
रामरतन शिवकरण यह, सोध करयो अति सुद्ध ॥ १६ ॥

[रामद्वारा धोली वावडी, उदयपुर]

(२६) **नल दवदंती आख्यान** । रचयिता–वैरागी नारायण । आकार–१०'१" × ४ १" । पत्र-सख्या–७ । पद्य-सख्या–३१५ । रचनाकाल–१६८२ पोष सुदी एकादशी ।

आदि भाग-

दुहा

परम पुरुष धरि ध्याईइ, वंछित सुखदातार ।
सिद्धारथ कुलि चद सम, त्रिसला मात मल्हार ॥ १ ॥
प्रातु समय निति तेहनु, धरता निर्मल ध्यान ।
दुख नावइ सुपना तरिइ, वाधइ महिमावान ॥ २ ॥
त्रिभुवण मडण तिलउ, चरम जिणेसर सामि ।
वेद मुनि प्रभुता हरइ, लहीइ बुधि नामि ॥ ३ ॥
तू ठ्कुर समरथ धणी, सेव्यु देव दयाल ।
चरित्र रचु रत्नीश्रामणु, देज्यो वरन रसाल ॥ ४ ॥
नल दवदती नु हवई, सुणज्यो सहु आख्यान ।
सती तणां गुण गावतां, दूरि टलइ अज्ञान ॥ ५ ॥

अन्तिम भाग-

जीवहणी जेह धर्म रूपसिइ, तेह अनारि जि जांणि ।
आश्रय छडीनइ सजम पालीइ, ए जिन परवणी आंणि ॥३१०॥
रूप ऋषि जीव ऋषि कुअरजी गणि, श्री मल्लजी मुनिराय ।
तारण तरण आचारजि रत्नसर, वदीय तेहना पाय ॥३११॥
रास रचिउ रत्नीश्रामणउ रगसु, आंणीय हरष अपार ।
भणइ गुणइ जे सांमलइ भाव सु, तेहनइ जय जयकार ॥३१२॥

कलस

सवत सोल बिहासी वरषे, पोष सुदी एकादशी ।
गुरूवार कृतिका तणइ योगिइ, कीधऊ दिम उल्हसीं ॥३१३॥
श्री रत्नसीह गणि गच्छ नायक, नेमि जिम सम स्वांमिए ।
तास प्रसादिइ रास रचीउ, खेडावारे ग्रामिए ॥३१४॥
देव जिनवर साधु सहिगुरू, दया धरम आराधिइ ।
वैरागी नारायण जपइ, मुगित मारग साधिइ ॥३१५॥

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

(३०) **नसीतनामो** । रचयिता-अज्ञात । आकार-६″×४′८″ । पत्र-संयख्श ७ । रचना गद्य में है । प्रति पृष्ठ पर १० पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति मे १४-१५ अक्षर हैं । लिपिकाल-संवत १६०१ । लिपिकार-गोपालजी ।

आदि भाग-

दुपाजी पुछे। मुला कहै। श्री दली मीतर की बांणी। नीसाणि। पुछ्यो-बसत केसी प्रमांणीय। कह्यो-देतां कुसाली रहे। पुछ्यो-कोन बाजा सु जीव पोषीय। कह्यो-धरम सु। बुध का विचार सु। पुछ्यो-कोन बात जाकु लोग ढुडे। कह्यो-तीन बात सु। पहले तो देह नरोगी। पछे कुसली रहे तीजी मत्र हेत कारी। कह्यो-मलाई तो करनी। बुराई सु दूर रहणा। पुछ्यो-गुण करता श्रोगुण होई सो कोन। कह्यो-दे' न पाछो मागता। पुछ्यो-कोन बात सु दूल कु बधावे। कह्यो-धरम सु सांच सु॥

अंतिम भाग-

मजमान आगे अपने घर की हकीकत ना कीजे। और लड़ाई अपने घर पै नां लीजे। असो-काम कीजै सु अपने घर म्हां कुसाली रहै। जो काम करो जो पचा प्रमाणो पूछ के कीजै। सब की ईजत राखी जै। तब अपनी ईजत रहै। राजा की महरबानी ऊपर गुमान लाईजे नहीं। पराये घर भोजन वना आदर कीजे नहीं। भूखा कु अवस दीजै। घर को दुख का सु कहणों नहीं। क्यू। बदतो हुव तो लोग लागु। घट तो हुव तो मरम जावै। मरदु का देवाला मुवा नीसरता है। यो नसीतनामो सत समजसी ज्यो सुख पावमी सही॥

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(३१) **नासकेत की कथा**। रचयिता- अर्जुन नागा। यह भी १३७ सतो के संग्रह वाले गुटके से लिया गया है। इसमें कुल १२५ पत्र हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तियां और प्रति पंक्ति में ३७ अक्षर हैं। रचयिता ने इस ग्रन्थ मे 'नासिकेतोपाख्यान' का २०६२ दोहा--चौपाइयों मे भाषानुवाद किया है। संवत १७५१ पोष ८ गुरुवार को इसकी रचना आरम्भ की और सवत १७५१ फाल्गुन की प्रथम पचमी शुक्रवार को यह ग्रन्थ समाप्त किया।

आदि भाग-

दोहा

गुर गोविंद प्रणाम कर, नारद सारद सेस।
शिव सनकादिक वद कै, करू ग्रन्थ मति जेस॥ १॥
जथा शक्ति वरनन करू, धरमाधरम विचार।
सरधा स मव सिख सुनै, तरै सिन्धुमव पार॥ २॥
हरिदासन के निमित कर, कह्यो माप भगवान।
जो गा रू हिरदै धरै, होय निरजन ज्ञान॥ ३॥

सत्रहसैइक्याव्ने, पोष अष्टमी जान ।
सुरगुरवार विचार कैं, आरम्भ कर दिन मान ॥ ४ ॥

[बड़ा रामद्वारा, उदयपुर]

(३२) **नासकेत पुराण** । भाषाकार-नंददास । आकार-३·२" × २·५"। पत्र-संख्या-६४ । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में २४ अक्षर हैं । इसको मोहनदास ने सवत् १६२० आश्विन कृष्ण ११ सोमवार को लिपिबद्ध किया ।

आदि भाग-

आदि सस्कृति महाभाषा करि विस्तारी छै । नासकेत पुराण भाषा करि वारतीक । नंददास जो आपण सिषनै के हेतु है । सो या कथा कैसी है । सहश्र पाप कटतु है और देही बहोत पवित्र होतु है । या कथा सस्कृत पुराण वैस्यंपायन रिषि । राजा पीक्षत को पुत्र । राज जनमैजै कों कथा कहीतु है । राजा जनमैजै या कथा सुणी । परम गति कों पाया है ।

अन्तिम भाग-

राजा जनमैजै विवाण चढि करि । परम पद कों पाय वैकुंठ को प्रापति भयो है। वैस्यपायन रिषि आपणे आश्रम आयो है । ये कथा आदि है । स्वामी नंददास । आपण मित्र ने भाषा करि सुणाई छै । सो यह कथा महा अमृत है ।

[प्रयागदासजी का स्थल, उदयपुर]

(३३) **नासकेत भाषा** । रचयिता-चरनदास । आकार-१५" × ६" । पत्र-संख्या-७४ । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १६ पंक्तिया और प्रति पंक्ति में १८ अक्षर हैं । इसको मेवाड़ निवासी दाधीच ब्राह्मण सीताराम के पुत्र सुखदेव ने कार्तिक सुद २ संवत् १६३५ में कपासन मे लिपिबद्ध किया—

आदि भाग-

दुहा

जै जै श्री व्यासजी, जै जै गुरु सुख देव ।
तुहन कृपा सूं कहत हूं, नासकेत को भेव ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

दुहा

नासकेत ऐसी कथा, जैसा धरम जिहाज ।
जनमेजय तापै चढा, कष्ट गये सब भाज ॥

षेवटिया जहां व्यास से, वचन बाद ही वान ।
जगत सिंधु सम जानिये, धर्म जिहाज पिछान ॥

× × ×

बाण अनिमिख अरू नद महि, विक्रम सवत मान ।
कार्तिक सुद दुतिया रवी, ग्रथ सपूरन जांन ।
पुस्तक प्यारा प्रान सु, और हिया का हार ।
रहो जहीं लग राखियो, पुस्तक ही सो प्यार ॥

[अन्ताणी संग्रह, उदयपुर]

(३४) **नासकेत भाषा** । रचियता–दयाल । इस ग्रन्थ की दो प्रतियां हैं। दोनों ही सचित्र हैं। चित्र मुगल शैली के हैं। एक प्रति में पूरे पृष्ठ पर चित्र है और दूसरी ओर मूल पाठ है। दूसरी प्रति में दोनों पृष्ठों पर छोटे तथा बड़े चित्र हैं जो वीच वीच में चित्रित हैं। प्रत्येक पत्र चित्र पर लिखित प्रसंगानुसार खिंचे हुए हैं। ये चित्र कई रंगों के हैं। हम यहां दूसरी प्रति का ही विवरण देंगे, क्योंकि कथा में कोई अंतर नहीं है और दोनों का रचियता एक ही है।

आकार–१६" × ११'५"। इसके प्रत्येक पृष्ठ पर बीच बीच में चित्र आ जाने के कारण कहीं ६ कहीं २० और कहीं २२ पंक्तियां है और प्रति पक्ति में इसी कारण ४६, ४८ और ५० अक्षर हैं। पूरे ग्रन्थ में ७७८ चौपाई ४ कवित्त (श्लोक१००७ ?) हैं। संवत् १७२४ फालगुन शुक्ल पक्ष में इस ग्रन्थ की रचना समाप्त हुई।

आदि भाग–

दोहा

श्री गुरु श्री हरि सत सव, रुषिजन नाऊँसीस ।
गिरजा जनपति सारदा, ऐ विद्या के ईस ॥ १ ॥
वाल जनन मे वीनती, कवि गुरु वदू पाय ।
सस्कृत भाषा करूँ, हे प्रभु करो सहाय ॥ २ ॥

चौपई

राजा जनमेजे वरू मागी, पुन्य समही पाप को त्यागी ।
गगा तट जगि आश्रम कीयो, द्वादस बरस नेम व्रत लीयो ॥ ३ ॥

तहाँ जुरे हैं रिष समाजा, पद बदे जनमेजे राजा ।
वैसंपाइन मुनी समाजा, व्यास सिप्य परिपूरण काजा ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

दोहा

ससकृत श्लोक हैं, सुगम सुभापा कीन ।
जगनाथ आग्या दई, दयाल सीस धर लीन ॥ १२५ ॥
धरि विधि अच्चर मातरा, आराथऊ सुधि (न) होइ ।
वाल बुधि मम जांनि सव, छिमा करो मुनि सोइ ॥ १२६ ॥
सितर सात'रू सात सै, दोहा चौपई जांनि ।
च्यारि कवित्त पुन और मनि, नासकेत आख्यान ॥ १२७ ॥
श्लोक बीसा गन करे, सख्या एक हजार ।
पुनि सात ऊपर जानिए, नासकेत विसतार ॥ १२८ ॥
सवत सत्रा से गए, ऊपरि पुनि चौबीस ।
फागण सुद तिथि सुक्ल पच्च, पूरण ग्रन्थ सुदीस ॥ १२६ ॥
सत गुर सतन की क्रिपा, भाण्य ऊन उपदेस ।
जो श्रवणि नीकै करै, ताकै मिटै सदेस ॥ १३० ॥
बकता मन दिढ राखि करि, बकै ग्रन्थ के बैन ।
श्रोता सुनि निश्चै करै, तव ही तिनकू चैन ॥ १३१ ॥

[वडा रामद्वारा, उदयपुर]

(३५) **निसांणी आगम री ।** रचियता-पं० जगन्नाथ । यह रचना एक ८" × ५" आकार वाले ६ रचनाओं के संग्रह में है । इसमें २ पत्र हैं । प्रत्येक पत्र पर १४ पक्तियाँ और प्रति पक्ति में २५-२६ अच्चर हैं । पद्य-संख्या २६ हैं ।

आदि भाग-

आघा तीज अठागू ऐ, आगम पाचा दीह ।
पाजूरा पुरमाण अ्, गू ही ज वीली जीह ॥ १ ॥
सुहिणां में सुणिया सबद, मोहि पिउ कियो मन्न ।
जांणु घर उजड हूसी, वसती हूसी वन्न ॥ २ ॥

पुलसी कोधर पष में, कोइक खंडसी काल ।
उलटि चलेसी आदमी, बांधे तकिया बाल ।। ३ ।।
कहतां समो करवरो, ऽवैकारा रो बींद ।
मान नीरदां बूदिसी, गढ मोलिसी गइ द ।। ४ ।।

अन्तिम भाग

तुरकां कध मडोवरो, दाण वनिक दातौऽ ।
जेतीधर ऊअरां, तेतीं सुहाणां तौऽ ।। २३ ।।
एती आण वरतावसी, राठो वध राणैंऽ ।
को भणियो को सावणी, को आगम जाणैंऽ ।। २४ ।।
आंकां उछल पाछल का, आई ढुकियां ठाणैंऽ ।
एवायक उला नहीं, पेला ऊहमाणैंऽ ।। २५ ।।
खेला पाछू कहै जी, हवोली ठाणैं ।
होसी हो ठाकुरे दिल्ली हिंदू आणैंऽऽ ।। २६ ।।

[अन्ताणी संग्रह, उदयपुर]

(३६) **नेमिनाथ रास** । रचयिता–पुण्यरतन । आकार–६´४″ × ४´२″ । पत्र-संख्या ५ । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २८ । ३४ अक्षर हैं । इसमें लिपि प्राचीन पाटी की होने से मात्राएँ पीछे की ओर लगीं हैं । पद्य-संख्या १६५ ।

आदि भाग–

सारद पाय पणमी करी, नेमि तणा गुण होइ धरेविं कि ।
रास भणू रूलीयामणउ, गुण गिरू आगा इसू सषेवकि ।
हु बलिहारी यादवा ।। १ ।। द्रुपद (ध्रूपद) ।
एक सर उरध पाछु वालिकि, मइ अपराध न को कीउ ।
कांइ ठोडइ नव योव्रन बालिकि, राजलि प्रीऊ प्रति इम भणाइ ।। २ ।।
सोरीपुर सोहामणउ, राजा समुद्र विजय तु ठामकि ।
शिवादिवि राणी तस तण, अणुपम रूपि ंभ समाण कि ।। ३ ।।

अन्तिम भाग–

चुपन दिवस नि अतरि, आश्विनि तणी अमावसि जाणकि ।
रैवत सिपर व्रर पापनी, जिनवर पाम्यु केवल न्यांनकि ।। ६२ ।।

संपि म पाली सातसि, सहस वर सतुपुरी आउ कि ।
असाढि सुदि अष्टमी, मुगति पहुता यादव राइ कि ॥ ६३ ॥
प्रहि उठी नित प्रणमीइ, श्रीयादव मडण गिरिनारि कि ।
मन वाछित फल ते लहि, हरखि जे गाई नर नारि कि ॥ ६४ ॥
समुद्र विजय तनु गुण निल, सेव करइ जसु सुर वृ दकि ।
पुन्य रतन मुनि इय मणि, श्री सघ सु प्रसन्ता नमि जिणद कि ॥ ६५ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(३७) पद्मावती नी वार्त्ता । रचयिता-सामलदास । आकार ७" × ५'५" पत्र-संख्या ८६ ।

प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तिया और प्रति पंक्ति में १२-१३ अक्षर अधिक जमे हुऐ और साफ नहीं है पर पढे जा सकते हैं । ६५८ पद्यों की यह वार्ता त्रिभुवन त्रिवाड़ी द्वारा संवत् १६१८ बेसाख विद ३० बुधवार को लिपिबद्ध की गई । इसकी भाषा वागड़ी है, जो दक्षिणी मेवाडी का एक अंग है । इसमें चंपावती नगरी के राज कुमार पुष्पसेन्य तथा कुन्तलपुर की राजकुमारी पद्मावती के प्रेम और विवाह का वर्णन है । रचना सरल, सरस और सुन्दर है ।

आदि भाग–

दोहरो

परधम समरू ं सारदा, आपो एक पसाअ ।
वरदो मुज वर दाअनी, सुम मती आओ माय ॥ १ ॥

\+ + +

कल्प वृक्ष कवि राजवी, पूरो मननी आस ।
वहुकर जोडी वरणये, कहे कवि सांमलदास ॥ ४ ॥

\+ + +

आख्यान कहूँ पद्मावती, सती सिरोमणी जेह ।
पुप्प सेन्य राजा ने वरी, वरणव करुहु तेह ॥ ६ ॥

\+ + +

चतुर नगर चपावती, (तिनो) चपक सेन्य राजन ।
(तेने) पटराणी पुप्पावती,(तिनी) पुप्पसेन्य ऐक तन ॥ ८ ॥

अन्तिम भाग–

दोहरो

सोमल मरे रो वरणवु , पुष्प सैन्य आख्यान ।
गाय् सीखे ने सांमले, तीने गगातु स्नान ॥ १ ॥
सतवादी जेराय ने, गाय सुणे नहीं माय ।
वी जोग मोगे तेहना, यासा पूरण थाय ॥ २ ॥
राजो राणी जम मला, पोती मननी हांम ।
जो कोई सीखे सांमले, (तिलु) अंबा पूरे कांम ॥ ३ ॥
सेवक छे अबा तणो, सौ कविउ केरो दास ।
भ्रामण चारण भाट ने, नसी करू पुरो अभ्यास ॥ ४ ॥
खोटमदे सोजन क्वी, सौ कोनो हु रांक ।
जांणे अंजाणे जे करू, क्षमा करो मुझ वांक ॥ ५ ॥
क्वीरी कई ई वारता, कान्य सुण जो सोय ।
श्रोतां जन सौ सांमलो, श्री हरी को सौ कोय ॥ ॥६ ॥

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(३८) **परदेसी राजा री चोपाई** । रचयिता–अज्ञात । पत्र–संख्या ३१ । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति २६-३३ अक्षर हैं । पद्य–सख्या ४५६ । लिपिकाल–संवत् १६३१ मिति आषाढ विद् १२ ।

आदि भाग–

संघ प्रदेसीरायनी, राय प्रसेणी माहि !
तिण अणुसारै हु कहु, सांमल ज्यो चित नाहि ॥ १ ॥
आमल कप्पा नगरी, (तिहाँ) अव साल ना राग ।
तिहाँ श्री वीर समोसरया, भव जीरा रै माग ॥ २ ॥
खबर हुई नगरी मझे, लोग वांदण जाय ।
सेनराय जीपी आवीयो, सेव करे चित लाय ॥ ३ ॥
च्यार जात रा देवता, आया वंदण नै काज ।
ल ल नै लटका करै, धन दीहाडा आज ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

परदेसी ना सीध कही रे, भगत भाव विचारी रे ।
जो कोई साधु पढे तिणकुं, वनणा हमारी रे ॥ १४ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(३६) **पांडव यशेन्दु चन्द्रिका** । रचयिता-स्वरूपदास । आकार-८'५"×१०'६" । पत्र-संख्या-१६३ । प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में २०-२१ अक्षर हैं । पद्य-संख्या ११६७ (१६ मयूख) लिपिकाल-संवत्-१६१७ कार्तिक कृष्णा ३ गुरुवार । लिपिकार-वैष्णव नरसिंघदास ।

आदि भाग-

अथ रसालकृत बोधिनी पाडव यशेन्दु चंद्रिका
दुहा

ध्यान कीर्तन वदना, त्रिविध मगलाचर्न ।
प्रथम अनुष्टप वीच सोइ, भये त्रिधा सुध कर्ण ॥ १ ॥
नमो अनन्त ब्रह्माण्ड के, सुर-भूप नकेभूप ।
पांडव-यशेन्दु-चन्द्रिका, वरनत दास सरूप ॥ २ ॥
स्वामी के पीछै रहै, आदि होय उच्चार ।
नर नारायन सब्द कु, दास स्वरूप विचार ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

तति कीनी ह्येये चन्द्रिका, मेरी मति अनुमान ।
मक्त सग अरु मक्ति कों, देहु कृपानिधि दान ॥ ५५ ॥
पगुल गूगो रोग जुत, बनि कछु धातुर जीव ।
मय श्रुत वालक त्रिया अलप (?), सुनत अनाथ सदीव ॥ ५६ ॥

कवित्त

ज्ञान ओ विराग दोउ पांन विनाहू पगू,
मक्ति रस न तिहिन गूग हूँ निहारोगे ।
त्रिधा ताप रोगी कर्म वानी-जव निकट्ट मैं,
भूखो दस धाको केउ जन्म को विचारोगे ॥
काल मित वाल वुधि आतमा है अवलाओ,

अध तत्व अजन हूँ विनाहू नेक धारोगे ।
एक अग के अनाथ ताकि विषे सूने हाथ,
आदि अंत में अनाथ नाथ का विसारोगे ॥ ५७ ॥

छप्पय

पगु कुबज्या सपाति, गू ग ज मला अर्जुन गावत ।
रोगी माधवदास, वनिक, तरि लोचन धावत ॥
छुधित सुदामा विप्र, नित जुत व्रज की भामिनि ।
बालक ध्रुव प्रहलाद, अबल द्रुपदादिक कामिनि ॥
है अध सूरलौं हम सुने, हाथ विकें तिन्ह के हरि ।
॥ ५८ ॥

दूहा

रस'रू अलकृत ग्रथ में, लिखे नाहि इहभाय ।
समझहि बुधि जिन बितु लिखे, अबध लिखें न लखाय ॥ ५९ ॥
पिंगल डिंगल ससकृत, सब समझन के काज ।
मिश्रत सी भाषा धरी, छिमा करिहु कविराज ॥ ६० ॥

सोरठो

नृप रस को वलुतीक, भूषित बुनि अधिक भये ।
दूपन खर नजदीक, मारवाह मेटहि कि मा (?) ॥ ६१ ॥

इसका पाठ वहुत अशुद्ध है ।

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(४०) **फूलजी फूलमती री वार्ता** । रचयिता–मछापुरी, जोधपुरी ।

आकार–११" × ६" । पत्र-सख्या २३ । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पक्तियाँ और प्रति पंक्ति मे २४ अक्षर है । सवत् १८५२ चेत्र शुक्ल ६, रविवार को इसकी रचना हुई । इसमे उदयपुर राज्यान्तर्गत भटेसरी के लक्षपति सेठ गंगाराम की बेटी फूलमती की सगाई, उदयपुर में सामजीराम के बेटे मोहन से होती है। पर फूलमती एक अन्य व्यक्ति फूलजी से प्रेम करने लगती है। इन्हीं दोनों की प्रेम कहानी मारवाडी भाषा मे वार्ता के रूप मे दी गई है । पद्य इसमें केवल २३ ही है, परन्तु मारी प्रति कई रगो के चित्रों से सचित्र है ।

आदि भाग-

दुहा

समरू देवी सारदा, गवरी पुत्र गनेश ।
निमस्कार शिव कु करूँ, ब्रह्मा विसणु महेस ॥ १ ॥

वारता

श्री ऊदेपुर में सीसोदीयो राणों राजसींघजी राज करै छे । वड़ो जोरावर छै । राजसींग री वार में भदेसरी नगर सेठ गंगाराम रहे छै । वड़ो दोलतवत सखेश्वरी धरमानमा छै । तिणरे वेटी फूलमती मोटी हुई । तिणरी सगाई सांमजीराम रा वेटा मोच सु कीवी छै । सेहर उदेपुर माही ज कीधी । ओ पण रूप रो निधान छै ।

अन्तिम भाग-

वारता

पाटवी कुवर उदेसींघ ने परा मराया । तरे ए समाचार फुलजी सुणीया सो घणो फीक्र कीनो । पछे राणांजी ने मुजरो करण गया । मुजरो कीधो । राणेजी लाष दोय रो पटो दीनो । ने धीरप देने ऊदेपुर राखीया । फुलजी फुलमती जीवीया । जठा ताई घणो सनेह राखीयो ।

दुहा

अरज हमारी मानने, वात करी विग्यात ।
आग्या सु कीनी कथा, माता तेरे दास ॥ २२ ॥
मह्मापूरी मातजी, बगे जोधपुर वास ।
जिहा शकर के सीस पर, सदा रहत हे चांद ॥ २३ ॥

[अन्ताणी सग्रह, उदयपुर]

(४१) **बुढला री ढालाॅ** । रचयिता-मोतीचंद 'चंद' । आकार-१०" × ४'६" । पत्र-सख्या ७ । सर्व ढाल २२ । रचना काल-१८३६ । विषय-एक धनलोलुप पिता अपनी पुत्री को किसी बूढ़े के साथ व्याह देता है, उसकी करुण कहानी । भाषा-मारवाड़ी ।

आदि भाग-

दुहा

दया 'ज माता वीनवू, गणधर लागू पाय ।
वर्द्धमान चोवसमा, वादू सीस नमाय ॥ १ ॥
कन्या ने जमी तणो, पइसो न लीजै कोय ।
बूढा नै परणावतां, गुण बूढा रा जोय ॥ २ ॥

ढाल-इण पुर कवल कोइ न लेसी ॥
पर देस सुं एक सेठ 'ज आयो ॥
धन कमाय 'र बोहलो ल्यायो ॥
रुपीया नवसै आकरा लीया ॥
मटा लागिण पाछा दीया ॥
सबरे लगने साहो सुजावै ॥
घर सारू वले जान बुलावै ॥
वीन वीनरो दूज्यो भाई ॥
तीजो मोजग चोथो नाई ॥

अन्तिम भाग-

मा कहैं सुण है बेटी, मम करो याँ सू बाद ।
यां रां हुकम मे रहो, करो जीव री साद ॥ १ ॥
बालक ने परणी सू तो ले गयो काल ।
बूढा नै परणी हालरी, यो हुलराव मावार ॥ २ ॥
कहुँ मन मै धरस्यो राग ।
थारो क्यूँ ही नहीं बिगड्यो वेटी गज पतला भाग । ढाल ।
वेटी थारे माथे रो मोड़ो । तोनै इण वीन फिसड़ी ठोड़ो ॥
इण सुहाग सु हु धाई । सामायक कर स्यू सहाई ॥
मारी नव तत्व हिरदै धरस्यु । तपस्या ने पोसो करस्यु ॥
घर सारू दान हु देस्यु । मन मान्या कारज करस्यु ॥
सवत १८३६मै आणी । मगसर मास ए जाणी ॥
'चद' परतिम्व देस वखाणी । सुणो कलजुग री नीसाणी ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(४२) **बूढ़या रासो** । रचियता-मोतीचद 'चंद' । आकार-१०" × ५'५"

इसमे कुल ११ पत्र हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियाँ और प्रति पक्ति में २१। २५ तक अक्षर हैं। लिपि जमी हुई नहीं है पर लिखावट जैन पाटी की ही है। कुल १०८ छंदों में यह ग्रंथ समाप्त हुआ है। रचियता का यह मूल ग्रन्थ ज्ञात होता है। इसका रचना काल तथा लिपिकाल संवत् १८४५ मिगसर मास है।

आदि भाग-

दूहा

जबू द्वीपना भरत मा, दुषमी पच में काल ।
धनि होई तो घर नहीं, घर हूै तो नहि नारि ॥ १ ॥
निरधन के वेटी हुई मन में हरषित थाइ ।
थाई जी मोटी हुवै, तो म्हारा घर नो दालिद जाइ ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

वैन कहै सुणों वाई । चिंता मन में म करो भाई ।
वाप रुपीया सू चित लाई । तो वूढा ने परणाई ॥ १ ॥
तपस्या करि लाह्वा लेस्यु । घर सरू दान ज देस्यु
समत अठारै पैंतालीसैं आणी । मृगसर मासैं ज जांणी ॥ ८ ॥
मोतीचद कहै माई । वाई थे सो धरम विना एक माई ।
मोतीचद ग्रतक मर्षाणी । या कलियुग की नीसाणी

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(४३) **भटियाणी की वार्ता** । रचियता-अज्ञात । आकार-१०¼" × ६३"

पत्र संख्या-६। इसके प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २३ अक्षर हैं। यह रचना गीतों में लिखित है। इसमें किसी भटियाणी का विरह वर्णन है।

आदि भाग-

मामी ने भटियाणी कागद मोकल्यारे ।
मोकमसिंघ । अेके वार उदेपुर आव ।
छोगा राजीअो । अेके वार उढेपुर आव ॥

वारी वारी कागद कही मोकलो रे ।
मामज मारेवती आयद्व न जाय ॥

अन्तिम भाग–

ज्ञान री वाता नहीं करे रे मोकल सींघ,
ममता में वीया जाया । छोगा
हाथे पले कही आवे नहीं रे मोकम सिंघ,
अणगणती राखार । छोगा
वेणी वे ज्यो होसी । मोकमसींघ,
ईश्वर धारे जो होयगा । छोगा

[अन्ताणी संग्रह]

(४४) **भावनावेलि** । रचयिता–जससोमविबुद्ध । आकार–१०.४″×४.३″ । पद्य संख्या–१०७ । पत्र-संख्या ४ । लिपिकला-संवत् १७६० मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष ७ कर्म्मवाश्री, लिखतं पलागा मध्ये ।

आदि भाग–

दूहा

पास जिणेसर पय नमी, सह गुरु तई आधार ।
भवियण जण ने हित भणी, भणस्यु भावन वार ॥ १ ॥
प्रथम अनत्व असरण पणु, एह ससार विचार ।
एक्लपण अनत्व तिम, अशचि आसव ससार ॥ २ ॥

अन्तिम भाग– (तथा रचनाकाल)

दूहा

भोजन नम गुण वरस सुचि, सत हे सरि कुजवार ।
मगते हेज भवन मणि, जेम लमेर मझार ॥ ५ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मदिर, उदयपुर]

(४५) **भुवन भानु केवली** । रचयिता–अज्ञात । लिपिकाल–संवत् १८१७ ।

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

(४६) **मंगल कलश** । रचयिता-मेघविजय । आकार-१०″×४'२″ पत्र-संख्या ३० । पद्य-संख्या ६०८ । लिपिकाल-संवत् १८१६ ।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(४७) **मदननरिन्द चरित** । रचयिता-दयासागर । आकार-६'४″×४'४″ । पत्र-सख्या ३७। पद्य-संख्या ५६५ । रचनाकाल-१६१६, आसोज सुदी १०, गुरुवार। इसीका दूसरा नाम 'मदनराज ऋषि नी चउपइ' है।

आदि भाग-

आदि जिणेसर अतुल बल, शातिनाथ सुखकार ।
नेमि पास प्रणमु सदा, वीर विनय भडार ॥ १ ॥
जिन वदना बुज-वासिनी, गौर वरण गुण गेह ।
ते सरसति समरू सदा, वचन रूप जसु देह ॥ २ ॥
मुझ्क तनु घर मांहिं किऊ, ज्ञान दीप जिणसार ।
ते सदगुरु नइ हु सदा, जुगतइ करूँ जुहार ॥ ३ ॥
सुकवि तणी अनुमति लही, शीलतणइ अधिकारि ।
मदन नरिंद तणु चरित इ, विरचि सुमति सार ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

मदन महीपति चरित विचार । बोलिउ शील तणि अधिकारि ॥
जे नर शील सदा मनि धरइं । शिव रमणी ते निश्चइं वरइं ॥ ५६ ॥
श्री अचल गछि उदधि समांण । सघ रयण केरउ अहि ठांण ॥
उदउ तास पधारण चद ! श्री धरम मूर्ति सूरीश मुणिंद ॥ ६० ॥
अचारिज श्री गुरु कल्यांण । सागर सागर सम गुण नांण ॥
ताम पत्ति महिमा भडार । पडित भीमरतन अणगार ॥ ६१ ॥
तास विनेय विनय गुण गेह । उदय समुद्र सु गुरु स सनेह ॥
तास सीस आणदइ घणइ । श्री दयासागर वाचक इम भणइ ॥ ६२ ॥
गुरु भाई लहुडउ ऋषि देव । विनयवंत सारइ मिति सेव ॥
आदरि तेह तणइ ए पई । मदनराज ऋषिनी चउपई ॥ ६३ ॥

दूहा

मदन शतक का दूहड़ा, एकोतरमो सार ।
मदन नरिंद तणु चरित, मइ विरच्यु विरतारि ॥ ६४ ॥

सोलहसय उठाणोतरइ', पुर जालोर मझारि ।
आसो सुदि दशमि मइ' कीऊ, कथाबंध गुरुवारि ॥ ६५ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(४८) **मयणरेहा** । रचयिता-हर सेवक । आकार-१०.२"×४.५" । पत्र-संख्या-६ । पद्य-संख्या १५७ । लिपिकाल-संवत् १८७८ । विषय-जैन-जीवन चरित्र ।

आदि भाग-

जुवो मांश दारू थकी, करे वेश्या सू जोप ।
जीव हिंस्या चोरी करै, पर नारी ने दोप ॥ १ ॥

\+ + +

जबू द्वीप नै भरत खेतर में नगर सुदर्शन मारी ।
धन सम्पूरण देखत मदर रैत सुखी राजारी ॥ ५ ॥
मरणेथ राजा रै धरणी रांणी रिद्ध तणों विस्तारो ।
मनरथ राजा रे जुग बाहु माई माहो माहि छे घारो ॥ ६ ॥

अन्तिम भाग-

युग बाहू नै मयण रेहा राणी युगवल्लभ लघु माई ।
च्यारां रा तो कारिज सरीगा मणरथ दुरगति माहीं ॥ ५४ ॥
एक कुविल्ल मणरथ सेव्यो दुख पायो ससारो ।
सात कुविल्ल सेवे प्रांणी जिण रा दुख छै अपारो ॥ ५५ ॥
विसन सातमो पर नारी रो जीव घात घर हांणी ।
मणरथ राजा नारकी पोहतो कुजस बांध्यो प्रांणी ॥ ५६ ॥
विषया-रस तो विष जाण नै सद गुर सेवा कीजो ।
मणरथ राजा री वात सुणी नै पर नारी त्यागी जो ॥ ५७ ॥

(मेडता मध्यै)

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(४६) **महिपाल नरेन्द्र चरित** । रचयिता–विनयचंद । आकार–१०·२″×४·६″ । पत्र-संख्या १८७ । पद्य-संख्या ३६२७ ।

आदि भाग–

श्री नाभेय युगाजि जिन, प्रथम नरेश्वर पाय ।
प्रणमु मन वच काय सुं, संसेवित सुरसाय ॥ १ ॥
मारू देव मनमथ मथन, कथन गुणां की राशि ।
सूशमो तु थे सरस, पोहचे नाहि प्रयासि ॥ २ ॥
ऋषभदेव असरण सरण, पूरण सकल जगीस ।
केवलदरसण ज्ञानमय, तीन भुवन के ईश ॥ ३ ॥
शासन नायक सुखकरण, सुर गिरि सम प्रभू धीर ।
प्रणमू जगनायक सदा, मति दायक महावीर ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग–

जयो जगत जीवराज गुरवर केवली धर्म प्रकासियो ।
धनराज धन सुम राय ऋषिवर स्याम आगम भासियो ॥
तास चद्र अनु प मुनिवर शिष्य विनय या भणी ।
चोपई महिपाल मुनि नी श्री सघ रग वधामणी ॥ १ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(५०) **मानतुंग मानवती रास** । रचयिता–मोहनविजय । आकार–६″×४″ । पत्र-संख्या ३६ । प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३४ अक्षर हैं । लिपिकाल–सवत् १८५१ वर्षे पोष वदी ४ दिने श्री ।

आदि भाग–

ऋषभ जिणद पदांबूजे, मन मधुकर करि लीन ।
आगम गुण सौरस वर अति आदर थी लीन ॥ १ ॥
यान पात्र सम जिन वरू, तारण भवनिधि तोय ।
आप तर्यां तारे अवर, तेन प्रणमति होय ॥ २ ॥
भावे प्रणमु भारती, वरदाता सुविलास ।
बावन अक्षर थी भरयो, अखय खजानो जास ॥ ३ ॥

शुक्र करथा के गनि यकी, एहवी जेहनी शक्ति ।
किम मुक्खामें तेहनइ', पदनी कोविद गक्ति ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

राज ऋद्धि गृहदास तणां सुख ते सुहिणां न निहारे हैं ।
जिम अहि कचुर्कां विरमी अलगी जिम सफरी नैन निहारे है ॥
मानतु ग जिमि ऋषि मानवती तिमि कोहादिक ने गे हे हैं ।
करे विहार जिन नल्पी भविगण ने पडि बोहे हैं ॥
अनुक्रमे सासतणी सलेखण करीने वेहू गह गहता है ।
सय रे तेतीसमे आयु समये सर्वार्थ सिद्धे पूहता हैं ॥
तिहा थी पिणतें विहूँ न चव सें महा विदेहे अवतरस्ये हैं ।
॥

प्पका-

श्रीविजयसेन सूरीय सेवक कीर्तिविज उवझाया है ।
तत्सीस सजम गुण लीला मानविजय वधुराया हैं ॥
तास सीस पडित मु गटा मणि रूप विजय कविराया हैं ।
तास चरण करूणा थी करी नें अक्षर गुण मे गाया हैं ॥
अणहिलपुर पट्टन में रहिने मानवती गु ण गाया हैं ।
दुर्गादास राठोड़ ने राज्ये आनद अधिक उपाया हैं ॥
सड़तालीस ढाले करी ने कीधीरास रसाला हो ।
मोहन विजय कहे नित होज्यो घरि घरि मगलमाला हो ॥

[माणिक्य ग्रंथ भण्डार, भींडर]

(५१) **मुनियति चरित्र कथा** । रचयिता-सांखभद्र। आकार-१०" × ४"। पत्र-संख्या २४ । प्रत्येक पृष्ठ पर १४-१५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३८-४० अक्षर हैं । पद्य-संख्या ५७३ । रचनाकाल-संवत १५५० वैशाख कृष्ण सप्तमी रविवार।

आदि भाग-

गागाय मग धर पाय पणमेवि नामि नवनिधि सपजइ ।
सयल सिद्धि सेवकह आपइ ॥

एक मना जे उलगि धरइ ध्यांन तस्स लचथि आपई ।

॥ १ ॥

बेकर जोड़ी वीनविउ, देठ मभ्क वाणि विशेष ।

बोलेसु राउ मुनिपति वरी, कथा बध सुविशेष ॥ २ ॥

अन्तिम भाग–

करइ सवि अति पश्चाताप । दीधू आलसहुस्यइ मुझ पाप ।

लाजिउ घणु हीया माहि तेह । मव बधन सु नहिं सदेह ॥ २ ॥

थयो वैराग सेविनइ घणु । करसु काज हवइ आपणु ।

घणउ महोच्छव तिणि कीधी । रिषि मुनिपति नइ दक्षा दीधी ॥३॥

बेहू मुनिवर करइ विहार । पालइ पच महाव्रत मार ।

धर्म-ध्यानि तपि सोसीदेह देव लोक नइ गया बेह ॥ ४ ॥

तेहनु ध्यांन हीया माहि आण । बेहुए एकावतारी जांण ।

मुगति पथि ते जाइ वही । सणउ कथा सांत्वभद्र कही ॥ ५ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(५२) **मेतारज मुनि चरित्र कथा।** रचयिता–चौथमल । आकार–६.६″×४.४″ । पत्र–संख्या ६ । रचनाकाल–संवत् १८६२ असाढ़ विद् १३ । पद्य–संख्या २०१ ।

आदि भाग–

समरू मासण रा धणी, पो उगते सूर ।

अनत चोवीसी वांदतां, जन्म–मर्ण जाय दूर ॥ १ ॥

श्री श्रीमदर आदि दे, जेवता जगदीस ।

केवल ग्यानी साधने, सदा नमाउ सीस ॥ २ ॥

चोखो चारित्र पालतां, करे दुगछा कोय ।

मेतारज मुनी नी परे, नीच गत फल होय ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग–

तप जप कर सुध गत गयो, नेट जासी नीरवाण ।

आवागमन मेटायने, जनम मरण कर हाण ॥ ६ ॥

अक्षर हैं। पद्य-संख्या १७१। इसमें किसी चोर वक्रचूल नाम के राजा के यहाँ चार साधुओं के ठहरने, उनका राजा द्वारा पहले सम्मान न होना, फिर इसके लिये राजा द्वारा क्षमा याचना आदि का वर्णन है। रचना सामान्य कोटि की है।

रचनाकाल -१७५० के उत्तरार्द्ध की अनुमानित।

आदि भाग-

गुर प्रमेस्वर कौं गु प्रनाम। बरनों कथा धरम सुख धाम ॥
करौं चौपाई रहि समभाऊं। सब को मन आनद बढाउँ ॥ १ ॥
सिव बिरचि नारद सनकादिक। बदौं कल्प सुदत सुकादिक ॥
सकल साध जे है निज सत। नमो तास को भगतिअनत ॥ २ ॥
एक प्रसग कहू अब सोई। साध सगति को सो फल होई ॥
राजा एक चोर बक्चूल। ताके बिबिध भाति की मूल ॥ ३ ॥
चारि साध पुनि आयें जहाँ। उतर आइ बाग में तहां ॥
बरिखा चतुर मास रूति आई। साध रहे यह मति ठहराई ॥ ४ ॥

अन्तिम भाग-

दोहा

राजा चोर वकचूल की बरनो सहठ विधान।
साधन के सतसग तै, पायौ पद निरवान ॥ १७० ॥
चारि बचन साधन कहे, नृपति उधारयो सोइ ॥
खेम कहै धनि धनि हुवै, नित प्रति सेवे सोइ ॥ १७१ ॥

[रोशनलालजी सामर, उदयपुर]

(४७) राजा भोज चरित्र पनरमी विद्या री वात। रचयिता-व्यास भवानीदास। आकार- ५'५"×४'२"। पत्र-सख्या ७२। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तियाँ और प्रति पक्ति में २० अक्षर है। यह वार्त्ता गद्य-पद्य मे है। पद्य-संख्या-३२६। हठीमल लोढ़ा ने इसको सवत् १८२१ जेठविद् ६, सोमवार को लिपि बद्ध किया। भाषा-राजस्थानी।

आदि भाग-

अथ राजा भोज धारा नगरी रो धणी तिणरी पनरमी विधारी वार्त्ता लिख्यते। व्यास भवानी दास कृत। दूहा, चन्द्रायण, रेखता, नीसांणी, रूपालकृत लिख्यते।

दूहा

श्री गणपत सरस्वति शिव, विसन रवी गुरदेव ।
व्यास करै अरदास प्रभु, दीजै अक्षर मैव ॥ १ ॥
अविरत वाणी आपिजै, दीजै सुबुध सुग्यान ।
त्रिया चरित वरणन करूं, धर सुम वन ....ध्यान ॥ २ ॥

अन्तिम भाग-

छप्पय

श्री महाराजा भोज, आप मैह मांतन आयो ।
सुर न हुआ आणद, प्रथी नव खंड सुहायो ॥
समिया हुआ सुगाल, काल अरीया सिर कोपै ॥
षट दरसण पोषिजै, रिधु आरोपारोपे ॥
जग जीत वात राखण, जगत पीत रीत पारख करी ।
सुण जो सुजाण नर नारियाँ, इल पर गलाँ ऊबरी ॥ १ ॥
गढ जोधाण सतोल, धांम आई त्रीलोडै ।
॥
भोज विरत जिण सुण कहयौ कविगण सुख पावै ।
व्यास भवानीदास, कवित कर वात वणावै ॥
सुणियो प्रबंध चारण प्रते, भोजराज कवि यू कहयौ ।
कलियाणदास भूपाल को, धरम–धजा–धारी थयौ ॥ २ ॥

[रोशनलाल सामर वकील, उदयपुर]

(५८) राठोड वंश की उत्पत्ति साखातेरा की ।

रचयिता–कविराव करनीदान । आकार–१५″ × ६″ । पत्र-सख्या १०८ । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर २३ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १५ अक्षर हैं । ग्रन्थ, दोहे और छप्पयों तथा अन्य कई प्रकार के छंदों में रचित है । इस प्रति को खटाडी के खडिया नरसिंगदास भेरूदासोत ने संवत् १९०७ और १९०८ के बीच में लिपिबद्ध किया । रचना डिंगल में है । पाठ बड़ा शुद्ध है ।

आदि भाग-

छन्द वेअपरी

राम पाट कुस भूप विराजे । सुज कुस पाट अनत त्रप साजे ।
स भ्रम अतत त्रप मोहत । राजा नपद पाट नम राजत ॥

अन्तिम भाग-

कवित्त

दिवस एक जयचद, वीर मीमलन वीचारी ।
जीय किया सह जेर, धरा हिन्द अत्र धारी ॥
अटक पारमो अगे, पलानह नमे विलायत ।
जवन यसे जिण मांझ, थाप अगुर अम पत ॥
ज्याहणु काय पकड़ जीयां, प्रथी वदे तण पाघरी ।
पगपां पाण ढढलु तद पत्री, पीतछ पड पुरसांणरी ॥

[अन्ताणी संग्रह, उदयपुर]

(५६) **रात्रि भोजन री चौपई** । रचयिता-सुमति हंस । आकार-९·८″×४·८″ । पत्र सख्या २१ । पद्य-संख्या ४०३ । लिपिकाल-सवत् १९१३ । रचनाकाल-संवत्- १७२३, मगसर विद ६ गाम सरसा में लिखित ।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(६०) **वल्लभाख्यात** । रचयिता-गोपालदास । आकार-७·५″×६·६″ पत्र-संख्या ११ । प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पक्तियाँ और प्रति पक्ति में १६ अक्षर हैं । पद्य-सख्या १२६ । पुस्तक जीर्ण है ।

आदि भाग-

यज पुरुष हरि श्रुति गुण गायजी ॥ १ ॥ ढाल ॥
गाए स्तुति गुण रूप अहर्निस धरें ध्यांन विचार ।
आनन्द रूप अनूप सुदर पावे नहीं कोई पार ॥ २ ॥
प्राण पति प्रगट्या कारण काई कहूँ मति मद ।
हर सुर विधाता नवल हैं, सो ज्ञात ब्रह्मानद ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

सोभा यमुना कवला देवका जेहना सात बंधु सौभाग्य रै रसना ।
एहना चरण स्मरण करी श्री विठ्ठल पद रज रति भाग्य रै रसना ॥
पुत्र पौत्र दुख किम कहुँ जो तू मुख माए करे रे रसना ।
श्री विठ्ठल कल्पद्रुम फल्यौ तेहनी साखा पररी अनेक रे रसना ॥ १४ ॥

[अन्तारणी संग्रह, उदयपुर]

(६१) **वात संग्रह** । पत्र-संख्या ३६० । प्रति सजिल्द है और सवत् १७५४ में फाल्गुन वदि ५ को आदुणिगढ़ में लिखी गई है । इसके अत में एक अपूर्ण सूची दी गई है जो महाराज वाघसिंहजी द्वारा सवत् १८३६ माह सुदी २ सोमवार को एक प्रहर दिन चढ़ते तैयार की गई । प्रति में अत्तरों की लिखावट समान नहीं हैं, कहीं अत्तर जमा कर लिखे गये हैं-कहीं नहीं । सम्पूर्ण प्रति एक ही व्यक्ति द्वारा नहीं लिखी गई । वार्ता में राजस्थानी का परिमार्जित गद्य-पद्य मिलेगा । सब का आदि अन्त न देकर यहाँ केवल विषय सूची ही दी जाती है-

१ विक्रमादीत री उतपती
२ राजा गधर्व सेन री वात
३ चोवोली राणी री वात
४ राजा सुसील री वात
५ राजा भोज री अर माघ पडित री, राणी भाणवती लछीयातैं समयै री वात ।
६ वात राजा भोज री ४ चारणां बाबत
७ वात राजा भोजरी छीपण बाबत
८ बीरोचन (द) मौहते री वात
९ राजा चद री वात
१० हरीदास चहवाण री वार्ता
११ वार्ता जेसे सरवही ये री
१२ रायघण री वार्ता
१३ पोपा बाई री वार्ता
१४ कोल्याइत रै साहरी वार्ता
१५ वार्ता श्री सूर्यजी री

१६ वार्ता राजा सालवहान री

१७ रतनमाणक साहिजादी री वार्ता

१८ वंग साहिजादे री वार्ता

१६ राजा पराक्रम सेन री वार्ता

२० वार्ता ओपाणे तणे सू मारथ हुवो तेरी

२१ ओपानेरी वार्ता

२२ रजपूत आल्हण री अर सादे वाणीये री वात

२३ दीवाली री वार्ता

२४ भाटीयारी नपा जुदी जुदी हुई तेरी वार्ता

२५ वेला छुरै री वार्ता

२६ भले बुरे री वात

२७ राजा भोज अर वाफरै चोर री वात

२८ मोरड़ी हार गिर्लायौ तैरी वात

२६ दिल्ली रै हौसनाणा री वात

३० कुवर चित्रसेण री वात

३१ पातसाह बग रे वेटे री वात

३२ लुद्रवै पाटण माहे ब्राह्मण चोरी कीवी तेरी वात

३३ अपछरानू इन्द्र सराप दीन्हो तैरी वात

३४ कुवर भूपति सेन री वात

३५ झानै साह री वात

३६ वसी ब्रह्मभाट री उतपत री वात

३७ दीन मांन रा फलां री वात

३८ वात नरबद जी री अर नृसघ सीवल री पियारदे बात्रत

३६ सिधराव जेसघदे री वात

४० राजा भोज री अर मत्र सेन री वेटी री वात

४१ वात राजा भोज री बाफरे चोरा पासा चोरी सीवी तेरी

४२ राजा भोज अर भाणवती रे वाद गी वात

४३ चार परधानां री वात

४४ वात अचलदास षीची री ऊमादे सात्रतीं परणीयौ तेरी (यह प्रथम भाग में प्रकाशित रचना से भिन्न है)

४५ तिलोक सी जस डोत री माटी री श्रर झगडे वलोच री वात

४६ राजा विजैपति री वात

४७ राव नरपतजी री वात

४८ रावल जामनू साह मिलीयो तेरी वात

४९ मोगल मेंहदरै री वात

५० राजा रो बेटो देसौटै नीसरीयो छै तेरी वार्त्ता

५१ राजा रे बेटै रै महल री वात

५२ वाघड़ै वछेरे री वात (बाघ और बछेरे री बात)

५३ पंच मार री वात

५४ चांपे सांघ री श्रर वीरे मायल री वात

५५ सिषरेई देउगड़ावत री वार्त्ता

५६ सादे मागली येरी वार्त्ता

५७ दांमो देवड़ो (श्रर) सांमो सखहीये री वात (इसके श्रंत में सं० १७५४ लेख मिलता है।)

५८ पर्यों चीते (तौ) री श्रर विजे देवड़े री वात

५९ देवसी रबारी री वात

६० वात रबारी रतन ही रहे श्रर प्रीत ही रहे

६१ काणे रजपूत री वात

६२ भलै भलो बुरे बुरो री वात

६३ वार्त्ता राजा मत्रसेन री

६४ तांत वाजी श्रर राग बूझी तेरी वात

६५ रजपूत री स्त्री री सहटी बोली तेरी वार्त्ता

६६ वांधी बुहारी री वार्त्ता

६७ सो नारी री र सुतारी री वार्त्ता

६८ वार्ता साहुकार री श्रर सूवेरी

६९ वात राजा फेरधनरी

७० राजा विजे राव री वार्त्ता

७१ सतवती री वार्त्ता

७२ वात मोरड़ी मतवाली री

७३ वात मुहतै सुमत कुंर मगलू रुपरी

७४ श्री महादेव जी पार्वती री वात

७५ साहूकार री वात

७६ साहरी स्त्री रे तपावस री वार्त्ता

७७ गाव रे धणी री वार्त्ता

७८ राजा रे बेटे री वात

७९ राजा सिंधराव जैसिंघ देव री वात (हेमचन्द्राचार्य और सिद्धराज जयसिंह)

८० कुंवरपाल पाटण रे धणीरी वार्ता

८१ कुवर साहिजादा री वात

८२ लालमेण कुवर री वार्त्ता

८३ मदन कुवर री वार्त्ता

८४ पातसाह अलावदीन री अर हमीर हटीले री वात

८५ मिहमद खान साहिजादे री वात (गजनी के पिरोशाह का बादशाह का पुत्र)

८६ सलेमखान साहिजादेरी वात

८७ सोवल साह रे बेटे री स्त्री री वात

८८ चारण मदमै (मौ) मनोहर री वात

८९ रत्न मजरी री तृतीय वार्त्ता

९० नवरत्न कुवर री वार्त्ता

९१ लूण साह री बेटी री वार्त्ता

[स्वरुपलालजी, जगदीश चोक उदयपुर]

(६२) **वैष्णव वार्ता संग्रह** । आकार-९″×७″ । पत्र अस्त व्यस्त है । इसमें ८४ तथा २५२ वैष्णवों की वार्ताएँ सम्मिलित है । इसके साथ नाभादास कृत भक्तमाल की टीका भी है । प्रति, पानी से कहीं कहीं बिगड गई है ।

[उदयसिंह भटनागर, उदयपुर]

(६३) **विक्रम चरित्रे चोबोली सती नी चउपई** । रचयिता-अभयसोम । आकार-१०.२″×४.७″ । पत्र-९ । पद्य-३३५ । रचनाकाल-सं० १७२४ । लिपिकाल-सं० १८८२ ।

आदि भाग-

वीणा पुस्तक धारिणी, हंसासन कवि साय ।
प्रह उगंतई नित नमु, सारद तोरा पाय ॥ १ ॥

हुइ पचासे बाँधियो, कोई नवो मढार ।
माथा भरिनइ काढतां, किण ही न लाधो पार ॥ २ ॥
तो हूंती नव निद्धि हुवइ, तो हूँती सहू सिद्धि ।
आज अनइ आगा लगइ, मूरख पंडित किद्धि ॥ ३ ॥
तिण तौनै समरी करी, कहि स्युं विक्रम-वात ।
मइ तो उद्यम मांडीयो, पूरो करिस्यइ मात ॥ ४ ॥
सोनइ किणनइ छेतर्यौ, मइ जग ठग्या अनेक ।
मो कलियुग नइ छेतर्यौ, राजा विक्रम एक ॥ ५ ॥
चउबोली राणी चतुर, शीलवंति सुखकार ।
विक्रम परणी जिण विधइ, कथा कहिस्यु निरधार ॥ ६ ॥

अन्तिम भाग–

च्यारे पुहर बोलो चतुर, चारे वाट सुखकार ।
कहे सवे ही सुंदरी, जय जय आणदकार १ ॥
फल्यो मणोरथ बिहुंजणा, उलसीया मन माँहिं ।
आलसूया रै आंगणै, आयो गंग प्रवाह ॥ २ ॥
जे मन राखै जेह सुं, तेहनै मिलै ज तेह ।
मुह मांग्या पसाढल्या, दूधे वूवा मेह ॥ ३ ॥
हुती एक पखी धणी, ताठी गाठी प्रीति ।
तपी विक्रम लाहोर ज्यो, जोडी करी इत चीत ॥ ४ ॥
परतग्या पूरी थई, मांहरी रही ज मांम ।
मैं जाण्यो नांही मिलै, पूरण हागे सामि ॥ ५ ॥
लीलावतीइ भठी नै, कठ ठवी वरमाल ।
ग्लीयां तोरण बांधिजै, रच्यो वीवाह रसाल ॥ ६ ॥
परणी बहू मडाण करी, पुण्य तणै परमांण ।
मन सु विक्रम हरषियो, माग फल्यो निरवाण ॥ ७ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(६४) **विक्रमसेन चतुपदी** । रचयिता-परमसागर । आकार-८" × ४'५" । पत्र संख्या-१३२ । छंद संख्या-१३०६ । लिपिकाल-सवत १६२७, कार्तिक कृष्णा ६ शनिवार । यह प्रति उपरोक्त प्रति से भिन्न है । इसकी भाषा भी जैन शैली की है ।

अन्तिम भाग-

तप गछ अवर तणी सरीयो विजयदेव गुणधारी ।
तसपाटैं सप्रत गुरु प्रतपे, श्री विजय प्रभ सुखकारी रे ॥ ६ ॥
तस गचे गुण मणि आगर, जयसागर उवझाया ।
तस पद सेवे सुर नर वृंदा, नामे नव निधि पायारे ॥ १० ॥
तास सीस पडित जिन नायक, लावण्य सागर गुरु राया ।
महियल महमा जे नो पसरयो, दिन चढत सवाया रे ॥ ११ ॥
तस पद सेवक परम सागर, कवि रचियो रास रसाल ।
भाव धरीने सुंणता रसीया, लहस्यो मगल मालरे ॥ १२ ॥
तिहां लगे चोपी थिर थाज्यो, जिंहां लगे सूरज चदा ।
राग धन्यासी ढाल चोसठमी, परम सागर आणदारे ॥ १३ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(६५) **विक्रमादित्य चउपई** । रचयिता-अभयसोम ।

आकार- १०३" × ४३" । पत्र संख्या ६ । इसके प्रत्येक पत्र पर १५ पक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ४६ अक्षर हैं । अक्षर जैन पाटी के प्राचीन नागरी हैं । इसमें कुल २८५ छंद हैं । सवन् १७२३ जेठ मास में सिरोही में इसकी रचना हुई और संवत् १८१० आसोज सुदि ७ को यह प्रति लिपिबद्ध हुई । भाषा परिमार्जित जैन शैली की राजस्थानी है ।

आदि भाग-

दूहा

सरसति माता समरियै, नित प्रति लीजै नाम ।
चित माहि जे चिंतवै, सीझै वछित काम ॥ १ ॥
पय झुग प्रणमी तेहना, विक्रम चरित्र कहेस ।
सानिध करज्यो मामदी, हु तुझ विनय वहेस ॥ २ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(६६) **विक्रम वेलि** । रचयिता–मतिसुन्दर । आकार–४.३″ × ३.६″ । पत्र संख्या–१४ । प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में २८ अक्षर हैं । पद्य संख्या–२८० । रचनाकाल–१७२४, आसाढ़ कृष्णा १० ।

आदि भाग—

दोहा

दुह पचासे वधियो, कोइ नवो कोठार ।
वाप भरीने कांटतां, किणही नलधो पार ॥ १ ॥
तोऊ तिन वनिध हुवे, तोहु तिसहु सिद्ध ।
अमु अने आगा लगै, मुरिष पडित किद्ध ॥ २ ॥
तिन तोने समरी करी, कहस्यु विक्रम वात ।
मे तो उधम मडिउ, पूरो करस्यो मात ॥ ३ ॥

अंतिम भाग–

कलियुग मांहि विक्रमराय नो, सोहग सुदर महिमा गाऊ तो ।
तेहनि सानिध सिव करै, आगा लडती आपद अपहरे ॥
अपहरे आपद चरित सुनावैं, नाम थी नवनिधि मिलै ।
परतर गछ श्री जिनचद सद गुरु, सेविता वछित फलै ॥
सतरे चोवीस कृष्ण दसमी, आदि आसाढे सही ।
वाचना चारभ्र अमय सोमे, मति सुदर काजे कही ॥

[प० उमाशकर द्विवेदी, 'विरही' उदयपुर]

(६७) **विमल साहरो सलोको** । रचयिता– विनीत विमल । आकार– ६.८″ × ४.२″ । पत्र सख्या– ५ । छद संख्या–१०७ । लिपिकार–हेमंत विज । विषय– विमल शाह ने ग्यारहवीं शती में आबू पर एक जैन मन्दिर वनवाया, उसकी कथा इनमें दी गई है । भाषा जैन शैली की है और बोलचाल की है ।

आदि भाग–

सरसति समरु बेकर कोडि । त्राह वग काणो गिरनार गौडि ।
भर्डग मेत्रुंभै मपेसर दोडि ! कविता ने कुसल कल्याण कोडि ॥ १ ॥

मरुधर , माहि तीरथ ताभा । श्राबू नव कोटि तेहनो राभा ।
गढ मढ नई देवल दरवाभा । चऊमप चंपाने ऊपर भाभा ॥ २ ॥
असल आचारभ धर्म्मघोष सूरि । या कीधि विण भाग्यें अपूरी ।
देवल विण मु गरि दीमइ न नूरी । घ्यानइ तिहा छै आयद मागण पूरी ॥ ३ ॥

अन्तिम भाग-

मन ना मनोरथ सघलाई सीधा । थारे ही पतिसाहरा विरुघ लीधा ।
पाटण छोड़ेने चढ़ावें श्रायो । वडायी यामें नें छत्र धरायो ॥ ४ ॥
पतिसाह चांधें ने डड मरायो । आबू ने ऊपरि देवल करायो ।
पोरवाड़ प्राक्रम पांच में भ्रारे । नाणों खरच ने न्यात वधारे ॥ ५ ॥
पचाणु ए वांध्या पतिसाह, थारें । एक सपूत आवो कुल तारें ।
कहसी वाणी तू कांई वखाणु । घन पामें ने खरचितु नाणो ॥ ६ ॥

वि० जैन गुर्जर कविओ भा० ३ पृ० १३४३ के अनुसार इसके पद्य ११५ हैं ।

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(६८) **सतवंती री वात** । रचयिता-जान कवि ।

यह 'वात सग्रह' (६१) मे प्राप्त हुई है। रचना दोहा, सोरठा और चौपाई मे है । इसका रचनाकाल इसके अन्तिम भाग के अनुसार सवत १६७८ है । इसकी भाषा पिंगल है । रचना सरस और मधुर तो है ही पर भाषा भी बहुत परिमार्जित और प्रवाह पूर्ण है। रचना के आदि भाग से ज्ञान होता है कि इसका रचयिता मुसलमान है और सूफी मत का अनुयायी ज्ञात होता है। संक्षेप में रचना की कथा इस प्रकार है ।

मनसूर एक व्यौपारी है। इसकी स्त्री का नाम सतवंती है। जैसा उसका नाम है-वैसी ही वह रूपवती और पतिव्रता भी है । मनसूर अपने मित्रों के साथ व्यौपार के लिए विदेश जाता है। उसकी स्त्री विरह में दुःखी होती है । बहुत दिन बीत गये । एक धूर्त ने इसके सौंदर्य के विषय मे सुन कर इसे छलने का विचार किया। अत उसने चार दूतियों-पँनवारिन, कलाली, मालिन और छलिनी योगिन को बारी बारी से उसके यहाँ उसे छलने को भेजा । सब बारी बारी से हार कर और मारखाकर लौटी। उसका धैर्य इन चारो से विचलित न हुआ।

तब धूर्त हताश होकर वह किसी धूर्त श्वेताम्बर के पास जाता है। जो तंत्र, मंत्र और टोना करने में सिद्ध है। कुछ दिनों तक वह उसकी सेवा कर के उसे प्रसन्न कर लेता है और उससे रूप पलटने की क्रिया सीख लेता है। फिर मनसूर वन कर सतवंती के साथ रहने लगता है। सतवंती को कुछ संदेह होता है। अतः वह कुछ दिन तक टालती रहती है। इतने में उसका पति भी आ जाता है। एक रूप के दो व्यक्ति राजा के पास न्याय के लिये जाते हैं। राजा दोनों से तथा सतवंती से अपने अपने विवाह की तिथि लिखवा लेता है। सतवंती और मनसूर की तिथि एक मिलने पर धूर्त को प्राण दण्ड मिलता है।

आदि भाग-

चौपई

प्रथम समिरौं सिरजन हार । अलप अगोंचर एकंकार ॥
अधम उधार अधार निरजन । मलिनरसन सुमिरन तिह मनन ॥
व्याध असाध महा अपराध । विधि सुमिरन तैं-होत समाध ॥
जिह रसना सुमिरन रसरसी । प्रगट भयो ज्यों-सविता ससी ॥
सुमिरन रसना रसना पीजै । तिरसना पट रस कत दीजै ॥

सोरठा

हार हार समरारि, पारा प्यार अपार कह्यो ।
कसै करै विचार, जांन कवि इक रसना सौं ॥

चौपई

दूसरौ सुमिरौ नाम नबी कौ । सर्व रसूलन को है टीको ॥
रच्यौ महंमद सब तै आद । रचना सफल ताहि परसाद ॥

उदाहरण-

(सतवंती का विरह)

सुन सवती वरिषा आई । अब पिय बिन कैसें रह्यौ जाई ॥
दादुर कोकिल मोर पुकारैं । बैन बाण विरहिन कू मारैं ॥
अरध रैंन बोलै हैं चात्रिग । मानो कामदेव के धासिग ॥
स्याम घटा बग पत दिपावैं । करि दते ले मारन आवै ॥
घरी घरी घन वरसत फेरैं । मलन वसन हुमारी तेरै ॥

अन्तिम भाग-

सोरठा

सतवत्तो मनसूर, अमर भये या जगत में ।
जगमगात समि सूर, तैसे प्रगटै सील तैं ॥
सोलै सैजु अठतरै, सनि सहस इक्तीस ।
सतवती सत जान कवि, बांध्यो विसवा वीस ॥

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(६९) **श्रीपाल चतुष्पदी** । रचयिता- जिन हर्ष ।

आकार- १०.२" × ३.६" । पत्र संख्या- ५० । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३६ । ४२ अक्षर हैं । लिपिकाल- सं० १८४८ । रचनाकाल- सं० १७४० ।

विषय- जैन- जीवन चरित्र । रचना उत्तम कोटि की है । भाषा जैन शैली की परिमार्जित राजस्थानी है ।

आदि भाग-

श्री अरिहंत अनंत गुण, धरिये हियडे ध्यान ।
केवल ग्यान प्रकास करि, दूर हरण अगन्यान ॥ १ ॥

अन्तिम भाग-

सवत सतरैसै चालीसै, चैत्रादिक सुजगीसरे ।
सातिम सोमवार सुभ दिसै, पाठण विसवा वीसरे ॥ ११ ॥

× × ×

कहे जिन हरष सात्विक नर सुण ज्यो, नव पदमहिमा गुण ज्योरे ।
उगण पचासै ढाले गुणज्यो, निज पातक वन लुणज्योरे ॥ १३ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान मन्दिर, उदयपुर]

(७०) **श्रीपाल रास** । रचयिता-विनयविजय तथा जसविजय आकार- १०.१" × ४.४" । पत्र- ७४ । लिपिकाल-स०१८६४ रचनाकाल-स०१७३८ ।

आदि भाग–

कल्प वेलि कपि भणतणी, सरसति करि सुप साय ।

सिद्ध चक्र गुण गवतां, पूरि मनोरथ माय ॥ १ ॥

सूचना–इसमें चार खण्ड हैं। जिनमें प्रथम दो तो विनय विजय तथा अंतिम दो जसविजय कृत है।

[वद्र्धमान ज्ञान-मन्दिर, उदयपुर]

(७१) **श्री मंधर स्वामी विज्ञप्ति स्तवन** । रचयिता– अज्ञात । आकार– १०·१″ × ४·२″ । पत्र-सख्या– ४ । पद्य-संख्या– १०५ । विषय– जैन धर्म ।

[वद्र्धमान ज्ञान-मन्दिर, उदयपुर]

(७२) **साधु (मुनिसरकी) गुण माला** । रचयिता– जैमल ।

आकार– १०″ × ५″ । पत्र संख्या– ३ । पद्य संख्या– ६५.।

[वद्र्धमान ज्ञान-मन्दिर, उदयपुर]

(७३) **सामुद्रिकइं स्त्री पुरुष शुभाशुभं** । रचयिता–अज्ञात ।

आकार-८·४″ × ५·८″ । पत्र संख्या-३३ । इसके प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ हैं। और प्रति पक्ति में २७-३१ अक्षर हैं। अक्षरों की लिखावट प्राचीन जैन पाटी की है, परन्तु अक्षर जमे हुए नहीं हैं। यह प्रति सम्वत् १५७६ कार्तिक विद ६ की लिपिवद्ध है। प्रति प्राचीन है, अक्षर भी प्राचीन हैं। अक्षर घिस गये हैं, जिससे पढने में कहीं कहीं कठिनाई होती है। इसकी पुष्पिका से ज्ञात होता है कि यह 'सहज सागर' नाम के किसी ग्रन्थकार के संस्कृत ग्रन्थ 'सामुद्रिक' की टीका है। टीकाकार का नाम घिस गया है, परन्तु उसको सामुद्रिक का ज्ञान देने वाले का नाम 'गुण सागर' दिया गया है। ग्रन्थ का विषय सामुद्रिक शास्त्र है जिसमें नायिकाभेद का भी ध्यान रक्खा गया है।

भाप-प्राचीन जैन शैली की राजस्थानी है।

आदि भाग–

ॐ नमो श्री सरस्वती नम नु गकृ, सामुद्रिक शास्त्रो नराणांयत ।

शुभाशुभ । तदहसप्रवच्यामि । नव केशाममुमते ॥ १ ॥

टीका

साधुदइ शास्त्र जोई नइ जे पुरुष स्त्री ना गुण नष केश लगइ मस्तक तणा–केश पाश अनइ चरण कमल तणा नष-अत फलाफल बोलीसिइ ॥

उदाहरण–

सिंहव्याघ्रेषां कादि स्वे दतच नायका ।
राक्षा वानर तुल्या च कटियें पांन शोभना ॥ ६ ॥

टीका

येहनइ कटि सिंह व्याघ्रना सरिषी हुइ । प्रस्वेद हुइ त सुखी हुइ । राक्षस वानर नाश रीषी हुइ तेइ दुःखी हुई जाणिवी ।

अन्तिम भाग–

पद्मिन्य. प्रेम वांछति । द्रव्य वाछति हस्तिनी । चित्रिणयो मान वांछंति । फलहि वांछंते शखिनीं ॥ १२१ ॥

टीका

पद्मिनी स्त्री प्रेम वांछई । हस्तिनी स्त्री द्रव्य वाछई । चित्रिनी स्त्री मान वांछई । शंखिनी कलह करई ॥ ६ ॥ १२२ ॥

[स्वामी केवलराम दादूपंथी, उदयपुर]

(७४) **सारासार पच्चीसी** रचयिता–शिवराम ।

आकार–६.३″×५.२″। इस में कुल ११ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १२ अक्षर हैं। अक्षरों की लिखावट साधारण है। इसमें कुल २५ पद्य हैं, इसका विषय नीति और शिक्षा है।

आदि भाग–

कवित्त

माई के न बंधु के न बैन के सबस नी के
देवो नाम सुनै देषत अैंनेसे हैं ।
गिरवे ग्पाय वस्तु सबकू उधार देत
आपहू कुनाज पाय पेट भरे तेसे हैं ॥
घर के मत्र एक पाग पनही सों काम काढे
तीरथ वरत व्याव मोसर में मैंसे हैं ।
मूरष धनाढ्य कहे देपि के रूपैये ओरू
ऐसे जो धनाढ्य तो कगाल फेर कैसे हैं ॥ १ ॥

अन्तिम भाग—

कवित्त

कंचन के नभ चुंबित श्रवास पाये
जर के वितान दिये किरने रवीन की।
पारे हय वारे गयवारे रथवारे भट—
गनि कै सिरावै श्रैसी मतना प्रवीन की॥
मनै सिव रामद्वारे मीर रहे भूपन की
श्रगना श्रनूप पाई मत कर पीन की।
एतो सर्व पायो पर नाहक गमायो जन्म
रसना षसायो जोपै रसना कवीन की॥ २५॥

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(७५) सिंघासन वत्तीसी। रचयिता—देवीदास।

श्राकार-४'३"×३'६"। पत्र-संख्या ३४। प्रत्येक पृष्ठ पर १५ पंक्तियाँ श्रौर प्रति पंक्ति में २६ श्रक्षर हैं। पद्य-संख्या ७००। रचनाकाल—संवत् १६३३ फागुण विद् ८ रविवार। इसमे श्रवन्ति के राजा विक्रमसेन का वर्णन है।

श्रादि भाग—

गणपति नमु दोइ कर जोडि। देही बुधि मति बाधे मारि॥
गोरी सुत मति तणो मडार। नाग सहस्र गल सोहे हार॥ १॥
सिद्ध बुद्ध श्ररघगे वेस। जेहि ऊँसे तिहि थार सरेस॥
जोऊँ स्वामी दया करीराय। तोऊँ कथु श्रवती राय॥ २॥
सारद माऊ नमऊ श्रारि। देहि सुमति कवि करै विचार॥
हस चढ़ी कर सोहे वीण। नाद रग सुरगण मुनि लीन॥ ३॥
मो कविऊँ मव से मा रही। तो कथ कथा करो सार ही॥
गुण श्रणत ऊँह सारद माय। तु ही प्रसाद सवि कथा सिर राय॥ ४॥
मात पिता गुरु वचने लाग। कहे ऊन सरसै लेउ बुधि मांग॥
सकल समा को श्रायस लहो। नो सिंघासन वत्तीसी कहो॥ ५॥
सोहलसें तेतीसो जांण। सिसीर महारव कहू वर्षांण॥
फागुण वदी श्रष्टमी विचार। सो मन योग सकल रविवार॥ ६॥

देस मालवो कंचन षाण । नगर देवास महा सुभ जाण ॥
कवि जन तहा वसे देवीदास । वुडे देवी तणो नीवास ॥ ७ ॥

अन्तिम भाग-

ऐसो विक्रमसेण मोत्राल । तास सहाइ वीर वेताल ॥
नारी षाम रयो संहार । जित्या ताइको मिड्हार ॥ १ ॥
पच डड सिर वज्र धराइ । सात उदधि लगि साके कराइ ॥
पच जोण मडप श्रावण्यो । नारी चरित तेहीतष आणीयो ॥ २ ॥
हरसि की सुरा करि मानियो । पर कीयो परवेस छ कीयो ॥
तीन लोक कीनो पेसार । बोल्या मुष यामे ससार ॥ ३ ॥

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(७६) **सिंहल सुत चौपई** । रचयिता- समयसुन्दर ।

लिपिकाल- १८८५

[माणिक्य ग्रन्थ भण्डार, भींडर]

(७७) **हंसराज वछराज चउपी** । रचयिता- जिनोदयसूरि ।

आकार- ६३/४" × ४" । पत्र सख्या-३८ प्रत्येक पत्र पर १४ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में ३३ । ३४ अक्षर हैं । इसमें कुल ७१४ पद्य हैं ।

विषय- जैन धर्म जीवन-चरित्र है । भाषा राजस्थानी गुजराती है ।

आदि भाग-

आदिस्वर आदि करी, चउविसें जिण चद ।
सरसती मन समरु सदा, श्रीजयतिलक सुरिंद ॥ १ ॥
सदगुरु पाय प्रणमीं करी, पायी गुरु आदेस ।
पुन्य तणा फल बोलस्यूं, कहस्यूं हूं लव लेस ॥ २ ॥

[वर्द्धमान ज्ञान-मन्दिर, उदयपुर]

(७८) **हरीचंद सत** । रचयिता-ध्यानदास ।

यह १३७ सतो के संग्रह में है । इसमें २४ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति मे ३७ अक्षर हैं । सम्पूर्ण ग्रन्थ तीन अध्यायों में विभाजित

है। प्रथम अध्याय में १६६ पद हैं, द्वितीय में १२१ और तृतीय मे १०० । इस प्रकार इसमे १४ दोहे, २ सोरठे, ४ छंद और ३२० चौपाइया है। जिनकी सर्व संख्या ३४० होती है। ग्रन्थ का विषय सत्य हरिश्चन्द्र की पौराणिक कथा है। इसका रचना-काल कवि ने इस प्रकार दिया है—

'उदधि दोत कर लीजिये लेखन मार अठार'
 ४   २   १८

जिसके अनुसार सवत् १८२४ या १८४२ ठहरता है।

इसके प्रथम अध्याय में राजा का राज्य त्याग और काशी में आगमन। द्वितीय अध्याय मे सुत-रानी और राजा का वियोग, सुत-रानी का अग्नि सुशर्मा के यहां निवास और राजा की डोम के घर निवास। तृतीय अध्याय में रोहिताश्व की मृत्यु आदि शेष घटनाएं।

आदि भाग—

दोहा

गोविंद गुर को नित नमौं, नमौं भक्त सब साध।
ता प्रसाद जस ऊचरू, हरिचद मत अगाध ॥ १ ॥

चौपई

अमगति अलप अनाहद मारी। उपत षपत महासुधि मारी।
नाव न गांव ठांव कहा कहिये। आगम अगाध साध सग लहिये ॥ २ ॥

अन्तिम भाग

दोहा

उदधि दोत करि लीजिये, लेखन मा अठार।
ध्यान दाम बसुधा लिषै, भगवत भगत अपार ॥ ६६ ॥
लषा वाकाज सुरम्वति लागैं, सब सुधिवत कलि मांहि।
रोम समान न लष सके, हरि चरचा मति नांहि ॥ ६७ ॥
जो उचरे या ग्रथ कू, कोऊ सुनैं चितलाय।
'ध्यान लहसो परम पद, पाप ताप त्रिय जाय ॥ ६८ ॥
हरीचद सत कू सुनैं (कोई), ऐसी टेक समाय।
'ध्यान' लहे सो परम पद, या मे ससे नाय ॥ ६६ ॥
ध्याय तीन या ग्रथ की, धरम कथा विसतार।
हरीचद हिरदै धरे, सो जन उतरे पार ॥ १०० ॥

[रामद्वारा, धोली बावड़ी, उदयपुर]

(७६) हितोपदेश । रचयिता- नारायण- ब्राह्मण ।

आकार- ८″×६″ । इसमें ११५ पत्र हैं । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ । १३ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति में १६ । २० अक्षर हैं । लिखावट साधारण है । ग्रन्थ पर चमड़े का जिल्द है । जिसके भीतर दोनों ओर हनुमान के रंगीन तथा सामान्य शैली के दो चित्र भी हैं, जिनका कथा से कोई सम्बन्ध नहीं है । इसमें हितोपदेश (संस्कृत) का गद्य में भाषान्तर किया गया है । यह प्रति संवत् १८७६, माह वदि ४, भोमवार को खवास बरदा द्वारा जहाजपुर (मेवाड़) में लिपि कृत हुई । भाषा अशुद्ध लिपि के कारण बड़ी अशुद्ध हो गई है ।

लल्लूलाल के गद्य की भाषा का आचार यही भाषा है—

'पुत्र सौही मयो जानीये, जीन कै मयै वस मै ऊचौ होय, नतर मुयेते ससार मै कौ नाही उपत । अरू जहा गुणी जण साधुगणी यही हैं, तहा आदर सौ जाकौ नाम पहले न लखी ई । ऐसे हु पुत्र की मातां कौ पुत्रवती होये तो को हो धो (तो) वांझ कौन सौ कहीयै ।'

अन्तिम भाग-

'तब विसनु सरमा राजपुत्रन सों—कह्यो—अब तुमारे ओर सुनवे की अछ्या होये सो कहो, सोहु सुनाऊ' तब राज पुत्र—कह्यो-तुमारे प्रसाधते सब राजनीत, सब किया सीष सुख मयो । ज्ये हमारी आग्या रपुन हो । नयो जनम मयो । तब विसनु सरमा कही—तब हु ओर यह होऊ, सब राजनि सों । ओर संधी होऊ । अरू जय करि आनद होऊ । सदा वृत प्रताप होऊ । सुक्रत की क्रीती वढो । नित मत्रिन के हिरदे मो क्रीड़ा करो । दिन दिन सब राजनि सों ऊचो होऊ । जो लु श्रीगोविंद जी के वक्ष्येस्थल मै लक्ष्मी रहे, घरू जो लु'गोगी नाथ के माथा पर चद्रमा, जेसे मेघ मो बिजुलता, जो लु' सुमेर दावानल सो भूमडिल मो विराजे, तो लु नारायेण नांमी ब्राह्मण करि कीयो येहें हेतुपदेस नामा गथ प्रथी मो चल हु—

दोहा

राजनीत नै गीत सों, वांचो चत वढाय ।
मालक कु अति सुख वधे, सबै ग्यांन सरसाय ॥ १ ॥
जन्तु वथा जाणे मती, सुण जो सुरत लगाय ।
(श्रो) हेतोंको उपदेस है, सुर पडित गुण साय ॥ २ ॥

[कविराव मोहनसिंह, उदयपुर]

(परिशिष्ट)

मीरॉं के अप्रकाशित भजन

निम्न लिखित भजन विविध गुटकों में लिखे हुये मिले हैं। यहाँ केवल वे ही भजन दिये गये हैं जो अब तक अप्रकाशित हैं। कुछ भजन ऐसे भी दिये गये हैं, जिनमें और प्रकाशित भजनों मे पाठान्तर हैं। जिनका लिपिकाल मिला है, उसको उनके साथ नीचे कोष्ठकों में दे दिया गया है।

१

जब के तुम बिछड़े मेरे प्रभुजी, कहुएं न पायो चैन ॥ १ ॥
बिह बिथा कासू कहूं सजनीं, झबत आवे श्रैन ॥ २ ॥
ऐक टगटगी पिया पथ निहारूं, भई छै मासी रैण ॥ ३ ॥
मीराँ के प्रभु हरि अविनासीं, दु ष मेलण सुष देण ॥ ४ ॥

(१८७६)

२

मैं ती म्हारा रमईया नैं देष वौ करूली ॥ टेक ॥
तेरौ ही सुमरण तेरौ ही उमरण, तेरौ ही ध्यान धरूंली ॥ १ ॥
जिहां जिहां पांव धरे मेरे प्रभुजी, तांहां तांहां वरतक करूंली ॥ २ ॥
मीरां के प्रभु हरि अबनासी, चरणां में लिपट रहूँली ॥ ३ ॥

(१८७६)

३

जावो नर मौहीयाजी भीणी तेरी प्रीतड़ी ॥ टेक ॥
लगन लगी जब और प्रीतिंछी अब कछु अवली रीतड़ी ॥ १ ॥
ईम्रत पाइ विषे क्यूं पीजिये कौण गांव की रीतड़ी ॥ २ ॥
मीरां के प्रभु हरि अविनांसी, जौ गायो किसकी मींतड़ी ॥ ३ ॥
(१८७६)

४

जोगीयाज दरसण दीज्यो रा जी ।
कर जोड्या करणीं करूं म्हारी वाहा गहवा की लाज ॥ टेक ॥
लोक लाज जब सारी डारी, छाड्यो जग उपदेश ॥
ग्रह अग्नि में प्रान दाभ्के, ह्मारो सुधि लीज्यो आदेश ॥ १ ॥
साँच मुद्रा भाव कंथा, साज्यो नर्ष सष साज ॥
जौगणि होइ जुग ढूटस्यूँ, ह्मारी घर घर फेरी आस ॥ २ ॥
दरध दिवानी तन देषि आपनू, मलीया परम दयाल ।
मीरां के मनि आनन्द हुवा, रूम रूम खुसियाल ॥ ३ ॥
(१८७६)

५

नातौ हरि नाव कौ माई ।
मोसू तनक न बिसर्यौ पल न जाई ॥ टेक ॥
पाना ज्यूं पीली भई, लौग कहै पिंड रोग ॥
छांने लगण. मैं कोया, राम मिलण के जौग ॥ १ ॥
वावल वैद बुलाईया, पकडि बताई म्हारी वाटि ।
मूरिष वैद न जाण हीं, म्हारे करक कलेजा मांहि ॥ २ ॥
वैद जावौ घर आपणै, म्हारो नांव न लेह ।
मैं दादी हरि नाव की, मौहि काहे को दुष देह ॥ ३ ॥
काढि क्लेजो मं धरूँ, कागा तू ले जाइ ।
जा देसा प्रीतम बसे, वे देषे तूँ षाइ ॥ ४ ॥
छनि आगणि छनि मढ़रा, छुनि छनि ठाढी होइ ।
छार ज्यूँ तू मत फिरूँ, म्हारो मरम न जाणै कोइ ॥ ५ ॥

तन सुकिषि पिंजर भयौ, सू का म्रछ की छाहां ।
श्रागणि यार्ली मूदड़ी, म्हारै श्रागण लागी वांहां ॥ ६ ॥
रेरे पापी पपीवड़ा, पीव का नांव न लेह ।
पीव मिलै तो मैं जीऊँ, नांतरि त्यागूँ म्हारो जीव ॥ ७ ॥
कौइक हरजन सामलैरे, पीव कारण जीव देह ।
मीराँ व्याकुल महनीं, पीव वनि क्सौ सनेह ॥ ८ ॥

(१८७६)

६

जोगीयाजी श्राजोजी इण देस ।
नै जस्यौं देषू नाथ नै, धाइ करूँ श्रादेस ॥ टेक ॥

श्राया सावण भादवा, भरीया जल थल ताल ।
साई कूँ विलमाई राष्यौ, महहनि है वेहाल ॥ १ ॥
वसरयां वौहो दनि भया, वसरयौ पलक न जाई ।
ऐक वेरी देह फेरी नगरि, हमारै श्राई ॥ २ ॥
वा मूरत माहारै मन वसै, वसरयौ फलधून जाइ ।
मीराँ के कोई नांही दूजौ, दरसण दीज्यौ श्राइ ॥ ३ ॥

(१८७६)

७

टेसड़लौ रूड़ो रूड़ो । रांणाजी थांरो मगत न भावै माहारा
राम की ।
लोग वमै छै कूड़ौ ॥ टेक ॥
मेवा मसरी सव ही त्याग्या, त्याग दियौ छै वुरौ ।
तन की श्रास कबहु न रापी, ज्यूं रण माहिं सूरौ ॥ १ ॥
माई मात कुटुवो त्याग्यौ, त्याग दिवे छे चूंडौ ।
घूंघट को पटि दूरि कियो, सरि वांध्यौ छै जूड़ौ ॥ २ ॥
यौ ससार सव दुष को सागर, मैं हाकीयो दूरौ ।
मीराँ कौके प्रभू हरि श्रविनासी, वर पायौ छै पूरौ ॥ ३ ॥

(१८७६)

८

ग्यान कूँ बाण घसी । हो म्हारा सतगुरजी हो ॥ टेक ॥
बकतर फूटि हीय अटकी, भीटर चालि घुसी ॥ १ ॥
बाहरी घाव दीसत नहीं कोई, उचि बचि पूरि घसी ॥ २ ॥
तत तरवारि मालिका मलका, सबदी की वरछी घसी ॥ ३ ॥
रांम दीवानी(मैं तो) पलकन बीरूँ,जणि'र करावौ जग में हँसी ॥ ४ ॥
मीरां के प्रभू हरि अबिनासी, अमरा पुर में बसी ॥ ५ ॥
(१८७६)

९

मैं तो तोरै चरन लगी गोपाल ॥ टेर ॥
जब लागी तब कोऊ न जांने, अब जानी ससार ॥ १ ॥
किरपा कीजौ दरसण दीजौ, सुध लीजो ततकाल ।
मीरां कहै प्रभू गिरधर नागर, चरण कमल बलिहार ॥ २ ॥

१०

रांमजी पधारे धनि आज री घरी ।
आजरी घरी वौ भावरी भरी ॥ टेर ॥
गुर रांमांनद अर माधवाचारज, नीमांनद बिपन स्याम हरी ॥ १ ॥
आजि मेरौ आंगणू सुहावणू, बरसण लागे पीया पेम हरी ॥ २ ॥
अरसि परसि मिलि हरि गुण गास्यां, धनि मेरी इणी इन भाव भरी ॥ ३ ॥
मीरौं के प्रभू हरि अविनामी, पकडि पावौं प्याला पेम हरी ॥ ४ ॥

गुटका आकर-६ २" × ४" से—

११

राग कन्नड़ी दूजी

प्रभु मेरा वेडा पार लघाज्यौ जी ॥ टेर ॥
मैं नुगणी में गुण नहीं प्रभूजी, औगुण चित्त मत लाज्यौ जी ॥
काढ पडग राणाजी कोप्या, गरड चढ्या हरि आज्यौ जी ॥
विस रा प्याला राणांजी मेज्या, चरणामृत कर पीज्यौ जी ॥
काया नगर में घेरा पड्या छै, ऊपर आयर कीज्यौ जी ॥
मीरौं दासी जनम जनम की, कठ लगाय'र लीज्यौ जी ॥

१२

मैं मेरो मन हरिजी सू जोरयो । हरिजी सू जोर सबन सू तोर्यौ ॥ टेर ॥

नाचन लगी तब घूंघट कैसो । लोक लाज तब काज्यूं तोड्यौ ।

जब मैं चली साध के दरसण । तब रार्यो मारण-कूं दौड्यौ ।

जहर देण कूं घात उपायौ । निरमल जल में ले विम घोरयौ ।

जब चरणामृत सुणयौ तरवर्णा (१) । राम भरोसे मुख दोरयौ ।

प्रगट निसांण बजाय चल जब । रायै राव सफल जुग जोरयौ ।

मीरां प्रबल घणी के सरणैं । का भयौ भूपति मुख मोरयौ ।

१३

सब जग रूठडा रूठड घो । येक रांम रूठो नहीं पोवै ॥ टेर ॥

गरम कीयो रतनागर सागर । नीर खारो कर डारयौ ।

गरम कीयौ उन चकवा चकवी । रैण विछोवा पारयौ ।

गरम कीयौ उन बन की कोयल । रूप स्याम कर डारयौ ।

गरमकियौ लकापति रावन । टूक टूक कर डार्यौ ।

मीरा के प्रभु हरि अविनासी । हरि के चरण तन वार्यौ ।

१४

पीया कू बतादे मेरे, तेरा गुण मानू जी ॥ टेर ॥

एसा है कोय आण मिलावे । तन, मन, धन, कुरबानू जी ॥

रक्त रत्ती भर ना रह्यौ तनमें, पीरी भई जैसे पानू जी ॥

बिहा मोकू श्रान सतावै, कोयल सबद सुहानूं जी ॥

लाल बिना व्याकुल भई सजनी, प्रगट होत नहीं छांनूं जी ।

१५

रमईया बिन रयो न जायरी माय ॥ टेर ॥

पान पान मोय फीको सो लागै, नैन रहै दोय छाय ॥

बार बार मैं अरज करत हू, रैण गई दिन जाय ॥

मीरां के प्रभु वेग मिलोगे, तरस तरस जीव जाय ॥

राग परज

१६

जोगीया तू मारे घर रमतो ही आव ॥ टेर ॥

कानां विच कुंडल गला विच सेली ॥ अंग भभूत रमाय ॥ १ ॥

तुज देष्यां बिन कल न परत है ॥ म्है अंगणौ न सुहाय ॥ २ ॥

मीरा के प्रभु हरि अविनासी ॥ दरसण धौनैं मोकूं आय ॥ ३ ॥

१७

मेरी कांना सुणज्यौ जी करूणां निधान ॥ टेर ॥

रावरो बिरद मोयरो डौसो लागै ॥ परत परायै प्रान ॥ १ ॥

सगौ सनेही मेरे और न कोई ॥ वैरी सकल जिहानां ॥ २ ॥

ग्रह गह्यौ गज राज उबारयौ ॥ बूडन दीनौं जान ॥ ३ ॥

मीरां दासी अरज करत है ॥ नही जी सहारो आन ॥ ४ ॥

८

हरि मारी सुणज्यौं अरज महाराज ॥ टेर ॥

मैं अवला बल नाहिं गूसांई ॥ राषो अब के लाज ॥ १ ॥

रावरी होय कर कणी रे जाऊँ ॥ है हरि हिव राडारौ साज ॥ २ ॥

हेय कोव पूधर दैत सघा रचौ ॥ सारूयौ देवन काज ॥ ३ ॥

मीरां के प्रभू और न कोई ॥ तुम मेरे सिर ताज ॥ ४ ॥

१६

पीयाजी थे तो कटारी मारी ॥ टेर ॥

जिनकौ पीव परदेस बसत है ॥ सो क्यूँ सोवै नारी ॥ १ ॥

मकन मिन नही भावत ॥ आकूँ सदे देहारी ॥ २ ॥

जैसे भवगत जत कांचरी ॥ सो गत भई है हमारी ॥ ३ ॥

विन दरसण कल नहीं परत है ॥ तुम हम दीये विसारी ॥ ४ ॥

मीरां के प्रभू तुन्हारे मिलन कूँ ॥ चरण कवल परन्वारी ॥ ५ ॥

२०

राग पूर्वी सोरठा

गिरधर के मन माई हो राणांजी ॥

२४

राग घुमायची

पतीयां मै कैसे लषू ॥
लिष्योरी न जाय ॥ टेर ॥

कलम भरत मेंरो कर कंपत है ॥ नेन-रहै झड़ लाय ॥ १ ॥
वात कहूँ तो कहत न आवै ॥ जीवरयो डर राय ॥ २ ॥
विपत हमारी देष तुम चाले ॥ कहिया हरिजी सू जाय ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभू सुष के सागर ॥ चरण ही कवल रषाय ॥ ४ ॥

२५

माइ मानैं रमईयो देगया भेष ॥ टेर ॥

हम जाने हरी परम सनेही ॥ पूरव जनम को लेष ॥ १ ॥
अग भमूत गल म्रघ छाला ॥ घर घर जपत अलेष ॥ २ ॥
मीरा के प्रभू हरि अविनासी ॥ सांई मिलण की टेक ॥ ३ ॥

२६

मेरे घर आवौ सुन्दर स्यांम ॥ टेर ॥

तुम आया विन सुष नहीं मेरे । पीरी परी जैसे पान ॥ १ ॥
मेरे आसा और न स्वामी ॥ येक तिहारो ध्यान ॥ २ ॥
मीरां के प्रभु वेग मिलौ अव ॥ राषो जी मेरो मान ॥ ३ ॥

राग सुलतानी सोरठ

२७

ऐरी मेरे नैनन वान परी ॥ टेर ॥

चित चडी प्यारे दी मूरत ॥ उर वीच आंन अरी ॥ १ ॥
क्वकी में ठाडी ठाड़ी पंथ निहारूँ ॥ अपने भवन परी ॥ २ ॥
जव देषू तव जीऊ मेरी सजनी ॥ जीवन मूल जरी ॥ ३ ॥
कैसे मैं राषूं प्रांन पिया विन ॥ सरवस देन वरी ॥ ४ ॥
मीरां तो प्रभु के हाथ विकानी ॥ लोक कहे विगरी ॥ ५ ॥

२८

गोयिंद गाटा छोजी दीलरा मिंत ॥ टेर ॥

वार नीहारूँ पथ वुहारूँ ॥ ज्यूँ सुष पावे चित ॥ १ ॥

मेरा मन की तुम ही जानौं ॥ मेरो ही जीवनीचंत ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु हरि अबिनासी ॥ पूरब जनम को कत ॥ ३ ॥

२६

मारे आज्यौजी रांमां ॥
थारे आवत आस्यां सामां ॥ टेर ॥
तुम मिलियां मैं बोहो सुष पाऊ ॥ सरै मनोरथ कामां ॥ १ ॥
तुम बिच हम बिच अतर नाही ॥ जैसे सूरज घामां ॥ २ ॥
मीरा के मन और न माने ॥ चाहे सुन्दर स्यामां ॥ ३ ॥

३०

पीया मैं बैरागन हूगी हो ॥
जा जां मेषां मारो सायब रीझै ॥ सोय सोय मेष धरूँगी हो ॥ टेर ॥
सील सतोष धरू घट भीतर ॥ समता पकड़ रहूंगी हो ॥
जाकौ नांव निरजन कहीये ॥ जकौ ध्यांन धरूगी हो ॥ १ ॥
गैरु ग्यांन रगू तन मेरो ॥ मन मुदरा पहरूँगी हो ॥
प्रेम प्रीत सू हरि गुण गाऊँ ॥ चरणां लिपट रहूंगी हो ॥ २ ॥
या तनकी मैं करूँ की गूरी ॥ रसनां राम रटू गी हो ॥
मीरा के प्रभु हरि अबिनासी ॥ सांधा सग रहूगी हो ॥ ३ ॥

३१

को बिहन कौ दुख जाणैं हो ॥
जा घट बिहा सोय लखि हैं ॥ कै कोय हरी जन मानैं हो ॥ टेर ॥
रोगी आतर बैंद बसत है ॥ बैंद हि औषद जानै हो ॥
बिह कर दउर अतर माही ॥ हरि बिन सब सुख कानैं हो ॥ १ ॥
दुगधा आरण फरै उदासी ॥ सुरत बसी सुत मानै हो ॥
चात्रग स्वांत बू द मन मांही ॥ पीव पीव उक लानैं हो ॥ २ ॥
सब जग कूडौ कुट्ट मैं दुनीयां ॥ मेरोदर घन जाणैं हो ॥
मीरां के पति आप रमईया ॥ दूजो कोय नही जानैं हो ॥ ३ ॥

३२

साईयां अरज बदी की सुन हो ॥
मैं नुगणी तुम सुगणां सायब ॥ औगुणगारी ग गुण हो ॥ टेर ॥
हू दासी तेरी जनम जनम की ॥ तुम हो हमारे वर हो ॥
दीन दयाल दया कर मोपैं ॥ मोटो सब ही डर हो ॥ १ ॥

रांणाजी विसरो प्यालो मेल्यौ ॥ मारै मगति रो पथ हो ॥
जांकू राखैं राम गुसांई ॥ तो मारण हारो कुण हो ॥ २ ॥
थांन देव मारी दायन आवै ॥ तुम सूं लागौ मेरो मन हो ॥
जैसैं चद चकोर निहारै ॥ यू सुमरूँ छिन छिन हो ॥ ३ ॥
वेर वेर मोहि त्रिह मतवै ॥ ज्यू काठैं लागौ घूण हो ॥
मीरा नाव पीया लै छाकी ॥ कांई जाणू राणौजी कूण हो ॥ ४ ॥

३३

अधर नांम कुजर लीयौ ॥ वाकी अवधि घटांणी हो ॥
गरुड़ छांड हरी घ्याईया ॥ पसू जूण मिटांणी हो ॥ २ ॥
अजा मेल से ठधरे ॥ जम त्रास हटाणी हो ॥
पुत्र हेत पदवी दई ॥ जुग सारै जांणी हो ॥ ३ ॥
नाव महातम गुरु दीयौ ॥ सोई वेद वखांणी हो ॥
मीरां दासी वारणै ॥ अपनी करि जांणी हो ॥ ४ ॥

३४

पीया मोहि आरत तेरी हो ॥

आरत तेरी तेरी नांम की ॥ मोह साझ सवेरी हो ॥ टेर ॥
पटीया पाड़ ग्यांन की ॥ बुधि मांग सवारू हो ॥
तो परि मेरा सांईयां ॥ धन जोबन वारू हो ॥ १ ॥
यातन को दिवलौ करू ॥ मनमा की बाती हो ॥
तेलज पूरु प्रेम कौ ॥ वालू दिन राती हो ॥ २ ॥
सेझड़ीयां बौहौ रगीया ॥ चगा फूल विछाया हो ॥
रैण घटी तारा गिणत ॥ पीव अज ऊन आया हो ॥ ३ ॥
आयौ सावण मादवौ ॥ विरषा रत आई हो ॥
वीज भला मल हो रही ॥ नैना झड लगाई हो ॥ ४ ॥
तुम पूग तुम पुरवा ॥ पूरा सुख दीज्यो हो ॥
मीरा व्याकुल वेदनी ॥ अपनी करि लीज्यो हो ॥ ५ ॥

३५

साजन वेगा घर आज्यो हो ॥

आदि अंत का मिंत हौ ॥ हम कु सुख लाज्यौ हौ ॥ टेर ॥
हरी बिन सुरती कहां धरूँ ॥ जिस मारग जोऊँ हौ ॥
तेरे कारण सांईयां ॥ भरि नीद न सोउ हौ ॥ १ ॥
अबिनासी आया सुणुं ॥ जब नो निधपाउ हौ ॥
साइब सु मन मोंइलो ॥ दुष टेर सुणाउ हो ॥ २ ॥
वा विरीया कब होवसी ॥ कोइ कहे सनेसा हो ॥
मीरां कहै इस बात का ॥ मोइ खरा अदेसा हो ॥ ३ ॥

३६

असे जन जाण न दीजे हो ॥
आतो मिलो सहेलड्यां ॥ बाता सुख जीजे हो ॥ टेर ॥
नैन सलू ने सांइयां ॥ देष्यां सुं जीजे हो ॥
तन धन जोवन वारि कैं ॥ नछ रावल कीजे हो ॥ १ ॥
आरत अपणी कारणै ॥ वाकै पाइ परीजे हो ॥
चदन केरा रूष ज्यू ॥ चरणां लपटी जे हो ॥ २ ॥
हाथ जोरि बिनती करूँ ॥ मेरी अरज सुणीजे हो ॥
मीरां व्याकुल बेहनी ॥ जाकुं दरसण दीजे हो ॥ ३ ॥

३७

पीया मैं तेरी बदी हो ॥
गरक भई गुण ते रडै ॥ विन मोल वकदी हो ॥ टेर ॥
मैं बेहन तू बहुगुनी ॥ दोउ सिंध मिलदी हो ॥
जो तुम की प्रीतम नां मिलौ ॥ तो मैं वह जदी हो ॥ १ ॥
रूप लुभांनी लोयनां ॥ मैं चलु तेरी छंदीं हो ॥
गुजि की वाता तुंभि सु ॥ ऊल जू कहदी हो ॥ २ ॥
प्रांण सनेही सजनां ॥ दुष टालन ढदी हो ॥
मीरां के प्रभु रामजी ॥ तेरी चेरी कहदी हो ॥ ३ ॥

३८

जोगीया तैं जुगत न जोगी हो ॥
मेतो आसिक तेरडी तोने दया न आणी हो ॥ टेर ॥
तु भी स्वारथ को सगौ ॥ पर दुष न जांनी हो ॥

तो मो वीच विछोह मौ ॥ कोई दाणा पांणी हो ॥ १ ॥
तुम विन कल मोइ ना पड़ै ॥ मछी विन पाणी हो ॥
तुम विन मै कैसें जीउ ॥ रेण तलफ विहांनी हो ॥ २ ॥
जा दिन तें तुम बीछड़े ॥ मेरे मइ हानी हो ॥
तो कारण वन वन फिरूं ॥ होय प्रेम दिवांनी हो ॥ ३ ॥
षांन पांन की सुध नही ॥ काया कुमलाणी हो ॥
अब तो बाकी नां रही ॥ पिंड त्यागै प्राणी हो ॥ ४ ॥
पतित पावन तो बिउदहै ॥ याही वेद वषानी हो ॥
मीरां कु अब धौ दरस ॥ प्रभुजी सुष दीनी हो ॥ ५ ॥

३६

रसईया मेरे तोही सू लागो नेह ॥
लागी प्रीत जिन तौ डैरे बोला ॥ अधिकौ कीजे नेह ॥ टेर ॥
जैहूं अैसी जांनती रे वाला ॥ प्रीत कीयां दुष होइ ॥
नगर ढढोरो फेरती रे ॥ प्रीत करो मत कोय ॥ १ ॥
पीर न षाजे षारो रे ॥ मूरष न कीजे मिंत ॥
षिणता ताषिण सीलवारे ॥ षिण वैरी षिण मिंत ॥ २ ॥
प्रीत करै ते बावरां रे ॥ करि तोडै ते कूर ॥
प्रीत निमावण दल के षमण ॥ ते कोई बिरला सूर ॥ ३ ॥
तुम गज गीरी कौ चूतरो रे ॥ हम बालू की भीत ॥
अब तो म्यां कैमे बणै रे ॥ पूरब जनम की प्रीत ॥ ४ ॥
एकै थाणै रोपीया रे ॥ इक आंबो यरू बूंल ॥
वाकौ रमनीं कौ लगै रे ॥ वाकी भागै सूल ॥ ५ ॥
ज्यू डूंगर का बाहला रे ॥ यू ओछा तणां सनेह ॥
वहता वहैजी उतावला रे ॥ वेतो भटक वतावै छेह ॥ ६ ॥
आयो सावण भादवो रे वाला ॥ बोलण लगा मोर ॥
मीरा कु हरिजन मिल्या रे ॥ लेगया पवन भकोर ॥ ७ ॥

४०

वह लहर तनमाइ उठे ॥ काया कु सीषण हारो ॥
ओषद पुरी कोई मूल न मागै ॥ लागत नही भारी ॥ १ ॥

रांम हमारे गारडू हैं ॥ जीव कौ प्रांन अधारो ॥
उन आयां मेरी पीर हरत है ॥ उनकौ पतीयारो हा ॥ २ ॥
मन हमारो प्रभु मोहि लियौ तुम ॥ उलागत है घारो ॥
दासी मीरां रांम भजि करि ॥ विष कियौ न्यारो ॥ ३ ॥

४१

सावरा की दृष्टि मानू ॥ प्रेम री कटारी हैं ॥ टेर ॥
लगन बेहाल भई ॥ घर हू की सुधि नही ॥
तनह मैं व्यापी पीर ॥ मन मतवारी हैं ॥ १ ॥
चकोर चाहत चद ॥ दीपक जलत पतग ॥
जल विंना मरै मीन ॥ अैसी प्रीत प्यारी हैं ॥ २ ॥
सखी मिली दोय च्यारी ॥ बावरी भई हैं सारी ॥
निस दिन मैह लीयां ॥ आसिक अकारी हैं ॥ ३ ॥
बिन देष्यां कैसें जीवै ॥ कल न पड़त हीयै ॥
जाय वाकू अैसैं कहियौ ॥ मीरां तो तिहारी हैं ॥ ४ ॥

४२

म्हारे घर आवौ स्यांम गोठड़ी कराई हैं ॥ टेर ॥
आनद उछाव करू ॥ तन मन मेट धरू ॥
में तो हू तुमारी दासी ॥ ताकु तो चीतारी ए ॥ १ ॥
गिगन गरज आयो ॥ बदरा बरस भायौ ॥
सारग सब दसुनि ॥ ब्रेहनी पुकारी हैं ॥ २ ॥
घर आवौ स्यांम मेरे ॥ मे तो लगू पाय तेरै ॥
मीरां कू सरन लीजे ॥ बलिबलि हारी हैं ॥ ३ ॥

४३

आव सजनियां वाट में जोऊ । तेरे कारण रेण न सोऊ ॥ टेर ॥
जकन परत मन बहुत उदासी ॥ सुदर स्याम मिलौ अविनासी ॥ १ ॥
तेरे कारण सब हम त्यागे ॥ षांन पांन पैं मन नहीं लागे ॥ २ ॥
मीरां के प्रभू दरसण दीज्यौ ॥ मेरी अरज कान सुण लीज्यौ ॥ ३ ॥

४४

आय मिलौ मोहि प्रीतम प्यारे ॥

हम कूं छांड़ क्यूं न्यारे ॥ टेर ॥

बौहोत दिनन की वाट निहारू ॥ तेरे उपर तन मन वारू ॥ १ ॥

तुम दरसन की मो मन मांही ॥ आय मिलो कर क्रिपा गुसांई ॥ २ ॥

मीरां कहै प्रभू गिरधर नागर ॥ आय दरस द्यो सुख के सागर ॥ ३ ॥

४५

काई कहीयौ रे बिनती जाय कैं ॥

म्हारा प्राण पीयारा नाथ नैं ॥ टेर ॥

जा दिन के बिछुरे मन मोहन ॥ कल न परत दिन रान नैं ॥ १ ॥

देस विदेस सदेस न पूगै ॥ बिरहन झूरे स्याम नैं ॥ २ ॥

दिल दां मरहम दिल ही जानै ॥ और न जाणै दूजो बात नैं ॥ ३ ॥

मीरां दरसण कारण झूरै ॥ ज्यूं बालक झूरै मात नैं ॥ ४ ॥

४६

म्हारा सुगण साजन बोलो मुखां । बोलो मुखां जरा बैठो नणा ॥ टेर ॥

कर करना मेरी सेभ्क विराजो ॥ माफ करो जी सब मूलां चूकां ॥ १ ॥

कै तुम उपर कामण कीया ॥ कै भरमाया थाने दूजी सोकां ॥ २ ॥

यो न पति मेरी दाय न आवै ॥ छोड़ दीयौं जी मैं तो हक्कां धक्कां ॥ ३ ॥

मे तो दासी थांरी जनम जनम की ॥ तुम ठाकुर मारे सीस रखां ॥ ४ ॥

जो ओगण तोहीं तुमरी बाजूं ॥ मीरां कहां जाय पीव थकां ॥ ५ ॥

४७

मारो मनड़ो हरि सूं राजी ॥ टेर ॥

कांई करेगा मारो दुरजन पुरजन ॥ झब मारो भूठा पाजी ॥ १ ॥

कांई करेगा मारो राजा रांणा ॥ कांई करेगा मुलां काजी ॥ २ ॥

रगीला प्रीतम सें हिल मिल पेला ॥ पर तन हारां बाजी ॥ ३ ॥

४८

गोविंदा नें आय मिला ज्योजी ॥

सांईयां मारी यतनी अरज पहूंचा ज्योजी ॥ टेर ॥

विनती तो कोज्यो मारी पायन पारिकें ॥ सारी सुध जणा ज्योजी ॥ १ ॥

विरह विथा की वेदन कीज्यो ॥ मारी तन की तपन बुझा ज्योजी ॥ २ ॥

व्रज नद हित सु हिय उमग्यो है ॥ मारी अरज मत बीसरा ज्योजी ॥ ३ ॥

४६

राम मारी लागी प्रीत निभाज्यौ जी ।। टेर ।।
थे छोजी म्हारी सुष का सागर ।। मारा आंगण सारूँ मत जाज्यौ जी ।। १ ।।
लोगन धीजै मारो मत न पतीजै ।। मुषडारा सबद सुणा ज्यौ जी ।। २ ।।
मीरां कहे प्रभू गिरधर नागर ।। मेरो बेडो पार लगा ज्यौजी ।। ३ ।।

०

उधोजी माधौ कैसी कीनी ।। टेर ।।
आज काल कुबज्या बड भागण ।। मे बुध की सुत हीणी ।। १ ।।
आप तौ जाय द्वारका छारा ।। हम कुं पाती नही दीनी ।। २ ।।
मीरां कहे प्रभु गिरधर नागर ।। बिधना या लष दीनी ।। ३ ।।

५१.

गिरधर रीसाणा कौन गुणा ।। टेर ।।
कछुक औगण हम मैं काढौ ।। मे भी कान सुणा ।। १ ।।
मैं तो दासी थारा जनम जंनम की ।। थे साइब सुगणां ।। २ ।।
मीरा कहे प्रभू गिरधर नागर ।। थारोई नांम भणां ।। ३ ।।

५२

थे मारे घर आवोजी प्रीतम प्यारा ।। टेर ।।
तन मन धन सब भेट करूगी ।। भजन करूगा तुमारा ।। १ ।।
मो नुगणी ने गु ण नहीं प्रभूजी ।। तुमहो बगसण हारा ।। २ ।।
वौ हो गुणवता सायब कहिये ।। मुझ में औगुण सारा ।। ३ ।।
सेझ सवारी आप नहीं आये ।। कबकी करूँजी बिचारी ।। ४ ।।
मीरां के प्रभू गिरधर प्रीतम ।। थां बिन नैण दुष्यारा ।। ५ ।।

५३

सुणज्यों चित दे कान ।। टेर ।।
भगत प्रकास करो हिरदा में ।। जामे मिटे अग्यान ।। १ ।।
तुम चरणां में लीन रहे मन ।। ज्यू मछी जल ध्यान ।। २ ।।
मीरां दासी दोउ कर जोडां ।। ए मागंत बरदान ।। ३ ।।

५४

गोविंद आवो ने सब सुख रासी ॥
आवौजी युक्त विलासी ॥ टेर ॥
अबकी बेर प्रभू दरसण दीजौ ॥ सषीयां करत मेरी हांसी ॥ १ ॥
सब सणगार सजे तन ऊपर ॥ हरि बिन लगत उदासी ॥ २ ॥
जाका दुषकी जेही जाणै ॥ औरा के मन हांसी ॥ ३ ॥
आबा की डाल कोइल यक बैठी ॥ बोलत सबद उदासी ॥ ४ ॥
मेरा मन में ऐसी आवै ॥ करवत ल्यूँगी जाय कासी ॥ ५ ॥
उदिन मोकू कैसो होंयगा ॥ हरि मेरी सेझ सिधासी ॥ ६ ॥
मीरां कहै प्रभू कबर मिलोगे ॥ सुख की रैण विहासी ॥ ७ ॥

५५

लगन को नाव न लीजे री भोली ॥ टेर ॥
लगन लगी को पैडो ही न्यारौ ॥ पाव धरत तन छीजै ॥ १ ॥
जैतूं लगन लगाई चावै ॥ तौ सीस की आसन कीजे ॥ २ ॥
लगन लगी जैसे पतग दीपक से ॥ वारि फेर तन दीजै ॥ ३ ॥
लगन लगाई जैसे मिरघे नाद से ॥ सनमुख होय सिर दीजै ॥ ४ ॥
लगन लगई जैसे चकोर चदा से ॥ अगनी भषण कीजे ॥ ५ ॥
लगन लगी जैसे जल मछीयन सें ॥ बिछडत तन ही दीजे ॥ ६ ॥
लगन लगी जैसे पुसप भवर सें ॥ फूलन बीच रही जै ॥ ७ ॥
मीरां कहै प्रभू गिरधर नागर ॥ चरण कवल चित दीजै ॥ ८ ॥

२. मीराँ सम्बन्धी भजन

रचयिता-जेटराम। ये भजन मीराँ के जीवन से सम्बन्ध रखते हैं। ये एक ३.५"×२.४" आकार वाले गुटके में अन्य सन्तो के भजनों के साथ मिले हैं। इसका लिपिकाल या रचनाकाल नहीं हैं।

सगत साधा की म्हैनो करस्यां प्रीति लगाइ ।
ससार समद मे डूब तरावें, लेवें बाहि समाइ ॥ टेर ॥
हरिजन हरि तो एक है, फूल बास दोइ नाहि ।

परसि परसि ऐसैं मिल रहिया, घ्रित दूध के मांहि ॥ १ ॥
साचा मन सू सुमिरन कीजे, भ्रांति भरम छिटकाइ ।
अमर लोक पद प्रापति होवै, राम मिले घट मांहि ॥ २ ॥
हरि भज लावौ लीजे प्रानी, साध संगति में आइ ।
बार बार नर देहि नांहि, .आयो मोसर जाइ ॥ ३ ॥
मामी मीरां सुणो कान दे, साच कहू समझाइ ।
साधां की सगति छोडर थौंजी, मति कुल ने षोड़ लगाइ ॥ ४ ॥
साध सगति कीनिधा ठांणै, राम कहे सुष नांहि ।
षोड़ लागसी वाने बाई, पड़सी नरक के माहि ॥ ५ ॥
साधा को संग भलौ नहीं छे, म्हांरी न घायौ दाइ ।
घर जावण की ऐ छै वातां, इण मारिग मति जाइ ॥ ६ ॥
यो मारिग म्हांने नीठ मिल्यौ छै, सतगुर दियो बताइ ।
माथा सारे धारण किन्हौं, क्यूं कर छोड्यौ जाइ ॥ ७ ॥
साध सगति में निस दिन करस्यां, जरा जीवडो सुष पाइ ।
प्राण हमारा हरिजन है जी, ज्यू मीन बसें जल मांहि ॥ ८ ॥
कह्यो हमारो मानौ मामी, समझौ मन के मांहि ।
इस्यौ कुसगतै कांई समायौ, मति म्हानैं लाछण लगाइ ॥ ९ ॥
लाछण ज्यांनै लागसी जी, साध सगति नहीं भाइ ।

...॥ १० ॥

जनम बडे घर पाइयोजी, आई बडा घर माहि ।
यां वाता थे भला न दीसौ, मांनों कहूँ समझाइ ॥ ११ ॥
बुरा भलाइ म्हांनै कहज्यौ, लेस्यां पलो बिछाइ ।
मन लागो प्रभू का चरणां, छिन भर रह्यो न जाइ ॥ १२ ॥
पीहर ससरो दोन्यू लाजै, हिंदवो भांण लजाइ ।
मति मैं जी जुगता करै जगत में, कहपलो जी निछांई ॥ १३ ॥
रांम नाम को मरम न जांणै, साध संगति रुचि नाहि ।
मैं णौं ज्यानें लागसी, षोटै मारिग जाइ ॥ १४ ॥
लोक दुनी सब बात करत है, चवासहर के माहि ।
कहू न कचीडो हामी टाणें, हिलमिल गिया गाइ ॥ १५ ॥

निंद्या म्हारी झलिमलि कीज्यौ, म्हांनैं घणी सुहाइ ।
बिन सावण पाणी बिना, मैल धुपै धुप जाइ ॥ १६ ॥
हरि भगतण तूं कै कर बैठी, लाज मरा मन मांहिं ।
बार बार मैं करू बीनती, बुरा दिषावै कांहि ॥ १७ ॥
साध संगति मैं समझै नांहि, रांम कह्या जल जाइ ।
जनम जनम मैं बुरा दीषसी, मार जमां की षाइ ॥ १८ ॥
जिती बात मैं कही सीष की, एक न आई दाइ ।
कुल को नातो तोड़्या बैठी, लोक लाज छिटकाइ ॥ १९ ॥
भजन बीनां जीव भटकत फिरीयौ, लष चौरासी मांहि ।
किस्यौ किस्यौ कुल लाज सीजी, जाकी गिणती नांहि ॥ २० ॥
आइ बैरागण आइ कठासूं, म्हांका घर के मांहि ।
ग्यान अगम को कथवा लागी, देष्यौ सुण्यौ कहूं नांहि ॥ २१ ॥
तूं तो नणदल भई बावरी, समझ थारै मैं नांहि ।
ग्यान तणी गम तोनैं नांहि, गरम रहि मन मांहि ॥ २२ ॥
मैं तो बात रीत की कीन्हीं, तूं बाइ चढी बरडाइ ।
मूढ मुलक की कांई जाणैं, राजरीति ठुकराइ ॥ २३ ॥
भगति बिना ठकुराइत फूटी, म्हांनै नही सुहाइ ।
राज पाट सब धरीया रहसी, जगल चलसी जाइ ॥ २४ ॥
थाका कीया थैं भुगतोला, म्हांनै दोसण नांहि ।
सारण धात बिचारी रांणें, कोप कीयो मन मांहि ॥ २५ ॥
रांणो म्हारो कांई करसी, मोहि डरावै कांहि ।
साधां कै हूं हाथ बकांणी, थासूं नातो नांहि ॥ २६ ॥
साध हमारै कटूंब कबीलो, मातृ बाप'र माइ ।
हरिजन म्हारै सीस बिराजै और न आवै दाइ ॥ २७ ॥
कड़वा वचन श्रवण सुण्या, रीस चढी मन मांहि ।
जाइ सिलगाई घरका आगैं, या नारी कांम की नांहि ॥ २८ ॥
धूतरा पेट सूं या धूतारी, मोसूं छानी नांहि ।
धूतारौ इनको गोत कहीजै, जाणैं जगत के मांहि ॥ २९ ॥
म्हांका घर की घरोट षोवै, लीयौ कुलछि समाइ ।
इनकूं मारबां दोसन कांई, लाज मरा मन मांहि ॥ ३० ॥

कुवधि केवलि अंतरी माँहि, सब दुष्टया मिल आइ ।
जहर घौल प्यालौ पठवायौ, मारण करीछै आइ ॥ ३१ ॥
नणदल प्यालौ करमैं लीन्हौ, आइ म्हल के माँहि ।
हरि सेवा में मीरा में-बैठी, भजन करै चितलाइ ॥ ३२ ॥
चरणामृत हूँ ल्याई थांके, नेम करो मन मांहि ।
राणैं प्यालौ भोकल्यौ जी, रुचि रुचि पीवो अघाइ ॥ ३३ ॥
चरणांम्रत मैं सुण्यो जी श्रवणां, लेस्या प्रेम बंधाइ ।
जनम मरण का झगड़ा छूटै, चौरासी मिट जाइ ॥ ३४ ॥
रांम राम कह मुख मैं ठोस्यो, घणो हरष मन मांहि ।
दूणी कला रांम जी दीनीं, संक न उपजी कांहि ॥ ३५ ॥
इम्रत प्यालौ म्हाने भेज्यौ, वो गुण बिसरां नांहि ।
जाइ रांणां ने यूँ कहज्यौ जी, रोजीनां पहुँचाइ ॥ ३६ ॥
यो तो प्यालौ अब ही पीस्यौ, फिर पीवण को नांहि ।
म्हानै दोसण को नहीं छै, थांको षोट थां मांहि ॥ ३७ ॥
नर सब सूधा मरया षोट सूं, हरि सूं छांनां नांहि ।
राम भजन साधा सग करस्यां, जिवड़ो निर्मल होइ जाइ ॥ ३८ ॥
हरि भगती को यो फल लागौ, मरजास्यौ पल मांहि ।
साधां सूं थारै पञ्यौ आतरौ, फेर न मलस्यौ आइ ॥ ३९ ॥
सिर ऊपर म्हारै मव्रल धणी छै, काज बिगडै कांइ ।
जीवण को म्हारै मोद नहीं छै, मरणां सूं डरपा नांहि ॥ ४० ॥
यौ वैणारत यूं लिषीयो, टाल्यौ टलैंज नांहि ।
मन मैं वै सौ मांग लइज्यौ, मत उणारथ ले जाइ ॥ ४१ ॥
वैणा हरि आछो करमी, डरयां भगति हूँ नाहि ।
सबल धणी को सरणौं म्हांके, कुमी काहे की नांहि ॥ ४२ ॥
रांम नांम जे छांडै, भिग जीवन कलि मांहि ।
ग्रम मांहि गल क्यूं नहीं गईयौ, जननी जणींयो कांहि ॥ ४३ ॥
राम नाम की टेक समाई, गाठ धार मन मांहि ।
पण राष्यौ प्रभूजी जिनकौ, जहर दीयौ पलटाइ ॥ ४४ ॥
धन मीरां बड़भागन जग मैं, हरि सूं हेत लगाइ ।
जेतराम जस दीयो भगत नैं दूणी रंग पिछताइ ॥ ४५ ॥

२

अब नहीं वीसरूँ म्हारे हिरदे लग्यौ हरि नांव । पातिन बीसरूँ ॥ टेर ॥

मीरां बैठी महल में, ऊठत बैठत राम ।
सेवा करस्यां साध की और न दूजो काम ॥ १ ॥
रांणैजी बतलाईया, कांई देणो जुवाब ।
मन लागो हरि नाम सूं, दिन दिन दूणो लाभ ॥ २ ॥
सीप भर्यो पांणी पीवै रे, टांक भर्यो अनपाइ । -
बतलायो बोलै नहीं, रांणो गयो रिसाइ ॥ ३ ॥
विस का प्याला भेजिया, दीज्यौ मेडतणि के हाथि ।
करि चरणाम्रत पी गई, सबल धर्णी के साथि ॥ ४ ॥
रांणो मो पर कोपीयौ, मारूँ एकण सैल ।
मार्यां पराछत लागसी, दीज्यौ पीहर मेल ॥ ५ ॥
बिस का प्याला पीगइ रे, भजन करै अस ठौर ।
थांरी मांरी ना मरू, राषण हारो और ॥ ६ ॥
रांणो मो पर कोपीयौ रती न राख्यौ मोद्र ।
ले जाती वैकुंठ मैं समझ्यो नहीं सी समोद ॥ ७ ॥
मीरां महल सूं ऊतरी, रांणै पकर्यौ हाथ ।
हथ लेवा को साहियो, और न दूजी बात ॥ ८ ॥
माला हमारे दोवडो, सील बरत सिणगार ।
अब कै किरपा कीजीयौ, तो (फिर) बांधू तरवारि ॥ ९ ॥
थ्यां बैल जुपाइया रे, ऊँटां कसीया भार ।
कैसे तोडू रांम सूं (म्हारो) भौ भौ को भरतार ॥ १० ॥
राणै सांड्यो मोकल्यौ रे, जाज्यो एकै दौडि ।
कुल की तारण असतरी, (यातो) मुरडि चली राठोड ॥ ११ ॥
सांड्यो पाछो फेर दे, मरतिन देस्या पांव ।
सूरापण धरी नीसरी (म्हारै) कुण गणों कुण गाव ॥ १२ ॥
मसाणी नधा करै, दूधीयां सब पिरवार ।
कुल सारो ही लाज्यो, मीरा हुई पुवार ॥ १३ ॥
छाया तलन बणाइया तजीयौ सब सिणगार ।

मीरां सरणै रांम के, मति नीदो ससार ॥ १४ ॥
राती मांती प्रेम की, बांधि भगति को मोड ।
रांम घनल राती रहै, धनि मीरां राठोड ॥ १५ ॥

३

मामी मीरां क्यू रै लियौ बैराग ।
क्यू रे लीयो बैराग माया थैं क्यूं तजी ॥ टेर ॥
ऊँचा थारा बैठणा, ऊँची थारी जात ।
रांणां सरीसो बर पाइयौ थांरो सहस मेवाड़ मे राज ॥ १ ॥
एतो मोती ओस का जैसे यो संसार ।
आयौ झिकोलौ पवन को जातां न लागै बार ॥ २ ॥
षखीर षांड को मोजनि जीमता, ओढौ दिषणी चीर ।
रांणां सरीसो बरत्यागीयो, (थारो) सब मुलकामे सीर ॥ ३ ॥
षीर षांड सा मोजन त्याग्या, त्याग्या, दिषणी चीर ।
रांणां सरीसो बर त्यागीयौ (म्हारै) सब संता में सीर ॥ ४ ॥
क्यूं पावौ ठंडा टूकड़ा, क्यूं रै पीवौ षाटि छाछि ।
मैंसूवां भूषा मरौ, कदि मिलसी दीना नाथ ॥ ५ ॥
मीठा लागै ठडा टूकड़ा, इम्रत लागै छाछि ।
मैंसूवां भूषा मरौं, जदी मिलमी दीना नाथ ॥ ६ ॥
लाजै पीहर सासरौ, लाजै माइ मोसाल ।
नित का आवै ओलवा, थारो भरम धरै संसार ॥ ७ ॥
आग लगाऊ पीहर सासरै, जत जीवे मो साल ।
मीरॉं सरणै राम कै, भख मारौ ससार ॥ ८ ॥

[ओलीबावड़ी रामद्वारा, उदयपुर]

———×———

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	७	हेमा चरित्र	हेमाचारित्र
४	१०	प्रथ	ग्रन्थ
६	२८	पृष्ट	पृष्ठ
७	२१	उधव	ऊधव
८	६	घेरजो	घेर जो
८	१८	नसीतनामा	(१) नसीतनामो
८	१८	(१) अनेकार्थ	(२) अनेकार्थ-
६	१६	(२) 'पापडव :.	(३) 'पाण्डव ··
१०	२२	प्रगस्या	प्रगल्भा
१२	२	प्राता	प्रातां
१५	७	फूटकर	फुटकर
१५	२६	समजन	रामजन
१६	२३	गजेन्द्	गजेन्द्र
१८	२५	रग	रंगीला
१८	२८	भलराम	वलराम
२१	१७,२०,२६	जन गोपाल्	जनगोपाल्
२५	१४	आणभै	अणभै
२६	२४	हरिद्वारा	हरि-द्वारा
२८	१३	साध	सार
२८	१६	प्रथ	ग्रन्थ
२६	१६	(३६)	(३७)
३०	१०	वकचूरजी	वकचूलजी
३१	२०	जातिन	जाति न

३२	६	राम चरण	रामचरण
३२	११	’चा	चा’
३८	६	मेर	मेरे
३८	१६	आकार वाले	आकारवाले
४२	१४	२	३
४४	४	लु	लै.
४४	२३	कीजै रसना	रसना कीजै
४६	२६	वारा	वार
४७	२	मैं	में
४७	१६	अणमै वाणी	१. अणभै वाणी
४७	२२	चहूंटा ईये	चहूंचाईये.
५७	१०-११	इस प्रति में १०६। कम है	इस प्रति में १०६ कम हैं
५७	१६	राख	राखै
५८	२२	छीतभ	छीतम
५६	२४	चर पहनाथ	चरपटनाथ
६०	५	मीडकी पाव	मीडकीपाव
६१	८	भयो	भयो
६६	१५	कोंसो	कों सो
६८	२६	.. राम तज	....तज राम...
६६	१	आन	आनै
७०	५	त्रम्र राय	त्रम्रराम
७१	२१	(७५)	(७५ क)
७५	७	सुन्दरदासजी सवैया	सुन्दरदासजी का सवैया
७६	२७	आव्	आवैं
७७	२३	प्रमहंज जू	प्रमहंसजू
७६	२	रामभजन....दिन	राम-भजन....दिन करै
७६	८	पद्पात	पद् पात
७६	६	पत्र-संख्या	पत्र-संख्या-६

७६	२४	फकीरो	फकीरी
८१	६	अजेसी,'लपमसी..	'अजेसी, लखमसी....
८२	३	कछि	कवि
८३	५	भण्डार	भण्डारकर
८३	२४	अव तरिउ	अवतरिउ
८४	२	मिलइ । . टलइ	मिल' इ । ..टल' इ
८५	४	अथवा (लब्धोदय	(अथवा लब्धोदय
८५	५	ढाल में	ढालों में
८५	६-१०.	+२) ६१८	+ १) ६१७
८७	१०	।।।। १० ।।	।। ६१०।।
८६	५	शालिभद्र	शालिभद्र
८६	२७	भटालज	भटात्मज
६४	७	(नान)	तान
६४	२४	निम्झरिय	निम्झरयं
६४	२६	नारदयंनदय	नारदयं न दयं
६५	२३	अपभरा	अपभर
६५	२५	कनवाज्ज	कनवज्ज
६६	२७	कीनी ।....तर फे	कीनौ ।....तरफे
६६	२८	केनीचे ×	जोडो-'दोहा'
६७	१५	सज्जिव,अरष सव्वड	सज्जिव अरष,... सव्वऽ
६७	१६	दिव्व	दिव्वऽ
६८	१७	करून	करूना
६८	२१	रचनसी	रयनसी
६८	२८	प्रवत्तमाने	प्रवर्त्तमाने
१०१	१	केवार	केदार
१०४	३	आव ओरी में आरडी	आव' ओ री मैंआरड़ी
१०४	४	उमी रे रे में आरी	ऊभी रे' रे मैंआरी
१०४	५	जांढो	जांणे
१०४	७	मला	भला

१०४	८	ने षेडो	नै छेड़ो
१०४	२५	उ द्ध रें	उद्धरें
१०५	१	चुडा	चु डा
१०५	१२	रेणसा वधाइ वधाइ	रेणसी वधाइ वधीइ
१०५	१७	र्मिदि्र	मिदि्र
१०५	२६	भ डमोटा	भड मोटा
१०७	८	आस्या	आस्यो
१०७	१५	डिंगल	डिंगल्
१०७	२७	सन्नातह हि	सन्नाह तहि
१०८	२५	‌ मरवदत्त	भैरवदत्त
१०९	८	चाविगेद्	चाविगदे
१११	५	संपात	समपत्ति
११७	४	कुल पति	कुलपति
११७	२२	का किल	काकिल
११७	२३	घर्नी	घरनी
११७	२७	कीन्ह् कीलृणदे	कील्ह्णदे
११८	१०	चावले	चाव ले
१२०	२९	ह्व	है
१२१	१	नांन्हूंरांभ	नांन्हूंरांम
१२१	१५	गद्ये	मध्ये
१२२	२२	हैसारनि	हे सारनि
१२३	६	कवि प्रियाभरन	'कवि-प्रियाभरन'
१२५	१	पगो	-पयो-
१२५	६	घाज	काज
१२५	१३	सीस्वि	सीखि
१२६	२६	भांडर	भौंडर
१२७	६	पर वंद्	परवंद
१२८	२	दंहो	दोहो
१२८	२४	सुख माधरी	सुखमा धरी

१२८	२५	कोम	कौन
१३०	१२	करहुं	कर
१३२	११	स्स	रस
१३३	१३	पंक्ति में और प्रतिपंक्ति	अक्षर और प्रतिपंक्ति में
१३३	१६	देसही	दे सही
१३३	२०	अंत	अंत
१३४	२२	हरा	हरो
१३५	४	जय साहि	जयसाहि
१३५	२७	काट''''भ	काट ..भी
१३६	१२	सपो	सपी
१३६	१४	नन	मन
१३६	२१	ढांव	ठांव
१३६	२३	महंत	महंत
१३६	२४	ताततें	तात तें
१३६	२५	आननं	आंनन
१३६	८	रस वंत''''थरी	रसवंत...धरी
१३६	१६	अवरथा	अवस्था
१४०	१	रह्योन	रह्यो न
१४१	२६	कुंदन रंग	कुंदन को रंग
१४२	३	अनयिप	अनमिष
१४३	१७	प्रो पत पति का	प्रोषितपतिका
१४४	४	प्रवसित पतिकाये	प्रवसितपतिका ये
१४७	८	शृंगारा	शृँगारी
१४७	१६	क रत	करत
१४७	२३	ह्यावरने	ह्यां वरने
१४८	५	पे	के
१४६	३	परदेंत	परदतें
१४६	२२	नहीं	नहीं
१५०	२२	अनेकार थो	(६२) अनेकारथी

१५२	१४	पर भावथ।	परभाव थी
१५५	२१	कविज न	कवि जन
१५६	१६	धवनी म, प्रथम	धरनीम प्रथम,
१५६	२०	ना मेय	नाभेय
१५६	२६	उवझावाजी	उवझायाजी
१५७	२	प्रतिष्ट	–प्रतिष्ठ
१५७	१०	मोहन विजयें वर्ण व्यांगुण	मोहनविजये वर्णव्यां गुण
१५८	६	क्रिया वंत	क्रियावत
१५८	२६	मति कुशल	मतिकुशल
१५८	२७	चद्र लेहा	चंद्रलेहा
१५६	५	छरित्र	चरित्र
१५६	२५	नामेंजे, महिमा हिमहंताजी	नामें जे महिमा हि महंता जी
१६०	१ से ८ ———		अंतिम शब्दों में 'जी' अलग करें
१६०	३	व्रत आचारोजी	व्रत आचारो'जी
१६०	१०	हंस कुमार	हंस कवि
१६१	८	नदी)	नदी ।
१६१	६	त्यौहार	त्यौहार ।
१६१	१०	छोंडा	छोड़ा
१६१	११	अमरेस	अमरेस ।
१६०	२३	समकं	समरूं
१६१	२६	सिक	सिक्त
१६३	१४	कर कंडुनो, सामील ज्यो	करकडुनी, सामलिज्यो
१६३	१७	समय सुन्दर	समयसुन्दर
१६४	६	नारि सूँ	नारि सूं
१६४	१६	वर्ण व्यो	वर्णव्यो
१६४	२३	। १६१४	१८१४ ।

१६५	२	सुणाथो	सुणायो
१६५	७	वहेते	वहंते
१६६	११	तर वर हारवै	तरवर हारव
१६६	१२	साखै	सारवै
१६६	१५	उतरा'''प्रलैवन खंड	उत्तरा ..प्रलै-वन खंड
१६६	१६	समारै	समाऽरे
१६६	२०	निवारै	निवाऽरै
१६७	१	हला हलै	हला' हलै
१६७	३	कायाभरै	काया भरै
१६७	२६	जोतानवरस	जोता नव रस
१६८	११	ढ़ोला	ढोला
१६८	१२	ससने ही	ससनेही
१६६	३	आगस्वार	आगरवार
१६६	२७	उपाडीयों	उपाडीयो
१७०	८	नवीसरसी	न वीसरसी
१७०	२०	कुरभा, सो मारू जोवनलागी	कुरभा सामा मारू जोवण लागी
१७१	२०	ऊमउ	ऊभउ
१७२	१	ससर्ग्य	संसर्ग्य
१७२	२४	आयभिउ	आथमियउ
१७३	५	देवों	देवी
१७३	२८	करें	करे
१७४	६	सालिद्रजी	सालिभद्रजी
१७७	१८	मक्त	भक्त
१७८	१४	सुर्णों	सुर्णे
१७६	२८	संयरण	सख्या
१८१	१७	ाामकेत	नासकेत

१८१	२३	सुख देव	सुखदेव
१८२	११	दूसरी ओर	दूसर ओर
१८२	१२	चित्र पर।	पर चित्र
१८३	६	आम्या	आग्या
१८५	१८	घर दाअनी	वरदाअंन
१८६	१३	सुण	सुणे
१८७	१०	रसालकृत	रसालकृत
१८८	८	काभिनी	कामिनी
१८९	२३	करूण	करुण
१९०	४	चोबसमा	चोबीसमा
१९२	१३	पलागा	पलाणा
१९२	२४	जेस लमेर	जेसलमेर
१९५	६	केवलदरसण	केवल दरसण
१९७	११	सोसीदेह	सो सीदेह
१९८	१	मेता रज	मेत रज
१९९	१	गो तम	गोतम
२००	१	घरूचूल	बकचूल
२०१	२६	शुद्ध	अशुद्ध
२०२	४	स भ्रम अवत	सभ्रम अवतः
२०४	६	ओषानेरी	ओषाणेरी
२०४	१४	हौसराषा	हौसनषां
२०४	२६	सावर्ती	सांषली
२०५	१३	सरवहीये	सर वहीये
२०६	१९	स्वरूपलालजी जदीश चोक	कविराव मोहनसिंह
२०६	२२	भक्तमाल की टीका	भक्तमाल
२०९	१८	वाचना चारम्भ अभय सोमे, मति सुंदर	वाचनाचारम्भ अभयसोमे, मतिसुंदर
२०९	२१	हेमंत विज	हेमंतविजय

२०६	२५	वर काणी	वरकाणी
२११	१२	मलिनरसन	मलिन रसन
२१२	५	सोलै सैजु	सोलैसै जु
२१२	२०	जिन हरष	जिनहरष
२१२	२१	उगण पचासै	उगणपचासै
२१३	१	कल्प वेलि कपि अणतणी . सुष साय	कल्पवेलि कविअणतणी ·· सुपसाय
२१४	५	सिंहत्याघ्रेषां कादि स्वे दंतच	सिंह व्याघ्रेघाकादि स्येदं त च
२१४	६	सुल्या	तुल्या
२१४	२६	ओरू	ओरु
२१७	२०	लषा वकाज	लपाव काज
२१८	६	वहि	वदि
२१८	६	आचार	आधार
२१६	३	निम्न लिखित	निम्नलिखित
२१६	६	कव्रत...औन	कहत...औ न
२१६	१०	छै मासी	छैमासी
२२०	२	नर मोहीयाजी	नरमौहियाजी
२२०	११	सुपि	सुणि
२२१	२	आगणि याली	आगणियाली
२२१	५	सामलैरे	सामलै रे
२२१	१२	वै ह्वाल	वैह्वाल
२२१	२२	वुरौ	वूरौं
२२१	२७	करिके	के
२२२	३	भीटर	भींतर
२२३	३	तव काज्यूं	तणका ज्यूं
२२३	७	घल	घली
२२३	८	घणी । 'मुव .	घणी···। ··मुप ··
२२३	१०	घौ	धौ

२२४	१०	जिह्वानां	जिह्वान
२२४	१६	ह्येय कर"।' ह्विव राडारौ	ह्येयकर"'।"'ह्विवरा डारो
२२४	१७	ह्येय कोव पूधर' सघा रचौ	ह्येय को वपू धर "संघारयौ
२२४	२२	आकूँ सदे देहारी	आकूँ स दे दे हारी
२२४	२३	भवगत जत	भवंग तजत
२२४	२५	तुन्हारे	तुम्हारे
२२६	१	जीवनीचंत	जीव नीचत
२२६	२	मीरा	मीरां
२२६	२२	कर दउर	करद उर
२२६	२४	उक तानैं	उकतानैं
२२६	२५	मेरोदर धन	मेरो दरध न
२२७	१०	अजा मेल	अजामेल
२२७	२२	अज ऊन	अजऊन
२२७	२४	झला मल	झलामल
२२७	२५	पुरवा	पूरवा
२२८	४	निधपाउं	निध पाउं
२२८	१२	नछ राषल	नछरावल
२२९	८	बिउदहै	बिरूद है
२२९	१६	षिणता ताषिण सीलवारे	षिण ताता षिण सीलवा रे
२२९	२९	झारी	झारो
२३१	४	मीरां	मीरां
२३२	३	म्हारी	म्हारा
२३२	५	०	५०
२३३	९	उदिन	ऊ दिन
२३४	९	कीनिधा	की विधी
२३४	२६	कहूंपलो	कहूं पलो

२३४	२६	चवासहर	चवासहर
२३५	१०	लाज सीजी	लाजसी जी
२३५	३०	दोसन	दोस न
२३८	१०	जातान	जातां न
२३८	१२	वरत्यागीयो '' मुलकामे	वर त्यागीयो''''मुलकां मैं

———